

दैवीय लोकतंत्र (दिव्य लोकतंत्र)

श्री एम.के. गांधी द्वारा लिखित हिंद स्वराज का पुनरीक्षण

नरेंद्र अग्रवाल

(Translated by Google)

कवर के अन्दर (इस पुस्तक में जहाँ भी आवश्यक हुआ, उदाहरण भारत से लिए गए हैं):

हम लोग, दैवीय लोकतंत्र की ओर झुकाव, असंतोष और अशांति, दैवीय लोकतंत्र, लोकतांत्रिक देशों की स्थिति, सभ्यताएँ, भारत क्यों खो गया और विभाजित हो गया, भारत की स्थिति, भारत की स्थिति: रेलवे और अन्य संचार, भारत की स्थिति: धार्मिक व्यवस्था, भारत की स्थिति: कानूनी व्यवस्था, भारत की स्थिति: स्वास्थ्य व्यवस्था, अच्छी सभ्यता क्या है, भारत मानसिक रूप से स्वतंत्र और जिम्मेदार कैसे बन सकता है?, इटली और भारत, नकारात्मक शक्तियाँ, सक्रिय कार्य, शिक्षा, मशीनरी, आगे का रास्ता: - दैवीय लोकतंत्र

द्वारा प्रकाशित

बंदना चौधरी

प्रथम संस्करण: 31 जनवरी, 2016 (केवल सीमित और निःशुल्क प्रसार के लिए 1000 प्रतियां),
नवीनतम संस्करण: 20 मई 2020,
संशोधित संस्करण: 12, जनवरी-2025,

© लेखक के पास आरक्षित

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी तरह से पुनः प्रस्तुत या किसी अन्य भाषा में अनुवादित नहीं किया जा सकता।

यद्यपि इस पुस्तक के प्रकाशन में हर प्रकार की सावधानी बरती गई है, फिर भी इसमें हुई किसी भी त्रुटि या चूक के कारण किसी भी व्यक्ति को हुई हानि या क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक और मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। यदि प्रकाशकों के ध्यान में कोई गलती लाई जाती है तो वे अगले संस्करण में उसमें सुधार करने के लिए बाध्य होंगे।

द्वारा प्रकाशित:

बन्दना

प्रिंट सेटिंग यहां की गई: आनंद प्रिंटर्स, शक्तिनगर, 231 222 (भारत)

website: resurrectionofdharma.com

सामग्री

पृष्ठ क्रमांक

1 हम लोग	8
2. दैवीय लोकतंत्र की ओर झुकाव	19
3 असंतोष और अशांति	23
4. डिविनक्रेसी (दिव्य लोकतंत्र)	25
5 लोकतांत्रिक देशों की स्थिति	33
6 सभ्यताएँ	43
7 भारत क्यों हारा और विभाजित हुआ	52
8 भारत की स्थिति	57
9 भारत की स्थिति: रेलवे और अन्य संचार	61
10 भारत की स्थिति: धार्मिक व्यवस्था	66
11 भारत की स्थिति: कानूनी व्यवस्था	83
12 भारत की स्थिति: स्वास्थ्य प्रणाली	91
13 अच्छी सभ्यता क्या है	103
14. भारत मानसिक रूप से स्वतंत्र और जिम्मेदार कैसे बन सकता है?	114
15. इटली और भारत	120
16. नकारात्मक शक्तियाँ	129
17. सक्रिय कार्यवाहियाँ	137
18. शिक्षा	163
19. मशीनरी	174
20. आगे का रास्ता: - दिव्य लोकतंत्र (डिवाइन डेमोक्रेसी)	189

मेरे माता-पिता को समर्पित
स्वर्गीय श्री राधेश्याम गुप्ता,
स्वर्गीय श्रीमती रामकली देवी गुप्ता
और
भाई स्वर्गीय डॉ. हरेन्द्र अग्रवाल

आज दुनिया एक चौराहे पर खड़ी है, जहाँ कई बार खुद को किसी और से नहीं बल्कि एक तरफ अपने विश्वास से और दूसरी तरफ वास्तविकता से जूझना पड़ता है। "लोकतंत्र सभी बीमारियों का इलाज है, जिनसे हम पीड़ित हैं और एक बार जब हम इसे अपना लेंगे, तो हम एक ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जो सभी के लिए स्वतंत्र, निष्पक्ष और सक्षम होगा" यह एक लोकप्रिय धारणा है, यह पश्चिम की ओर से एक जोरदार घोषणा है, फिर भी इसकी सफलता संदिग्ध है, कठिन विश्व युद्धों, शीत युद्धों और गृह युद्धों के माध्यम से इसके अस्तित्व के संदर्भ में नहीं बल्कि स्वतंत्रता, समानता और आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त करने के संदर्भ में।

लोकतंत्र के अलग-अलग आयाम हो सकते हैं। क्या दुनिया भर में अलग-अलग सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के लिए लोकतंत्र के अलग-अलग रूप हो सकते हैं? एक सदी पहले श्री एम.के. गांधी (महात्मा गांधी) ने अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' के माध्यम से हमारे देशवासियों को रोशनी दिखाने का प्रयास किया था। उन्होंने भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में लोकतंत्र और स्वराज के बारे में ऐसी ही शंकाओं का उत्तर देने का प्रयास किया था।

हालांकि समय बीत चुका है और दुनिया उस दौर में पहुंच गई है जिसे हम आज देख रहे हैं- एक आत्म-संघर्षशील लोकतंत्र। हिंद स्वराज के उत्तर दिव्य लोकतंत्र के पाठक (प्रश्नकर्ता) को अच्छी तरह से समझ में आते हैं, लेकिन लोकतंत्र पर बड़ा सवाल उसके दिमाग में बना हुआ है।

दिव्यतंत्र के पाठक के मन में जिज्ञासा ने उसे संपादक (उत्तरदाता) की बुद्धि और ज्ञान में अपने स्पष्ट उत्तरों की तलाश करने के लिए प्रेरित किया। संपादक का समग्र और सांस्कृतिक दृष्टिकोण पाठक को लोकतंत्र के बारे में अपने संदेह से बाहर आने में मदद करता है जिसे वह अपने आस-पास देखता है। लोकतंत्र की कहानी जैसा कि वह आज की महाशक्तियों से जानता है, लोकतंत्र के वास्तविक अर्थ से सामना करती है, जिसे एक स्वतंत्र व्यक्ति अवधारणा बना सकता है। पाठक, अपनी बातचीत के दौरान, लोकतंत्र के अपने कठोर विचार को त्याग देता है और इस दुनिया में आने वाली चीज़ के बारे में एक नई अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है- दिव्यतंत्र (दिव्य लोकतंत्र)।

दिव्यतंत्र-एक शक्तिशाली एक अक्षर वाक्यांश जो कई समझ और परिभाषाओं को जन्म देता है, कुछ लोग इसे धर्म-प्रधान लोकतंत्र के रूप में व्याख्या कर सकते हैं, कुछ इसे पूर्वी दर्शन के साथ लोकतंत्र कह सकते हैं। जिस तरह विषय की परिभाषा पर संदेह हो सकता है, पाठक इस पुस्तक को एक दार्शनिक पाठ या शैक्षणिक मूल्य वाला साहित्य मान सकते हैं या यह लोकतंत्र का एक नया रूप है जिसे हम आने वाले समय में देखेंगे। यह सब कुछ हद तक सच है।

जैसे-जैसे पन्ने पलटते हैं और अध्यायों को कवर किया जाता है, लोकतंत्र के इस क्रांतिकारी रूप पर संपादक की बौद्धिक अंतर्दृष्टि एक जीवंत तस्वीर बनाएगी कि दैवीय शासन वाली दुनिया कैसी होगी। जैसा कि हम कहते हैं कि यह जीवंत तस्वीर किसी विचारधारा का प्रचार सामग्री नहीं है। संपादक ने न तो दैवीय शासन को अपनाने पर सुनहरे भविष्य की धुंधली तस्वीर पेश की और न ही उन्होंने भविष्य के उस निराशाजनक परिदृश्य की कल्पना की, जिसमें आज की लोकतांत्रिक सरकारें विफल हो जाती हैं। बल्कि उन्होंने लोकतांत्रिक सरकार के आचरण में मानवता और दैवीयता का सार डाला।

हम इसे लोकतंत्र का पूर्वी और समाजवादी दृष्टिकोण कहने में संकोच नहीं करेंगे, लेकिन अगर पूरी परिभाषा इसी तक सीमित कर दी जाए तो हम आपत्ति करेंगे। मानवता और दिव्यता सभी सीमाओं को पार करती है और सर्वव्यापी है। संपादक ने संस्कृति, मानवता, धर्म के अपने अध्ययन और समझ तथा समाज और अपने पूर्वजों से प्राप्त सामूहिक ज्ञान का उपयोग करके इस प्रश्न का उत्तर दिया है। यह पाठ इस बारे में व्यापक समझ विकसित करेगा कि हमें सार्वजनिक और निजी तौर पर कैसे व्यवहार करना चाहिए। पाठकों और संपादक को शुभकामनाओं के साथ,

नई पीढ़ी

प्रस्तावना

शासन प्रणालियों और सभ्यता पर पुष्पा-नरेंद्र अग्रवाल के साथ परिवार, मित्रों और प्रियजनों के बीच हुई बातचीत, जिसे पहले श्री एम.के. गांधी ने उठाया था और जो उनकी पुस्तक हिंद स्वराज में प्रतिबिंबित है, ने अब डिविक्रेसी (दिव्य लोकतंत्र) का रूप ले लिया है।

हमारे लिए स्वतंत्रता आंदोलन के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए हिंद स्वराज निश्चित रूप से दोबारा पढ़ने का हकदार है, जैसा कि श्री गांधी ने स्वयं कहा था 'मैं पाठकों को यह सोचने से आगाह करना चाहूंगा कि मैं आज (हिंद स्वराज में) वर्णित स्वराज को लक्ष्य बना रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि भारत इसके लिए तैयार नहीं है। ऐसा कहना शायद अशिष्टता लगे, लेकिन मेरा ऐसा मानना है।'

बातचीत को प्रश्न, उत्तर के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ प्रश्नकर्ता को पाठक और उत्तर को संपादक कहा गया है। इसके अलावा जहाँ भी हिंद स्वराज के अंश शामिल किए गए हैं, वहाँ हिंद स्वराज के पाठक और संपादक को 'QST और ANS' के रूप में दर्शाया गया है। हिंद स्वराज के अलावा, मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा के प्रासंगिक अंश भी जोड़े गए हैं।

ऋषिगण कहते हैं कि:

अवचेतन से अचेतन चेतना में बदल जाता है,

चर के माध्यम से नकारात्मक सकारात्मक में बदल जाता है;

दुःख परिवर्तनशील रूप से सुख में बदल जाता है;

दैवीय शासन हमारे स्वस्थ, सुखी और पवित्र जीवन के लिए शासन में आने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा है।

नरेंद्र अग्रवाल

हम लोग

पाठक: व्यवस्था पूरी तरह से भ्रष्ट और जीर्ण-शीर्ण हो चुकी है और यह लंबे समय से इसी तरह काम कर रही है। यहां तक कि लोगों को भी इसकी आदत हो गई है और कहीं न कहीं उन्होंने अपने विवेक में इसे स्वीकार कर लिया है और खुद को भ्रष्ट कर लिया है। आप क्या सोचते हैं?

संपादक: जब भी कोई व्यक्ति, पदार्थ, पैसा, बाजार या पद्धति पूरी तरह से जंग खा जाती है, तब उसके जाने का समय आ जाता है, वह स्वयं नष्ट हो जाती है या फिर उस पर्याप्त झटके का इंतजार करती है जिससे जंग लगी हुई वस्तु कई टुकड़ों में बिखर जाए। निश्चित रूप से जब वे कहते हैं कि शैतान का घड़ा भर गया है (पाप) का घड़ा भर किया पाप का घड़ा भर गया है) या बह निकला है, तो यह संकेत देता है कि अब समय आ गया है कि इसे तोड़ा जाए। इसे कौन तोड़ेगा? इसे कैसे तोड़ा जाएगा, ये सवाल तो समय ही बताएगा। यह आप भी हो सकते हैं, और आपके तरीके भी, लेकिन एक बात तो तय है कि इसके जाने का समय बहुत जल्दी आ रहा है।

आम जनता के बीच एक इच्छा आसानी से देखी जा सकती है और आध्यात्मिक दायरे में एक अंतर्धारा महसूस की जा सकती है कि ऐसी सरकार हो जो प्राकृतिक नियमों पर आधारित हो, जहां सरकार और उसकी प्रणाली आपसी विश्वास और सम्मान के सिद्धांत पर काम करती हो, न कि केवल प्रबंधक और मेनाजरी या शासक और शासित के आधार पर, अर्थात् ऐसी सरकार हो जो अपने नागरिकों के साथ व्यवहार में दैवीय हो।

यह देखा जा सकता है कि आध्यात्मिक नेता एक साथ तीन तरीकों से काम कर रहे हैं, पहला है लोगों को यह बताना और समझाना कि प्रकृति और प्राकृतिक नियमों का पालन करना व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के लिए सर्वोत्तम क्यों है, दूसरा है व्यक्तिगत उदाहरण द्वारा यह दिखाना कि हम दिन-प्रतिदिन प्रकृति और प्राकृतिक नियमों का पालन कैसे कर सकते हैं और तीसरा है लोगों और संस्थाओं को दैनिक जीवन में, स्वयं, परिवार, समाज और पर्यावरण के साथ व्यवहार करते समय इन प्राकृतिक/दैवीय सिद्धांतों का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करना।

पाठक: तो क्या आप मानते हैं कि हमारे बीच दिव्य लोकतंत्र की चाह पैदा हो रही है?

संपादक: ईश्वरीय सत्ता की चाहत और आस्था तो हर किसी में जन्मजात होती है, लेकिन ये आध्यात्मिक गुरु ही हैं जो हमें बदलावों के बारे में जागरूक कर रहे हैं। प्रकृति का अनुसरण करने

वाले आध्यात्मिक गुरु ही प्रकृति में होने वाले बदलावों को सबसे पहले महसूस करते हैं और फिर यह उनका कर्तव्य और विशेषाधिकार है कि वे हमें बदलावों के बारे में बताएं और हमें होने वाले बदलावों के लिए तैयार करें।

पाठक: ऐसा बिल्कुल नहीं है। लोगों को लगता है कि ये लोग अपनी पहचान बनाने और लोकप्रिय होने के लिए पुराने और अव्यवहारिक नियमों का हवाला दे रहे हैं; ये लोग तोतों की तरह पैगम्बरों, देवी-देवताओं के जीवन और कार्यों का निरंतर बखान कर रहे हैं।

संपादक: यह राय उचित नहीं है। बहुत से धार्मिक गुरु तथ्यों और आंकड़ों को आसानी से समझने के लिए पुरानी और पवित्र मान्यताओं का हवाला दे रहे हैं और बहुत से धार्मिक गुरु अपने निजी उदाहरणों से तथ्यों और आंकड़ों को दिखा रहे हैं। राम कृष्ण परमहंस, महर्षि रमन, राज चंद्र, रजनीश (ओशो) आदि कुछ ऐसे समकालीन वास्तविक जीवन के गुरु हैं, जिनके माध्यम से मानवता को अंतरराष्ट्रीय भाईचारे की भावना को समझने और उसका अनुकरण करने में मदद मिलती है।

पाठक: आप जिन्हें मानव जाति का हितैषी मानते हैं, वे मेरे हिसाब से ऐसे नहीं हैं। उपदेश देने से, आश्रम में कुछ शिष्यों के साथ बैठने से, क्या वे शासन-व्यवस्था में परिवर्तन के आधार स्तंभ नहीं बन सकते?

संपादक: इन गुरुओं ने अपना जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है; ये वे आदरणीय गुरु हैं जिन्होंने हमें बताया है कि अच्छाई ही अच्छी है और अधार्मिकता क्यों काम नहीं आती। पेड़ एक दिन में नहीं उगता। पेड़ की जड़ उखाड़ने से पूरी टहनी गिर जाती है, इसलिए अगर आप मानवता के कुँ के दरवाजे के बारे में नहीं सुनना चाहते हैं, तो इसका मतलब है कि आपके लिए ईश्वरत्व मुश्किल है या दूर है, भले ही ईश्वरत्व की चाह आपके अंदर जन्मजात हो। इन आध्यात्मिक गुरुओं को मेरा हमेशा आदर और प्रणाम रहेगा और हम ईश्वरत्व के निर्देशों का पालन करते रहेंगे।

पाठक: मैं इन आध्यात्मिक गुरुओं के बारे में आपके विचारों की सराहना कर सकता हूँ कि उनके बिना शायद हमारे अंदर वह उत्साह न हो जो हमें प्रेरित करता है, लेकिन वही बात उन लोगों के बारे में कैसे कही जा सकती है जो कहते हैं कि हमें विभिन्न धर्मों, साम्यवाद, पूंजीवाद जैसी शासन की विभिन्न कार्य प्रणालियों से बहुत कुछ सीखना है। लोकतंत्र और उनके मिश्रण से पहले हम दैवीय शासन की बात करते हैं, हम इन कथनों से चकित महसूस करते हैं।

संपादक: केवल दयालु हृदय और परिपक्व विचार वाले ही दुनिया पर राज कर सकते हैं और लोगों का सम्मान प्राप्त कर सकते हैं, न कि जल्दबाज़ लोग। मुझे विश्वास है कि ये समझदार लोग जो कुछ भी करते हैं, वह पवित्र उद्देश्य से करते हैं और लोगों के बीच तथा पर्यावरण में प्रेम और सद्भाव फैलाने के उद्देश्य से करते हैं।

विभिन्न धर्म क्षेत्र विशेष तथा विभिन्न प्रणालियाँ मौसम विशेष की होती हैं। बढ़ती बातचीत और अभिसरण के साथ दूरियाँ और मतभेद तेजी से गायब हो रहे हैं। सभी धर्मों और कार्य प्रणालियों का अध्ययन करना तथा उन्हें आगे के दुरुपयोग और उपयोग के लिए पुनः वैध बनाना तेजी से आवश्यक होता जा रहा है।

ये समझदार लोग जो कुछ भी कहते हैं, वह चापलूसी या दिखावा करने के लिए नहीं होता, बल्कि एक घोषणा होती है, जो हमें विनाश से बचाती है और निर्माण के लिए तैयार करती है।

यह भी निवेदन है कि किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले यह बेहतर होगा कि आप आध्यात्मिक गुरुओं/लोगों पर उद्धरण देखें जो जनता को जागृत/प्रबुद्ध करने में लगे हुए हैं और जिन्हें भारत कहा जा सकता है और उन्हें दुनिया का स्वाभाविक नेता माना जा सकता है **(मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा पुस्तक के अंश;**

:

भारत: विश्व का स्वाभाविक नेता

भारत (भा + रत), भा- प्रकाश, ज्वाला, ऊर्जा, चूहा- व्यस्त, यानी आत्मज्ञान में व्यस्त, (इसकी सफेद आभा में जीवन का हर रंग समाहित है)।

भारत विश्व का स्वाभाविक नेता है। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी संपूर्ण जीवंतता और गतिशीलता के साथ विश्व का स्वाभाविक नेता बनकर आचरण करे, स्वस्थ, प्रसन्न और पवित्र रहे तथा दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करे।

यदि भारत नेतृत्व के रूप में व्यवहार नहीं करेगा तो अराजकता या प्रलय हो सकता है।

भारत समझता है कि नेतृत्व का मार्ग हृदय से मस्तिष्क तक, मानसिक बनावट से शारीरिक क्रिया तक, वाणी, कर्म और कर्म से होकर जाता है। भारत ने अतीत में भी इसी मार्ग का अनुसरण किया है और आगे भी इसी मार्ग पर चलेगा।

दूरदर्शी लोग स्वाभाविक नेता होते हैं। दूरदर्शी लोग पहले पूर्वानुमान लगाते हैं, फिर उसे प्रकट करते हैं, और लक्ष्य दिखाते हैं, और हम समझते हैं कि लक्ष्य आकर्षित करता है और उसे प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाता है।

हमें दूरदर्शी, ऋषि, द्रष्टा और सूफियों का सम्मान करना होगा और उनके आदेशों का पालन करके खुश, स्वस्थ और पवित्र रहना होगा। यह अलग बात है कि ऐसे वर्ग सम्मान के हकदार होते हैं और सम्मान के भूखे नहीं होते।

सर्वोच्च नियोजन, क्रियान्वयन और समन्वय निकाय को ऐसे सभी ऋषियों, संतों और सूफियों (एकान्त या परिवार में रहने वाले) का निरंतर आशीर्वाद प्राप्त करना होगा तथा समग्र कल्याण के लिए क्रमबद्ध तरीके से कार्य और व्यवहार करना होगा।

ऋषियों, संतों और सूफियों के आदेशों को सभी मौजूदा कानूनों से ऊपर उठकर काम करना होगा। गतिशीलता और प्राकृतिक नेतृत्व को बनाए रखने के लिए यह जरूरी है (क्योंकि ये आदेश सीधे प्रकृति से पहले से आते हैं और आपदाओं, युद्ध और उत्सवों में अलग होते हैं)।

नेता एक संस्था है, जो परिस्थितियों से आकार लेती है, ऋषियों द्वारा आशीर्वादित होती है, गुरुओं द्वारा समर्थित होती है, बुद्धिजीवियों द्वारा प्रचारित होती है, अनुयायियों के माध्यम से आगे बढ़ती है और कैनवास के सामान्य भाग्य के लिए काम करती है। यह एक संरचित घटना है और

इसी तरह से काम करती है। कोई भी बदलाव तबाही की ओर ले जाता है और इसे हर कीमत पर टाला जाना चाहिए। एकल व्यक्ति संस्था एक दुर्लभ वस्तु है और 'कृष्ण' की तरह एकाधिकार है।

**

पाठक: तो फिर हमें हर बात में इन महापुरुषों का अनुसरण करना चाहिए?

संपादक: आपको अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है। गुरुजनों, हमें सचेत रहने को कहिए, अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनिए। सभी महान कार्य वे लोग करते हैं जो समझते हैं, जिनके पास विश्वास है, जिनके पास खड़े होने का साहस है, जिनके पास योजना बनाने का मन है और सहयोग करने तथा त्याग करने का हृदय है।

हमारा मुख्य उद्देश्य अधिक स्वतंत्रता लाना है और हम कभी भी आपसे या किसी और से हमारा अनुसरण करने के लिए नहीं कहेंगे, बल्कि जब कोई हमारा अनुसरण करता है तो हमें नापसंद होता है। जो आवश्यक है वह है लक्ष्य उन्मुख होना, सहयोग करने के लिए तैयार रहना और सामूहिक कार्य करना।

पाठक: अब मुझे आपका आशय समझ में आने लगा है। मुझे इस विषय पर विचार करना होगा कि आप अन्य लोगों के बारे में क्या कहते हैं?

संपादक: यही नियम लागू होता है, चाहे पूर्वी हो या पश्चिमी, चाहे पूर्वी हो या पाश्चात्य, हम भारत की बात कर रहे हैं, लेकिन यह नियम अन्य समाजों और देशों के लिए भी लागू होता है।

विदेशी होने का मतलब दुश्मन नहीं है, वे तो बस हमारे मित्र और रिश्तेदार हैं। जब वे हमारे साथ सहयोग करेंगे तो उन्हें भी फायदा होगा और वे अपनी व्यवस्था में सुधार करेंगे।

पाठक: विदेशी समर्थन और दैवीय शासन दो विरोधाभासी बातें प्रतीत होती हैं। विदेशी ताकतें दैवीय शासन को कैसे बर्दाश्त कर सकती हैं, जबकि पश्चिमी देशों को लगता है कि लोकतंत्र ही एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें शुरू से ही दैवीय शासन को नकार दिया जाता है? जब आपने दिखा दिया है कि हम दैवीय शासन कैसे प्राप्त कर सकते हैं, तो शायद मैं आपके विचार समझ पाऊँ; हालाँकि आपने विदेशी सहयोग पर चर्चा करके मेरे मन में अपने प्रति पूर्वाग्रह पैदा कर दिया है।

संपादक: आप हमारे प्रति पूर्वाग्रह रखते हैं, यह कोई बड़ी चिंता की बात नहीं है। इन आध्यात्मिक गुरुओं ने दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से लोगों को एक-दूसरे के करीब लाया। उनका कहना है

कि दैवीय शासन ही बेहतर सरकार होगी और चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं, यह कल की व्यवस्था होगी। इन आध्यात्मिक गुरुओं ने दैवीय शासन का पूर्वाभास ही छोड़ दिया।

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, हम चाहेंगे कि आप **मीता लाइफ़स्टाइल एजेंडा** से 'सरकार' विषय पर एक बात का संदर्भ लें:

सरकार

कुछ भी आकस्मिक, संयोग या आनुषंगिक नहीं है, बल्कि सब कुछ क्रमिक है। चूंकि प्रकृति का प्रतिमान इतना विशाल है कि अधिकांश घटनाएं और प्रक्रियाएं आकस्मिक, संयोग या आनुषंगिक प्रतीत होती हैं, लेकिन जो लोग प्रकृति के साथ तालमेल बिठाते हैं, उनके लिए जन्म से लेकर मृत्यु और पुनर्जन्म तक सब कुछ क्रमिक है और बस एक मनोरंजन है।

जो लोग प्रकृति का प्रयोग करते हैं और जो प्रकृति में प्रयोग नहीं करते हैं, वे सभी प्रकृति के विकास का हिस्सा हैं।

इतिहास में, शासन, जो शुद्ध अराजकता से शुरू हुआ, तीरंदाजी की ओर जाता है, तीरंदाजी से समूह तीरंदाजी, शारीरिक तीरंदाजी से शारीरिक और मानसिक तीरंदाजी, तीरंदाजी से धनुर्धरता और फिर राजसी अभिजाततंत्र की ओर। राजसी अभिजाततंत्र से राजसी अत्याचारी शासन, राजसी तानाशाही, व्यक्तिगत तानाशाही से सामूहिक तानाशाही, सामूहिक तानाशाही से राक्षस-तंत्र और राक्षस-तंत्र से प्रत्यक्ष-अभिजाततंत्र यानी लोकतंत्र और इस प्रत्यक्ष अभिजाततंत्र (लोकतंत्र) से बेहतर समय में सरकार लोकतंत्र में दिव्यता प्राप्त करेगी, अंततः दैवीय अभिजाततंत्र के रूप में। वर्तमान में, पृथ्वी पर, सरकार के हर रूप मौजूद हैं; छोटे से लेकर बड़े स्तर तक और विकास के चरण में हैं। भारत सही मायने में दानव-तंत्र से प्रदर्शनीय अभिजाततंत्र (लोकतंत्र) की ओर बढ़ रहा है, उसे भविष्य के लिए खुद को और दुनिया को नेतृत्व करना है, जिसमें सरकार के रूप में लोकतंत्र (पुजारी अभिजाततंत्र नहीं) में देवत्व होगा। **

पाठक: ऐसी ही स्थिति में श्री गांधी ने हिंद स्वराज में लिखा है कि:

कांग्रेस ने भारत के विभिन्न भागों से भारतीयों को एक साथ लाया और हमें राष्ट्रीयता के विचार से उत्साहित किया। सरकार इसे नापसंद करती थी। कांग्रेस ने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि राष्ट्र को राजस्व और व्यय पर नियंत्रण रखना चाहिए। इसने हमेशा कनाडा के मॉडल के

अनुसार स्वशासन की इच्छा की है। हम इसे प्राप्त कर सकते हैं या नहीं, हम इसे चाहते हैं या नहीं, और क्या इससे अधिक वांछनीय कुछ नहीं है, ये अलग-अलग प्रश्न हैं।

मुझे बस इतना ही दिखाना है कि कांग्रेस ने हमें स्वशासन का अनुभव कराया है। इसे इस सम्मान से वंचित करना उचित नहीं है, और ऐसा करना न केवल कृतघ्नता होगी, बल्कि हमारे उद्देश्य की पूर्ति में बाधा उत्पन्न करेगा। कांग्रेस को एक ऐसी संस्था के रूप में देखना जो एक राष्ट्र के रूप में हमारे विकास के लिए हानिकारक है, हमें उस संस्था का उपयोग करने से वंचित कर देगा।

श्री गांधी के उपरोक्त कथन पर आपका क्या विचार है?”

संपादक: ऊपर श्री गांधी के अपने राजनीतिक दल - कांग्रेस - के बारे में विचार दिए गए हैं और मैं कांग्रेस पार्टी के बारे में उनकी समझ पर टिप्पणी नहीं करना चाहता, लेकिन राष्ट्रीयता के लिए मैं इसी पुस्तक (हिंद स्वराज) के एक अन्य अध्याय से श्री गांधी के स्वयं के कथन को उद्धृत करना चाहूंगा, जो यह बताता है कि भारत राष्ट्रीयता का विचार नहीं बल्कि वास्तविकता है (इटैलिक में):

1) मैं इसे एक गलती मानता हूँ। अंग्रेजों ने हमें सिखाया है कि हम पहले एक राष्ट्र नहीं थे और हमें एक राष्ट्र बनने में सदियाँ लगेंगी। यह बेबुनियाद है। उनके भारत आने से पहले हम एक राष्ट्र थे। एक विचार ने हमें प्रेरित किया। हमारी जीवन शैली एक जैसी थी। हम एक राष्ट्र थे इसलिए ही वे एक राज्य स्थापित करने में सक्षम हुए।

2) मैं यह नहीं कहना चाहता कि हम एक राष्ट्र थे इसलिए हमारे बीच कोई मतभेद नहीं था, लेकिन यह कहा जाता है कि हमारे प्रमुख लोग पैदल या बैलगाड़ी में पूरे भारत की यात्रा करते थे। वे एक-दूसरे की भाषाएँ सीखते थे और उनके बीच कोई अलगाव नहीं था। आपको क्या लगता है कि हमारे उन दूरदर्शी पूर्वजों का क्या इरादा रहा होगा जिन्होंने दक्षिण में सेतुबंध (रामेश्वर), पूर्व में जगन्नाथ और उत्तर में हरिद्वार को तीर्थस्थल के रूप में स्थापित किया? आप मानेंगे कि वे मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे कि भगवान की पूजा घर पर भी उतनी ही अच्छी तरह से की जा सकती है। उन्होंने हमें सिखाया कि जिनके दिलों में धर्म की भावना है, उनके अपने घर में गंगा है। लेकिन उन्होंने देखा कि भारत प्रकृति द्वारा बनाया गया एक अविभाजित देश है। इसलिए उन्होंने तर्क दिया कि यह एक राष्ट्र होना चाहिए। इस तरह तर्क करते हुए, उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में पवित्र स्थानों की स्थापना की और लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को इस तरह से जगाया, जैसा कि दुनिया के अन्य हिस्सों में नहीं है। और हम भारतीय एक हैं जैसे कोई भी दो अंग्रेज नहीं हैं।

केवल आप और मैं तथा अन्य लोग जो स्वयं को सभ्य और श्रेष्ठ मानते हैं, यह कल्पना करते हैं कि हम अनेक राष्ट्र हैं ।

जब श्री गांधी (भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में प्रवेश करने से पहले) लिखते हैं: 'मुझे बस इतना ही दिखाना है कि कांग्रेस ने हमें स्वशासन का पूर्वाभास कराया। इसे इस सम्मान से वंचित करना उचित नहीं है, और ऐसा करना न केवल कृतघ्नता होगी, बल्कि हमारे उद्देश्य की पूर्ति में बाधा उत्पन्न करेगा। कांग्रेस को एक ऐसी संस्था के रूप में देखना जो एक राष्ट्र के रूप में हमारे विकास के लिए हानिकारक है, हमें उस संस्था का उपयोग करने से वंचित कर देगा।' यह श्री गांधी की कांग्रेस के साथ काम करने की मंशा को दर्शाता है और इसे सामान्य माना जा सकता है क्योंकि हर व्यक्ति जो किसी खास राजनीतिक दल या समूह में शामिल होना चाहता है, उस समूह की हर तरफ प्रशंसा करता है। मेरे लिए, भारतीय राष्ट्रीयता का पूर्वाभास (हाल के इतिहास में) रामकृष्ण परमहंस, रानी लक्ष्मीबाई और कई अन्य लोगों द्वारा 1857 में ही बहुत पहले दे दिया गया था।

जो व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या समूह का उपयोग करने का प्रयास करते हैं या ऐसा महसूस करते हैं, मूलतः उनका उपयोग दूसरों द्वारा किया जाता है और फिर उन्हें छोड़ दिया जाता है, तथा जो सराहना योग्य है वह है प्राप्त करने या देने के लिए सहयोग।

पाठक: हम आपका ध्यान श्री गांधी के हिंद स्वराज के निम्नलिखित अंशों की ओर आकर्षित करना चाहते हैं:

प्रश्न: मुझे लगता है कि आप केवल गोल-मोल बातें करके मुझे टालना चाहते हैं। जिन्हें आप भारत का हितैषी मानते हैं, वे मेरे हिसाब से ऐसे नहीं हैं। फिर मैं ऐसे लोगों के बारे में आपकी बातें क्यों सुनूं? जिसे आप राष्ट्रपिता मानते हैं, उसने इसके लिए क्या किया है? वह कहता है कि अंग्रेज गवर्नर न्याय करेंगे और हमें उनके साथ सहयोग करना चाहिए।

उत्तर: मैं आपसे नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि यह हमारे लिए शर्म की बात है कि आप उस महान व्यक्ति के बारे में अनादर की भाषा में बात कर रहे हैं। उनके काम को देखिए। उन्होंने अपना जीवन भारत की सेवा में समर्पित कर दिया है। हमने उनसे जो सीखा है, वह सब सीखा है। यह आदरणीय दादाभाई थे जिन्होंने हमें सिखाया कि अंग्रेजों ने हमारा खून चूसा है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि आज भी उनका भरोसा अंग्रेजी राष्ट्र पर है? क्या दादाभाई का सम्मान इसलिए कम है कि हम युवावस्था के जोश में एक कदम आगे जाने के लिए तैयार हैं? क्या हम इस मामले में उनसे अधिक बुद्धिमान हैं? जिस सीढ़ी से हम ऊपर उठे हैं, उसे लात मारकर न हटाना ही

बुद्धिमानी है। सीढ़ी से एक सीढ़ी हटा देने से पूरी सीढ़ी नीचे गिर जाती है। जब हम बचपन से युवा होते हैं, तो हम बचपन का तिरस्कार नहीं करते, बल्कि इसके विपरीत, हम अपने बचपन के दिनों को स्नेह से याद करते हैं। अगर कई सालों की पढ़ाई के बाद कोई शिक्षक मुझे कुछ सिखाए और अगर मैं उस शिक्षक की रखी हुई नींव पर थोड़ा और काम करूं, तो मैं उस शिक्षक से ज़्यादा समझदार नहीं माना जाऊंगा। मैं हमेशा उनका सम्मान करूंगा। भारत के महानतम व्यक्ति के साथ भी यही हुआ। हमें यह स्वीकार करना होगा कि वे राष्ट्रवाद के लेखक हैं।

प्रश्न: आपने ठीक कहा है। अब मैं समझ सकता हूँ कि हमें श्री दादाभाई को सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए। उनके और उनके जैसे लोगों के बिना, शायद हमारे पास वह उत्साह नहीं होगा जो हमें प्रेरित करता है। प्रोफेसर गोखले के बारे में ऐसा कैसे कहा जा सकता है? उन्होंने खुद को अंग्रेजों का बहुत बड़ा मित्र बना लिया है; वे कहते हैं कि हमें उनसे बहुत कुछ सीखना होगा, हमें उनकी राजनीतिक बुद्धिमत्ता सीखनी होगी, तभी हम स्वशासन की बात कर सकते हैं। मैं उनके भाषणों को पढ़ते-पढ़ते थक गया हूँ।

उत्तर: यदि आप थके हुए हैं, तो यह आपकी अधीरता को ही दर्शाता है। हमारा मानना है कि जो लोग अपने माता-पिता की सुस्ती से असंतुष्ट हैं और इस बात से नाराज हैं कि माता-पिता अपने बच्चों के साथ नहीं दौड़ते, वे अपने माता-पिता के प्रति अनादर करने वाले माने जाते हैं। प्रोफेसर गोखले माता-पिता का स्थान रखते हैं। यदि वे हमारे साथ नहीं दौड़ सकते, तो क्या फर्क पड़ता है? स्वराज्य प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला राष्ट्र अपने पूर्वजों का तिरस्कार नहीं कर सकता। यदि हम अपने बुजुर्गों का सम्मान नहीं करेंगे, तो हम बेकार हो जाएंगे। केवल परिपक्व विचारों वाले व्यक्ति ही स्वयं शासन करने में सक्षम होते हैं, न कि जल्दबाज़। इसके अलावा, प्रोफेसर गोखले जैसे कितने भारतीय थे, जब उन्होंने खुद को भारतीय शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया था? मैं वास्तव में विश्वास करता हूँ कि प्रोफेसर गोखले जो कुछ भी करते हैं, वह शुद्ध इरादों और भारत की सेवा के उद्देश्य से करते हैं। मातृभूमि के प्रति उनकी भक्ति इतनी महान है कि यदि आवश्यक हो, तो वे इसके लिए अपना जीवन भी दे सकते हैं। वे जो कुछ भी कहते हैं, वह किसी की चापलूसी करने के लिए नहीं कहा जाता है, बल्कि क्योंकि उन्हें विश्वास है कि यह सच है, इसलिए हम उनके प्रति सर्वोच्च सम्मान रखने के लिए बाध्य हैं।

उपरोक्त बातचीत और उससे जुड़ी कुछ अन्य प्रमुख बातों पर आप क्या कहेंगे:

1. यह एक तथ्य है कि देश ने श्री गांधी को राष्ट्रपिता का दर्जा दिया है, जिसे श्री गांधी ने स्वयं श्री दादा भाई नौरोजी को दिया था,
2. उपरोक्त बातचीत से मुझे ऐसा लगता है कि आप बस गोल-मोल बातें करके मुझे टालना चाहते हैं, क्या श्री गांधी वास्तव में इसी तरह की बातें कर रहे हैं?
3. क्या भारत के प्रत्येक करेंसी नोट पर श्री गांधी की तस्वीर है?
4. श्री गांधी के तीन बंदर?

संपादक: बिन्दुवार उत्तर इस प्रकार है:

(1) मुझे नहीं पता कि उन्हें क्या कहा जाए: एक जगह वे भारत-माता कहते हैं और दूसरी जगह वे भारत माता के महान बच्चों को राष्ट्रपिता जैसी उपाधियाँ देते हैं। भारत ने महावीर, गौतम बुद्ध, नानक, कबीर आदि के लिए महान पुत्र शब्द का इस्तेमाल किया है और हम महसूस करते हैं कि दूसरों के लिए भी यही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

ऐसा प्रतीत होता है कि चर्च में प्रयुक्त होने वाला 'फादर' शब्द यहाँ भी काँपी किया गया है। सभी आदरणीय, धार्मिक लोगों तथा वृद्ध महिला को 'माता जी' कहना तथा किसी आदरणीय धार्मिक व्यक्ति को फादर कहना अनावश्यक है तथा इस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

(2) हमें यह समझना मुश्किल लगता है कि श्री गांधी ने अपने तर्क प्रस्तुत करने के लिए शब्दों का प्रयोग क्यों किया या अप्रत्यक्ष तरीकों का इस्तेमाल क्यों किया, उनका प्रस्तुतीकरण ऐसा प्रतीत होता है जैसे वकील अपने तर्कों को सही ठहराने के लिए न केवल अपने मुवक्किल की रक्षा करने के लिए बल्कि अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए अदालत में अपना मामला प्रस्तुत कर रहा हो।

(3) करेंसी नोट पर छपी तस्वीरें राजा/रानी की होती थीं जो खुद को शक्तिशाली समझते थे या उनके सेवक/मंत्री चाहते थे कि उन्हें शक्तिशाली के रूप में पेश किया जाए, लेकिन ऐसी छाप मिट जाती है, लेकिन प्रकृति की तस्वीर हमेशा के लिए रहती है और सभी को पसंद आती है, और भारत के प्रत्येक करेंसी नोट पर श्री गांधी की इस तस्वीर की समीक्षा की जानी चाहिए।

(4). क्या कोई व्यक्ति बुरा देखकर, बुरा सुनकर और बुरा बोलकर सुखी हो सकता है? नहीं, इन्हें बंदरों की तरह दर्शाया गया है जो अपनी इंद्रियाँ क्रमशः आँख, कान और मुँह बंद कर लेते हैं, जिससे संकेत मिलता है कि बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत बोलो।

प्रश्न उठता है: क्या कोई व्यक्ति खुश रह सकता है यदि वह बुरा काम करता है, या बुरा करने में शामिल होता है? इसका उत्तर हाँ और नहीं है; यह सबसे महत्वपूर्ण बात है जहाँ हममें से अधिकांश लोग चूक जाते हैं, लेकिन यही वह क्षेत्र है जहाँ गुरु यह कहकर शुरू करते हैं – सचेत रहें, आइए अपने विवेक का उपयोग करें, बंद न हों, सतर्क रहें, सक्रिय रहें और जागरूक रहें।

—श्री गांधी के प्रति प्रेम सिर्फ उनके कद की वजह से ही नहीं बल्कि इसलिए भी जारी है क्योंकि लोग उनकी तस्वीरों को भारत के करेंसी नोटों की तरह अपनी जेब में रखना पसंद करते हैं। श्री गांधी शांति और अहिंसा के प्रतीक माने जाते थे जबकि पैसे को हिंसा और शांति की ताकत माना जाता है, जो देश की लय में एक बुनियादी विरोधाभास है। विरोधाभास से बचने के लिए इस मुद्दे को संबोधित करने की ज़रूरत है। ***

दैवीय लोकतंत्र की ओर बदलाव

पाठक: आपने जो कहा है, उसे देखते हुए यह कहना उचित लगता है कि दैवीय सत्ता की नींव आध्यात्मिक गुरुओं ने रखी थी। लेकिन आप यह तो मानेंगे कि इसे वास्तविक जागृति नहीं कहा जा सकता। वास्तविक जागृति कब और कैसे हुई?

संपादक: (1) सामान्यतः सभी व्यवस्थाएँ एक व्यक्ति के मन से विकसित होती हैं। आग से आग पैदा होती है, एक साधारण माचिस की तीली की आग पूरे जंगल में आग पैदा कर सकती है, इस प्रकार एक व्यक्ति की साधारण आस्था ने एक ओर पदार्थ की खोज/विकास को जन्म दिया है, जैसे - पेट्रोलियम उत्पाद, इंजन/बिजली/टेलीविजन/मोबाइल/मशीनगन, मिसाइल इत्यादि, तथा दूसरी ओर मन की खोज/विकास को जन्म दिया है, जैसे - पैगम्बर मोहम्मद, ईसा, महावीर, लाओ-त्जु, बुद्ध, नानक इत्यादि ने दुनिया को हिलाया या जगाया, ऐसा ही मामला है, शायद, दैवीय शासन के साथ।

(2) श्री गांधी ने शासन में दैवीयता का संकेत दिया है, महर्षि रमण ने घोषणा की है कि दैवीय शासन प्रणाली ही सर्वोत्तम शासन होगी तथा लोकतंत्र से अगला परिवर्तन होगा; रामकृष्ण परमहंस ने कार्य प्रणाली में दैवीयता की बात कही है, जिसे उनके शिष्य विवेकानंद तथा अन्य लोगों ने प्रचारित किया।

(3). जिस तरह से आप सवाल पूछ रहे हैं उससे लगता है कि आपने लोकतंत्र और लोकतंत्र को एक दूसरे से भिड़ा दिया है। दैवीय शासन को समवर्ती लोकतंत्र का बेहतर संस्करण या आगे का विकास कहा जा सकता है।

(4) आध्यात्मिक गुरु वे होते हैं जो जागृत/प्रबुद्ध होते हैं, इसलिए यह प्रश्न कि वे दैवीय सत्ता के बारे में कब जागृत हुए, कोई अर्थ नहीं रखता, प्रश्न यह हो सकता है कि उन्होंने दैवीय सत्ता की घोषणा कब की या इसका उच्चारण करने का मन कब किया?

दैवीयता की आवश्यकता अधिक महसूस की जा रही है, क्योंकि ऐसे स्थानों पर परमाणु विनाश और प्रकृति के क्षरण का खतरा अधिक होता है।

पाठक: आपकी राय में दो विश्व युद्धों, औपनिवेशिक शासन से कई देशों की आजादी, आजादी या सत्ता हस्तांतरण के दौरान उनका विभाजन, देशों का टूटना और बनना तथा उसके बाद जारी आर्थिक युद्ध और आपसी लड़ाई के क्या परिणाम हुए हैं?

संपादक: एक आश्चर्यजनक परिणाम जो आसानी से देखा जा सकता है वह यह है कि जो आध्यात्मिक गुरु पहले अपने एकांत और एकांत आश्रम में बैठते थे, वे अब सार्वजनिक रूप से सामने आकर दैनिक जीवन में धर्म की आवश्यकता और शासन में दैवीय सिद्धांतों की आवश्यकता को दर्शा रहे हैं। आध्यात्मिक गुरु न केवल जीने की कला बता रहे हैं बल्कि वे जीने का कर्म भी बता रहे हैं, नागरिकों के अधिकार ही नहीं बल्कि वे जीवन के कर्तव्य भी बता रहे हैं, दूसरी ओर तीसरी दुनिया के लोग जो पहले हीन भावना से ग्रसित थे, अब वे हीन भावना से ग्रसित नहीं रहे तथा जो लोग केवल प्रार्थना करते थे, वे भी अपनी आस्था और विश्वास सहित विभिन्न चीजों के बारे में मुखर होकर प्रदर्शन, प्रस्तुति और कहना शुरू कर चुके हैं, यह पहले की दबी हुई भावना से बहुत अलग है।

पाठक: क्या आप कोई अन्य उल्लेखनीय परिणाम सुझाते हैं?

संपादक: जब धार्मिक नेता धर्मयुद्ध/जिहाद या हृदय परिवर्तन का आह्वान करते हैं, तो आध्यात्मिक गुरु कहते हैं कि 'व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में सामंजस्य और लय के लिए अंतिम संभावना तक प्रयास करें और फिर लड़ाई के लिए न भागें और न ही लड़ाई से भागें। आगे बढ़ने से पहले हम चाहते हैं कि आप **मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा से 'भ्रष्टाचार' विषय का संदर्भ लें:**

भ्रष्टाचार

प्रकृति में व्याप्त भ्रष्टाचार ही विकास और क्रांति, वृद्धि और क्षय के लिए जिम्मेदार है। सभी जीवित प्राणी, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से; भोजन और उत्सव में भ्रष्टाचार के कारण बढ़ते हैं। जैसे-जैसे व्यक्ति, समाज और देश बढ़ता है, भ्रष्टाचार शुद्ध शारीरिक से मानसिक में बदल जाता है। मूल और भौतिक स्तर पर, अविकसित देश सबसे भ्रष्ट हैं, विकासशील कम भ्रष्ट हैं, और विकसित और भी कम भ्रष्ट हैं; जबकि उन्नत स्तर पर विकसित देश आमतौर पर अविकसित और विकासशील देशों की तुलना में मानसिक रूप से अधिक भ्रष्ट हैं।

यह बात समझी जा सकती है कि मानसिक भ्रष्टाचार ज्यादातर समय दूसरे भ्रष्टाचारों का कारण बनता है। मानसिक भ्रष्टाचार बुराई, अधार्मिकता का मार्ग और दुख का मार्ग है। यह बुराई तब और बढ़ जाती है जब धार्मिक लोग पीछे हट जाते हैं और अनुभवहीन और भ्रमित लोगों को नेतृत्व करने देते हैं। धार्मिकता के पीछे हटने से भ्रष्टाचार (यानी भोजन में नमक) का सूक्ष्म संतुलन बिगड़ जाता है और अराजक और यहां तक कि अधार्मिक (अधार्मिक) स्थितियां पैदा होती हैं।

1. आम तौर पर किसी देश में अगर मुखिया/प्रधानमंत्री भ्रष्ट है तो वह अपने ट्रस्टी/मंत्री को भी भ्रष्ट और अधीनस्थों को ईमानदार रखने के लिए बाध्य होगा। इससे आगे चलकर ऐसी स्थिति पैदा होगी कि मंत्री भी अपने ट्रस्टी को भ्रष्ट मानेगा और अपने अधीनस्थ को ईमानदार रखना चाहेगा और यह सिलसिला चलता रहेगा।

इसी तरह अगर मुखिया/प्रधानमंत्री अक्षम है तो वह अक्षम मंत्रियों का चयन करेगा, अक्षम सचिवों का चयन करेगा और अक्षम सचिव अक्षम अध्यक्ष, निदेशक, जिला प्रशासक इत्यादि का चयन करेंगे। उपरोक्त दोनों ही तरीकों से चाहे भ्रष्ट हो या अक्षम व्यवस्था ध्वस्त हो जाती है। इसलिए यह देखा जाना चाहिए कि शीर्ष पर बैठे लोगों का चयन अत्यंत सावधानी से किया जाना चाहिए। लोकतंत्र में यह मूल दोष है जहां प्रमुखों का चुनाव आम तौर पर मीडिया के हेरफेर या दूसरों की विफलता के द्वारा किया जाता है।

बेहतर भविष्य के लिए हमें एक ऐसी प्रक्रिया की आवश्यकता है, जिसमें मुखिया का चयन ऋषि (कुछ दिव्य शक्ति वाले प्रबुद्ध लोगों का एक समूह) द्वारा किया जाता है, जो निर्वाचित सदस्यों में से हो सकता है या यदि आवश्यक हो तो अनिर्वाचित सदस्यों में से भी हो सकता है, और यह प्रणाली संकेत देती है कि हमें दिव्य लोकतंत्र की ओर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

2. आमतौर पर सभी लोग समझते हैं कि खुशी ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य है और खुश रहना ही धर्म के साथ रहना है। कौन इस बात से सहमत नहीं होगा कि खुशी बनाए रखने के लिए हमें अधर्म के उन्मूलन/विनाश के लिए खुद को समर्पित करना होगा।

धर्म की स्थापना के लिए हमें पहले व्यवस्था को सुव्यवस्थित करना होगा और फिर यदि आवश्यक हो तो धर्मयुद्ध के लिए खुद को तैयार करना होगा। हमें ऋषियों की निगरानी में सतर्कता प्रणाली और न्याय व्यवस्था (न्यायपालिका) का ध्यान रखना होगा, ताकि भ्रष्टाचार (शारीरिक और मानसिक) पर अंकुश लगाया जा सके।

हमें भ्रष्टाचार के रावण या दुर्योधन के खिलाफ लड़ना होगा और शायद हमें उसी तरह लड़ना होगा जैसे हमने रावण/दुर्योधन के साथ लड़ा था ताकि बुराई के इस मूल कारण (भ्रष्टाचार) को मिटाया जा सके। हमें बुराई के विनाश और धर्म तथा दैवीय अभिजात वर्ग जैसी व्यवस्था की स्थापना के लिए तैयार रहना होगा।

असंतोष और अशांति

पाठक: तो फिर आप मानते हैं कि दो विश्व युद्ध, अब चल रहा आर्थिक विश्व युद्ध और दूसरे विश्व युद्ध की तैयारी जागृति का प्रमुख कारण हो सकता है। क्या आप दृश्य जगत में इसके कारण उत्पन्न अशांति का स्वागत करते हैं?

संपादक: दो विश्वयुद्धों के बाद चल रहा आर्थिक युद्ध तथा एक और विश्वयुद्ध की तैयारी, ये मुख्य कारण हैं, जिनसे आध्यात्मिक गुरु प्रभावित हुए हैं।

जिनके पास सत्ता है, उनमें से बहुत से लोग अपने मूल कर्तव्यों को भूल गए हैं और मछली से भी बदतर व्यवहार कर रहे हैं (जहाँ बड़ा छोटे को खा जाता है), और ऐसा लगता है कि स्थिति ऐसी हो गई है कि कुत्ता कुत्ते को खा जाता है। शक्तिशाली लोग जो भी मन में आता है, कर रहे हैं और वंचितों को हर तरह के काम करने के लिए मजबूर कर रहे हैं, जिसमें खतरनाक और असुरक्षित क्षेत्रों में काम करना, बीमारियों से ग्रस्त क्षेत्र (एंथेक्स, सिलिकोसिस, टीबी, शरीर में विकृति-उच्च रेडियोधर्मी निर्वहन आदि) शामिल हैं। इससे समाज में बड़ा भ्रम और अराजकता पैदा हो रही है। लूट और धोखाधड़ी की तुलना में प्रत्यक्ष बमबारी करके या अप्रत्यक्ष मीडिया हेरफेर के माध्यम से डर पैदा करके और फिर लूट और धोखाधड़ी करके सत्ता का दुरुपयोग खतरनाक रूप से उच्च स्तर तक बढ़ गया है, यानी सामाजिक संतुलन को बिगाड़ने के स्तर तक। इन कारकों को मास्टर्स के आगे आने का मुख्य कारण माना जा सकता है।

जिन देशों के पास धन और शक्ति है, उनके लोगों ने अपने खर्च बढ़ा दिए हैं और इसलिए स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए वंचितों के साथ साझा करने के बजाय वे खुद को लूटने, धोखा देने और दूसरों से छेड़छाड़ करने के लिए मजबूर कर रहे हैं, और जिनके पास पैसा नहीं है, उनके पास मरने या जेबकतरी, छीनाझपटी, ब्लैकमेलिंग का सहारा लेने और अमीरों का आसान शिकार बनने और उनके लिए अपराध सहित छोटे-मोटे काम करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

आम जनता लगातार निराश और भ्रमित होती जा रही है और इस तथ्य को कोई भी समझ सकता है कि साधारण धार्मिक उपदेशकों के पीछे भी भीड़ सांत्वना पाने और कुछ अच्छा करने की उम्मीद में खड़ी रहती है। गुरु कहते हैं कि अराजकता ही सृष्टि की पूर्ववर्ती है और इस अशांति का स्वागत करते हैं।

पाठक: अशांति का दूसरा रूप क्या है?

संपादक: जनता में असंतोष के अन्य रूप भ्रष्टाचार विरोधी रैलियों में उनकी बड़ी भागीदारी, निरंकुश, अकुशल, भ्रष्ट या विभेदकारी नेताओं और उनके राजनीतिक दल को बदलने के लिए बड़ी संख्या में मतदान या दूरदर्शी, कुशल, अपेक्षाकृत ईमानदार, शांतिप्रिय और मजबूत नेता को, जिसके बारे में वे अच्छा महसूस करते हैं, स्वीकार करना, लेकिन जब इस अच्छाई पर संदेह होता है या वह गरिमा के अनुरूप नहीं रहता है, तो उसे तुरंत किनारे कर देना, आदि के रूप में देखे जा सकते हैं।

अशांति और लाचारी या निराशा की सीमा का अंदाजा तब लगाया जा सकता है जब लोग आत्महत्या तक का सहारा ले लेते हैं। इंटरनेट पर आम जनता के विभिन्न लेखों और टिप्पणियों से अशांति को आसानी से देखा जा सकता है जो इस बात की ओर इशारा करते हैं कि सरकार और उसकी व्यवस्था आपसी विश्वास और भरोसे के सिद्धांत पर काम कर रही है जो लोकतंत्र का एक बेहतर संस्करण है।

दैवीय लोकतंत्र (दिव्य लोकतंत्र)

पाठक: लोकतंत्र या दैवीय लोकतंत्र (ईश्वरीय लोकतंत्र) के बेहतर संस्करण की अवधारणा प्रकृति में अधिक दार्शनिक प्रतीत होती है, इसमें क्या किया जाना है, इसकी बजाय व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और कार्य सूची देना अधिक महत्वपूर्ण है, और यह बताया जाना चाहिए कि हम अपनी सामूहिक गतिविधि के रूप में क्या करने जा रहे हैं?

संपादक: (1) व्यावहारिक क्या है? अगर आपने अपने जीवन में कोई व्यावहारिक काम किया है तो आप समझेंगे कि किसी भी व्यावहारिक काम के पीछे सिद्धांत होता है, कारण और उसके प्रभाव का सिद्धांत, प्रक्रिया का सिद्धांत और विभिन्न घटकों की परस्पर क्रिया का सिद्धांत और फिर इन सिद्धांतों का पालन करने पर परिणाम मिलता है (जैसा अपेक्षित हो सकता है, अप्रत्याशित हो सकता है या आश्चर्यजनक हो सकता है - बिल्कुल नया परिणाम)। इसलिए व्यावहारिक बनें, सुझाव दें कि आप कुछ चीजें आजमाएँ, अगर वह सफल हो जाए तो उसे स्वीकार करें और अगर विफल हो जाए तो उसे अस्वीकार कर दें।

(2) पहले परिकल्पना (जिसे आप दर्शनशास्त्र कह सकते हैं, न कि मूर्ख-दर्शनशास्त्र) बनाने, फिर प्रयोगशाला परीक्षण, फिर क्षेत्र परीक्षण और अंत में सिद्धांत (आपके संस्करण के लिए परिकल्पना - एक दर्शनशास्त्र) को व्यावहारिक उपयोग में लाने से बहुत विकास हुआ है। आम बोलचाल में - लोग दूसरों से कहते हैं, 'व्यावहारिक बनो' बिना इसका अर्थ और महत्व जाने।

(3) जहाँ तक हमारा सवाल है, हम किसी भी तरह से कोई भी बात बिना व्यक्तिगत परीक्षण और स्वाद के प्रस्तुत नहीं करते। और इस बातचीत में या मीता में या विभिन्न विषयों पर प्रश्न उत्तरों की वीडियो रिकॉर्डिंग में सभी बातें केवल व्यावहारिक बातों का ही निष्ठापूर्वक प्रस्तुतीकरण है।

केवल बात यह है कि, यदि व्यावहारिक बड़ा है तो इसका परिणाम बच्चे के जन्म (चूहा, बिल्ली, मनुष्य और हाथी के लिए) की तुलना में अधिक समय में प्राप्त होता है/प्रकट होता है और इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि यह व्यावहारिक नहीं है।

जो चीजें व्यवहार में हैं, वे पहले किए गए प्रैक्टिकल (किसी और द्वारा किए गए) का परिणाम हैं, न कि कोई नया और रूटीन बन गया है, आप इसे जो चाहें कह सकते हैं। आम तौर पर, दिन-प्रतिदिन के काम में बच्चों के लिए सिद्धांतों को संक्षेप में लिखा जाता है और वे इसे प्रैक्टिकल

बुक कहते हैं- क्योंकि उनके लिए यह एक नई चीज है और इसलिए वे इसे प्रैक्टिकल बुक कहते हैं।

(4) भारत पर आक्रमण हुआ, गुलाम बनाया गया और गुलामी से मुक्ति भी मिली और बंटवारा भी हुआ क्योंकि किसी ने तो सोचा होगा, किसी ने विचार किया होगा, किसी ने परिकल्पना की होगी (जिसे आप दर्शन कह सकते हैं) फिर कुछ चर्चा/प्रयोगशाला परीक्षण फिर क्षेत्र परीक्षण और फिर सिद्धांत को ही व्यावहारिक प्रयोग में लाया गया और वह वास्तविकता बन गया। हिंद स्वराज ऐसा ही एक प्रयास था।

- दिव्यतंत्र, केवल इच्छा सूची के बजाय, कार्य सूची के साथ व्यावहारिक अंतर्दृष्टि देने का एक प्रयास है, और यह निश्चित रूप से बताता है कि हम अपनी सामूहिक गतिविधि के रूप में क्या करने जा रहे हैं और हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र जीवन - एक जीवित स्वर्ग प्राप्त करने जा रहे हैं।

पाठक: क्या आप लोकतंत्र के बेहतर संस्करण - दैवीय लोकतंत्र पर अपने विचार विस्तार से बताएंगे?

संपादक: दैवीय शासन के बारे में आगे बढ़ने से पहले यह जानना जरूरी है कि यह व्यवस्था क्यों और कैसे विफल हो जाती है। इसके लिए हिंद स्वराज में श्री गांधी के निम्नलिखित विचार विचारणीय होंगे।

इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर श्री गांधी हैं:

प्रश्न सं . : अब मैं स्वराज पर आपके विचार जानना चाहूंगा। मुझे डर है कि हमारी व्याख्या आपकी व्याख्या से अलग है।

उत्तर: यह बहुत संभव है कि हम इस शब्द को एक ही अर्थ नहीं देते। आप और मैं तथा सभी भारतीय स्वराज पाने के लिए अधीर हैं, लेकिन हम निश्चित रूप से तय नहीं कर पाए हैं कि यह क्या है। अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का विचार कई लोगों के मुंह से सुना जाता है, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि कई लोगों ने ठीक से इस पर विचार किया है कि ऐसा क्यों होना चाहिए। मुझे आपसे एक सवाल पूछना चाहिए। क्या आपको लगता है कि अगर हमें वह सब मिल जाए जो हम चाहते हैं, तो अंग्रेजों को भगाना जरूरी है?

क्यूएसटी: मुझे उनसे केवल एक ही बात पूछनी चाहिए: "कृपया हमारे देश से चले जाइए।" यदि,

इस अनुरोध को मानने के बाद, भारत से उनके वापस चले जाने का अर्थ यह है कि वे अभी भी भारत में हैं। मुझे कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। तब हम समझेंगे कि, उनकी भाषा में, "चला गया" शब्द "रहने" के बराबर है।

उत्तर: तो फिर मान लीजिए कि अंग्रेज़ चले गए हैं। तब आप क्या करेंगे?

प्रश्न: इस समय इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता। वापसी के बाद की स्थिति काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगी कि वे किस तरह से वापसी करते हैं। यदि, जैसा कि आप मानते हैं, वे सेवानिवृत्त हो जाते हैं, तो मुझे लगता है कि हम अभी भी उनका संविधान बनाए रखेंगे और सरकार चलाएंगे। यदि वे केवल कहने पर सेवानिवृत्त हो जाते हैं, तो हमारे पास सेना आदि तैयार होनी चाहिए। इसलिए, हमें सरकार चलाने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

उत्तर: आप ऐसा सोच सकते हैं; मैं ऐसा नहीं सोचता। लेकिन मैं अभी इस मामले पर चर्चा नहीं करूंगा। मुझे आपके सवाल का जवाब देना है, और मैं आपसे कई सवाल पूछकर यह अच्छी तरह से कर सकता हूं। आप अंग्रेजों को क्यों भगाना चाहते हैं?

प्रश्न: क्योंकि उनकी सरकार ने भारत को गरीब बना दिया है। वे हर साल हमारा पैसा छीन लेते हैं। सबसे महत्वपूर्ण पद अपने लिए सुरक्षित रखते हैं। हमें गुलामी की हालत में रखा जाता है। वे हमारे साथ अभद्र व्यवहार करते हैं और हमारी भावनाओं की अनदेखी करते हैं।

उत्तर: यदि वे हमारा पैसा नहीं लेते, विनम्र हो जाते, तथा हमें जिम्मेदार पद नहीं देते, तो क्या आप तब भी उनकी उपस्थिति को हानिकारक मानेंगे?

प्रश्न: यह सवाल बेकार है। यह सवाल इस तरह का है कि अगर बाघ अपना स्वभाव बदल ले तो क्या उसके साथ रहने में कोई बुराई है। ऐसा सवाल समय की बरबादी है। जब बाघ अपना स्वभाव बदलेगा तो अंग्रेज अपना स्वभाव बदल लेंगे। यह संभव नहीं है और ऐसा मानना मानवीय अनुभव के विपरीत है।

उत्तर: मान लीजिए कि हमें कनाडा और दक्षिण अफ्रीका के समान स्वशासन मिल जाए, तो क्या यह पर्याप्त होगा?

प्रश्न: यह सवाल भी बेकार है। जब हमारे पास वही ताकत होगी, तो हम इसे पा लेंगे; तब हम अपना झंडा फहराएंगे। जैसा जापान है, वैसा ही भारत भी होना चाहिए। हमें अपनी नौसेना, अपनी सेना और अपना वैभव रखना चाहिए, तभी भारत की आवाज दुनिया भर में गूंजेगी।

उत्तर: आपने चित्र बहुत बढ़िया बनाया है। असल में इसका मतलब यह है कि हम अंग्रेज़ के बिना अंग्रेज़ी शासन चाहते हैं। आप बाघ का स्वभाव चाहते हैं, लेकिन बाघ नहीं; यानी आप भारत को अंग्रेज़ बनाना चाहते हैं। और जब यह अंग्रेज़ बन जाएगा, तो इसे हिंदुस्तान नहीं बल्कि इंग्लिस्तान कहा जाएगा। यह वह स्वराज नहीं है जो मैं चाहता हूँ।

प्रश्न सं . : मैंने आपके समक्ष स्वराज के बारे में अपना विचार प्रस्तुत कर दिया है, जैसा कि मैं सोचता हूँ कि यह होना चाहिए। लेकिन अब मैं आपके विचार जानना चाहता हूँ।

उत्तर : धैर्य की आवश्यकता है। इस चर्चा के दौरान मेरे विचार स्वयं विकसित होंगे। स्वराज की वास्तविक प्रकृति को समझना मेरे लिए उतना ही कठिन है जितना कि आपको आसान लगता है। इसलिए, फिलहाल मैं यह दिखाने का प्रयास करके संतुष्ट हो जाऊंगा कि जिसे आप स्वराज कहते हैं, वह वास्तव में स्वराज नहीं है।

पाठक: ऊपर जो कहा गया है, उसमें श्री गांधी ने हिंद स्वराज का वर्णन नहीं किया है, इस पर आप क्या कहेंगे? अब हम जानना चाहते हैं कि स्वराज क्या है, इस पर आपके क्या विचार हैं?

संपादक: स्वराज का मतलब है स्वयं का राज, मेरे घर में मेरा राज, श्री गांधी के घर में श्री गांधी का राज, मेरे गांव में मेरा राज, श्री गांधी के गांव में उनका राज, मेरे देश में मेरा राज, अमेरिका, रूस, चीन आदि देशों में मेरा राज, इतना ही स्वराज के लिए। सुराज (सुशासन), स्वराज (स्वशासन) और स्वयं पर शासन (स्व-नियंत्रण – जिसे आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वामी कहा जाता है) में स्पष्ट अंतर है और इसे ध्यान में रखना चाहिए।

– श्री गांधी ने 'भारत स्वतंत्र कैसे हो सकता है (हिंद स्वराज)' विषय पर स्वराज पर जो कहा, वह नीचे दिया गया है (इटैलिक में):

प्रश्न: यदि भारतीय सभ्यता, जैसा कि आप कहते हैं, सर्वोत्तम है तो आप भारत की गुलामी का क्या कारण बताते हैं?

उत्तर: यह सभ्यता निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन यह देखा जाना चाहिए कि सभी सभ्यताओं का परीक्षण किया गया है। जो सभ्यता स्थायी है, वह उससे अधिक समय तक जीवित रहती है। चूँकि भारत के पुत्रों को कमी पाई गई, इसलिए इसकी सभ्यता खतरे में पड़ गई। लेकिन इसकी ताकत इस आघात से बच निकलने की इसकी क्षमता में देखी जानी चाहिए। इसके अलावा, पूरा भारत अछूता नहीं है। केवल वे ही लोग गुलाम बन गए हैं जो पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हुए हैं। हम

ब्रह्मांड को अपने दयनीय पैर-नियम से मापते हैं। जब हम गुलाम होते हैं, तो हम सोचते हैं कि पूरा ब्रह्मांड गुलाम है। क्योंकि हम एक दयनीय स्थिति में हैं, हम सोचते हैं कि पूरा भारत उस स्थिति में है। वास्तव में, ऐसा नहीं है, फिर भी हमारी गुलामी को पूरे भारत पर आरोपित करना ठीक है। लेकिन अगर हम उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि अगर हम स्वतंत्र हो जाते हैं, तो भारत स्वतंत्र है। और इस विचार में आपके पास स्वराज की एक परिभाषा है। जब हम खुद पर शासन करना सीखते हैं तो वह स्वराज होता है। इसलिए, यह हमारे हाथ की हथेली में है। इस स्वराज को स्वप्न जैसा मत समझिए। चुपचाप बैठने का कोई विचार नहीं है। मैं जिस स्वराज की कल्पना करना चाहता हूँ, वह ऐसा है कि एक बार उसे प्राप्त करने के बाद, हम अपने जीवन के अंत तक दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करेंगे। लेकिन ऐसा स्वराज प्रत्येक को स्वयं अनुभव करना होगा। एक डूबता हुआ आदमी दूसरे को कभी नहीं बचा सकता। हम स्वयं गुलाम हैं, इसलिए दूसरों को मुक्त करने के बारे में सोचना केवल दिखावा होगा। अब आप देख चुके होंगे कि अंग्रेजों को भगाना हमारा लक्ष्य होना आवश्यक नहीं है। यदि अंग्रेज भारतीय हो जाएँ, तो हम उन्हें स्थान दे सकते हैं। यदि वे अपनी सभ्यता के साथ भारत में रहना चाहते हैं, तो उनके लिए कोई स्थान नहीं है। ऐसी स्थिति पैदा करना हमारा काम है।

पाठक: हम दैवीय शासन के विषय में और अधिक जानना चाहेंगे।

संपादक: हम सभी लोकतंत्र में दिव्यता चाहते हैं, लेकिन क्या आपको लगता है कि लोकतंत्र के मौजूदा स्वरूप को खत्म करना जरूरी है? सिर्फ लोगों को बदलने और भ्रष्टाचार को जन्म देने वाली व्यवस्था को बनाए रखने से लंबे समय में कोई बदलाव नहीं आएगा।

जहां तक दैवीय शासन का प्रश्न है, यह जनता द्वारा जनता के लिए तथा जनता की सरकार (लोकतंत्र) के संचालन में धर्म/प्राकृतिक कानून का अनुप्रयोग है।

वर्तमान में ज्ञात और लागू की गई सभी सरकारी प्रणालियाँ अपनी आबादी को मुक्ति दिलाने और बड़े पैमाने पर दुनिया के साथ व्यवहार करने में विफल रही हैं, और यह सरकार के कामकाज के तरीके में कुछ हटाने और कुछ जोड़ने की ज़रूरतों को इंगित करता है। मास्टर कहते हैं कि जिस सरकार में आध्यात्मिकता होगी या कहें कि लोकतंत्र में दिव्यता होगी, वह सरकार का सबसे अच्छा रूप होगा।

– दैवीय शासन वास्तविक अर्थों में जनता के लिए जनता द्वारा जनता का शासन होगा, न कि धनवानों के धनवानों द्वारा और धनवानों के लिए शासन होगा तथा आम जनता के लिए धनवानों तक जेट स्ट्रीम पहुंचाने के लिए सक्शन पंप की तरह काम करेगा, या सरकार सरकारी कर्मचारी द्वारा, सरकारी कर्मचारी की और सरकारी कर्मचारी के लिए होगी।

– दैवीय शासन, चयनित एवं निर्वाचित लोगों द्वारा, लोगों का और लोगों के लिए शासन है, जिसमें नेताओं का चयन लोगों द्वारा किया जाएगा; इसके निर्णय की जांच गुरुओं द्वारा की जाएगी और आपातकाल में देश के आध्यात्मिक गुरु द्वारा प्रतिबंधित किया जाएगा तथा उस पर वीटो लगाया जा सकेगा, ताकि व्यवस्था में नैतिकता बनी रहे, समाज में स्वास्थ्य और खुशी बनी रहे और बनी रहे।

इसके अलावा, कई गुरु एक ऐसी सरकार स्थापित करने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं, जहां झुग्गी-झोपड़ियों और घोटालों को खत्म किया जा सके और आध्यात्मिकता को स्थापित और फैलाया जा सके, इसलिए सभी के लिए बेहतर होगा कि वे सामूहिक प्रयास के समेकन और अंतिम रूप देने की प्रतीक्षा करें कि दैवीय शासन क्या और क्यों हो, और दैवीय शासन कब, कैसे और कहां शुरू किया जाए।

पाठक: क्या दैवीय सत्ता पश्चिमी दुनिया के लिए एक नई अवधारणा होगी?

संपादक: 'सबसे अच्छी शासन-व्यवस्था क्या हो सकती है' विषय पर आयोजित एक सम्मेलन में (जिसमें विदेश मंत्री, राजनीतिक विचारक और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे) एक वक्ता ने कहा था कि, 'यदि हममें से कोई भी व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षण में दुर्बल, असहाय, निराश्रित या हताश हो जाए, तो उस समय हमारी सरकार से क्या अपेक्षा होगी? जो सरकार उस समय हमारी अपेक्षाओं को पूरा कर सके, उसे ही अच्छी सरकार कहा जा सकता है।

यह देखा गया है कि लोग अपनी गहरी निराशा और लाचारी में दैवीय शक्ति को याद करते हैं, और यदि सरकार आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम है तो यह कहा जा सकता है कि उसके लिए दैवीय शक्ति है, अर्थात् सभी के लिए दैवीय शक्ति है।

इसलिए यह कहना कि पश्चिमी विचारक/दार्शनिक इस दिशा में नहीं सोचते, उचित नहीं है और इसलिए दैवीय शासन को पश्चिमी दुनिया के लिए एक नई अवधारणा नहीं कहा जा सकता है।

पाठक: आप इस बात से सहमत होंगे कि पश्चिम में लोकतंत्र का वर्तमान स्वरूप राजा और धर्मगुरु की मिलीभगत से होने वाले अत्याचारों को दूर करने के लिए लोगों के प्रयास से आया है?

संपादक: (1) आप सही कह रहे हैं। राजाओं द्वारा धर्म से जुड़ी भावनाओं का उपयोग और पुरोहितों द्वारा राजा से जुड़ी शक्ति का उपयोग करने से लोगों की मानसिकता को बहुत नुकसान पहुंचा है, जिसके कारण जनता को दोनों को त्यागना पड़ा। पश्चिमी देशों में इसे एक स्वागत योग्य बदलाव माना गया। इसके अलावा, अपनी बात को साबित करने के लिए लोकतंत्र के मौजूदा स्वरूप और राजाओं और धर्मगुरुओं के बीच मिलीभगत के दुष्परिणामों के पक्षधर मुस्लिम देशों की ओर इशारा कर रहे हैं, जहां लड़ाई की होड़ मची हुई है।

(2) गुरुओं/ऋषियों द्वारा कहा गया है कि आध्यात्मिकता आधार है और राजनीति (राजनीति-सरकार की नैतिकता) उस पर निर्मित अधिरचना है', बिना आधार के राजनीति (राजनीति) निराधार है और आध्यात्मिक रूप से बिना संरचना के खुली भूमि या बंजर भूमि या जंगल की तरह है। और इस प्रकार दोनों का अपना महत्व है; भूमिका उलटना या दोनों एक ही भूमिका निभाना पश्चिमी दुनिया में समस्या थी और कुछ मुस्लिम देशों में समस्या है जो लड़ाई की होड़ में हैं। इसलिए सरकार और धार्मिक प्रमुखों के बीच मिलीभगत का ध्यान रखा जाना चाहिए और निश्चित रूप से दैवीय शासन ने इन मुद्दों को संबोधित किया है।

3) दैवीय शासन ने कट्टरपंथियों की निरंकुशता, असहिष्णुता और पूजा स्थलों तथा शोक/उत्सवों के दौरान किए जाने वाले समारोहों में पुजारियों के कर्मकांडी रवैये के मुद्दों को भी संबोधित किया।

पाठक: आपने जो संकेत दिया है, उसके अनुसार दैवीय शासन ही सर्वोत्तम शासन प्रणाली है। क्या पश्चिमी देशों ने भी आपके भाषण 'सर्वोत्तम शासन प्रणाली क्या हो सकती है' से यही निष्कर्ष निकाला है? यदि नहीं, तो फिर उन्होंने अपने देशों में जो किया है, वह सबसे कमजोर और असहाय लोगों की इच्छाओं को समझकर किया है।

संपादक: जो कोई भी इस भाषण से वास्तविक निष्कर्ष निकालेगा कि 'सबसे अच्छी शासन प्रणाली क्या हो सकती है', वह भी यही कहेगा, यानी लोकतंत्र की ओर इशारा करेगा जिसमें ईश्वरत्व/दिव्यता हो। लेकिन स्वतंत्रता के लिए राज्य और क्षेत्र के लिए धर्म को अस्वीकार करने के बाद पूरी बात पर पुनर्विचार करना बहुत कठिन है, इसलिए आध्यात्मिकता पर विचार करने

के बजाय उन्होंने अपने नागरिकों के लिए बहुत सारे कल्याणकारी उपाय शुरू किए हैं। उनके कल्याणकारी उपाय इतने अधिक हैं कि वे (पश्चिमी दुनिया के लोकतांत्रिक देश) वास्तव में कल्याणकारी सरकार होने का दावा करते हैं।

पाठक: यदि ऐसा है कि 'वे (पश्चिमी विश्व के लोकतांत्रिक देश) वास्तव में कल्याणकारी सरकार होने का दावा करते हैं' तो फिर आपको क्यों लगता है कि उन देशों में भी दैवीय शासन की आवश्यकता है?

संपादक: अपने नागरिकों की मदद करने की उनकी गंभीर इच्छा में वे एक चीखती हुई बड़बड़ाहट की मीनार या सोने की लंका खड़ी करते दिखते हैं। उनकी भौतिकवादी इच्छाएं अंतहीन होती जा रही हैं, और उन्हें बिना किसी सांत्वना या संतुष्टि के बेचैन रखती हैं। भ्रातृहत्या युद्ध (दो भ्रातृहत्या युद्धों और संभावित चौथे विश्व युद्ध की तैयारी के साथ चल रहे आर्थिक युद्ध के बाद) को टालने या युद्ध के बाद सांत्वना प्रदान करने के लिए दैवीय शासन आवश्यक है।

पाठक: लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप की तुलना में दैवीय शासन में आप क्या बड़ा बदलाव देखते हैं?

संपादक: लोकतंत्र अपने वर्तमान स्वरूप में प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ने का प्रयास करता है और इसलिए किसी से भी नहीं जुड़ पाता या जुड़ने में असफल हो जाता है और परिवार और समाज में विघटन पैदा कर देता है और लोकतंत्र में हम जो भी समस्याएं देखते हैं, उनका मूल कारण यही है।

चूंकि दैवीय सत्ता में आस्था और पारस्परिक विश्वास अर्थात् आध्यात्मिकता ही आधार है, इसलिए इसमें निश्चित रूप से एकीकरण की शक्ति है।

पाठक: क्या लोकतंत्र एक अवधारणा के रूप में सचमुच असफल हो गया है?

संपादक: लोकतंत्र का वर्तमान स्वरूप इंग्लैंड, अमेरिका और कई अन्य देशों में सिर्फ इसलिए काम कर रहा है क्योंकि हमें इसका कोई विकल्प नहीं मिला है। जैसे ही हमें कोई कारगर विकल्प मिल जाएगा, लोकतंत्र का वर्तमान स्वरूप खत्म हो जाएगा या उसमें डूब जाएगा। लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप में- बुद्धिमान रोता है, साधारण काम करता है और कष्ट उठाता है, लेकिन धोखेबाज़ मौज करता है। ऐसी स्थितियों की सराहना नहीं की जा सकती। ***

लोकतांत्रिक देशों की स्थिति

पाठक: तो फिर आपके कथन से मेरा यह निष्कर्ष है कि इंग्लैंड और अमेरिका जैसे तथाकथित लोकतांत्रिक देशों की व्यवस्था न तो हमारे द्वारा अनुकरण करने योग्य है और न ही उनके द्वारा जारी रखने योग्य है।

संपादक: आप सही कहते हैं। इंग्लैंड, अमेरिका, तथा कुछ पश्चिमी और कुछ महत्वपूर्ण पूर्वी लोकतांत्रिक देशों की हालत बहुत खराब है। इन देशों में लोकतंत्र ने दानव-तंत्र (शैतान की सरकार) का रूप ले लिया है। वहां के सरकारी अधिकारियों, न्यायपालिका और मीडियाकर्मियों की भूख इतनी बढ़ गई है कि उन्हें जीवित रहने के लिए एक के बाद एक लूट का समर्थन करना पड़ता है। इसने ऐसा रूप ले लिया है कि देश में जीवित रहने के लिए एक के बाद एक वस्तुओं का भंडारण और दलाली, एक के बाद एक वस्तुओं को खराब करना और चूसना आवश्यक हो गया है। और इस तरह से इन प्रणालियों की नकल करना ही उचित नहीं है, बल्कि इस तरह से लोकतंत्र को जारी रखना उनके लिए अच्छा भी नहीं है।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर है:

इंग्लैंड की स्थिति:

उत्तर: आपकी धारणा उचित है। वर्तमान में इंग्लैंड की स्थिति दयनीय है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि भारत कभी भी उस दुर्दशा में न पड़े। जिसे आप संसदों की जननी मानते हैं, वह बाँझ स्त्री और वेश्या के समान है। ये दोनों कठोर शब्द हैं, लेकिन मामले के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं। उस संसद ने अभी तक अपनी इच्छा से एक भी अच्छा काम नहीं किया है। इसलिए मैंने उसकी तुलना बाँझ स्त्री से की है। उस संसद की स्वाभाविक स्थिति ऐसी है कि बाहरी दबाव के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकती। वह वेश्या के समान है, क्योंकि वह समय-समय पर बदलते रहने वाले मंत्रियों के नियंत्रण में है। आज वह श्री एस्क्विथ के अधीन है, कल वह श्री बाल्फोर के अधीन हो सकती है।

प्रश्न: आपने व्यंग्यात्मक ढंग से कहा है। "बाँझ औरत" शब्द लागू नहीं होता। संसद जनता द्वारा चुनी जाती है, इसलिए उसे जनता के दबाव में काम करना पड़ता है। यही इसकी खूबी है।

उत्तर: आप गलत हैं। आइए हम इसे थोड़ा और करीब से देखें। माना जाता है कि सबसे अच्छे लोगों को जनता द्वारा चुना जाता है। सदस्य बिना वेतन के काम करते हैं और इसलिए, यह मान लेना चाहिए कि वे केवल सार्वजनिक धन के लिए काम करते हैं। मतदाताओं को शिक्षित माना जाता है और इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि वे आम तौर पर अपने चुनाव में गलती नहीं करेंगे। ऐसी संसद को याचिकाओं या किसी अन्य दबाव की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। इसका काम इतना सुचारु होना चाहिए कि इसका प्रभाव दिन-प्रतिदिन अधिक स्पष्ट हो। लेकिन, वास्तव में, यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि सदस्य पाखंडी और स्वार्थी हैं। प्रत्येक अपने स्वयं के छोटे हित के बारे में सोचता है। यह डर ही है जो मार्गदर्शक मकसद है। आज जो किया जाता है वह कल खत्म हो सकता है। ऐसा एक भी उदाहरण याद नहीं आता जिसमें इसके काम के लिए अंतिम रूप से भविष्यवाणी की जा सके। जब सबसे बड़े सवाल पर बहस होती है, तो इसके सदस्यों को खुद को खींचते और झपकी लेते देखा गया है। कभी-कभी सदस्य तब तक बोलते रहते हैं जब तक कि श्रोताओं को घृणा न हो जाए। कार्लाइल ने इसे "दुनिया की बात करने वाली दुकान" कहा है। सदस्य बिना सोचे-समझे अपनी पार्टी के लिए वोट देते हैं। उनका तथाकथित अनुशासन उन्हें इससे बांधता है। यदि अपवादस्वरूप कोई सदस्य स्वतंत्र मत देता है, तो उसे विश्वासघाती माना जाता है। यदि संसद द्वारा बरबाद किया गया धन और समय कुछ अच्छे लोगों को सौंप दिया जाता, तो अंग्रेजी राष्ट्र आज बहुत ऊंचे स्थान पर होता। संसद राष्ट्र का एक महंगा खिलौना मात्र है। ये विचार मेरे लिए किसी भी तरह से अनोखे नहीं हैं। कुछ महान अंग्रेजी विचारकों ने इन्हें व्यक्त किया है। उस संसद के एक सदस्य ने हाल ही में कहा कि एक सच्चा ईसाई इसका सदस्य नहीं बन सकता। दूसरे ने कहा कि यह एक शिशु है। और यदि यह सात सौ वर्षों के अस्तित्व के बाद भी शिशु ही बना हुआ है, तो यह अपने शिशुत्व से कब बाहर निकलेगा?

प्रश्न: आपने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया है; आप मुझसे यह अपेक्षा नहीं करते कि मैं आपकी कही हर बात को तुरंत मान लूं। आपने मुझे बिलकुल नए विचार दिए हैं। मुझे उन्हें पचाना होगा। क्या अब आप "वेश्या" शब्द की व्याख्या करेंगे?

उत्तर: आप मेरे विचारों को एक बार में स्वीकार नहीं कर सकते, यह सही है। यदि आप इस विषय पर साहित्य पढ़ेंगे, तो आपको इसका कुछ अंदाजा हो जाएगा। संसद का कोई वास्तविक स्वामी नहीं है। प्रधानमंत्री के अधीन, इसकी गति स्थिर नहीं है, बल्कि यह वेश्या की तरह इधर-उधर धंसी हुई है। प्रधानमंत्री को संसद के कल्याण से अधिक अपनी सत्ता की चिंता है। उनकी ऊर्जा अपनी पार्टी की सफलता सुनिश्चित करने पर केंद्रित है। उनकी चिंता हमेशा यह नहीं होती कि

संसद सही काम करे। प्रधानमंत्री के बारे में यह जाना जाता है कि वे संसद से केवल पार्टी के लाभ के लिए काम करवाते हैं। यह सब सोचने लायक है।

प्रश्न: तो फिर आप वास्तव में उन्हीं लोगों पर हमला कर रहे हैं जिन्हें हम अब तक देशभक्त और ईमानदार मानते रहे हैं?

उत्तर: हां, यह सच है; मैं प्रधानमंत्रियों के खिलाफ कुछ नहीं कह सकता, लेकिन मैंने जो देखा है, उससे मुझे लगता है कि उन्हें वास्तव में देशभक्त नहीं माना जा सकता। अगर उन्हें ईमानदार माना जाए क्योंकि वे आम तौर पर रिश्वत नहीं लेते, तो उन्हें ऐसा ही माना जाए, लेकिन वे सूक्ष्म प्रभावों के लिए खुले हैं। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, वे निश्चित रूप से लोगों को सम्मान के साथ रिश्वत देते हैं। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि उनके पास न तो वास्तविक ईमानदारी है और न ही जीवित विवेक।

प्रश्न: जैसा कि आप संसद के बारे में ये विचार व्यक्त कर रहे हैं, मैं अंग्रेजी लोगों के बारे में भी आपसे सुनना चाहूंगा, ताकि मैं उनकी सरकार के बारे में आपके विचार जान सकूँ।

उत्तर: अंग्रेजी मतदाताओं के लिए उनका अखबार ही उनकी बाइबिल है। वे अपने अखबारों से ही प्रेरणा लेते हैं जो अक्सर बेईमान होते हैं। एक ही तथ्य की अलग-अलग अखबारों द्वारा अलग-अलग व्याख्या की जाती है, जिस पार्टी के हित में वे संपादित होते हैं उसके अनुसार। एक अखबार किसी महान अंग्रेज को ईमानदारी का आदर्श मानता है, तो दूसरा उसे बेईमान मानता है। जिन लोगों के अखबार इस प्रकार के हैं, उनकी क्या स्थिति होगी?

प्रश्न सं. टी.: आपको इसका वर्णन करना होगा।

उत्तर: ये लोग बार-बार अपने विचार बदलते हैं। कहा जाता है कि ये हर सात साल में अपना विचार बदल देते हैं। ये विचार घड़ी के पेंडुलम की तरह घूमते रहते हैं और कभी स्थिर नहीं रहते। लोग शक्तिशाली वक्ता या ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करेंगे जो उन्हें पार्टी, रिसेप्शन आदि देता है। जैसे लोग होते हैं, वैसी ही उनकी संसद होती है। उनमें एक गुण अवश्य है जो बहुत प्रबल रूप से विकसित है। वे अपने देश को कभी नहीं खोने देंगे। अगर कोई व्यक्ति इस पर बुरी नज़र डाले, तो वे उसकी आँखें फोड़ देंगे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि देश में हर दूसरा गुण मौजूद है या इसकी नकल की जानी चाहिए। अगर भारत इंग्लैंड की नकल करता है, तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह बर्बाद हो जाएगा।

प्रश्न: आप इंग्लैंड की इस स्थिति का श्रेय किसको देते हैं?

उत्तर: यह अंग्रेजों की किसी विशेष गलती के कारण नहीं है, बल्कि आधुनिक सभ्यता के कारण है। यह केवल नाम की सभ्यता है। इसके अंतर्गत यूरोप के राष्ट्र दिन-प्रतिदिन पतित और बर्बाद होते जा रहे हैं। **

पाठक: लेकिन आप इस बात से सहमत होंगे कि भारत ने धर्म-निर्पक्ष संसदीय लोकतंत्र को चुना है। भारत के लोकतांत्रिक होने और श्री गांधी के साथ हमारे सम्मानित स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयासों पर आप क्या कहना चाहेंगे?

संपादक: 1) दुनिया के सबसे महान लोकतंत्र भारत ने लोकतांत्रिक बने रहने और धर्म-निर्पक्ष रहने का फैसला किया। मैं हमारे सम्मानित स्वतंत्रता सेनानियों की पूरी बिरादरी को सलाम करता हूँ, और यह जोड़ना चाहूँगा कि स्वतंत्रता सेनानी जो बुनियादी मुद्दे उठा रहे थे और हिंद स्वराज (1908) जिसे श्री गांधी ने 1921 में खुद ही छोड़ दिया था और जिसे नीचे इटैलिक में पुनः प्रस्तुत किया गया है, वे आज भी प्रासंगिक हैं। इन सभी मुद्दों पर नए सिरे से विचार करने और हमारे शासन करने के तरीके में आवश्यक बदलाव लाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है।

2) श्री गांधी ने लोकतंत्र के खिलाफ बहुत कुछ कहा है जैसे (ए) "संसद एक बांझ महिला की तरह है और प्रधानमंत्री एक वेश्या है। ये दोनों कठोर शब्द हैं, लेकिन मामले पर बिल्कुल फिट बैठते हैं",

(बी) यदि भारत इंग्लैंड की नकल करेगा तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह बर्बाद हो जाएगा,

(सी) संसदें वास्तव में गुलामी की प्रतीक हैं,

लेकिन जनता और राजनीतिक दल जो श्री गांधी के प्रति सम्मान दिखाते हैं और जो श्री गांधी के नाम पर वोट मांगते हैं, वे उनकी टिप्पणियों का सम्मान नहीं करते हैं।

3) संसद न तो बांझ महिला है और न ही प्रधानमंत्री वेश्या। श्री गांधी ने इंग्लैंड के लोकतंत्र के बारे में जो वर्णन किया है, वह मूल रूप से लोकतंत्र नहीं है, बल्कि इंग्लैंड के साम्राज्य द्वारा अपने देश के लोगों के साथ-साथ अन्य देशों के लोगों पर शासन करने और उन्हें मूर्ख बनाने के लिए तैयार

की गई प्रणाली है। यदि इंग्लैंड एक लोकतांत्रिक देश है, तो तथाकथित राजा और रानी, राजकुमार और राजकुमारी के अस्तित्व/उपस्थिति और निरंतरता का वर्णन कैसे किया जाएगा।

-अमेरिका का लोकतंत्र राजपरिवार विहीन है और इसे इंग्लैंड के तथाकथित लोकतंत्र-पाखंड की प्रणाली से एक कदम आगे कहा जा सकता है, लेकिन अमेरिका में राजपरिवारों के स्थान पर धनाढ्य/कॉर्पोरेट घराने देश चलाते हैं, चाहे राष्ट्रपति या सीनेट कोई भी हो।

-दुनिया के कई देशों का लोकतंत्र इंग्लैंड और अमेरिका के बीच है और कई देशों में यह और भी बदतर है जहां सेना लोकतांत्रिक व्यवस्था का नियंत्रण अपने हाथ में ले लेती है और फिर सभी अधिकारी सेना के जनरलों की धुन पर नाचते हैं और सभी जनरल विदेशी शक्तियों के इशारों पर नाचते हैं, लेकिन फिर भी वे अराजकता से तीरंदाजी, तानाशाही, अभिजात वर्ग और अभिजात वर्ग और लोकतंत्र के मिश्रण तक एक कदम आगे हैं।

पाठक: नीचे श्री गांधी द्वारा संसदीय लोकतंत्र पर हिंद स्वराज का अंश दिया गया है (इटैलिक में):

"इस समय इंग्लैंड की हालत बहुत दयनीय है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि भारत की हालत कभी ऐसी न हो। जिसे आप संसदों की जननी मानते हैं, वह बाँझ औरत और वेश्या के समान है। ये दोनों शब्द कठोर हैं, लेकिन मामले के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं। उस संसद ने अभी तक अपनी इच्छा से एक भी अच्छा काम नहीं किया है। इसलिए मैंने उसकी तुलना बाँझ औरत से की है। उस संसद की स्वाभाविक स्थिति ऐसी है कि बाहरी दबाव के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकती। वह वेश्या के समान है, क्योंकि वह समय-समय पर बदलने वाले मंत्रियों के नियंत्रण में है। आज वह श्री एस्क्विथ के अधीन है, कल वह श्री बाल्फोर के अधीन हो सकती है।"

जिसमें श्री गांधी ने कहा था: मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि भारत कभी ऐसी दुर्दशा में न पड़े।

और 1908 में पुस्तक (हिंद स्वराज) के अंत में, श्री गांधी ने कहा (इटैलिक में):

मेरी राय में, हमने "स्वराज" शब्द का इस्तेमाल इसके वास्तविक महत्व को समझे बिना किया है। मैंने इसे जिस तरह से समझा है, उसे समझाने का प्रयास किया है और मेरी अंतरात्मा गवाही देती है कि अब से मेरा जीवन इसकी प्राप्ति के लिए समर्पित है।

लेकिन हिंद स्वराज (1921 में लिखित) की प्रस्तावना में श्री गांधी ने उल्लेख किया है कि.

श्री गांधी: "यह पुस्तिका "आधुनिक सभ्यता" की कड़ी निंदा करती है। यह 1908 में लिखी गई थी। आज मेरा विश्वास पहले से कहीं अधिक गहरा है। मुझे लगता है कि अगर भारत "आधुनिक सभ्यता" को त्याग देगा, तो ऐसा करने से उसे केवल लाभ ही होगा। लेकिन मैं पाठकों को यह न सोचने के लिए आगाह करना चाहूँगा कि मैं आज उसमें वर्णित स्वराज की बात कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि भारत इसके लिए तैयार नहीं है। ऐसा कहना शायद अशिष्टता लगे, लेकिन मेरा विश्वास ऐसा ही है। मैं व्यक्तिगत रूप से उसमें चित्रित स्वशासन के लिए काम कर रहा हूँ। लेकिन आज मेरी सामूहिक गतिविधि निस्संदेह भारत के लोगों की इच्छाओं के अनुसार **संसदीय स्वराज की प्राप्ति के लिए समर्पित है । ****

क्या आपको लगता है कि श्री गांधी जब पुस्तक लिख रहे थे तो उनका आकलन गलत था या उन्होंने अपने समय के राजनीतिक सहयोगी के सामने हार मान ली थी?

हमें लगता है कि यह वैसा ही है जैसा हम रोज़ करते हैं – कि लड़के पैसे और प्रेमिका के साथ रोमांस की बुराई करते हैं और बाद में कहते हैं कि "मैं अपने दोस्तों को यह न सोचने के लिए आगाह कर दूँगा कि मैं आज पहले बताए गए विवाह के लिए तैयार हूँ। मुझे पता है कि परिवार इसके लिए तैयार नहीं है। ऐसा कहना शायद अशिष्टता लगे, लेकिन मेरा ऐसा मानना है। मैं व्यक्तिगत रूप से पहले दिखाए गए विवाह के लिए काम कर रहा हूँ। लेकिन आज मेरी सामूहिक गतिविधि निस्संदेह परिवार के लोगों की इच्छा के अनुसार, पैसे के साथ विवाह करने के लिए समर्पित है"।

और फिर 1933 में श्री गांधी ने हिंद स्वराज में लिखा:

पाठक के लिए

मैं अपने लेखन के मेहनती पाठकों और उनमें रुचि रखने वाले अन्य लोगों से कहना चाहता हूँ कि मैं सुसंगत दिखने की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता। सत्य की खोज में मैंने कई विचारों को त्याग दिया है और कई नई चीजें सीखी हैं। मेरी उम्र चाहे जितनी भी हो, मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं आंतरिक रूप से विकसित होना बंद कर चुका हूँ या मेरा विकास शरीर के विघटन पर रुक जाएगा। मैं जिस चीज से चिंतित हूँ, वह है सत्य, मेरे ईश्वर की पुकार का हर पल पालन करने

की मेरी तत्परता, और इसलिए, जब किसी को मेरे किसी दो लेखन में कोई असंगति मिले, तो अगर उसे अभी भी मेरी समझदारी पर भरोसा है, तो उसे एक ही विषय पर दो में से दूसरे को चुनना चाहिए।

एम.के. गांधी, अप्रैल, 1933,

उपरोक्त विरोधाभासों के बारे में आप क्या कहते हैं?

संपादक: (1) जब भी कोई यह शब्द प्रयोग करता है कि मैं व्यक्तिगत रूप से 'अ' की प्राप्ति के लिए काम कर रहा हूँ, जैसा कि मैंने लिखा है, लेकिन आज मेरा सामूहिक कार्य निस्संदेह 'अ' के विपरीत, लोगों की इच्छा के अनुसार, प्राप्ति के लिए समर्पित है, तो यह स्पष्ट रूप से विभाजित व्यक्तित्व या दोगले व्यक्तित्व का मामला है, यदि पाखंड नहीं है (मनोवैज्ञानिक बेहतर बता सकेंगे)।

आम तौर पर लोग महान नेताओं के व्यक्तिगत कार्यों का अनुसरण करते हैं और उसका अनुकरण करते हैं, लेकिन जब नेता एक गुण को व्यक्तिगत गुण के रूप में प्रदर्शित करते हैं और जनता को उसका अनुसरण करने के लिए संगठित करते हैं, लेकिन कॉर्पोरेट की मजबूरियों का हवाला देते हुए बंद कमरे में होने वाली बैठकों में इसके विपरीत गुण प्रदर्शित करते हैं, तो उच्चतम स्तर पर जनता को धोखा दिया जाता है। जब भी ऐसा धोखा होता है, तो न केवल व्यक्ति बल्कि उसकी संतान भी पीड़ित होती है और ऐसे लोगों के लिए सुखद अंत/मृत्यु (जिसे हिंदुओं में सातवां सुख माना जाता है) संभव नहीं होता है।

(2) यह सबसे बुनियादी गलती है जो श्री गांधी और कुछ बड़े राजनीतिक दलों ने की है, जैसे कि बहुजन समाज बनाम सर्वजन समाज के मुद्दे पर।

(3) उन मुद्दों पर जहां आपने कार्य के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है— श्री गांधी की तरह: (मेरे विचार से लिखे गए हिंद स्वराज के अंत में हमने स्वराज शब्द का प्रयोग इसके वास्तविक महत्व को समझे बिना किया है। मैंने इसे जिस रूप में समझा है, उसे समझाने का प्रयास किया है और मेरी अंतरात्मा गवाही देती है कि अब से मेरा जीवन इसकी प्राप्ति के लिए समर्पित है। "जीवन के साथ रक्षा करने योग्य है" (समर्पण सही है या गलत यह पूरी तरह से एक अलग सवाल है। क्योंकि निर्णय प्रकृति का हिस्सा है, व्यक्ति का नहीं) और इसके लिए हमारे पास कथन है 'प्राण जाए पर वचन न जाए (जीवन जाने दो पर प्रतिबद्धता नहीं)'। जो कोई भी सार्वजनिक या निजी डोमेन में

इस मानदंड का उल्लंघन करता है, उसे प्रकृति द्वारा गंभीर रूप से लेकिन गुप्त रूप से दंडित किया जाता है, चाहे वह श्री गांधी हों या कोई राजनीतिक पार्टी या कोई भी लड़का जो हनी के साथ रोमांस करता है और पैसे से शादी करता है और न केवल संबंधित व्यक्ति बल्कि संतान सहित सभी सदस्य पीड़ित होते हैं जो पैसे से शादी करके नई-नई स्थिति से लाभान्वित होने की कोशिश करते हैं (उन लोगों के परिवार का अभिशाप हमेशा आपका पीछा करेगा जब आप अपनी प्रतिबद्धता का सम्मान नहीं करते हैं या बीच में अपनी प्राथमिकता बदल दें)।

(4) इन्हें अंडरवर्ल्ड में भूल माना जाता है, चाहे वह गुंडों का अंडरवर्ल्ड हो या भगवान का, प्रतिबद्धता का कोई भी उल्लंघन निश्चित रूप से सर्किट से अलगाव (अस्वीकृति, निष्कासन और निराशा) है और शारीरिक रूप से समाप्त नहीं होने पर अंडरवर्ल्ड से बाहर निकलना है।

(5) "मैं जानता हूँ कि भारत इसके लिए तैयार नहीं है। ऐसा कहना शायद अशिष्टता लगे। लेकिन यह मेरा दृढ़ विश्वास है" – ऐसा कहते समय श्री गांधी यह भूल गए कि यदि परिस्थितियाँ परिपक्व होतीं तो कोई भी यह कर सकता था और इसमें कोई महानता नहीं जुड़ी होती। इसके अलावा जब आप अपनी सबसे बुनियादी प्रतिबद्धता से समझौता करते हैं तो आप खुद पर भरोसा खो देते हैं और आम तौर पर किसी अन्य मुद्दे या प्रतिबद्धता के लिए खड़े होने का उतना साहस नहीं रखते और दूसरे लोगों को लगता है कि आप समझौता कर लेंगे और इसके लिए कठोर दबाव नहीं डालेंगे। यह समझौता या रुख में बदलाव सौदेबाजी का संकेत और शुरुआत माना जाता है चाहे वह राजनीति का व्यापार हो या देह व्यापार (भगवान का नाम लेना दूसरों और खुद को मूर्ख बनाने का प्रयास है)।

6) यदि किसी पिता को लगता है कि सुरक्षित यौन संबंध और साथी बदलना बांझपन और वेश्यावृत्ति का प्रतीक है तो वह यह राय रखने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन यदि कल को वह पिता न केवल अपने बच्चों के लिए सुरक्षित यौन संबंध और साथी बदलने को स्वीकार कर ले, बल्कि यह भी कहे कि बच्चों को बांझ होना चाहिए और वेश्यावृत्ति करानी चाहिए, यह उसका अपना सामूहिक कार्य है, यह कहते हुए कि यह परिवार के सदस्य की इच्छा के अनुसार है, तो हम क्या कहेंगे?

श्री गांधी का मानना है कि (इटैलिक में):

(क) 'संसद बांझ स्त्री और वेश्या के समान है, (ख) यदि भारत इंग्लैंड की नकल करता है तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह बर्बाद हो जाएगा, (ग) संसदें वास्तव में गुलामी की प्रतीक हैं, और फिर

कहा 'आज मेरी सामूहिक गतिविधि निस्संदेह भारत के लोगों की इच्छा के अनुसार संसदीय स्वराज की प्राप्ति के लिए समर्पित है।

जनवरी, 1921.

इसके अलावा उन्होंने स्वयं को बापू कहलाना स्वीकार किया, इससे यह संकेत मिलता है कि उन्होंने एक ऐसी व्यवस्था को अनुमति दी या उसके लिए काम किया, जहां उनकी भावी पीढ़ी उन लोगों द्वारा शासित होगी, जिन्हें वे 'बांझ महिला और वेश्या, गुलामी के प्रतीक' मानते हैं, न कि हम श्री गांधी को क्या कहेंगे?

(7) इस तरह की प्रगति (जैसा कि आपके प्रश्न के अंतिम पैरा में बताया गया है) आमतौर पर दोस्तों, परिवार और यहां तक कि दुश्मनों द्वारा भी पसंद नहीं की जाती है। मुझे नहीं पता कि श्री गांधी ने उन्हें ऐसा लिखने की अनुमति क्यों और कैसे दी (इटैलिक में):

'जब किसी को मेरे द्वारा लिखे गए किन्हीं दो लेखों में कोई असंगति नजर आए, तो यदि उसे अब भी मेरी विवेकशीलता पर विश्वास हो, तो उसके लिए बेहतर होगा कि वह उसी विषय पर लिखे गए दो लेखों में से बाद वाले को चुन ले', जहां उन्होंने स्वयं लिखा है:

"हमने जो अनुभव की कसौटी पर परखा है और जो सत्य पाया है, उसे हम बदलने की हिम्मत नहीं कर सकते। कई लोगों ने भारत पर अपनी सलाह थोपी है, और वह स्थिर है। यही उसकी खूबसूरती है: यह हमारी उम्मीद का आधार है। **

आम तौर पर इसका प्रयोग रणनीतिक रूप से किया जाता है लेकिन इसे पहले की मूर्खता और भविष्य के अविश्वास के रूप में माना जाता है (बैंकों, सरकारी कार्यालयों और अदालतों में वे कहते हैं कि मनुष्य एक बढ़ती हुई इकाई है और इसलिए वे अंतिम इच्छा को अंतिम इच्छा के रूप में स्वीकार करते हैं)।

--मेरे हिसाब से अगर कोई व्यक्ति प्रतिबद्धता को संभालने में सक्षम नहीं है तो चुप रहना (प्रार्थना करना और कोशिश करते रहना) समझौता करने से बेहतर विकल्प है (अगर कोई मरने से नहीं डरता जो आखिरकार हर कोई करता है), और यह दर्शाता है कि किसी व्यक्ति या बड़े पैमाने पर लोगों के लिए खुद को समर्पित करते समय बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए। भगवान के प्रति प्रतिबद्ध होने के बजाय लोग भगवान के नाम पर प्रतिबद्ध होते हैं, इसलिए समस्याएँ होती हैं।

परख कर बोलो, बोल कर खड़े हो जाओ। प्रकृति में जहाँ सब कुछ बदलता रहता है, वहाँ जो नहीं बदलते बल्कि ताजे रहते हैं, उन्हें सनातन धर्म कहते हैं।

पाठक: आपका उत्तर बहुत अंधविश्वासी, सामंती लगता है और इसमें बहुत अधिक भावनात्मकता के साथ आदिम भाषा का प्रयोग किया गया है। हम देखते हैं कि सरकार, बड़े लोग और राजनीतिक दल कभी भी अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा नहीं करते हैं, बल्कि वे कहते हैं कि प्रतिबद्धताएँ तोड़ने के लिए होती हैं, निभाने के लिए नहीं और वे मूर्ख हैं जो अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करते हैं।

संपादक: ऐसा लगता ही नहीं, बल्कि यह भी पता चलता है कि न तो आप हमारे रोजमर्रा के जीवन में, व्यापार में काम करना जानते हैं, न ही आप प्रतिष्ठित, सम्माननीय, विश्वसनीय, प्रशंसनीय बनने की प्रक्रिया से परिचित हैं, न ही विश्वसनीय बनने की बात जानते हैं। परिवार, मित्र और शत्रुओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करने वाले ही आगे बढ़ते हैं, बाकी लोग या तो मर जाते हैं या फिर खुद ही बनाए गए फाँसी के फंदे में झूलते रहते हैं।

ऐसी स्थिति जिसमें सरकार, बड़े लोग और राजनीतिक दल यह कहने लगे कि वादे तोड़ने के लिए होते हैं, निभाने के लिए नहीं, बल्कि वे कहें कि जो लोग वादे पूरे करते हैं और जो वादे पूरे नहीं करते, वे मूर्ख हैं, उनकी इस प्रतिमान के आधार पर सराहना नहीं की जा सकती और इस प्रकार बनी सभ्यता को सभ्यता नहीं कहा जा सकता, बल्कि उसे असभ्यता या कुसभ्यता कहा जा सकता है।

सभ्यता

पाठक: अब आप बताइये कि सभ्यता से आपका क्या तात्पर्य है?

संपादक: (1) सभ्यता सभ्य बनने की प्रक्रिया है, या वह प्रणाली या तरीका है जिसके द्वारा किसी क्षेत्र के लोग सामान्य व्यवहार करने वाले व्यक्ति और समाज बनते हैं। इसे समझने से किसी क्षेत्र विशेष और धर्म, व्यक्ति, देश और समाज के लोगों की वर्तमान स्थिति के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

जैसे-जैसे समय बीतता है, उस समूह में हर किसी पर एक निश्चित व्यवहार पैटर्न लागू किया जाता है ताकि मानवीय संपर्क में आसानी हो। सभ्यता को समूह में मानदंड या मूल्य के समावेश से भी समझाया जा सकता है जहाँ मूल्य का पालन नियमित होता है यानी जहाँ मूल्यों के पालनकर्ता या पर्यवेक्षक की प्रशंसा नहीं की जाती है, लेकिन मानदंड का उल्लंघन करने वाले की आलोचना की जाती है और यदि आवश्यक हो, तो दंडित किया जाता है।

(2) सभ्यता सामूहिक रूप से बुरे-जेल या नरक का भय पैदा करने की प्रक्रिया है, और साथ ही अच्छे-सम्मान और स्वर्ग का प्रलोभन पैदा करना है। जैसे-जैसे समाज विकसित होता है, वह क्रूर ताकतों का इस्तेमाल छोड़ देता है और आत्म-संयम और सजा और पुरस्कार के परिष्कृत तरीके की ओर विकसित होता है।

– यदि आप विभिन्न सभ्यताओं और विभिन्न धर्मों की गतिविधियों का अवलोकन करें तो आप पाएंगे कि पुरानी, बड़ी और मजबूत सभ्यताएं कठोरता से लचीलेपन और खुलेपन (जीवन के सभी क्षेत्रों में, चाहे वह शिक्षा हो या धर्म) की ओर विकसित हुई हैं।

इसी प्रश्न पर श्री गांधी ने उत्तर दिया (इंटरव्यू में):

उत्तर : सबसे पहले हम यह विचार करें कि सभ्यता शब्द से किस स्थिति का वर्णन किया जाता है। इसकी असली परीक्षा इस बात में है कि इसमें रहने वाले लोग शारीरिक सुख को ही जीवन का उद्देश्य बनाते हैं। हम कुछ उदाहरण लेंगे। यूरोप के लोग आज सौ साल पहले की तुलना में बेहतर घरों में रहते हैं। इसे सभ्यता का प्रतीक माना जाता है और यह शारीरिक सुख को बढ़ावा देने का भी मामला है। पहले वे खाल पहनते थे और भालों को हथियार के रूप में इस्तेमाल करते थे। अब

वे लंबी पतलून पहनते हैं और शरीर को सुशोभित करने के लिए तरह-तरह के कपड़े पहनते हैं और भालों की जगह वे अपने साथ पाँच या उससे अधिक चैम्बर वाली रिवॉल्वर रखते हैं। अगर किसी देश के लोग, जिन्हें अब तक बहुत अधिक कपड़े, जूते आदि पहनने की आदत नहीं थी, यूरोपीय कपड़े अपनाते हैं, तो माना जाता है कि वे बर्बरता से सभ्य बन गए हैं। पहले यूरोप में लोग अपनी ज़मीन मुख्य रूप से हाथ से जोतते थे। अब एक आदमी भाप के इंजन से बहुत बड़ा भूभाग जोत सकता है और इस तरह बहुत धन कमा सकता है। इसे सभ्यता का चिह्न कहते हैं। पहले, केवल कुछ ही लोग मूल्यवान पुस्तकें लिखते थे। अब, कोई भी व्यक्ति जो चाहे लिख और छापकर लोगों के मन में जहर भर देता है। पहले, लोग गाड़ियों में यात्रा करते थे। अब, वे प्रतिदिन चार सौ मील से अधिक की गति से रेलगाड़ियों में हवा में उड़ते हैं। इसे सभ्यता की पराकाष्ठा माना जाता है। कहा गया है कि, जैसे-जैसे मनुष्य प्रगति करेंगे, वे हवाई जहाज में यात्रा करने में सक्षम होंगे और कुछ ही घंटों में दुनिया के किसी भी हिस्से में पहुँच सकेंगे। लोगों को अपने हाथ और पैरों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं होगी। वे एक बटन दबाएँगे, और उनके पास उनके कपड़े होंगे। वे एक और बटन दबाएँगे, और उनके पास उनका अखबार होगा। तीसरा और एक मोटर-कार उनकी प्रतीक्षा में होगी।

उन्हें तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन मिलेंगे। सब कुछ मशीनों से होगा। पहले जब लोग एक-दूसरे से लड़ना चाहते थे, तो वे आपस में अपनी शारीरिक शक्ति को मापते थे; अब एक आदमी पहाड़ पर बंदूक के पीछे काम करके हजारों लोगों की जान ले सकता है। यही सभ्यता है। पहले लोग खुली हवा में उतना ही काम करते थे, जितना उन्हें अच्छा लगता था। अब हजारों मजदूर मिलजुलकर काम करते हैं और रख-रखाव के लिए कारखानों या खदानों में काम करते हैं। उनकी हालत जानवरों से भी बदतर है। करोड़पतियों की खातिर वे अपनी जान जोखिम में डालकर सबसे खतरनाक काम करने को मजबूर हैं। पहले लोग शारीरिक मजबूरी में गुलाम बनाए जाते थे। अब वे पैसे और पैसे से खरीदी जा सकने वाली सुख-सुविधाओं के लालच में गुलाम बनाए जा रहे हैं।

आज ऐसी बीमारियाँ हैं, जिनके बारे में लोगों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। अब डॉक्टरों की फौज उनकी दवाएँ ढूँढ़ने में लगी हुई है। इसलिए अस्पताल बढ़ गए हैं। यह सभ्यता की कसौटी है। पहले पत्र भेजने के लिए विशेष संदेशवाहकों की आवश्यकता होती थी और बहुत खर्च करना पड़ता था। आज एक पैसे में कोई भी व्यक्ति अपने साथी को पत्र के माध्यम से गाली दे सकता है। हाँ, उसी खर्च में कोई व्यक्ति अपना धन्यवाद भी भेज सकता है। पहले लोग घर की बनी रोटी और सब्जी से दो या तीन बार भोजन करते थे। अब उन्हें हर दो घंटे में कुछ खाने की आवश्यकता

होती है, जिससे उन्हें किसी और काम के लिए समय ही नहीं मिलता। अब और क्या कहने की आवश्यकता है? यह सब आप अनेक प्रामाणिक पुस्तकों से जान सकते हैं। सभ्यता की सभी सच्ची कसौटियाँ हैं। और यदि कोई इसके विपरीत बात करे, तो जान लें कि वह अज्ञानी है।

यह सभ्यता न तो नैतिकता का ध्यान रखती है और न ही धर्म का। इसके अनुयायी शांति से कहते हैं कि उनका काम धर्म सिखाना नहीं है। कुछ लोग तो इसे अंधविश्वास की उपज मानते हैं। दूसरे लोग धर्म का चोला ओढ़कर नैतिकता की दुहाई देते हैं। लेकिन बीस साल के अनुभव के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि नैतिकता के नाम पर अक्सर अनैतिकता सिखाई जाती है। एक बच्चा भी समझ सकता है कि मैंने जो कुछ ऊपर बताया है, उसमें नैतिकता की कोई प्रेरणा नहीं हो सकती। सभ्यता शारीरिक सुख-सुविधाओं को बढ़ाने की कोशिश करती है, लेकिन ऐसा करने में भी वह बुरी तरह विफल हो जाती है।

यह सभ्यता अधार्मिक है, और इसने यूरोप के लोगों पर इस कदर कब्ज़ा कर लिया है कि वे आधे पागल से लगते हैं। उनमें वास्तविक शारीरिक शक्ति या साहस की कमी है। वे नशे में अपनी ऊर्जा बनाए रखते हैं। वे अकेले में मुश्किल से खुश रह पाते हैं। महिलाएँ, जिन्हें घरों की रानी होना चाहिए, सड़कों पर भटकती हैं या कारखानों में काम करती हैं। थोड़े से पैसे के लिए, अकेले इंग्लैंड में पाँच लाख महिलाएँ कारखानों या इसी तरह के संस्थानों में कठिन परिस्थितियों में काम कर रही हैं। यह भयानक तथ्य रोज़ाना बढ़ते मताधिकार आंदोलन के कारणों में से एक है।

यह सभ्यता ऐसी है कि इसमें धैर्य रखना ही पड़ेगा और यह स्वयं नष्ट हो जाएगी। मोहम्मद की शिक्षा के अनुसार इसे शैतानी सभ्यता माना जाएगा।

हिंदू धर्म इसे काला युग कहता है। मैं आपको इसके बारे में पूरी तरह से नहीं बता सकता। यह अंग्रेजी राष्ट्र के प्राणों को खा रहा है। इसका बहिष्कार किया जाना चाहिए। संसदें वास्तव में गुलामी के प्रतीक हैं।

अगर आप इस पर पर्याप्त रूप से विचार करेंगे, तो आप भी यही राय रखेंगे और अंग्रेजों को दोष देना बंद कर देंगे। वे हमारी सहानुभूति के हकदार हैं। वे एक चतुर राष्ट्र हैं और इसलिए मेरा मानना है कि वे बुराई को त्याग देंगे। वे उद्यमी और मेहनती हैं और उनकी सोच का तरीका स्वाभाविक रूप से अनैतिक नहीं है। न ही वे दिल से बुरे हैं। इसलिए मैं उनका सम्मान करता हूँ। सभ्यता कोई लाइलाज बीमारी नहीं है, लेकिन यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि अंग्रेज लोग वर्तमान में इससे पीड़ित हैं। **

पाठक: हम यह बात सामान्यतः क्यों नहीं जानते?

संपादक: यह सब जानने और समझने के लिए सभ्यता के शिखर पर होना चाहिए। नीचे या बीच में रहने वाला व्यक्ति अति विकसित समाज के बारे में कैसे जान सकता है? अति विकसित सभ्यताओं के लोग पीछे मुड़कर देखें और विनाश और विकास के पूरे दौर का विश्लेषण करें, तभी सभ्यता के विनाश और विकास के बारे में कुछ कहा जा सकता है।

पाठक: लेकिन कई अंग्रेजी बोलने वाले कहते हैं कि वे अधिक सभ्य हैं।

संपादक: जहाँ तक इंग्लैंड की सभ्यता का सवाल है, वह लगभग बारह सौ साल पुरानी है और अमेरिका की सभ्यता तो सिर्फ पाँच सौ साल पुरानी है। उनका यह कहना कि वे बेहतर सभ्य हैं, वैसा ही है जैसे हर नौसिखिया कहता है कि वे सबसे अच्छे हैं। हमारे रोज़मर्रा के जीवन में कई बच्चे अपने माता-पिता या दादा-दादी से आधुनिक और बेहतर महसूस करते हैं और होशियारी दिखाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कि अंग्रेज़ों की सभ्यता के मामले में होता है।

पाठक: क्या आप यह कहना चाहते हैं कि भारत बेहतर सभ्य है? यदि हाँ, तो ऐसा कहने के आपके क्या आधार हैं?

संपादक: जब हम कहते हैं कि भारत दुनिया के किसी भी अन्य देश से बेहतर सभ्य है तो यह हमारी भावना और अनुभव है। दूसरों के लिए, हिंद स्वराज और ब्रिटिश संसद में श्री मैकाले द्वारा दिए गए कुछ बयान नीचे दिए गए हैं (इटैलिक में):

II. प्रतिष्ठित व्यक्तियों की साक्ष्य:

श्री अल्फ्रेड वेब के बहुमूल्य संग्रह से निम्नलिखित उद्धरण दर्शाते हैं कि प्राचीन भारतीय सभ्यता को आधुनिक सभ्यता से सीखने के लिए बहुत कम है:

“यह बात पूरी तरह से समझी नहीं जा सकती कि भारत में हमारी स्थिति कभी भी किसी हद तक ऐसी नहीं रही कि नागरिक जंगली जातियों में सभ्यता लाएँ। जब हम भारत में उतरे तो हमने वहाँ एक प्राचीन सभ्यता देखी, जिसने हजारों सालों की प्रगति के दौरान खुद को उच्च बौद्धिक जातियों के चरित्र में ढाल लिया था और खुद को उनकी ज़रूरतों के हिसाब से ढाल लिया था। यह सभ्यता दिखावटी नहीं थी, बल्कि सार्वभौमिक और सर्वव्यापी थी – जिसने देश को न केवल राजनीतिक व्यवस्थाएँ प्रदान कीं, बल्कि सबसे विस्तृत वर्णन की सामाजिक और घरेलू संस्थाएँ भी प्रदान कीं। इन संस्थाओं की समग्र रूप से लाभकारी प्रकृति का अंदाजा हिंदू जाति के चरित्र

पर उनके प्रभावों से लगाया जा सकता है। शायद दुनिया में कोई और ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपने चरित्र में अपनी सभ्यता के लाभकारी प्रभावों को इतना अधिक दर्शाता हो। वे व्यवसाय में चतुर, तर्क में तीक्ष्ण, मितव्ययी, धार्मिक रूप से शांत, दानशील, माता-पिता के आज्ञाकारी, वृद्धों के प्रति श्रद्धावान, मिलनसार, कानून का पालन करने वाले, असहायों के प्रति दयालु और दुख में धैर्यवान होते हैं।”

जे. सेमोर की, एम.पी - 1883 भारत में बैंकर

“दूसरी ओर जब हम पूर्व के काव्यात्मक और दार्शनिक आंदोलनों को, विशेषकर भारत के उन आंदोलनों को, जो यूरोप में फैलने लगे हैं, ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं, तो हमें वहां इतने सारे सत्य, और इतने गहन सत्य मिलते हैं, और जो उन परिणामों की तुच्छता के साथ इतने विपरीत हैं, जिन पर कभी-कभी यूरोपीय प्रतिभा रुक गई है, कि हम पूर्व के सामने घुटने टेकने के लिए विवश हो जाते हैं, और मानव जाति के इस पालने में सर्वोच्च दर्शन की जन्मभूमि देखते हैं।”

विक्टर कजिन (1792-1867)

दर्शनशास्त्र में व्यवस्थित सारसंग्रहवाद के संस्थापक

“यदि मैं स्वयं से पूछूं कि हम यहां यूरोप में, जो कि लगभग पूर्णतः (यूनानियों और रोमनों, तथा एक सेमेटिक जाति, यहूदियों) के विचारों पर पले-बढ़े हैं, वह सुधार किस साहित्य से प्राप्त कर सकते हैं, जो हमारे आंतरिक जीवन को अधिक परिपूर्ण, अधिक व्यापक, अधिक सार्वभौमिक, वास्तव में अधिक सच्चा मानवीय, एक ऐसा जीवन बनाने के लिए, जो केवल इसी जीवन के लिए न हो, बल्कि एक रूपांतरित और शाश्वत जीवन हो - तो मैं पुनः भारत की ओर संकेत करूंगा।”

फ्रेडरिक मैक्स मूलर

“इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि आरंभिक भारतीयों को सच्चे ईश्वर का ज्ञान था; उनकी सभी रचनाएँ भावनाओं और अभिव्यक्तियों से भरी हुई हैं, जो महान, स्पष्ट और अत्यंत भव्य हैं, तथा उतनी ही गहराई से और श्रद्धापूर्वक व्यक्त की गई हैं, जितनी किसी भी मानवीय भाषा में होती हैं, जिसमें लोगों ने अपने ईश्वर के बारे में बात की हो.... स्वदेशी दर्शन और तत्त्वमीमांसा रखने वाले राष्ट्रों में, साथ ही इन कार्यों के लिए एक सहज रुचि, जैसा कि वर्तमान में जर्मनी की विशेषता है, और पुराने समय में यह ग्रीस की गौरवशाली विशिष्टता थी, समय की दृष्टि से हिंदुस्तान प्रथम स्थान रखता है।”

फ्रेडरिक वॉन श्लेगल

“अपने घरों में विवाहित महिलाओं का अधिकार मुख्य रूप से उन लोगों के बीच अच्छी व्यवस्था और शांति बनाए रखने में लगाया जाता है जो उनके परिवार का निर्माण करते हैं; और उनमें से बहुत सी इस महत्वपूर्ण कर्तव्य को इतनी समझदारी और विवेक के साथ निभाती हैं जिसका यूरोप में शायद ही कोई सादृश्य हो। मैंने तीस से चालीस या उससे अधिक व्यक्तियों वाले परिवारों को देखा है, जिनमें बड़े बेटे और बेटियाँ शामिल हैं, सभी विवाहित हैं और सभी के बच्चे हैं, जो एक बूढ़ी महिला - उनकी माँ या सास - की देखरेख में एक साथ रहते हैं। बाद वाली, अच्छे प्रबंधन और बहू के स्वभाव के अनुसार खुद को ढालकर, परिस्थितियों के अनुसार दृढ़ता या सहनशीलता का उपयोग करके, कई वर्षों तक इतनी सारी महिलाओं के बीच शांति और सद्भाव बनाए रखने में सफल रही, जिनका स्वभाव बहुत ही चिड़चिड़ा था। मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या हमारे देशों में, उन्हीं परिस्थितियों में, वही लक्ष्य प्राप्त करना संभव होगा, जहाँ एक ही छत के नीचे रहने वाली दो महिलाओं को एक साथ सहमत करना मुश्किल है।

वास्तव में, सभ्य देश में शायद ही कोई ईमानदार रोजगार हो, जिसमें हिंदू महिलाएँ "महिलाओं को उचित हिस्सा नहीं मिलता। घर के प्रबंधन और परिवार की देखभाल के अलावा (जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है) किसानों की पत्नियाँ और बेटियाँ अपने पतियों और पिताओं के साथ खेती के काम में हाथ बँटाती हैं और उनकी मदद करती हैं। व्यापारियों की पत्नियाँ और बेटियाँ अपने पतियों और पिताओं के साथ उनके व्यापार को आगे बढ़ाने में मदद करती हैं। व्यापारियों की पत्नियाँ और बेटियाँ उनकी दुकानों में उनकी मदद करती हैं। कई महिलाएँ खुद ही दुकानदारी करती हैं; और वर्णमाला या दशमलव पैमाने के ज्ञान के बिना, वे अन्य तरीकों से अपने खातों को बेहतरीन तरीके से रखती हैं, और उन्हें अपने व्यापारिक लेन-देन में पुरुषों की तुलना में और भी अधिक चतुर माना जाता है।”

**एबे जेए डुबोइस, 1820 मिशनरी
मैसूर: एक पत्र के अंश, श्रीरंगपट्टन,**

“वे जातियाँ (नैतिक पहलू से देखा जाए तो भारतीय) शायद दुनिया में सबसे उल्लेखनीय लोग हैं। वे नैतिक शुद्धता के माहौल में सांस लेते हैं, जो प्रशंसा को उत्तेजित किए बिना नहीं रह सकता है, और यह विशेष रूप से गरीब वर्गों के मामले में है, जो अपने विनम्र भाग्य के अभावों के बावजूद खुश और संतुष्ट दिखते हैं। प्रकृति के सच्चे बच्चे, वे दिन-प्रतिदिन जीते हैं, कल की चिंता नहीं करते और ईश्वर ने उनके लिए जो सरल भोजन उपलब्ध कराया है, उसके लिए आभारी हैं। सूर्योदय

से सूर्यास्त तक चलने वाले दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद शाम को घर लौटते हुए दोनों लिंगों के कुलियों का तमाशा देखना उत्सुकता पैदा करता है। निरंतर परिश्रम के प्रभावों से थकान के बावजूद, वे अधिकांशतः खुश और उत्साहित होते हैं, एक साथ खुशी से बातचीत करते हैं और कभी-कभी हल्के-फुल्के गाने गाते हैं। फिर भी, जिस झोपड़ी को वे अपना घर कहते हैं, वहाँ लौटने पर उन्हें खाने के लिए चावल का एक बर्तन और बिस्तर के लिए फर्श मिलता है। घरेलू सुख-सुविधाएँ मूल निवासियों के बीच नियम प्रतीत होती हैं, और यह यह और भी अजीब है जब विवाह के रीति-रिवाजों को ध्यान में रखा जाता है, माता-पिता ऐसे सभी मामलों की व्यवस्था करते हैं। कई भारतीय घरों में विवाहित अवस्था के उच्चतम स्तर के उदाहरण मिलते हैं। यह शास्त्रों की शिक्षाओं और वैवाहिक दायित्व के संबंध में उनके द्वारा बताए गए सख्त आदेशों के कारण हो सकता है; लेकिन यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि पति आमतौर पर अपनी पत्नियों के प्रति समर्पित होते हैं, और कई मामलों में पत्नियों में अपने पतियों के प्रति अपने कर्तव्यों की सबसे उत्कृष्ट धारणा होती है।”

जे. यंग सचिव, सावोन मैकेनिक्स संस्थान

"यदि कृषि की अच्छी व्यवस्था, अद्वितीय विनिर्माण कौशल, सुविधा या विलासिता में योगदान देने वाली हर चीज का उत्पादन करने की क्षमता; पढ़ना, लिखना और अंकगणित सिखाने के लिए हर गांव में स्थापित स्कूल; एक-दूसरे के बीच आतिथ्य और दान की सामान्य प्रथा; और, सबसे बढ़कर, महिलाओं के साथ विश्वास, सम्मान और विनम्रता से भरा व्यवहार, सभ्य लोगों के लक्षणों में से हैं, तो हिंदू यूरोप के देशों से कम नहीं हैं; और यदि सभ्यता को दोनों देशों के बीच व्यापार का एक साधन बनना है, तो मुझे विश्वास है कि यह देश (इंग्लैंड) आयात माल से लाभान्वित होगा।"

सर विलियम वेडरबर्न,

"भारतीय गांव सदियों से राजनीतिक अव्यवस्था के खिलाफ एक सुरक्षा कवच और सरल घरेलू और सामाजिक सद्गुणों का घर रहा है। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि दार्शनिकों और इतिहासकारों ने हमेशा इस प्राचीन संस्था पर प्रेमपूर्वक विचार किया है जो प्राकृतिक सामाजिक इकाई और ग्रामीण जीवन का सबसे अच्छा प्रकार है: आत्मनिर्भर, मेहनती, शांतिप्रिय, शब्द के सर्वश्रेष्ठ अर्थों में रूढ़िवादी.... मुझे लगता है कि आप मुझसे सहमत होंगे कि भारतीय गांव में सामाजिक और घरेलू जीवन की इस झलक में बहुत कुछ ऐसा है जो सुरम्य और आकर्षक दोनों

है। यह मानव अस्तित्व का एक निःशक्त और खुशहाल रूप है। इसके अलावा, यह अच्छे व्यावहारिक परिणामों से रहित नहीं है।"

कर्नल थॉमस मुनरो
(भारत में बत्तीस वर्ष की सेवा)

सांख्यिकी (1899)

प्रति 100,000 निवासियों पर जेल की जनसंख्या:

कई यूरोपीय राज्य 100 से 230

इंग्लैंड और वेल्स 190

भारत 38

सांख्यिकी शब्दकोष: रटलेज एंड संस, 1899.

स्रोत:

(<http://www.mssc.edu/projectsouthasia/history/primarydocs/education/Macaulay001.htm>

<http://www.langageinindia.com/april2003/macaulay.html>)

"मैंने भारत के कोने-कोने में यात्रा की है और मैंने एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जो भिखारी हो, चोर हो। मैंने इस देश में इतनी संपत्ति देखी है, इतने उच्च नैतिक मूल्य देखे हैं, इतनी क्षमता वाले लोग देखे हैं कि मुझे नहीं लगता कि हम इस देश को कभी जीत पाएंगे, जब तक कि हम इस देश की रीढ़ को ही न तोड़ दें, जो इसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत है, और इसलिए, मेरा प्रस्ताव है कि हम इसकी पुरानी और प्राचीन शिक्षा प्रणाली, इसकी संस्कृति को बदल दें, क्योंकि अगर भारतीय यह सोचेंगे कि जो कुछ भी विदेशी और अंग्रेजी है वह उनके अपने से अच्छा और महान है, तो वे अपना आत्म-सम्मान, अपनी मूल संस्कृति खो देंगे और वे वही बन जाएंगे जो हम चाहते हैं, एक सचमुच आधिपत्य वाला राष्ट्र?

थॉमस बैबिंगटन मैकाले
फ़रवरी 1835 **

पाठक: यदि भारत को लगता है कि वे अधिक सभ्य हैं, तो फिर क्या?

संपादक: हर अनुभव को अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है, जितना बड़ा अनुभव होगा, उतनी ही बड़ी इच्छा/आवश्यकता होगी तथा समाज के व्यापक हित के लिए उसे अभिव्यक्त करने की जिम्मेदारी भी होगी। सम्पूर्ण विश्व को सभ्य बनाना, पृथ्वी पर जीता जागता स्वर्ग बनाना भारत का विशेषाधिकार तथा जिम्मेदारी/कर्तव्य है ।

भारत क्यों हार गया और विभाजित हो गया?

पाठक: कोई देश क्यों, कैसे और कब असफल होता है?

संपादक: आपने समाज की असफलता के बारे में तीन प्रश्न पूछे हैं, हालांकि तीनों का उत्तर एक ही है, लेकिन इन्हें अलग-अलग तरीके से समझना होगा:

वे कहते हैं: छह चीजें – जीवन-मरण, हानि-लाभ, यश-अपयश बिधि हाथ (जीवन-मृत्यु, हानि-लाभ, यश-अपयश) सर्वशक्तिमान के हाथ में हैं।

प्रत्येक वस्तु एक चक्र का अनुसरण करती है: बीज-अंकुरण, वृद्धि और विकास, पुष्पन और फलन, क्षय और मृत्यु, चाहे वह व्यक्ति हो या संस्था, क्षेत्र हो या धर्म या प्रबंधन की दृष्टि से प्रत्येक उत्पाद एक निश्चित जीवन-चक्र का अनुसरण करता है।

प्रगति के दौरान, सही तरह का माहौल, सही तरह के लोग, मनोदशा, ऊर्जा, संसाधन सरल नियमों और विनियमों के साथ प्रबल होते हैं। चरम पर नियम और विनियमन सर्वोच्च हो जाते हैं और यह सही तरह के माहौल, ऊर्जा और लोगों को रोकते हैं और इस तरह गिरावट शुरू होती है और फिर हमेशा ऐसे अन्य लोग उपलब्ध होते हैं जो इसे बदलने और कमी को भरने की कोशिश करते हैं।

बुनियादी आस्था, अध्यात्म और आपसी विश्वास पर बनी सभी संरचनाएं प्रगति करती हैं और लंबे समय तक टिकती हैं, जबकि बड़बड़ाहट, चीख-पुकार पर बनी मीनारें जल्दी और आसानी से ढह जाती हैं।

पाठक: आपने सभ्यता के बारे में बहुत कुछ कहा है कि अंग्रेजों ने जो आधुनिक सभ्यता अपनाई है, वह एक रोग है और यदि ऐसा है तो वे अनेक देशों पर कब्जा क्यों कर पाए, उन्हें अपने पास क्यों रख पाए या उन्हें अपंग और विभाजित क्यों छोड़ पाए?

संपादक: (1) ईश्वर की इच्छा। ईश्वर का खेल, दोष दूसरे पर डालना, अर्थात् भारत, चीन, रोम, इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि से वर्चस्व हटाना।

हम इसे भाग्य कहते हैं।

अपनी संक्षिप्तता और परिणामिक विलासिता के वर्चस्व में जब कोई व्यक्ति या देश चांद और परलोक की बातें करने लगता है और जमीन से संपर्क खो देता है, तब ऐसा होता है, अर्थात् जब कोई देश जागृत नहीं रहता या जागृत/प्रबुद्ध वास्तविक संत और महात्माओं से संपर्क खो देता है।

सामान्यतः ऐसा होता है कि जब कोई व्यक्ति शीर्ष पर पहुंच जाता है, तो वह विकास के विभिन्न स्तरों पर मौजूद लोगों के महत्व को कम आंकना शुरू कर देता है तथा दूसरों को सम्मान देने और उन्हें आकर्षित करने का अपना स्वाभाविक कर्तव्य भूल जाता है, परिणामस्वरूप ऐसे लोग और ऐसी सभ्यताएं, भले ही शीर्ष पर हों, नीचे गिर जाती हैं।

यह देखा गया है कि ध्वस्त सभ्यताएं आमतौर पर अपने एक समय के वर्चस्व की बात करती हैं और काफी समय तक उसी स्मृतिलोप (पुरानी यादों) में डूबी रहती हैं, और इस अवधि के दौरान अन्य लोग अपने साम्राज्य का निर्माण करने के लिए ध्वस्त समृद्धि के टुकड़े तक को ले जाते हैं, जिससे उस पर कब्जा करने वाले को स्मृतिलोप की स्थिति में छोड़ दिया जाता है, जिससे वह और अधिक कमजोर और असहाय हो जाता है।

भारत और चीन में ये घटनाएँ पिछले पच्चीस सौ सालों में कुछ हद तक रुक-रुक कर होती रहीं। बुद्ध के शिष्यों (जिनमें राजा भी शामिल हैं) ने शांति का उपदेश दिया और विश्व शांति के लिए दूत भेजे; लेकिन इससे भाड़े के सैनिक आकर्षित हुए और उन्होंने हमें टुकड़े-टुकड़े कर दिया और सोने की चिड़िया की नींद और सोना लूट लिया।

यद्यपि मन पदार्थ को गति प्रदान करता है, लेकिन यह भौतिक रूप है, शरीर, जिसमें मन समाहित है। पिछले पच्चीस सौ वर्षों में, हमने शरीर, भूगोल और इसलिए विभाजन की वर्तमान स्थिति और आगे विभाजन की प्रवृत्ति के बारे में चिंता किए बिना मन और मन के खेल के बारे में बहुत बात की। हम राम, कृष्ण और अन्य सभी देवी-देवताओं के बारे में लगातार बात करते हैं जिन्होंने बुरे लोगों को मार डाला/दंडित किया, लेकिन पिछले पच्चीस सौ वर्षों में हमने बातें तो अधिक कीं लेकिन काम कम किया, जिसके परिणामस्वरूप सभी हमले हुए और परिणामस्वरूप हार और गुलामी हुई और उसके बाद खंडित स्वतंत्रता हुई।

(6) कोई भी आपको गुलाम नहीं बना सकता, विरोध करते हुए मारे जाने का विकल्प हमेशा सबके लिए खुला है। अंग्रेजों ने दुनिया को अपने वश में नहीं किया, बल्कि दुनिया ने ही उन्हें झुकने दिया। भारत में इंग्लैंड की प्रत्यक्ष उपस्थिति उनकी ताकत के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए है

क्योंकि हमने खुद को कमजोर समझा। हमने उन्हें बुलाया और रखा ताकि वे तुरंत अमीर बन सकें या अपने निकटतम पड़ोसी के सामने झूठी ताकत का प्रदर्शन कर सकें।

(7) जब आप हार जाते हैं, तो यह स्वाभाविक है कि विजेता आपको अपने पास रखेगा, और तब तक अपने पास रखेगा जब तक आप उन्हें बाहर निकालने की ताकत विकसित नहीं कर लेते या वे आप में रुचि नहीं खो देते। चाहे जो भी कारण हो, विजेता आपको अपंग, विभाजित, भ्रमित और आपस में लड़ते हुए छोड़ देगा ताकि बाद में आप उसका मुकाबला करने की ताकत विकसित न कर सकें।

(8) जहाँ तक अंग्रेजों का सवाल है, वे एक डरपोक समाज हैं, अपने डर को कम करने के लिए वे दूसरों पर हावी होना या सभी को मारना पसंद करते हैं, चाहे वह मच्छर हो, छिपकली हो, बंदर हो, गधा हो, शार्क हो या साँप हो या दूसरे देशों के लोग हों। अपनी असुरक्षा को कम करने के लिए ऐसे डरपोक व्यक्ति या देश पूरी दुनिया पर शारीरिक, आर्थिक और मानसिक रूप से राज करना चाहते हैं और इसके लिए वे लगातार शारीरिक शासन के लिए लड़ाई/संघर्ष या युद्ध में लगे रहते हैं, वित्तीय शासन के लिए मेटल एक्सचेंज, करेंसी एक्सचेंज या स्टॉक एक्सचेंज बोर्ड के साथ विशाल बाजार में हेरफेर करते हैं और मानसिक शासन के लिए मीडिया और मल्टीमीडिया में हेरफेर करते हैं। समान शर्तों पर सह-अस्तित्व उन्हें डराता है।

(9) रोग/बैक्टीरिया/वायरस तेजी से फैलते हैं और आसान शिकार की तलाश में रहते हैं। ये रोग पैदा करने वाले तत्व कमजोर, विभाजित, लापरवाह और असुरक्षित लोगों पर हावी हो जाते हैं और इस तरह से संक्रमित/फैलने वाली बीमारियां तब तक जारी रहती हैं जब तक कि व्यक्ति जागरूक होकर सुधारात्मक उपाय नहीं करता; दूसरी ओर शरीर निर्माण भी तेजी से हो सकता है जबकि स्वास्थ्य एक संपूर्ण घटना है और यह एक धीमी प्रक्रिया है।

युद्ध और जीत, लूट और धोखाधड़ी, विनाश और निर्माण तथा समाज और राष्ट्र पर शासन और अधीनता के लिए उपलब्ध विभिन्न कंप्यूटर गेमों से कार्यप्रणाली को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर :

उत्तर: आपके प्रश्न का उत्तर देना बहुत कठिन नहीं है, और हम अभी स्वराज के वास्तविक स्वरूप की जांच करने में सक्षम होंगे; क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझे अभी भी उस प्रश्न का उत्तर देना है।

फिर भी, मैं आपके पिछले प्रश्न को लेता हूँ। अंग्रेजों ने भारत नहीं लिया है; हमने उन्हें यह दिया है। वे अपनी ताकत के कारण भारत में नहीं हैं, बल्कि इसलिए कि हम उन्हें रखते हैं। आइए अब देखें कि क्या ये प्रस्ताव कायम रह सकते हैं। वे मूल रूप से व्यापार के उद्देश्य से हमारे देश में आए थे। कंपनी बहादुर को याद करें। इसे बहादुर किसने बनाया? राज्य स्थापित करने के समय उनका जरा भी इरादा नहीं था। कंपनी के अधिकारियों की सहायता किसने की? उनकी चांदी को देखकर कौन ललचाया? उनका माल किसने खरीदा?

इतिहास गवाह है कि हमने यह सब किया। एकाएक अमीर बनने के लिए हमने कंपनी के अधिकारियों का खुले दिल से स्वागत किया। हमने उनकी मदद की। अगर मुझे भांग पीने की आदत है और कोई विक्रेता मुझे भांग बेचता है, तो क्या मैं उसे दोषी ठहराऊँ या खुद को? विक्रेता को दोषी ठहराकर क्या मैं अपनी आदत से बच पाऊँगा? और, अगर कोई खुदरा विक्रेता भगा दिया जाता है तो क्या कोई दूसरा उसकी जगह नहीं लेगा?

भारत के सच्चे सेवक को मामले की जड़ तक जाना होगा। अगर ज़्यादा खाने से मुझे अपच हो गई है, तो मैं पानी को दोष देकर इसे हरगिज़ नहीं टाल सकता। सच्चा चिकित्सक वही है जो बीमारी के कारण की जाँच करता है, और अगर आप भारत की बीमारी के चिकित्सक होने का दिखावा करते हैं, तो आपको इसका असली कारण पता लगाना होगा।

प्रश्न संख्या 1 : आप सही हो सकते हैं। मैं इस दिलचस्प विषय पर आपके विचार जानना चाहूँगा।

उत्तर: मुझे डर है कि आपके उत्साह के बावजूद, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हमारे बीच मतभेद होंगे। फिर भी, मैं तभी बहस करूँगा जब आप मुझे रोकेंगे। हम पहले ही देख चुके हैं कि अंग्रेज व्यापारी भारत में पैर जमाने में इसलिए सफल हुए क्योंकि हमने उन्हें प्रोत्साहित किया। जब हमारे राजा आपस में लड़े, तो उन्होंने कंपनी बहादुर की सहायता मांगी। वह निगम वाणिज्य और युद्ध में समान रूप से पारंगत था। नैतिकता के सवाल से वह अप्रभावित था। उसका उद्देश्य अपना वाणिज्य बढ़ाना और पैसा कमाना था। उसने हमारी सहायता स्वीकार की और अपने गोदामों की संख्या बढ़ाई। बाद की रक्षा के लिए उसने एक सेना नियुक्त की जिसका उपयोग हमने भी किया। तो क्या उस समय हमने जो किया उसके लिए अंग्रेजों को दोष देना बेकार नहीं है? हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे से भिड़ गए थे। इसने भी कंपनी को मौका दिया और इस तरह हमने ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कीं जिससे कंपनी को भारत पर नियंत्रण मिल गया। इसलिए यह कहना अधिक सही है कि हमने भारत को अंग्रेजों को दे दिया, बजाय इसके कि भारत खो गया।

प्रश्न: क्या अब आप मुझे बताएंगे कि वे भारत को अपने साथ कैसे बनाए रखने में सक्षम हैं?

उत्तर: जिन कारणों से उन्हें भारत मिला, उसी कारण वे इसे बनाए रखने में सक्षम हैं। कुछ अंग्रेज कहते हैं कि उन्होंने भारत को तलवार से छीना और अब भी उसे अपने पास रखते हैं। ये दोनों ही कथन गलत हैं। भारत को अपने पास रखने के लिए तलवार बिल्कुल बेकार है। हम ही उसे अपने पास रखते हैं। कहा जाता है कि नेपोलियन ने अंग्रेजों को दुकानदारों का राष्ट्र बताया था। यह एक उचित वर्णन है। उनके पास जो भी प्रभुत्व है, वे उसे अपने व्यापार के लिए रखते हैं। उनकी सेना और उनकी नौसेना का उद्देश्य इसकी रक्षा करना है। जब ट्रांसवाल ने ऐसा कोई आकर्षण नहीं दिया, तो स्वर्गीय श्री ग्लैडस्टोन ने पाया कि अंग्रेजों के लिए इसे अपने पास रखना उचित नहीं था। जब यह एक लाभदायक प्रस्ताव बन गया, तो प्रतिरोध ने युद्ध को जन्म दिया। श्री चेम्बरलेन ने जल्द ही पाया कि इंग्लैंड ने ट्रांसवाल पर आधिपत्य का आनंद लिया। यह संबंधित है कि किसी ने दिवंगत राष्ट्रपति क्रूजर से पूछा कि क्या चंद्रमा में सोना है? उन्होंने उत्तर दिया कि इसकी बहुत कम संभावना है क्योंकि अगर होता, तो अंग्रेज इसे अपने कब्जे में ले लेते। यह याद रखने से कई समस्याओं का समाधान हो सकता है कि पैसा उनका भगवान है। तब इसका अर्थ यह है कि हम अपने स्वार्थ के लिए अंग्रेजों को भारत में रखते हैं। हमें उनका व्यापार अच्छा लगता है; वे अपनी चालाकी से हमें खुश रखते हैं और हमसे जो चाहते हैं, वह प्राप्त कर लेते हैं। इसके लिए उन पर आरोप लगाना उनकी शक्ति को बनाए रखना है। हम आपस में झगड़कर उनकी पकड़ को और मजबूत करते हैं। यदि आप उपरोक्त कथनों को स्वीकार करते हैं, तो यह सिद्ध है कि अंग्रेज व्यापार के उद्देश्य से भारत में आए थे। वे उसी उद्देश्य से यहां रह रहे हैं और हम उन्हें ऐसा करने में मदद करते हैं। उनके हथियार और गोला-बारूद बिल्कुल बेकार हैं। इस संबंध में मैं आपको याद दिला दूँ कि जापान में अंग्रेजों का झंडा लहरा रहा है, न कि जापानियों का। अंग्रेजों ने अपने व्यापार के लिए जापान के साथ संधि की है और आप देखेंगे कि यदि वे इसे प्रबंधित कर सकें, तो उस देश में उनका व्यापार बहुत बढ़ जाएगा। वे पूरी दुनिया को अपने माल के लिए एक विशाल बाजार में बदलना चाहते हैं। यह सच है कि वे ऐसा नहीं कर सकते, लेकिन दोष उनका नहीं होगा। वे लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। . . .

भारत की स्थिति

पाठक: अब मुझे समझ में आया कि विदेशी लोग भारत को कैसे अपने अधीन रखने और विभाजित करने में सफल रहे। मैं जानना चाहता हूँ कि हमारे देश की स्थिति के बारे में आपके क्या विचार हैं।

संपादक: भारत की स्थिति क्या है? यहाँ दोनों बातें देखने को मिलती हैं। जैसे बच्चे एक दिन में नहीं बढ़ते, जैसे लंबी बीमारी के बाद व्यक्ति एक दिन में नहीं ठीक हो जाता, वैसे ही हमारे देश की भी स्थिति है।

जमीन से नीचे की स्थिति से लेकर तीन राष्ट्रों के रूप में विभाजित और आगे तीस-चालीस राज्यों में विभाजित होने तक, मूल बीमारी, कमजोरी को समझने में समय लगता है और बीमारी और कमजोरी पर काबू पाने में लंबा समय लगता है और ताकत, सहनशक्ति और श्रेष्ठता विकसित करने में और भी लंबा समय लगता है।

चूँकि रोग अलग-अलग होते हैं, इसलिए दवा भी अलग-अलग होनी चाहिए, लेकिन फिर भी पूरी नकारात्मकता के साथ अलग-अलग विकास और वृद्धि देखी जा सकती है। भारत के बारे में सकारात्मक बात यह है कि इसके बच्चे अपने आप में, अपनी संस्कृति और अपने धर्म में आत्मविश्वास और आस्था प्राप्त कर रहे हैं।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर (इंटरव्यू में):

उत्तर: यह एक दुखद स्थिति है। इसके बारे में सोचते ही मेरी आँखें नम हो जाती हैं और गला सूख जाता है। मुझे संदेह है कि मैं अपने दिल की बात ठीक से बता पाऊँगा या नहीं। मेरा मानना है कि भारत अंग्रेजी हुकूमत के नहीं, बल्कि आधुनिक सभ्यता के दबाव में कुचला जा रहा है। यह राक्षस के भयानक बोझ से कराह रहा है। इससे बचने का अभी समय है, लेकिन हर दिन यह और भी मुश्किल होता जा रहा है। धर्म मुझे प्रिय है और मेरी पहली शिकायत यह है कि भारत अधार्मिक होता जा रहा है। यहाँ मैं हिंदू या मुसलमान या पारसी धर्म के बारे में नहीं सोच रहा हूँ, बल्कि उस धर्म के बारे में सोच रहा हूँ जो सभी धर्मों का आधार है। हम ईश्वर से दूर होते जा रहे हैं।

प्रश्न संख्या : ऐसा कैसे?

उत्तर: हम पर यह आरोप लगाया गया है कि हम आलसी लोग हैं और यूरोपीय लोग मेहनती और

उद्यमी हैं। हमने इस आरोप को स्वीकार कर लिया है और इसलिए हम अपनी स्थिति बदलना चाहते हैं। हिंदू धर्म, इस्लाम, पारसी धर्म, ईसाई धर्म और अन्य सभी धर्म सिखाते हैं कि हमें सांसारिक कार्यों के प्रति निष्क्रिय और ईश्वरीय कार्यों के प्रति सक्रिय रहना चाहिए, हमें अपनी सांसारिक महत्वाकांक्षा की सीमा तय करनी चाहिए और हमारी धार्मिक महत्वाकांक्षा असीम होनी चाहिए। हमारी गतिविधि को बाद वाले चैनल में निर्देशित किया जाना चाहिए।

पाठक: आप धर्म को बढ़ावा दे रहे हैं। बहुत से धोखेबाजों ने धर्म की बातें करके लोगों को गुमराह किया है? क्या आपको नहीं मालूम कि धर्म के नाम पर मुसलमान और ईसाई, मुसलमान और यहूदी, मुसलमान और हिंदू, ईसाई और हिंदू आपस में लड़ते रहे हैं? धर्म के नाम पर हजारों निर्दोष लोगों की हत्या की गई है, उन्हें जलाया गया है या उन पर अत्याचार किए गए हैं, और निश्चित रूप से यह सबसे बुरी स्थिति है।

संपादक: आपने जो सवाल पूछा है, उसमें आपने कहा है कि धर्म के नाम पर बहुत से लोगों ने अपना साम्राज्य बढ़ाया है। निश्चित रूप से बहुत से व्यापारियों और साम्राज्यों ने अपने शत्रुओं को दबाने के लिए धर्म का नाम लिया है और अपने वर्ग के लोगों के बीच अपने कामों को उचित ठहराया है।

निश्चित रूप से, मैं धर्म को बढ़ावा दे रहा हूँ, मैं उस बुनियादी आस्था को बढ़ावा दे रहा हूँ जो पक्षियों, जानवरों और मनुष्यों में भी जन्मजात पाई जाती है। मैं उस नैतिकता को बढ़ावा दे रहा हूँ जो पर्यावरण से निकलती है। धोखेबाज़ धोखेबाज़ ही होते हैं, चाहे व्यापार में हों या धर्म में और उनसे उसी तरह से निपटा जाना चाहिए।

जब भी धर्म के लिए युद्ध या हथियार उठाए जाते हैं, तो इससे विरोधी सहित सभी का भला होता है। सनातन धर्म के सभी देवी-देवताओं ने कुछ लोगों के अत्याचारों से मानव जाति को बचाने के लिए ऐसा युद्ध किया है।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर :

उत्तर : मैं निश्चित रूप से यह मानता हूँ कि उपरोक्त कष्ट सभ्यता के कष्टों से कहीं अधिक सहनीय हैं। हर कोई समझता है कि आपने जिन क्रूरताओं का उल्लेख किया है, वे धर्म का हिस्सा नहीं हैं, यद्यपि वे धर्म के नाम पर की जाती रही हैं; इसलिए इन क्रूरताओं का कोई परिणाम नहीं होता। जब तक अज्ञानी और भोले लोग रहेंगे, तब तक वे होती रहेंगी। लेकिन सभ्यता की आग

में जलकर मरने वालों का कोई अंत नहीं है। इसका घातक प्रभाव यह है कि लोग इसकी झुलसती लपटों में यह मानकर आ जाते हैं कि यह सब अच्छा है। वे पूरी तरह से अधार्मिक हो जाते हैं और वास्तव में संसार से बहुत कम लाभ उठाते हैं। सभ्यता एक चूहे की तरह है जो हमें शांत करते हुए कुतरता रहता है। जब इसका पूरा प्रभाव महसूस होगा, तब हम देखेंगे कि आधुनिक सभ्यता की तुलना में धार्मिक अंधविश्वास हानिरहित है? मैं धार्मिक अंधविश्वासों को जारी रखने की वकालत नहीं कर रहा हूँ। हम निश्चित रूप से उनसे पूरी ताकत से लड़ेंगे, लेकिन हम धर्म की अवहेलना करके ऐसा कभी नहीं कर सकते। हम केवल धर्म की सराहना और संरक्षण करके ऐसा कर सकते हैं।

प्रश्न: आपने ठगों, पिंडारियों और भीलों द्वारा देश में फैलाए गए आतंक को हल्के में लिया है।

उत्तर: यदि आप इस मामले पर थोड़ा विचार करें, तो आप देखेंगे कि आतंक कोई बहुत बड़ी चीज नहीं थी। यदि यह बहुत बड़ी चीज होती, तो अंग्रेजों के आने से पहले ही अन्य लोग मर गए होते। इसके अलावा, वर्तमान शांति केवल नाममात्र की है, क्योंकि इसके कारण हम नपुंसक और कायर हो गए हैं। हमें यह नहीं मानना चाहिए कि अंग्रेजों ने पिंडारियों और भीलों का स्वभाव बदल दिया है। इसलिए पिंडारियों के खतरे को झेलना बेहतर है, बजाय इसके कि कोई और हमें इससे बचाए और इस तरह हमें स्त्री बना दे। मैं अमानवीय सुरक्षा की अपेक्षा किसी भील के तीर से मर जाना पसंद करूंगा। ऐसी सुरक्षा के बिना भारत वीरता से भरा हुआ भारत था। मैकाले ने घोर अज्ञानता का परिचय दिया जब उसने भारतीयों को व्यावहारिक रूप से कायर करार दिया। वे कभी इस आरोप के लायक नहीं थे। साहसी पर्वतारोहियों के निवास वाले और भेड़ियों और बाघों से भरे देश में रहने वाले कायरों को निश्चित रूप से जल्दी ही कब्र मिलनी चाहिए। क्या आपने कभी हमारे खेतों का दौरा किया है? मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे किसान आज भी अपने खेतों पर निडर होकर सोते हैं, लेकिन अंग्रेज और आप और मैं जहाँ सोते हैं, वहाँ सोने में संकोच करेंगे। ताकत डर की अनुपस्थिति में निहित है, हमारे शरीर पर मांस और मांसपेशियों की मात्रा में नहीं। इसके अलावा, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि जो लोग स्वशासन चाहते हैं, आखिरकार भील, पिंडारी और ठग हमारे ही देशवासी हैं। उन्हें हराना आपका और मेरा काम है। जब तक हम अपने ही भाइयों से डरते रहेंगे, हम लक्ष्य तक पहुँचने के योग्य नहीं हैं।

पाठक: क्या आप धर्म के नाम पर युद्ध का समर्थन करेंगे?

संपादक: क्या कोई बच सकता है? या तो आप धर्म के साथ होंगे (क्योंकि यह हमारे अंदर जन्मजात है) या धर्म के खिलाफ या युद्ध के खिलाफ। निश्चित रूप से, मानवता को बचाने के लिए, दुनिया को परमाणु विनाश से बचाने के लिए और दुनिया को पर्यावरणीय आपदा से बचाने के लिए हमें धर्म का पक्ष लेना चाहिए। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं धर्म-युद्ध से भागूँगा नहीं, लेकिन केवल अंतिम उपाय के रूप में। . . .

भारत की स्थिति: रेलवे और अन्य संचार

पाठक: आपने मुझे भारत में शांति के बारे में जो सांत्वना मिलती थी, उससे वंचित कर दिया है।

संपादक: अगर आप या कोई भी व्यक्ति भारत या दुनिया में कहीं भी शांति सहित किसी भी चीज़ के बारे में गलत समझ या गलतफहमी रखता है तो यह आपकी गलती है, मैं इतना ही कह सकता हूँ कि शांति एक गलत नाम है; शांति तभी मिलती है जब कोई व्यक्ति टुकड़ों में बँट जाता है, जो मृत्यु के समय होता है। जो हासिल होता है वह सामंजस्य/लय है और जीवन में यही वांछित है।

इसी प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

उत्तर: मैंने आपको केवल धार्मिक पहलू पर अपनी राय दी है, लेकिन जब मैं आपको भारत की गरीबी के बारे में अपने विचार बताऊंगा, तो शायद आप मुझे नापसंद करने लगेंगे, क्योंकि जिसे आप और मैं अब तक भारत के लिए लाभदायक मानते रहे हैं, वह अब मुझे वैसा नहीं लगता।

प्रश्न संख्या : वह क्या हो सकता है?

उत्तर: रेलवे, वकील और डॉक्टरों ने देश को इतना गरीब बना दिया है कि अगर हम समय रहते नहीं जागे तो हम बर्बाद हो जायेंगे।

प्रश्न: मुझे अब डर है कि हम शायद ही कभी इस बात पर सहमत होंगे। आप उन्हीं संस्थाओं पर हमला कर रहे हैं जिन्हें हम अब तक अच्छा मानते आए हैं।

उत्तर: धैर्य रखना ज़रूरी है। सभ्यता की बुराइयों की असली अंदरूनी सच्चाई को आप बड़ी मुश्किल से समझ पाएँगे। डॉक्टर हमें भरोसा दिलाते हैं कि क्षयरोगी तब भी ज़िन्दगी से चिपका रहता है जब वह मरने वाला होता है। क्षयरोग से कोई प्रत्यक्ष चोट नहीं लगती? यह रोगी के चेहरे पर एक आकर्षक रंग भी पैदा करता है जिससे उसे यह विश्वास हो जाता है कि सब ठीक है। सभ्यता एक ऐसी बीमारी है और हमें इससे बहुत सावधान रहना चाहिए।

क्यूएसटी: तो फिर बहुत अच्छा। मैं रेलवे पर आपकी बात सुनूंगा।

उत्तर: आपको यह स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि रेलवे के बिना, अंग्रेजों का भारत पर इतना

प्रभाव नहीं हो सकता था। रेलवे ने भी प्लेग फैलाया है। उनके बिना, लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं जा सकते थे। वे प्लेग के कीटाणुओं के वाहक हैं। पहले हमारे पास प्राकृतिक पृथक्करण था। रेलवे ने अकालों की आवृत्ति भी बढ़ा दी है, क्योंकि आवागमन के साधनों की सुविधा के कारण, लोग अपना अनाज बेच देते हैं और इसे सबसे महंगे बाजारों में भेज दिया जाता है। लोग लापरवाह हो जाते हैं और इसलिए अकाल का दबाव बढ़ जाता है। रेलवे मनुष्य की दुष्ट प्रकृति को बढ़ाती है। बुरे लोग अपनी बुरी योजनाओं को अधिक तेजी से पूरा करते हैं। भारत के पवित्र स्थान अपवित्र हो गए हैं। पहले, लोग बड़ी मुश्किल से इन स्थानों पर जाते थे। इसलिए, आम तौर पर केवल सच्चे भक्त ही ऐसे स्थानों पर जाते हैं। आजकल बदमाश अपनी दुष्टता का अभ्यास करने के लिए उन पर जाते हैं।

प्रश्न: आपने एकतरफा विवरण दिया है। अच्छे लोग भी इन जगहों पर जा सकते हैं और बुरे लोग भी। वे रेलवे का पूरा लाभ क्यों नहीं उठाते?

उत्तर: अच्छाई घोंघे की गति से चलती है? इसलिए, इसका रेलवे से कोई लेना-देना नहीं है। जो लोग अच्छा करना चाहते हैं, वे स्वार्थी नहीं हैं, वे जल्दबाजी में नहीं हैं, वे जानते हैं कि लोगों को अच्छाई से भरने में बहुत समय लगता है। लेकिन बुराई के पंख होते हैं। घर बनाने में समय लगता है। इसे नष्ट करने में कोई समय नहीं लगता। इसलिए रेलवे केवल बुराई के लिए वितरण एजेंसी बन सकती है। यह एक बहस का विषय हो सकता है कि क्या रेलवे अकाल फैलाती है, लेकिन यह विवाद से परे है कि वे बुराई को बढ़ावा देती हैं।

प्रश्न: जैसा भी हो, रेलवे की सभी कमियां इस तथ्य से संतुलित हो जाती हैं कि रेलवे के कारण ही हम भारत में राष्ट्रवाद की नई भावना देख रहे हैं।

उत्तर: मैं इसे एक गलती मानता हूँ। अंग्रेजों ने हमें सिखाया है कि हम पहले एक राष्ट्र नहीं थे और हमें एक राष्ट्र बनने में सदियाँ लगेंगी। यह बेबुनियाद है। उनके भारत आने से पहले हम एक राष्ट्र थे। एक विचार ने हमें प्रेरित किया। हमारी जीवन शैली एक जैसी थी। हम एक राष्ट्र थे इसलिए ही वे एक राज्य स्थापित करने में सक्षम हुए। इसके बाद उन्होंने हमें विभाजित कर दिया।

क्यूएसटी: इसके लिए स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

उत्तर: मैं यह नहीं कहना चाहता कि हम एक राष्ट्र थे इसलिए हमारे बीच कोई मतभेद नहीं थे, लेकिन यह कहा जाता है कि हमारे प्रमुख लोग पैदल या बैलगाड़ी में पूरे भारत की यात्रा करते थे।

वे एक-दूसरे की भाषाएँ सीखते थे और उनके बीच कोई अलगाव नहीं था। आपको क्या लगता है कि हमारे उन दूरदर्शी पूर्वजों का क्या इरादा रहा होगा जिन्होंने दक्षिण में सेतुबंध (रामेश्वर), पूर्व में जगन्नाथ और उत्तर में हरिद्वार को तीर्थस्थल के रूप में स्थापित किया? आप मानेंगे कि वे मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे कि भगवान की पूजा घर पर भी उतनी ही अच्छी तरह से की जा सकती है। उन्होंने हमें सिखाया कि जिनके दिलों में धर्म की भावना होती है, उनके घर में गंगा होती है। लेकिन उन्होंने देखा कि भारत प्रकृति द्वारा बनाया गया एक अविभाजित देश है। इसलिए उन्होंने तर्क दिया कि इसे एक राष्ट्र होना चाहिए। इस तरह तर्क देते हुए उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में पवित्र स्थानों की स्थापना की और लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को इस तरह से जगाया जो दुनिया के अन्य हिस्सों में अज्ञात है। और हम भारतीय एक हैं जैसे कोई भी दो अंग्रेज नहीं हैं। केवल आप और मैं तथा अन्य लोग जो खुद को सभ्य और श्रेष्ठ मानते हैं, वे ही यह कल्पना करते हैं कि हम अनेक राष्ट्र हैं। रेलवे के आगमन के बाद ही हमने भेदभाव पर विश्वास करना शुरू किया, और अब आप यह कहने के लिए स्वतंत्र हैं कि रेलवे के माध्यम से ही हम भेदभाव को समाप्त करने लगे हैं। अफीम खाने वाला व्यक्ति अफीम खाने के लाभ को इस तथ्य से तर्क दे सकता है कि उसे अफीम खाने के बाद अफीम की आदत की बुराई समझ में आने लगी। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि रेलवे के बारे में मैंने जो कहा है, उस पर अच्छी तरह विचार करें।

प्रश्न: मैं खुशी-खुशी ऐसा करूँगा, लेकिन एक सवाल मेरे मन में अभी भी है। आपने मुझे मुसलमानों से पहले के भारत का वर्णन किया है, लेकिन अब हमारे पास मुसलमान, पारसी और ईसाई हैं। वे एक राष्ट्र कैसे हो सकते हैं? हिंदू और मुसलमान पुराने दुश्मन हैं। हमारी कहावतें इसे साबित करती हैं। मुसलमान पूजा के लिए पश्चिम की ओर जाते हैं, जबकि हिंदू पूर्व की ओर जाते हैं। पूर्व के लोग हिंदुओं को मूर्तिपूजक मानते हैं। हिंदू गाय की पूजा करते हैं, मुसलमान उसे मार देते हैं।

हिंदू अहिंसा के सिद्धांत में विश्वास करते हैं, मुसलमान ऐसा नहीं करते। इसलिए हम हर कदम पर मतभेदों से घिरे रहते हैं। भारत एक राष्ट्र कैसे हो सकता है?

उत्तर: आपका अंतिम प्रश्न गंभीर है, फिर भी ध्यानपूर्वक विचार करने पर इसका समाधान आसान लगेगा। यह प्रश्न रेलवे, वकीलों और डॉक्टरों की उपस्थिति के कारण उठता है। हम अभी अंतिम दो पर विचार करेंगे। हम रेलवे पर विचार कर चुके हैं। फिर भी मैं यह जोड़ना चाहूँगा कि मनुष्य को प्रकृति ने इस प्रकार बनाया है कि उसे अपनी हरकतों को अपने हाथों और पैरों की सीमा तक

ही सीमित रखना पड़ता है। यदि हम रेलवे और ऐसी अन्य सुविधाओं के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर न भागें, तो बहुत सी उलझनें दूर हो जाएंगी। हमारी कठिनाइयां हमारी अपनी बनाई हुई हैं। ईश्वर ने मनुष्य के शरीर के निर्माण में उसकी महत्वाकांक्षा की सीमा निर्धारित की है। मनुष्य ने तुरंत सीमा को लांघने के तरीके खोज लिए। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दी है ताकि वह अपने निर्माता को जान सके। मनुष्य ने इसका दुरुपयोग किया है ताकि वह अपने निर्माता को भूल जाए। मैं इस प्रकार बना हूँ कि मैं केवल अपने निकटतम पड़ोसियों की ही सेवा कर सकता हूँ, लेकिन अपने अहंकार में मैं यह खोज लेता हूँ कि मुझे अपने शरीर से ब्रह्मांड के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा करनी चाहिए। इस तरह असंभव को आजमाने में मनुष्य अलग-अलग प्रकृति, अलग-अलग धर्मों के संपर्क में आता है और पूरी तरह से भ्रमित हो जाता है। इस तर्क के अनुसार, यह आपके लिए स्पष्ट होना चाहिए कि रेलवे सबसे खतरनाक संस्था है। उनके कारण, मनुष्य अपने निर्माता से और दूर चला गया है।”

पाठक: बहुत बढ़िया, आपने हिंद स्वराज के कुछ अंश दिए हैं, लेकिन आपके क्या विचार हैं, क्या आप सहमत हैं?

संपादक: 1) श्री गांधी ने स्वयं भारत में रेलगाड़ी से बहुत यात्रा की। यदि श्री गांधी को लगता है कि 'आपको यह स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि रेलवे के बिना, अंग्रेजों का भारत पर इतना प्रभाव नहीं हो सकता था, जैसा कि उन्होंने आज किया है', तो मैं इतना ही कह सकता हूँ कि रेलवे में यात्रा करके श्री गांधी अंग्रेजों के हाथों में एक साधन बन गए हैं, जिससे भारत में अंग्रेजों का शासन स्थिर हो सके। श्री गांधी ने पहले रेलवे की आलोचना करके और फिर रेलवे में यात्रा करके स्वाभाविक रूप से रेलवे और अंग्रेजों को आवश्यकता से अधिक प्रचार प्रदान किया, जिससे उन्हें सफलता मिली, जैसा कि आजकल बॉलीवुड/हॉलीवुड कर रहे हैं, अर्थात् प्रिंट और विजुअल मीडिया में फिल्म की आलोचना करो और फिल्म सुपर-डुपर हो जाएगी, यही श्री गांधी और भारत में ब्रिटिश शासन के मामले में है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री गांधी ने जाने-अनजाने में उनके ब्रांड एंबेसडर के रूप में काम किया।

आम तौर पर अच्छाई तभी आगे बढ़ती है जब बुराई उसे आगे बढ़ने के लिए उकसाती है, और इसे बहुत धीमी गति से आगे बढ़ना माना जाता है, लेकिन निश्चित रूप से अच्छे लोगों को उपलब्ध संचार विधियों का पूरा लाभ उठाना चाहिए, एक तो बुरी ताकतों को रोकने के लिए और दूसरा

अच्छी ताकतों को प्रोत्साहित करने के लिए। अच्छे लोगों को संचार का मूल तरीका खोजना होगा ताकि उनका डर और भय, चिंता और परेशानी दूर हो जाए और उनका दृष्टिकोण और भावना व्यापक मानव जाति तक पहुँचे।

भारत में एक ही संस्कृति थी और पूरे देश में एक ही संस्कृति थी। तेज़ संचार के आगमन के बाद ही हम अंतर्निहित एकता की तुलना में मतभेदों के बारे में अधिक सुनते हैं। मन बहुत तेज़ी से यात्रा करता है, इसलिए भारत में कहा जाता है कि मन की सुनो और दिल की बात मानो। आम तौर पर, तेज़ संचार जीवन को दुखी और मृत्यु को कठिन बना देता है।

केवल सड़कें ही कहीं नहीं ले जातीं; किसी देश के समग्र और एक इकाई के रूप में विकसित होने के लिए, कनेक्टिविटी के दो सबसे महत्वपूर्ण कारक, ऑडियो/वीडियो और परिवहन संचार आवश्यक माने जाते हैं। संचार विधियों के विकास के साथ-साथ सूचनाओं की बाढ़, वायरस की बाढ़ और इसके परिणामस्वरूप सिस्टम भ्रष्टाचार/बीमारी कई गुना बढ़ गई है। वकील, तथाकथित जज, डॉक्टर और तथाकथित निदान विधियाँ, मोबाइल/मल्टीमीडिया इसे तथाकथित नेटवर्किंग सिग्नल और परिणामी विकिरण, उपग्रह/अंतरिक्ष शटल, अंतरिक्ष युद्ध के लिए इसकी तथाकथित ताकत बड़ी बीमारी और खतरा बन रहे हैं।

दुख तब और वहाँ है, खुशी यहाँ और अभी है। तेज़ संचार दुखी लोगों की ज़रूरत है, व्यस्त लोगों को खुशी तब महसूस होगी जब हमारे पास पूरी दुनिया से पैसा होगा। तेज़ संचार के साथ व्यक्ति श्मशान में होने पर भी संवाद करने के लिए तैयार रहता है।

दो लोगों के बीच मौन गहरे प्रेम का संकेत देता है, जबकि शोर टकराव/लड़ाई/युद्ध की ओर संकेत करता है, लय स्वस्थ जीवन का संकेत देता है जबकि तीव्र संचार व्यापक मतभेद/अशांति का संकेत देता है।

भारत की स्थिति: धार्मिक व्यवस्था

पाठक: क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि देशों के विभाजन या एकीकरण में धर्म इन तीव्र संचार माध्यमों से भी बड़ी भूमिका निभाता है?

संपादक: नहीं, धर्म एक निश्चित क्षेत्र से उत्पन्न होता है, जिसमें सनातन आस्था के मूल तत्व तथा समाज संचालन की क्षेत्रीय आवश्यकताएं समाहित होती हैं। जब राज्य का विस्तार होता है, तब लोगों, उनकी आवश्यकताओं, उनकी अपनी संस्कृति तथा उनके धर्म के बीच मेल-मिलाप होता है। धर्मांतरण आमतौर पर किसी धर्म की श्रेष्ठता या हीनता के कारण नहीं होता, धर्मांतरण या तो लाभ उठाने के लिए होता है या राज्य के शासक (अर्थात् राजा अ धर्म का हो, तो वह या उसके मंत्री तथा अधिकारी चाहते हैं कि नागरिक अ धर्म के हों, इसके लिए बल, भय, लाभ, प्रलोभन तथा अन्य संभव उपायों का प्रयोग किया जा सकता है, और हमारे मुसलमानों तथा ईसाइयों के धर्मांतरण के हिंसक इतिहास में ऐसा हुआ है। सनातन धर्म या सच्चा तथा सनातन धर्म धर्मांतरण के लिए प्रलोभन, भय या बल का प्रयोग नहीं करता तथा न ही करेगा, बल्कि जब लोग स्वतंत्र होते हैं या जब लोग स्वतंत्र हो जाते हैं, तो वे सनातन धर्म (जिसे वर्तमान में कुछ हद तक हिंदू के रूप में जाना जाता है) अपनाते हैं।

राज्य को दीर्घायु प्रदान करने के लिए धर्म परिवर्तन आवश्यक माना जाता था। बलपूर्वक या बर्बर तरीके से धर्म परिवर्तन की स्थिति में, जो लोग इससे बचते हैं, उन्हें भागना पड़ता है, शरणार्थी या जनजाति बनना पड़ता है और जो लोग रुकते हैं, उन्हें अपनी संपत्ति, आत्म-सम्मान और परिवार से हाथ धोना पड़ता है (यदि नहीं तो मारे जाते हैं)। लेकिन भारत या अमेरिका में विभिन्न जाति, पंथ, रंग, संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं और उन्हें भटकाव महसूस नहीं होता, इसलिए यह मान लेना गलत है कि धर्म देशों को विभाजित करता है।

पाठक: क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि धर्म ने राष्ट्रों को नष्ट कर दिया?

संपादक: नहीं, जो कुछ कहा गया है, उसके अतिरिक्त यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि धर्म में मतभेद होना शत्रुता नहीं है; क्योंकि कुछ लाभ उठाकर तथाकथित बुद्धिमान और सज्जन लोग मतभेद को शत्रुता के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

आप जो भी दुश्मनी सोच रहे हैं, वह लाभ चाहने वालों या नुकसान से बचने वालों (1947 में अंग्रेजों की तरह भारत से जाने वाले शासक निश्चित रूप से नहीं चाहेंगे कि आप एकजुट रहें, ताकि आप सक्षम न रहें और भविष्य में उन्हें हराने की कोशिश करें) द्वारा बनाई गई है।

हिंदू सूर्य या समुद्र की ओर मुख करके पूजा करते हैं, मुस्लिम मक्का, मदीना की ओर मुख करके पूजा करते हैं, यह अच्छी तरह जानते हुए कि दिशात्मक प्रार्थना उन नौसिखियों के लिए है जो भूल जाते हैं या नहीं जानते कि अल्लाह/ब्रह्मा सर्वदिशात्मक, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी आदि हैं। कुछ लोग साकार की पूजा करते हैं और अन्य निराकार की पूजा करते हैं, वे कहते हैं "अध्मं मूर्ति पूजा, मध्यम जप स्त्रोत, उत्तम निराकार पूजा, श्रेष्ठम् सो अहो अहम् (अर्थात् मूर्ति पूजा सबसे निम्न है, पाठ मध्यम है, निराकार पूजा सर्वोत्तम है, जबकि सुंदर वह है जिसमें व्यक्ति सदैव प्रार्थना में रहता है, जहां प्रार्थना स्वयं/स्वचालित हो जाती है - मूर्ति या प्रार्थना की किसी सहायता की आवश्यकता के बिना निरंतर और निरन्तर)"। इस अंतिम चरण में अहम् ब्रह्मास्मि और तत्त्वमसि (मैं वह हूं और तुम भी वह हो) की भावना उत्पन्न होती है।

छब्बीस सौ साल पहले, सभी लोग एक ही धर्म यानी सनातन धर्म का पालन करते थे। सनातन धर्म उस समय भी यह सभी की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करता था, और आज भी पृथ्वी पर सभी को अपने में समाहित करने की शक्ति केवल इसी में है।

बाद में समुद्र और रेत में हुई उथल-पुथल के बाद कुछ स्थानों पर धर्म को हिंदू और कुछ स्थानों पर यहूदी के रूप में मान्यता दी गई (इन धर्मों की शुरुआत के बारे में कोई नहीं जानता)। भारत में हिंदुओं से बौद्ध, जैन और सिख धर्म विकसित हुए और अरब में यहूदियों से ईसाई, मुस्लिम और बहाई धर्म विकसित हुए।

भारत में हिंदू, बौद्ध, जैन और सिखों के बीच सद्भाव अधिक है, जबकि दुनिया के अन्य हिस्सों में यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के बीच सद्भाव अपेक्षाकृत कम है। सिर्फ इसलिए कि दूसरे लोग अपने देश में आंतरिक सद्भाव बनाए रखने में सक्षम नहीं हैं, उनके इस कथन को स्वीकार करना गलत है कि धर्म ने राष्ट्रों को नष्ट कर दिया है।

दुनिया में आठ से दस मुख्य धर्म हैं और दो सौ से अधिक देश हैं, अगर धर्म ने राष्ट्रों को नष्ट कर दिया तो दुनिया में दो सौ से अधिक धर्म होने चाहिए।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर:

क्यूएसटी: लेकिन मैं अपने प्रश्न का उत्तर सुनने के लिए अधीर हूँ। क्या मुसलमान धर्म के आने से राष्ट्र नष्ट नहीं हो गया?

उत्तर: भारत एक राष्ट्र नहीं रह सकता क्योंकि यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। विदेशियों के आने से राष्ट्र नष्ट नहीं होता, वे इसमें विलीन हो जाते हैं।

कोई देश तभी एक राष्ट्र होता है, जब उसमें ऐसी स्थिति हो। उस देश में आत्मसात करने की क्षमता होनी चाहिए; भारत हमेशा से ऐसा ही देश रहा है। वास्तव में जितने व्यक्ति हैं, उतने ही धर्म हैं; लेकिन जो लोग राष्ट्रीयता की भावना के प्रति सचेत हैं, वे एक-दूसरे के धर्म में हस्तक्षेप नहीं करते। यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे राष्ट्र कहलाने के योग्य नहीं हैं। यदि हिंदू मानते हैं कि भारत में केवल हिंदू ही रहने चाहिए, तो वे स्वप्नलोक में जी रहे हैं। हिंदू, मुसलमान, पारसी और ईसाई जिन्होंने भारत को अपना देश बनाया है, वे सभी एक ही देशवासी हैं और उन्हें एकता के साथ रहना होगा, चाहे अपने स्वार्थ के लिए ही क्यों न हो। दुनिया के किसी भी हिस्से में एक राष्ट्रीयता और एक धर्म समानार्थी शब्द नहीं हैं; न ही भारत में ऐसा कभी हुआ है।

प्रश्न: लेकिन हिंदुओं और मुसलमानों के बीच जन्मजात दुश्मनी के बारे में क्या?

उत्तर: यह मुहावरा हमारे आपसी दुश्मन ने गढ़ा है। जब हिंदू और मुसलमान एक दूसरे के खिलाफ लड़ते थे, तो वे निश्चित रूप से इसी तरह बोलते थे। वे बहुत पहले ही लड़ना बंद कर चुके हैं। फिर, कोई जन्मजात दुश्मनी कैसे हो सकती है? कृपया यह भी याद रखें कि हमने अंग्रेजों के कब्जे के बाद ही लड़ना बंद नहीं किया। हिंदू मुस्लिम शासकों के अधीन और मुसलमान हिंदुओं के अधीन फले-फूले। दोनों पक्षों ने माना कि आपसी लड़ाई आत्मघाती है और कोई भी पक्ष हथियारों के बल पर अपने धर्म को नहीं छोड़ेगा। इसलिए, दोनों पक्षों ने शांति से रहने का फैसला किया। अंग्रेजों के आगमन के साथ झगड़े फिर से शुरू हो गए।

आपने जो कहावतें उद्धृत की हैं, वे दोनों के बीच लड़ाई के समय गढ़ी गई थीं; उन्हें अब उद्धृत करना स्पष्ट रूप से हानिकारक है। क्या हमें यह याद नहीं रखना चाहिए कि कई हिंदू और मुसलमान एक ही पूर्वज के हैं और उनकी रगों में एक ही खून बहता है? क्या लोग इसलिए दुश्मन बन जाते हैं क्योंकि वे अपना धर्म बदल लेते हैं? क्या मुसलमान का भगवान हिंदू के भगवान से अलग है? धर्म एक ही बिंदु पर मिलने वाले अलग-अलग रास्ते हैं। जब तक हम एक ही लक्ष्य पर

पहुंचते हैं, तब तक हम अलग-अलग रास्ते क्यों अपनाते हैं, इससे क्या फर्क पड़ता है? झगड़े का कारण क्या है?

इसके अलावा, शिव के अनुयायियों और विष्णु के अनुयायियों के बीच घातक कहावतें हैं, फिर भी कोई यह सुझाव नहीं देता कि ये दोनों एक ही राष्ट्र के नहीं हैं। ऐसा कहा जाता है कि वैदिक धर्म जैन धर्म से अलग है, लेकिन संबंधित धर्मों के अनुयायी अलग-अलग राष्ट्र नहीं हैं। सच तो यह है कि हम गुलाम हो गए हैं और इसलिए झगड़ते हैं और अपने झगड़ों को किसी तीसरे पक्ष द्वारा तय करवाना पसंद करते हैं। हिंदू मूर्तिभंजक हैं जैसे मुसलमान हैं। जितना अधिक हम सच्चे ज्ञान में आगे बढ़ेंगे, उतना ही बेहतर हम समझेंगे कि हमें उन लोगों के साथ युद्ध करने की आवश्यकता नहीं है जिनके धर्म का हम पालन नहीं कर सकते।

पाठक: आगे बढ़ने से पहले हम यह जानना चाहेंगे कि धर्म वास्तव में क्या है?

संपादक: इसके लिए आप पुस्तक : मीता- लाइफ स्टाइल एजेंडा: से निम्नलिखित अंश पढ़ सकते हैं:

धर्म

"धार्यते इति धर्म" जो धारण करता है वह धर्म है।

धर्म (रिलिजन) आस्था है, जो हर व्यक्ति में जन्मजात होती है, और प्रकृति में सनातन (शाश्वत) होती है। मनुष्यों में यह पहले अर्थ – यानी साधन, अर्थ, धन और शरीर के बाद काम (काम, सेक्स – शारीरिक प्रेम) फिर धर्म (शारीरिक प्रेम और मानसिक शारीरिक प्रेम – एक क्षेत्रीय प्रेम) फिर मोक्ष – स्वतंत्रता (परोपकार या बस प्रेम – सभी को शामिल करते हुए) के बाद आकार लेता है, इस चौथे चरण में यह धर्म बन जाता है।

धर्म सनातन है (सदाबहार, शाश्वत); धर्म प्राकृतिक है और प्रकृति के साथ एक है, धर्म पूरे क्षेत्र और धर्म को अपने दायरे में समेटे हुए है। ऋषियों और सूफियों ने जिस तरह से अपना जीवन जिया, वह इस चौथे चरण की गवाही देता है।

धर्म वह है जो आन्तरिक विकास के लिए कर्म को सींचता है, दोनों के बीच दृढ़ संबंध किस्मत को परिभाषित करता है जो जीवन में लय लाता है।

धर्म एक नदी की तरह है (शायद सबसे शुद्ध गंगा) जो सनातन में परिणत होती है। धर्म/नदियाँ बाढ़ ला सकती हैं, सूख सकती हैं लेकिन कभी समुद्र के बराबर नहीं हो सकतीं। सभी नदियों को

समुद्र से पानी मिलता है और सभी धर्मों को सनातन धर्म से मूल ऊर्जा मिलती है। धर्म से वियोग जो व्यक्ति को अधर्मी या तथाकथित अधर्मी बनाता है, वह लंबे समय तक नहीं टिकता, चाहे वह व्यक्ति का हो या समूह का।

ऋषियों ने ईश्वर, अल्लाह और भगवान को सर्वशक्तिमान, सभी में विद्यमान, सर्वगुण संपन्न और एक अभिन्न आत्मा के रूप में वर्णित किया है। अभिन्न आत्मा सभी को एकीकृत करती है और कोई भेदभाव नहीं छोड़ती

धर्म की उत्पत्ति जहां भी हुई, वह प्रकृति में सनातन आस्था और क्षेत्रीय प्रेम के रूप में शुरू हुआ और बाद में उसके साथ नाम जुड़ गया, यही कारण है कि हमें उस धर्म विशेष का नाम उस धार्मिक पुस्तक में नहीं मिलता, चाहे वह कुरान हो, गीता हो या गुरु ग्रंथ साहिब आदि।

अध्यात्म ही राजनीति समेत सभी चीजों का आधार है। अध्यात्म के आधार पर ही राष्ट्र बनते हैं और क्षेत्र तथा धर्म की अनुकूलता के अनुसार भौगोलिक आकार लेते हैं। राजनीति राजनीति से निकला एक पेशा है और कई लोगों के लिए राजनीति किसी भी अन्य पेशे की तरह ही है।

उपरोक्त सुझाव निम्नलिखित है-

सभी धर्म महान हैं, अगर वे महान न होते तो इतने लंबे समय तक जीवित नहीं रह पाते। किसी एक धर्म को खत्म करने के बजाय हमें उसे बढ़ावा देना चाहिए और उसके डूबने या आत्मसात होने का इंतजार करना चाहिए, जैसे विभिन्न नदियाँ समुद्र यानी सनातन में डूब जाती हैं।

वेद-पुराण, कुरान-बाइबिल हमारी आत्मा की तरह हैं और यह भी सत्य है कि वेद-पुराण, कुरान-बाइबिल से हमारी पहचान होती है, लेकिन फिर भी हम कल क्या करेंगे, यह इन सब में नहीं है (वेद हमारी आत्मा, हम वेदों के में, कल हमें जो करना, वह वेदों में नैन)।

सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाले देश की ताकत और सबसे बड़ी हिंदू आबादी के साथ इसके स्वाभाविक नेता के रूप में, हमें सभी धर्मों के सार को दुनिया भर की आबादी तक फैलाने की स्वाभाविक जिम्मेदारी लेनी होगी।

यह स्वाभाविक जिम्मेदारी हमें कई धर्मों के प्रवर्तक होने के कारण भी मिलती है; इसके अलावा यह वह स्थान है जहाँ मूसा, ईसा मसीह रुके थे। हमें यह देखना होगा कि धर्म नर्क के डर से नहीं, बल्कि प्रेम के आधार पर खड़ा हो और फैले।

सभी धर्म क्षेत्र से उत्पन्न होते हैं। जहां क्षेत्र एक धर्म से आच्छादित है, वहां धर्म स्वतः ही पूरे क्षेत्र (जैसे वेटिकन) पर शासन करने लगता है, लेकिन जहां विभिन्न क्षेत्र और धर्म मिलकर एक देश बनाते हैं, वहां लोगों की सामूहिक शक्ति किसी भी या सभी क्षेत्रीय या धार्मिक शक्तियों पर हावी हो जाती है, और यही स्वाभाविक (धर्म) है और इसे शांति से स्वीकार करना चाहिए।

हमें अपनी भूमि के साथ-साथ विदेशों में भी अधिकाधिक अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलनों, चर्चाओं और संवादों को प्रोत्साहित करना होगा। हमें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की भलाई के लिए धार्मिक सम्मेलनों के परिणामों को प्रसारित करने में प्रोत्साहित करना होगा और मदद करनी होगी ताकि "वसुधैव कुटुम्बकम्" (अंतर्राष्ट्रीय परिवार) की भावना फैल सके। पिछले छब्बीस सौ वर्षों में धर्म या तो तलवार या स्टीन गन या रणनीतिक राज्य शक्ति के बल पर फैला, लेकिन कभी भी धार्मिक वर्चस्व के कारण नहीं। एक दूसरे से जुड़ी और इंटरनेट से जुड़ी दुनिया में धर्म अपने समग्र वर्चस्व के कारण ही उभरेगा। इस परिदृश्य में हर धर्म से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने धर्म की अन्य धर्मों के साथ तुलनात्मक प्रस्तुति में भाग ले, ताकि हर धर्म का सार दुनिया के सभी क्षेत्रों में फैल सके।

हमें पूरे देश में धार्मिक अध्ययन केन्द्रों से जुड़े धार्मिक केन्द्रों की स्थापना को प्रोत्साहित करना होगा, जिसमें कम से कम तीन धर्मों अर्थात् हिन्दू, मुस्लिम और सिख को शामिल किया जाए।

ऐसा लगता है- कम से कम धार्मिक स्थलों पर सभी धार्मिक ग्रंथों का पाठ शुरू किया जाना चाहिए। इसे शुरू करने की जिम्मेदारी और जिम्मेदारी उन लोगों पर है जो अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते हैं और डरते नहीं हैं। ऐसा लगता है कि जो देता है, उसे देर से या जल्दी वापस मिलता है। सनातन (तथाकथित हिंदू) धर्म इसकी शुरुआत कर सकता है और करनी चाहिए {यानी पूजा करने वालों को मंदिरों में मूर्ति पूजा या जप-तप (प्रार्थना का पाठ) या निराकार (निराकार) या संत और सूफियों के लिए पूजा करने की अनुमति देना}।

पाठक: जब हम धर्म की बात कर रहे हैं तो आप क्या कहेंगे कि कौन सा धर्म सबसे महान और सर्वोत्तम है?

संपादक: इस प्रश्न के विभिन्न उत्तर हैं-

सभी धर्म एक ही ईश्वर की ओर ले जाते हैं, इसलिए कोई तुलना नहीं की जा सकती।

शासक का धर्म सर्वश्रेष्ठ है, यदि हिन्दू, हिन्दू पर शासन कर रहे हैं, यहूदी, यहूदियों पर शासन कर रहे हैं, मुसलमान, मुसलमान पर शासन कर रहे हैं, तथा यदि ईसाई देश या विश्व में शासन कर रहे हैं तो निश्चित रूप से शासक और उनके अनुयायी कहेंगे कि उनका धर्म सर्वश्रेष्ठ है।

- बुद्ध के शिष्य अपने उपदेश/धर्म को फैलाने के लिए प्रजा की अपेक्षा राजाओं पर अधिक ध्यान देते थे, मध्यकालीन समय में मुस्लिम शासकों ने अपने धर्म को फैलाने के लिए तलवारों का इस्तेमाल किया था, और अब हाल के इतिहास में ईसाई शासक अपने धर्म को फैलाने के लिए हथियारों, धन और शराब का उपयोग कर रहे हैं।

सभी धर्म महान हैं और अपने अनुयायियों के लिए सर्वोत्तम प्रतीत होते हैं, यदि वे महान न होते तो वे इतने लंबे समय तक जीवित नहीं रह पाते।

जो धर्म आघात से बच गया है और अभी भी अपने अनुयायियों द्वारा पसंद किया जाता है, उसे सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है, हिंदू और यहूदी आघात से बच गए हैं हिंदू यहूदियों की तुलना में अधिक आघात से बच गए हैं और उन्हें सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है। मुस्लिम, ईसाई और बौद्ध जैसे अन्य सभी धर्म बहुत अधिक आघात से नहीं बच पाए हैं और वे भाग्य के साथ मिलने के लिए खुले हैं।

अधिकांश आधुनिक धर्म सर्वोत्तम हैं, इसलिए सिख धर्म भी सर्वोत्तम है।

पुराना ही सोना है, सबसे पुराना ही सबसे अच्छा है: सनातन धर्म सबसे अच्छा होना चाहिए। जब कोई दूसरा धर्म नहीं था तब सनातन को ही धर्म कहा जाता था, इसीलिए सबसे पुराने ग्रंथ में किसी धर्म का नाम नहीं लिखा है (जिसका उल्लेख है वह सनातन है)। कहते हैं कि छब्बीस सौ साल पहले सिर्फ एक ही धर्म था, सनातन, जो सभी धर्मों का स्रोत है। इसमें कहा गया है- स्रोत सबसे अच्छा होना चाहिए।

जब नरेन नामक एक सुशिक्षित व्यक्ति एकांत द्वीप से भारत आया तो पुष्पा ने उससे पूछा कि वह किस धर्म से है?

नरेन - कोई नहीं

पुष्पा - तुम्हारा कोई धर्म क्यों नहीं है?

नरेन - मैं एक निर्जन द्वीप (बाहरी दुनिया के लिए जंगल जैसा) से आया था, वहां हमें जीवित रहने के लिए धर्म का पालन करना नहीं सिखाया गया था, इसलिए मेरा कोई धर्म नहीं था।

पुष्पा - लेकिन यहां भी आपको किसी अन्य देश की तरह धर्म अपनाना होगा, लेकिन यहां एकमात्र अंतर यह है कि आपके पास चुनने के लिए अधिक विकल्प हैं।

नरेन - क्या मैं धर्म के बिना जीवित नहीं रह सकता; क्या मैं किसी भी धर्म का सदस्य बने बिना नागरिकता और स्वतंत्रता बरकरार नहीं रख सकता?

क्या यहाँ हर कोई अपना धर्म चुनता है या यह जन्म के साथ ही आता है (माता-पिता का धर्म) और बाद में मृत्यु की नियति बन जाता है? क्या यहाँ कोई वयस्क होने पर या बड़ी उम्र में जब उसे चीजों की समझ विकसित हो जाती है, तब अपना धर्म बदलता है?

पुष्पा - आपके सवालों के दूसरे भाग के लिए: यहाँ धर्म व्यक्ति के जन्म के साथ ही आता है यानी उसके माता-पिता का धर्म और आगे भी जारी रहता है। लोग अपना धर्म बदलते हैं लेकिन आम तौर पर यह व्यक्ति की धार्मिक समझ से इतर कारकों द्वारा निर्देशित होता है, और इसे एक या दूसरे धर्म का मिशनरी कार्य माना जा सकता है।

आपके प्रश्न के पहले भाग के लिए: हां, आप ऐसा कर सकते हैं - लेकिन लोग आपको शांति से रहने नहीं देंगे, वे आपको लालच देंगे, वे आपको डराएंगे, वे आपको उपदेश देंगे, वे आपका ब्रेनवॉश भी कर सकते हैं लेकिन हां ऐसे धर्म भी हैं जो आपके धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में ज्यादा परवाह नहीं करेंगे।

नरेन - वह धर्म क्या है?

पुष्पा - हाँ, उस धर्म को वे सनातन कहते हैं जहाँ सब कुछ मुफ्त है, आप उसे त्याग सकते हैं और उसकी आलोचना कर सकते हैं, आप उसका अभ्यास कर सकते हैं और आप उसका अभ्यास नहीं कर सकते; यह धर्म तब तक इसके बारे में कुछ नहीं कहता जब तक आप किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते। एक बात जो इसके बारे में बहुत बढ़िया है वह यह है कि यह हर किसी की परवाह करता है, और आपको बढ़ने और विकसित होने का पूरा अवसर प्रदान करता है यहाँ तक कि उस स्तर तक जहाँ कोई समझता है और कहता है कि मैं ब्रह्म/अल्लाह हूँ।

नरेन - यह बहुत बढ़िया लगता है, लेकिन मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मुझे सभी धर्मों का तुलनात्मक विवरण प्रदान करें, जिसमें मैं खुद महसूस कर सकूँ और कह सकूँ कि यह मेरे लिए सबसे अच्छा धर्म है। साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगा कि मुझे अभी भी वह धर्म चुनने की

स्वतंत्रता होनी चाहिए जो सबसे अच्छा न भी हो या फिर कानून का सम्मान करते हुए किसी एक धर्म को न भी चुनूं।

पुष्पा: मुझे इस बात पर दया और अफसोस है कि सभी धर्मों का तुलनात्मक विवरण अभी उपलब्ध नहीं है। तुलनात्मक विवरण उपलब्ध कराना एक बड़ा काम हो सकता है, लेकिन निश्चित रूप से मुझे लगता है कि इसकी आवश्यकता है और हमें इसके लिए काम करना होगा, और तब तक...

--गंगा महान है लेकिन गंगा-सागर सर्वश्रेष्ठ है। सभी धर्म महान इसलिए लगते हैं क्योंकि नदियों की तरह वे सनातन सागर से ऊंचे स्तर पर हैं। पिछले छब्बीस सौ वर्षों में हर धर्म ने दूसरे धर्मों को नष्ट करने की कोशिश की लेकिन वे असफल रहे। महानता दूसरों को नष्ट करने में नहीं बल्कि आत्मसात करने में है।

जो धर्म आत्मसात कर सकता है, जिसमें राम, कृष्ण, विभिन्न देवी-देवताओं, बुद्ध, ईसा को आत्मसात करने की शक्ति है तथा जो प्रार्थना की विभिन्न विधियों- मूर्ति पूजा या निराकार पूजा को आत्मसात कर सकता है, वही धर्म सबसे महान और सर्वोत्तम से भी श्रेष्ठ कहा जा सकता है।

पाठक: अब मैं गोरक्षा के विषय में आपके विचार जानना चाहता हूँ।

संपादक: (1) पुरुष अपनी माँ का दूध पीकर बड़ा होता है और पूरक के रूप में गाय, भैंस, बकरी, ऊँटनी आदि का दूध पीता है। दूध देने वाले को लात मारना या छोड़ना उपयोगितावाद को दर्शाता है और दूध देने वाले को मारना नरभक्षण है। अगर आप अपने दूध देने वाले को इसलिए छोड़ देते हैं क्योंकि उसने दूध देना बंद कर दिया है या आप बड़े हो गए हैं और आपको दूध की ज़रूरत नहीं है तो यह उपयोगितावाद की पराकाष्ठा है, यह किसी भी अन्य अपराध से बड़ा अपराध है, उन लोगों से भी बड़ा जो गाय (आपकी माँ) को ले जाते हैं या खरीदते हैं और उसे मारकर खाते हैं।

(2) हिमालयी क्षेत्र में कुछ मांसाहारी समुदाय बकरी और भेड़ का दूध न तो पीते हैं और न ही बेचते हैं, उनका कहना है कि अगर हम बकरी और भेड़ का दूध पीएंगे या बेचेंगे तो ये बकरियाँ और भेड़ हमारी माता बन जाएंगी फिर उनका मांस खाना अकल्पनीय है।

(3) भारतीय महाद्वीप के किसान और उनके परिवार (हिंदू और मुसलमान) खेती में मशीनीकरण की शुरुआत से पहले गौ वंश का सम्मान करते थे, इसलिए यह कहना निराधार है कि मुसलमान गाय का सम्मान नहीं करते।

(4) जब आप बैल को बधिया करके बैल बनाते हैं, तो आप गाय समुदाय का अभिशाप ले रहे होते हैं और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पूरा समुदाय अमानवीय हो जाता है और अनाचार की ओर प्रवृत्त हो सकता है। समस्या गाय की रक्षा के बारे में नहीं है, हालांकि यह बुनियादी बात है, लेकिन अगर लोग और उनकी सरकारें माँ (दूध देने वाली) तथाकथित कमज़ोर का सम्मान करने में विफल रहती हैं, तो देर-सवेर ये गुलाम बनने के लिए बाध्य हैं, चाहे वे हिंदू हों, मुसलमान हों, ईसाई हों या कोई और।

इसके अलावा आप पुस्तक: मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा से निम्नलिखित अंश देख सकते हैं:

पवित्र गाय

महर्षि दुर्वासा ने गाय को माता का दर्जा दिया है। बैल शिव और शक्ति की पूजा में मुख्य है और इसीलिए इसे हर मंदिर में शिवलिंग के साथ रखने का दर्जा दिया गया है।

पवित्र गाय के संबंध में दो विचित्र बातें देखी गई हैं।

(1) गाय को माँ की तरह सम्मान दिया जाता है, लेकिन उसके बेटे को खेत में बैल बनने के लिए बधिया कर दिया जाता है। गायों के बहुत कम नर बच्चों को बधियाकरण से बचाकर बैल के रूप में रखा जाता है ताकि वे पीढ़ी को आगे बढ़ा सकें। कई मामलों में जब गाय दूध देना बंद कर देती है, तो वे माँ गाय को अवांछित मानते हैं और उसे छोड़ देते हैं या बेच देते हैं; यह प्रथा एशिया के अधिकांश हिस्सों में प्रचलित है, अगर पूरी दुनिया में नहीं।

(2) उपरोक्त के अलावा, कई गायों के लिए यह पवित्र नहीं है, लेकिन वे भी गाय की तब तक सेवा करते हैं जब तक वह दूध देती है, बाद में जब गाय दूध देना बंद कर देती है, तो वे गाय का ही उपयोग करते हैं। भारत में मांसाहारी समुदाय हैं जो बकरी का दूध इस साधारण तर्क पर नहीं पीते कि अगर हम दूध पीते हैं तो यह हमारी माँ की तरह होगा और इसका मांस खाना माँ का मांस खाने जैसा होगा।

पहले मामले में पाखंड प्रतिबिंबित होता है और दूसरे मामले में स्पष्ट उपयोगितावाद प्रतिबिंबित होता है।

1.1 यदि हम इस विषय पर गहराई से विचार करें तो यह निष्कर्ष निकालने में डर लगेगा कि पहले मामले की तरह व्यवहार करने वाला समाज पाखंडी लोगों से भरा होगा, इसकी पुरुष पीढ़ी

बैल की तरह होगी और इसके उच्च वर्ग के लोगों के पास बहुत अधिक नैतिक अधिकार नहीं होंगे और इसके लोग और महिलाएं सम्मानित होंगी, फिर भी वे डरपोक होंगी। ऐसे समाज के बच्चों का पालन-पोषण अप्राकृतिक और खराब होगा।

“कहीं-कहीं पवित्र गौमाता का श्राप अपना परिणाम दिखाता है”।

2.1 दूसरे मामले की तरह व्यवहार करने वाला समाज पुरानी पीढ़ी के प्रति बहुत सम्मान नहीं रखेगा और युवा पीढ़ी के प्रति कुछ हद तक कम सम्मान रखेगा। यहाँ कमाने वाला ही एकमात्र सम्मानित व्यक्ति होगा और जब वह बूढ़ा हो जाएगा, तो सम्मान कम हो जाएगा। यहाँ हम देखेंगे; कुछ हद तक निराशा, लाचारी और कुछ हद तक अंधी आक्रामकता। ऐसे समाज में निराश लोग होंगे, भ्रमित युवा होंगे, युवा केंद्रित समाज होगा जहाँ महिलाएँ उपयोगिता की तरह अधिक होंगी, ऐसा समाज जो केवल प्रजनन अवस्था में महिलाओं की चिंता करेगा और प्रजनन अवस्था में महिलाएँ अपने शरीर और भोजन का अधिक ध्यान रखेंगी।

पूरे विश्व के समक्ष यह प्रस्तुत किया गया है कि हमें अपने गिरेबान में झांकना होगा कि हम क्या बनना चाहते हैं?

उत्तर: जो लोग गाय को माता मानते हैं, उन्हें यह स्पष्ट करना चाहिए कि गाय की मृत्यु के बाद वे क्या करेंगे; क्या उसका पूर्ण अंतिम संस्कार किया जाएगा, चमड़े का उपयोग नहीं किया जाएगा, दूध का उपयोग तभी किया जाएगा जब उसका बछड़ा पूरा आहार ले लेगा।

पवित्र गाय का मुद्दा केवल भावनात्मक नहीं होना चाहिए, बल्कि अधिक व्यावहारिक होना चाहिए, अर्थात् हम अपने समाज में कैसे रहना चाहते हैं? और हमारा समाज, राज्य और राष्ट्र कैसा होना चाहिए?

C. बधियाकरण आवश्यक नहीं है क्योंकि भारत के विभिन्न भागों में खेती के लिए बैलों का भी उपयोग किया जाता है। घोड़े, भैंस और गधे जैसे समान प्रकार के पशुओं में बधियाकरण की आवश्यकता के ऐसे कोई लक्षण नहीं हैं।

डी. गौभक्षी समाज के नेताओं को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि वे समरस समाज चाहते हैं या उपयोगितावादी समाज, और फिर निर्णय लें। पूरे भारत के लिए हमें धार्मिक नेताओं, बुद्धिजीवियों के साथ संपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए ताकि क्रियान्वयन के लिए निर्णय पर पहुंचा जा सके। यहां दो बातें याद रखनी होंगी। ए) जीव जीवसे भोजनम् (जीवित ही जीवित भोजन है)। बी) तांत्रिक-अघोरी परंपराओं आदि में गाय की चर्बी और मानव खोपड़ी का औषधीय महत्व।

ई. जब हम गाय की देखभाल की बात करते हैं, तो यह संदेश प्रसारित किया जाना चाहिए कि गाय की उपस्थिति ही स्वास्थ्य और समृद्धि लाती है, चाहे वह गोबर गैस हो, खाद हो, गोमूत्र हो, दूध के अलावा और काम के लिए बैल हो। जहां तक गोवंश की उपयोगिता का सवाल है, यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि प्रति किसान दो गायें और उनके बच्चे किसान के परिवार की दूध, ईंधन, गैस (गोबर गैस), खाद, आंतरिक परिवहन, दवा आदि की जरूरत के लिए पर्याप्त से अधिक होंगे।

एफ. उच्च गुणवत्ता वाली फसलों, दूध और दूध उत्पादों के लिए रासायनिक खादों का अनावश्यक प्रचार, दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए इंजेक्शन की बिक्री की आवश्यकता नहीं है, साथ ही दूध देने वाले पशुओं, उनके नर समकक्ष और उनकी संतानों को दिए जाने वाले उपचार पर चर्चा की आवश्यकता नहीं है।

जी. डेनमार्क में गायों को महिला दूध का डीएनए इंजेक्शन देने की हाल की प्रगति, जिससे गायें महिला के दूध के घटक वाला दूध देंगी, गाय के दूध के नए विपणन - 'माँ के दूध' की ओर एक कदम होगा।

एच. गायों को मादा, बकरी, भैंस या इसके विपरीत दूध देने के लिए क्लोनिंग या क्रॉस सेक्सुअल/डीएनए इंजेक्शन लगाने से बेहतर दूध देने वाली नई प्रजातियों के विकास की प्रक्रिया देखने को मिलेगी। जबकि अगर हम पिछले 4-5 हजार सालों के विकास पर गौर करें तो हम समझ सकते हैं कि ऐसा विकास केवल एक जीवन के लिए होता है, पीढ़ियों तक जारी नहीं रहता। इस तरह के क्रॉस, चाहे वह खच्चर हो, बीज रहित पपीता हो या कुछ और, नई प्रजातियों को जन्म नहीं दे पाए हैं और न ही देंगे। इसे बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने की जरूरत नहीं है।

।. स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र वातावरण के लिए गायों और पशुओं की स्वतंत्रता समय की मांग है, क्योंकि पृथ्वी केवल मनुष्यों के लिए नहीं है।

गोवंश के साथ किया जाने वाला व्यवहार भी शासन-शैली की ओर संकेत करता है “{जहाँ बैल पैदा किये जाते हैं, गायें सुरक्षित रहती हैं, जहाँ बछड़ों का बधियाकरण किया जाता है, वहाँ गायों के साथ निश्चित रूप से दुर्व्यवहार और हत्या की जाएगी अर्थात् जहाँ कमजोर (कोमल-गाय, वैज्ञानिक और मादा) की रक्षा की जाती है और बुद्धिमान (बलवान-बैल, बुद्धिमान और बहादुर नर) का सम्मान किया जाता है}”, ऐसी सरकारें ही सत्ता और सम्मान प्राप्त कर सकती हैं और सीमाओं को बनाए रखने में सक्षम होंगी।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर (इंटरव्यू में):

उत्तर: मैं स्वयं गाय का आदर करता हूँ, अर्थात् उस पर स्नेहपूर्ण श्रद्धा रखता हूँ। गाय भारत की रक्षक है, क्योंकि कृषि प्रधान देश होने के कारण वह गाय पर निर्भर है। गाय सैकड़ों प्रकार से सबसे उपयोगी पशु है। हमारे मुसलमान भाई इस बात को स्वीकार करेंगे। लेकिन जिस प्रकार मैं गाय का आदर करता हूँ, उसी प्रकार मैं अपने साथियों का भी आदर करता हूँ। मनुष्य गाय के समान ही उपयोगी है, चाहे वह मुसलमान हो या हिन्दू। तो क्या मैं गाय को बचाने के लिए मुसलमान से लड़ूँ या उसे मार डालूँ? ऐसा करने से मैं मुसलमान का और गाय का भी शत्रु बन जाऊँगा। इसलिए गाय की रक्षा का एक ही उपाय मैं जानता हूँ कि मैं अपने मुसलमान भाई के पास जाऊँ और देश के हित में उससे आग्रह करूँ कि वह गाय की रक्षा में मेरे साथ शामिल हो। यदि वह मेरी बात न माने तो मुझे गाय को छोड़ देना चाहिए, क्योंकि यह मामला मेरी क्षमता से बाहर है। यदि मुझे गाय पर अत्यधिक दया आती है, तो मैं उसे बचाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दूँ, लेकिन अपने भाई के प्राणों का बलिदान न दूँ। मैं मानता हूँ कि यही हमारे धर्म का नियम है।

जब लोग जिद्दी हो जाते हैं, तो लड़ाई हो जाती है। अगर मैं एक तरफ झुकता हूँ, तो मेरा मुसलमान भाई दूसरी तरफ झुकता है। अगर मैं खुद को श्रेष्ठ दिखाता हूँ, तो वह भी मुझे अच्छा लगेगा। अगर मैं उसे धीरे से प्रणाम करता हूँ, तो वह और भी ज्यादा झुकेगा; और अगर वह नहीं झुकता, तो मेरा झुकना गलत नहीं माना जाएगा। जब हिंदू जिद्दी हो गए, तो गायों की हत्या बढ़ गई। मेरी राय में, गोरक्षा समितियों को गाय की हत्या करने वाली समितियाँ माना जा सकता है। यह हमारे लिए अपमान की बात है कि हमें ऐसी समितियों की जरूरत है। जब हम गायों की रक्षा करना भूल गए, तो मुझे लगता है कि हमें ऐसी समितियों की जरूरत थी।

जब मेरा सगा भाई गाय को मारने पर उतारू हो तो मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे उसे मार देना चाहिए या उसके पैरों पर गिरकर उससे विनती करनी चाहिए? अगर आप मानते हैं कि मुझे दूसरा रास्ता अपनाना चाहिए, तो मुझे अपने मुसलमान भाई के साथ भी ऐसा ही करना चाहिए।

जब हिंदू गाय के साथ क्रूरता से पेश आते हैं, तो गाय को उनके विनाश से कौन बचाता है? जब हिंदू गाय के बच्चे को बेरहमी से लाठियों से पीटते हैं, तो उन्हें कौन समझाता है? लेकिन इससे हम एक राष्ट्र बने रहने से नहीं रुक पाए हैं।

अंत में, यदि यह सच है कि हिंदू अहिंसा के सिद्धांत में विश्वास करते हैं और मुसलमान नहीं, तो

कृपया बताइए, हिंदू अहिंसा के अनुयायी का क्या कर्तव्य है? ऐसा नहीं लिखा है कि अहिंसा के अनुयायी को किसी साथी की हत्या करनी चाहिए। उसके लिए रास्ता सीधा है। एक प्राणी को बचाने के लिए उसे दूसरे की हत्या नहीं करनी चाहिए। वह केवल यही दलील दे सकता है कि यही उसका एकमात्र कर्तव्य है।

लेकिन क्या हर हिंदू अहिंसा में विश्वास करता है? मामले की जड़ में जाने पर, कोई भी व्यक्ति वास्तव में ऐसे धर्म का पालन नहीं करता है क्योंकि हम जीवन को नष्ट करते हैं। हमें उस धर्म का पालन करने के लिए कहा जाता है क्योंकि हम किसी भी तरह के जीवन को मारने के दायित्व से मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। आम तौर पर, हम देख सकते हैं कि कई हिंदू मांस खाते हैं और इसलिए वे अहिंसा के अनुयायी नहीं हैं। इसलिए, यह सुझाव देना बेतुका है कि दोनों एक साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से नहीं रह सकते क्योंकि हिंदू अहिंसा में विश्वास करते हैं जबकि मुसलमान अहिंसा में विश्वास नहीं करते।

ये विचार स्वार्थी और झूठे धार्मिक शिक्षकों द्वारा हमारे मन में डाले जाते हैं। अंग्रेजों ने इसे अंतिम रूप दिया। उन्हें इतिहास लिखने की आदत है; वे सभी लोगों के तौर-तरीकों और रीति-रिवाजों का अध्ययन करने का दिखावा करते हैं। ईश्वर ने हमें सीमित मानसिक क्षमता दी है, लेकिन वे ईश्वर के कार्य को हड़प लेते हैं और नए-नए प्रयोग करते हैं। वे अपने शोधों के बारे में बहुत प्रशंसात्मक शब्दों में लिखते हैं और हमें उन पर विश्वास करने के लिए सम्मोहित करते हैं। फिर हम अपनी अज्ञानता में उनके चरणों में गिर जाते हैं।

जो लोग चीजों को ग़लत नहीं समझना चाहते, वे कुरान को पढ़ सकते हैं, और उन्हें उसमें सैकड़ों ऐसे अंश मिलेंगे जो हिंदुओं को स्वीकार्य हैं, और भगवद गीता में ऐसे अंश हैं जिन पर कोई मुसलमान आपत्ति नहीं कर सकता। क्या मुझे किसी मुसलमान को इसलिए नापसंद करना चाहिए क्योंकि कुरान में कुछ अंश ऐसे हैं जो मुझे समझ में नहीं आते या पसंद नहीं हैं?

झगड़ा करने के लिए दो लोगों की जरूरत होती है। अगर मैं मुसलमान से झगड़ा करने की हिम्मत नहीं जुटाता, तो मुसलमान मुझ पर झगड़ा थोपने में असमर्थ हो जाएगा; और इसी तरह अगर मुसलमान मुझसे झगड़ा करने में मेरी मदद करने से इनकार कर दे, तो मैं भी असमर्थ हो जाऊंगा। हवा में हाथ मारने वाला हाथ अलग हो जाएगा। अगर हर कोई अपने धर्म के मूल को समझने और उस पर टिके रहने की कोशिश करे और झूठे शिक्षकों को अपने ऊपर हुक्म चलाने न दे, तो झगड़े के लिए कोई जगह नहीं बचेगी।**

पाठक: आपने गौरक्षा की बात कही है, हाथियों पर भी अत्याचार होते देखे हैं, हाथियों की सुरक्षा के बारे में आप क्या कहेंगे?

संपादक: पहली बात तो यह कि जंगल खत्म हो रहे हैं। छोटे-मोटे फायदे के लिए जंगली जानवरों को बेरहमी से मारा जा रहा है। कई अमीर लोग हाथी के दांत को अपने ड्राइंग रूम में सजाना चाहते हैं और कई लोग इसे दवाई के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं। इसी तरह शेर के दांत भी सजावटी सामान के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे हैं। क्रूरता के बढ़ने का मुख्य कारण जंगल का खत्म होना, इंसानों की आबादी का बढ़ना और जंगल का केंद्रीकरण होना है, जिससे स्थानीय लोगों का स्थानीय वनस्पतियों और जीवों से कोई लेना-देना नहीं रह गया है। बहुत कुछ करना होगा; सिर्फ हाथी और शेरों को बचाने का नारा देने से काम नहीं चलेगा। हमें इंसान, जानवर और पेड़ यानी संपूर्ण पर्यावरण के एकीकृत विकास के लिए काम करना होगा।

पाठक: आपने वन्यजीवों के पक्ष में अच्छी बातें कही हैं, क्या आपको समुद्री/सामुद्रिक जीवन सुरक्षा की कोई चिंता है?

संपादक: पहले व्हेल भी मारी जाती थी, लेकिन अब विश्व सम्मेलन के बाद वैज्ञानिक शोध के अलावा व्हेल की हत्या पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। क्यों? हमें उसे भी रोकना होगा। हमें किसी भी हत्या के लिए खाली चेक देना बंद करना होगा, चाहे वह किसी भी कारण से हो या वैज्ञानिक शोध के लिए, सभी वैज्ञानिक शोधों को बुद्धिमता की कसौटी पर खरा उतरना होगा और व्हेल या गिनी पिग की हत्या को रोकना होगा।

पाठक: सुअर संरक्षण के बारे में क्या कहेंगे?

संपादक: पहले भी गाय/सूअर को मारकर/काटकर कई झगड़े करवाए गए हैं। गाय स्वच्छता का प्रतीक है और सुअर प्रदूषण का प्रतीक है। सुअर प्रकृति द्वारा दिया गया मैला ढोने वाला जानवर है।

सुअर से नफरत मत करो; प्रदूषण से नफरत करो, प्रदूषण फैलाने वालों से नफरत करो। विडंबना यह है कि लोग मक्खियों, मच्छरों या सूअरों को पसंद नहीं करते हैं, लेकिन सफाई नहीं रखते हैं। सफाई रखने से मक्खियाँ, मच्छर और सूअर अपने आप कम हो जाएँगे।

पाठक: मेरा प्रश्न यह है कि क्या पूंजीवादी और साम्राज्यवादी ताकतें कभी सही सोच वाले लोगों को हाथ मिलाने की अनुमति देंगी?

संपादक: जब तक आप स्वतंत्र हैं, तब तक आप किसी से भी मिलजुल सकते हैं। एक बार आप स्वतंत्र हो गए, तो आपको किसी से भी मिलने-जुलने और किसी तीसरे से लड़ने से कौन रोक सकता है। चाहे शिया-सुन्नी हों, हिंदू-मुसलमान हों, ईसाई-यहूदी हों, तीसरे से तब तक लड़ते हैं, जब तक आप उसके पास या तीसरे पक्ष द्वारा गठित अदालत के पास नहीं जाते।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इटैलिक में):

क्यूएसटी: लेकिन क्या अंग्रेज कभी दोनों संस्थाओं को आपस में हाथ मिलाने की इजाजत देंगे?

उत्तर: यह प्रश्न आपकी कायरता के कारण उत्पन्न हुआ है। यह हमारी उथल-पुथल को दर्शाता है। यदि दो भाई शांति से रहना चाहते हैं, तो क्या कोई तीसरा पक्ष उन्हें अलग कर सकता है? यदि वे बुरी सलाह सुनते हैं, तो हम उन्हें मूर्ख मानेंगे। इसी प्रकार, यदि हम अंग्रेजों को हमें अलग करने की अनुमति देते हैं, तो हम हिंदू और मुसलमान अपनी मूर्खता के लिए दोषी होंगे, न कि उनके लिए। मिट्टी का बर्तन एक पत्थर से नहीं तो दूसरे पत्थर से टकराकर टूट ही जाएगा। बर्तन को बचाने का तरीका उसे खतरे के बिंदु से दूर रखना नहीं है, बल्कि उसे इतना पकाना है कि कोई पत्थर उसे तोड़ न सके। फिर हमें अपने हृदय को पूरी तरह से पकी हुई मिट्टी से बनाना होगा। तब हम सभी खतरों के लिए तैयार रहेंगे। यह हिंदू आसानी से कर सकते हैं। वे संख्या में अधिक हैं; वे दिखावा करते हैं कि वे अधिक शिक्षित हैं, इसलिए वे मुसलमानों के साथ अपने सौहार्दपूर्ण संबंधों पर हमले से खुद को बेहतर ढंग से बचा सकते हैं।

दोनों समुदायों के बीच परस्पर अविश्वास है। इसलिए मुसलमान लॉर्ड मॉर्ले से कुछ रियायतें मांगते हैं। हिंदू इसका विरोध क्यों करें? अगर हिंदू विरोध करना बंद कर दें, तो अंग्रेजों को पता चल जाएगा, मुसलमान धीरे-धीरे हिंदुओं पर भरोसा करने लगेंगे और नतीजा भाईचारा होगा।

हमें अपने झगड़े अंग्रेजों के पास ले जाने में शर्म आनी चाहिए। हर कोई खुद ही यह जान सकता है कि हिंदुओं को अपने झगड़े रोककर कुछ भी नहीं खोना है। जिस आदमी ने दूसरे में विश्वास जगाया है, उसने इस दुनिया में कभी कुछ नहीं खोया है।

मैं यह नहीं कहता कि हिंदू और मुसलमान कभी नहीं लड़ेंगे। साथ रहने वाले दो भाई अक्सर ऐसा करते हैं। कभी-कभी हमारे सिर फूट जाते हैं। ऐसी बात जरूरी नहीं है, लेकिन सभी लोग न्यायप्रिय नहीं होते। जब लोग गुस्से में होते हैं, तो वे कई मूर्खतापूर्ण काम करते हैं। हमें इन बातों को सहना पड़ता है। लेकिन जब हम झगड़ते हैं, तो हम निश्चित रूप से वकील नहीं करना चाहते और न ही

अंग्रेजों या किसी कानूनी अदालत का सहारा लेना चाहते हैं। दो आदमी लड़ते हैं; दोनों के मोती टूट जाते हैं या केवल एक के। तीसरा पक्ष उनके बीच न्याय कैसे बांटेगा? जो लोग लड़ते हैं, उन्हें चोट लगने की उम्मीद हो सकती है । * . .

भारत की स्थिति: कानूनी व्यवस्था

पाठक: आप कहते हैं कि जब दो आदमी झगड़ते हैं तो उन्हें अदालत नहीं जाना चाहिए। यह बात तो बड़ी आश्चर्यजनक है।

संपादक: आप जानते ही होंगे कि जब बिल्ली रोटी के लिए लड़ती है और अपना झगड़ा सुलझाने के लिए बंदर के पास जाती है, तो क्या होता है। आमतौर पर बंदर पूरी रोटी छीन लेता है, इसके अलावा, बंदर के पास जाकर बिल्लियों ने बिल्ली पर बंदर का अधिकार जमा लिया है, ऐसा ही मामला अंग्रेजों द्वारा स्थापित न्यायालयों और उनके जारी रहने का है। उनकी न्याय-सेवा और न्याय (जस्टिस-आइस, यानी बर्फ से ठंडे किए गए फैसले), उनके कानून और वकील (झूठे) कई देशों की गुलामी को लंबे समय तक जारी रखने में सक्षम थे। स्वतंत्र देशों में इस साम्राज्यवादी न्याय-व्यवस्था के जारी रहने से उनकी अपनी ही न्याय-व्यवस्था द्वारा अपने ही लोगों को बिना मांगे मानसिक गुलामी का शिकार होना पड़ रहा है।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इटैलिक में):

उत्तर: आप इसे आश्चर्यजनक कहें या नहीं, यह सच है। और आपका प्रश्न हमें वकीलों और डॉक्टरों से परिचित कराता है। मेरा दृढ़ मत है कि वकीलों ने भारत को गुलाम बनाया है, हिंदू-मुस्लिम मतभेदों को बढ़ाया है और अंग्रेजी अधिकार को पुष्ट किया है। मैं केवल आपको यह दिखाना चाहता हूँ कि यह पेशा अनैतिकता सिखाता है; यह प्रलोभन के संपर्क में आता है जिससे बहुत कम लोग बच पाते हैं।

हिंदू और मुसलमान आपस में झगड़ते हैं। एक आम आदमी उनसे कहेगा कि सब भूल जाओ; वह उनसे कहेगा कि दोनों ही कमोबेश दोषी हैं, और उन्हें सलाह देगा कि अब झगड़ना बंद करो। लेकिन वे वकीलों के पास जाते हैं। वकीलों का काम है कि वे अपने मुवक्किलों का पक्ष लें और मुवक्किलों के पक्ष में तरीके और तर्क खोजें, जिनसे वे (मुवक्किल) अक्सर अनजान होते हैं। अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो माना जाएगा कि उन्होंने अपने पेशे को नीचा दिखाया है। इसलिए वकील, एक नियम के रूप में, झगड़ों को दबाने के बजाय उन्हें बढ़ावा देंगे। इसके अलावा, लोग यह पेशा दूसरों को उनके दुखों से उबारने के लिए नहीं, बल्कि खुद को समृद्ध बनाने के लिए अपनाते हैं। यह धनवान बनने का एक तरीका है और उनका हित झगड़ों को बढ़ाने में है। मेरी जानकारी में

यह है कि जब लोग झगड़ते हैं तो वे खुश होते हैं। तुच्छ वकील वास्तव में झगड़ों को पैदा करते हैं। उनके दलाल, कई जोंकों की तरह, गरीब लोगों का खून चूसते हैं। वकील ऐसे लोग हैं जिनके पास करने के लिए बहुत कम काम है। आलसी लोग भोग-विलास के लिए ऐसे धंधे अपनाते हैं। यह बात सच है। इसके अलावा कोई और तर्क तो दिखावा है। वकीलों ने ही पाया है कि उनका धंधा सम्मान का है। वे कानून भी उसी तरह बनाते हैं, जैसे अपनी प्रशंसा करते हैं। वे तय करते हैं कि उन्हें कितनी फीस लेनी है और वे इतना ज्यादा खर्च करते हैं कि गरीब लोग उन्हें स्वर्गवासी समझने लगते हैं। उन्हें आम मजदूरों से ज्यादा फीस क्यों चाहिए? उनकी जरूरतें ज्यादा क्यों हैं? वे मजदूरों से देश के लिए किस तरह ज्यादा लाभदायक हैं? क्या भलाई करने वालों को ज्यादा वेतन मिलना चाहिए? और अगर उन्होंने पैसे के लिए देश के लिए कुछ किया है, तो उसे अच्छा कैसे माना जाएगा? जो लोग हिंदू-मुसलमानों के झगड़ों को जानते हैं, वे जानते हैं कि वकीलों के हस्तक्षेप के कारण ही अक्सर झगड़े होते हैं। उनके कारण कई परिवार बर्बाद हो गए हैं; उन्होंने भाइयों को दुश्मन बना लिया है। वकीलों के कब्जे में आकर रियासतें कर्ज में डूब गई हैं। कईयों का सब कुछ छिन गया है। ऐसे कई उदाहरण हैं।

लेकिन उन्होंने देश को सबसे बड़ा नुकसान यह पहुंचाया है कि उन्होंने अंग्रेजों की पकड़ मजबूत कर दी है। क्या आपको लगता है कि अदालतों के बिना अंग्रेजों के लिए अपनी सरकार चलाना संभव होगा? यह सोचना गलत है कि अदालतें लोगों के लाभ के लिए स्थापित की गई हैं। जो लोग अपनी सत्ता कायम रखना चाहते हैं, वे अदालतों के माध्यम से ऐसा करते हैं। अगर लोग अपने झगड़े खुद ही सुलझा लें, तो कोई तीसरा पक्ष उन पर कोई अधिकार नहीं जता पाएगा। सच है, जब लोग अपने झगड़े लड़कर या अपने रिश्तेदारों से फैसला करवाकर सुलझाते थे, तो वे कम मर्दानगी वाले होते थे। जब वे अदालतों का सहारा लेते थे, तो वे और भी ज्यादा मर्दानगी वाले और कायर हो जाते थे। जब वे अपने झगड़े लड़कर सुलझाते थे, तो यह निश्चित रूप से बर्बरता का प्रतीक था। क्या यह कम है, अगर मैं किसी तीसरे पक्ष से आपके और मेरे बीच फैसला करने के लिए कहूं? निश्चित रूप से, तीसरे पक्ष का फैसला हमेशा सही नहीं होता। केवल पक्ष ही जानते हैं कि कौन सही है। हम अपनी सरलता और अज्ञानता में यह कल्पना करते हैं कि कोई अजनबी हमारा पैसा लेकर हमें न्याय दे रहा है।

लेकिन सबसे बड़ी बात यह याद रखनी चाहिए कि वकीलों के बिना अदालतें नहीं बन सकती थीं और वकीलों के बिना अंग्रेज हुक्मत नहीं कर सकते थे। मान लीजिए कि अंग्रेज जज, अंग्रेज वकील और अंग्रेज पुलिस ही होती, तो वे अंग्रेजों पर ही हुक्मत कर सकते थे। हिंदुस्तानी जज

और हिंदुस्तानी वकील के बिना अंग्रेज नहीं चल सकते थे। वकील पहले कैसे बनाए गए और उन्हें कैसे फायदा पहुंचाया गया, यह आपको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। तब आपको पेशे से वही नफरत होगी जो मुझे है। अगर वकील अपना पेशा छोड़ दें और उसे वेश्यावृत्ति की तरह अपमानजनक मानें, तो अंग्रेजी हुकूमत एक दिन में खत्म हो जाएगी। वे हम पर यह आरोप लगाने में सहायक रहे हैं कि हमें झगड़े और अदालतें उसी तरह पसंद हैं, जैसे मछली को पानी पसंद है। वकीलों के बारे में मैंने जो कहा है, वह जरूरी तौर पर जजों पर भी लागू होता है; वे चचेरे भाई हैं; और एक दूसरे को ताकत देता है।

पाठक: ये आरोप लगाना तो आसान है, लेकिन इन्हें साबित करना आपके लिए मुश्किल होगा। लेकिन वकीलों के बिना हमें आजादी का रास्ता कौन दिखाता? और आज के समय में महत्वपूर्ण राजनीतिक दल अपने अस्तित्व और गतिविधियों के लिए वकीलों के काम पर निर्भर हैं। ऐसे सम्मानित वर्ग की निंदा करना अन्याय है और वकीलों की निंदा करके आप व्यक्ति और प्रेस की स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर रहे हैं।

संपादक: 1) जब श्री गांधी कहते हैं कि (इटैलिक में):

" मेरा दृढ़ मत है कि वकीलों ने भारत को गुलाम बनाया है, हिन्दू-मुस्लिम मतभेदों को बढ़ाया है और अंग्रेजी सत्ता को पुष्ट किया है।

लेकिन उन्होंने देश को जो सबसे बड़ा नुकसान पहुंचाया है, वह यह है कि उन्होंने अंग्रेजों की पकड़ मजबूत कर दी है। क्या आपको लगता है कि अंग्रेजों के लिए बिना अदालतों के अपनी सरकार चलाना संभव होगा?

हालांकि, याद रखने वाली मुख्य बात यह है कि वकीलों के बिना अदालतें स्थापित या संचालित नहीं की जा सकती थीं और वकीलों के बिना अंग्रेज शासन नहीं कर सकते थे।

मैं श्री गांधी से आंशिक रूप से सहमत हूँ।

यह विरोधाभासी है कि वकील और डॉक्टर जो न्याय में सहायता करके और स्वास्थ्य प्रदान करके लोगों की सेवा करते दिखते हैं, वे मूल रूप से (एक दुकानदार की तरह) चाहते हैं कि समाज अन्याय और अस्वस्थता से भरा हो, ताकि उनका व्यवसाय फल-फूल सके। वकील और डॉक्टर भी इंसान

हैं, इसलिए ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने पेशे के कारण नहीं बल्कि अपनी जन्मजात मानवता के कारण अच्छा काम किया है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कई वकील अग्रणी भूमिका में थे और अब स्वतंत्रता के बाद कई वकील समवर्ती प्रमुख राजनीतिक दलों के प्रवक्ता हैं, उनकी सेवा से हमने जो हासिल किया है वह यह है कि पहले हमने अपने देश को टुकड़ों में विभाजित करवाया और अब वे अधिक से अधिक राज्यों के निर्माण के लिए आंदोलनों का नेतृत्व कर रहे हैं।

यह विडंबना ही है कि श्री गांधी और कुछ प्रधानमंत्रियों (देश के सर्वोच्च पद पर आसीन) की हत्या के मामलों की सुनवाई वर्षों तक चलती रही, और क्या कोई साधारण व्यक्ति इस परिदृश्य में न्याय की कल्पना कर सकता है।

हमारे समाज को स्वस्थ और खुशहाल बनाने के लिए भारत और दुनिया भर में न्यायिक, स्वास्थ्य और शिक्षा प्रणालियों के समग्र प्रतिमान की समीक्षा की आवश्यकता है।

पाठक: वर्तमान न्यायिक प्रणाली पर आपके क्या विचार हैं?

संपादक: इसके लिए आप पुस्तक से निम्नलिखित अंश देख सकते हैं: मीता- लाइफ़ स्टाइल एजेंडा

:

NYAY VYAVASTHA (JUDICIAL SYSTEM)

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि बीसवीं सदी में भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्याय 'अंधकार' के लिए किया जाता रहा स्थायी थे, सम्राट किल्विस की जीतना हो, रोशनी का नष्ट करना हो, अंधकार का राज हो. अँधेरा कायम रहे, सम्राट किल्विस की जय हो, उजाले का नाश हो, अँधेरे का राज हो।

(अंधकार को प्रबल होने दो, राजा हत्यारों का विष महान है। प्रकाश को लुप्त होने दो, अंधकार के साम्राज्य को प्रबल होने दो) अफसोस! यह सब कानून और व्यवस्था के नाम पर हो रहा है!

क) न्याय का अर्थ जस्टिस-आइस (बर्फ जैसा) हो गया है या शायद पश्चिम में इसे इस तरह से डिजाइन किया गया है।

भारतीय न्याय व्यवस्था का मूल स्वर नवीनता का स्वर है - नयापन, नई व्यवस्था और इस प्रकार भारत का मूल दायित्व है कि वह भारत में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामंजस्यपूर्ण शासन संचालन के लिए न्याय प्रदान करे।

ब) सामाजिक संगठन (सरकार) हमारी पहली सामूहिक बुद्धि है, इसी बुद्धि से सुरक्षा (आंतरिक और बाह्य) और न्याय व्यवस्था निकलती है। समाज और उसकी सरकार के लिए सुरक्षा पहली है, दूसरी है न्याय से जुड़ा प्रशासन।

C) "सामाजिक आदेश न्याय के लिए नहीं होते बल्कि न्याय सामाजिक व्यवस्था के लिए होता है" यही कारण है कि न्याय की परिभाषा, अर्थ और अनुप्रयोग समय और स्थान के साथ बदलते हैं। न्याय न्यायपूर्ण होना चाहिए और दिए गए भूगोल में समय बीतने के साथ होने वाले परिवर्तनों को अपनाने के लिए गतिशीलता और लचीलेपन के लिए पर्याप्त गुंजाइश के साथ स्थान और समय पर निर्भर होना चाहिए।

न्यायाधीश को नियमित आधार पर सर्वोच्च आदेश को रिपोर्ट करना चाहिए, या सर्वोच्च आदेश को मासिक आधार पर न्यायिक समीक्षा करनी चाहिए। यह भारत के लिए राष्ट्रपति हो सकता है, परिस्थिति और स्थिति की गंभीरता के अनुसार संसद की सिफारिश के साथ या बिना।

डी) भारत के लिए न्याय का होना सबसे महत्वपूर्ण है, अगर हम वास्तव में स्वस्थ और खुश, प्रगतिशील और गतिशील समाज बनना चाहते हैं। औपनिवेशिक शासन में न्याय को जानबूझकर और जानबूझकर न्याय-बर्फ में बदल दिया गया ताकि चिंता दिखाई जा सके और उपनिवेश को बनाए रखा जा सके। जब न्याय (बर्फ) बर्फीला हो जाता है, तो देरी और अंधेरा (देर) भी अन्धेरा भी - डर भी अंधेरा भी) इसका स्वाभाविक परिणाम है। वर्तमान में, राजनेता न्यायिक व्यवस्था के खिलाफ मुंह खोलने से डरते हैं, लेकिन देश को यह समझना चाहिए कि वर्तमान न्यायाधीश भारत सरकार के वेतनभोगी कर्मचारी हैं - एक मात्र सरकारी कर्मचारी, और उन्हें न्यायपालिका, न्याय व्यवस्था के संबंध में सुधारात्मक कार्रवाई करने से डरना नहीं चाहिए। यदि संसद सुधारात्मक कार्रवाई नहीं करेगी तो संभव है कि लोग न्याय के लिए स्थानीय गुंडों का सम्मान करना शुरू कर दें।

1. पहला कदम न्याय की देवी से काले रिबन को हटाना है। हमें जजों और वकीलों की वर्दी से काला (अंधकार का प्रतीक) हटाना है।

2. सर्वोच्च न्यायालय को केवल अंग्रेजी भाषा से हटकर संस्कृत, अंग्रेजी, हिंदी और कुछ क्षेत्रीय भाषाओं की ओर जाना होगा।

3. छोटे अपराधों के लिए समयबद्ध निर्णय जिसमें एकल न्यायालय अंतिम प्राधिकरण होगा। सरकार को छोटे-मोटे अपराधों को प्रकाशित करने के लिए एक समाचार पत्र को प्रोत्साहित करना होगा, जो पुलिस के पास दर्ज हो भी सकते हैं और नहीं भी, ताकि देश में न्याय व्यवस्था में गतिशीलता लाई जा सके। सभी प्रकार की जेलों में और सभी प्रकार के कैदियों के साथ मानवीय व्यवहार होना चाहिए और आत्म सुधार को बढ़ावा देना चाहिए।

4. न्यायाधीशों/न्यायाधीशों की नियुक्ति सम्माननीय, ईमानदार और बुद्धिमान नागरिकों (वकील समुदाय से हो भी सकते हैं और नहीं भी) में से करनी होगी तथा उन्हें भारत की सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक और राजनीतिक आवश्यकताओं के साथ-साथ कानून, प्राकृतिक कानून पर भी प्रशिक्षण देना होगा।

5. संसदों, मीडिया, वकीलों और न्यायाधीशों के बीच बंद दरवाजों के पीछे लगातार संवाद को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा लोगों को टिप्पणी देने के लिए व्यापक सहमति और व्यापक असहमति की घोषणा करनी चाहिए।

6. न्यायिक प्रणाली को पूर्वी तरीके से विकसित करने के लिए एक व्यापक समिति का गठन किया जाना चाहिए (जिसमें हिंदू, मुस्लिम, चीनी, यहूदी, पारसी और यहां तक कि ईसाई न्याय प्रणालियां शामिल हों) ताकि यह प्रकृति से निकले, और तब न्याय उचित और स्वाभाविक होगा।

7. कागज़ और दस्तावेज़ों पर आधारित न्याय को सक्रिय न्याय व्यवस्था और गुप्तचर (गुप्त खुफिया) न्याय व्यवस्था में बदलने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। ऐसे गुप्तचरों की पहचान की जानी चाहिए और उन्हें राज्य/क्षेत्रीय प्रमुख/कानून मंत्रालय के सशक्त समर्थन के साथ बारी-बारी से लागू किया जाना चाहिए। इस टीम द्वारा किसी भी उल्लंघन के लिए दोगुनी सज़ा दी जाएगी।

8. (न्याय) न्याय सरकार की जिम्मेदारी है और उसकी जांच पर पूरी तरह निर्भर रहना ही अपराध का पता लगाने का सही तरीका है, अपराधी की बात सुनना ही सजा की सीमा का पता लगाने के लिए है, जो दी जा सकती है, ऐसे में पीड़ित और वकील की जरूरत नहीं होती।

9. सरकार का गठन मनुष्य की बाह्य गतिविधियों तथा सुरक्षा के लिए किया जाने वाला एक बाह्य कार्य है। मनुष्य न तो चाहता है और न ही सरकार का यह विशेषाधिकार है कि वह मनुष्य के व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करे। सरकार को अपने मूल तथा वैध अधिकार की सीमा का उल्लंघन करके घर में प्रवेश नहीं करना चाहिए। यदि वह ऐसा कर रही है तो वह सही सरकार नहीं है और दूसरे वह अपने ही नागरिकों को अपनी ही सरकार का गुलाम बना रही है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सरकार को उन व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, जिनमें मनुष्य के परिवार के रिश्तेदार तथा बुजुर्ग व्यक्ति जीवन के विभिन्न मामलों में समय-समय पर उचित निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार तथा शक्तिशाली होते हैं। जैसे कि विवाह, तलाक, महिला, पत्नी, बेटी, बहन, माता, पुरुष, पुत्र, भाई, पति, पिता आदि पारिवारिक मामले सरकार के अधिकार क्षेत्र से बाहर होने चाहिए। सरकार द्वारा किया जाने वाला कोई भी हस्तक्षेप सरकार तथा उसकी न्यायपालिका/न्याय व्यवस्था द्वारा ही मूल अधिकार का उल्लंघन है। [यदि विवाह न्यायालय द्वारा तय किया गया है तो भविष्य में होने वाले मतभेद या तलाक के मुद्दे को सुलझाने का अधिकार केवल न्यायालय को है। यदि विवाह समाज द्वारा किया जाता है तो मतभेद के किसी भी मुद्दे को सुलझाने के लिए समाज ही जिम्मेदार है, और यदि न्यायालय उसके अधिकार क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो न्यायालय विध्वंसकारी भूमिका निभा रहा है, जो कि न्यायालयों की स्थापना के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध है और जो सरकार ऐसे न्यायालयों को पोषित करती है, उसे औपनिवेशिक, विदेशी या जनविरोधी कहा जा सकता है। पारिवारिक मुद्दों से मुक्त करके समाज पर ही छोड़ देने से समान नागरिक संहिता की बात या तथाकथित बात अपने आप पूरी हो जाएगी।

10. सक्रिय दृष्टिकोण के साथ सतर्कता को एकीकृत तरीके से लागू करना होगा ताकि ऐसी स्थिति को कम किया जा सके जहां से दुर्भावनापूर्ण इरादे को बढ़ावा मिलता है और अपराध शुरू होते हैं। एक तरह से, रोकथाम इलाज या बीमारी को सहने से बेहतर है।

11. पुलिस और सेना द्वारा अत्याचार मानवाधिकार का मुद्दा नहीं है, बल्कि न्यायिक प्रक्रिया की विफलता, सक्रिय दृष्टिकोण पर चर्चा करनी होगी। अब न्याय व्यवस्था समाज के रक्षक की जगह सामाजिक ताने-बाने को नष्ट करने वाली बन गई है। किसी भी शहर में किसी भी दीर्घकालिक विफलता के लिए उस समय की पूरी न्यायपालिका को भी जिम्मेदार बनाना होगा। कोई मामला दर्ज न होना, न्यायाधीशों के लिए बहाना नहीं बन सकता।

न्यायपालिका में भ्रष्टाचार, जो दुनिया भर में बढ़ रहा है, पर भारत में अंकुश लगाना होगा, ताकि हम दुनिया के सामने बेहतर तरीके से उदाहरण पेश कर सकें।

12. श्रम न्यायालय जैसी अर्ध/अर्धन्यायिक सेवा। खाद्य एवं स्वच्छता, जो एक पक्ष के साथ मिलकर दूसरे पक्ष को परेशान करने का काम करते हैं, उन पर चर्चा करनी होगी, ताकि व्यापारी, उद्यमी, उद्योगपति, श्रमिक और आम जनता के साथ होने वाले भेदभाव को कम किया जा सके, यह जिम्मेदारी वरिष्ठ नागरिकों और धार्मिक संस्थाओं को दी जानी चाहिए।

13. न्याय व्यवस्था में ईमानदारी और सादगी की सर्वोच्च कोटि को बनाये रखने के लिए न्यायधीशों पर निरन्तर नजर रखनी होगी या उनमें भ्रष्टाचार को रोकने के लिए उन पर छापे भी मारे जा सकते हैं, तथा सादगी बनाये रखने के लिए उनके वाहन में लगी लाल बत्ती हटानी होगी। न्यायधीशों, वकीलों का महिमामंडन न्याय व्यवस्था के व्युत्क्रमानुपाती होता है।

आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी न्याय व्यवस्था पृथ्वी पर जीवंत स्वर्ग बनाने में शामिल हो।

भारत की स्थिति: स्वास्थ्य व्यवस्था

पाठक: अब मैं अंग्रेजी कानून, न्याय-व्यवस्था को समझने लगा हूँ और जो अच्छा काम उन्होंने किया है, वह संयोगवश हुआ है। मुझे लगता है कि इसमें सुधार की आवश्यकता है। लेकिन आप डॉक्टरों को भी इसमें घसीटते हैं, यह कैसे?

संपादक: हम इंसानों के अंतिम संस्कार के लिए श्मशान में गुंबदों की ज़रूरत होती है। हिंदुओं में गुंबद होना कोई व्यवसाय नहीं है, जब भी कोई अंतिम संस्कार करना होता है तो गुंबद आते हैं और तब वे समाज में सामान्य काम करते थे जैसे खेती या सहायक नौकरियाँ। अगर कल श्मशान का विज्ञापन इस तरह किया जाए कि "इस श्मशान में और इस गुंबद पर अंतिम संस्कार करने से सीधे स्वर्ग पहुँच जाएँगे या इस तरह श्मशान आपका अंतिम संस्कार करेगा, तो आप क्या कहेंगे (आश्चर्य होगा कि कुछ धर्मों में श्मशान में जगह आरक्षित भी की जाती है और दान भी किया जाता है)।

डॉक्टर्स की ज़रूरत तो डोम्स की तरह ही है, लेकिन डॉक्टर्स का व्यावसायिक प्रचार समाज में डोम्स के प्रचार जैसा ही है। डॉक्टर्स और मेडिकल व्यवसाय का प्रचार बीमार मानसिकता है और मेडिकल टूरिज्म और अस्पतालों और डॉक्टरों का विज्ञापन इसकी पराकाष्ठा है।

आधुनिकतम अस्पताल में जो हो रहा है वह यह है कि अस्पताल का प्रशासन प्रबंधन पेशेवरों द्वारा प्रबंधित किया जा रहा है और ये तथाकथित पेशेवर मरीजों को ग्राहक कहते हैं तथा मरीजों के साथ वैसा ही व्यवहार करना शुरू कर देते हैं जैसा कोई ग्राहक के साथ करता है।

दुनिया के कुछ देश इतने गिर चुके हैं कि अपनी उच्च निवेश वाली जांच, निदान और डॉक्टर की टीम को जीवित रखने के लिए उन्हें नए-नए वायरस, बैक्टीरिया, रोग और सिंड्रोम बनाने की ज़रूरत है और अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठनों सहित विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग करके समाचार और विचारों, मीडिया में पैनल चर्चा के माध्यम से अपने कहर का विज्ञापन करना पड़ता है। समय की मांग है कि सभी स्वास्थ्य सेवाओं को मुफ्त कर दिया जाए।

डॉक्टर और उनके नजदीकी परिवार और मित्र समाज के किसी भी सामान्य व्यक्ति की तुलना में अधिक दवाइयों का सेवन करते हैं। डॉक्टरों के परिवार के सदस्य ICU, ICCU, रेस्पिरैटर के आइसोलेशन में मरते हैं, जबकि सामान्य परिवार के सदस्य गीता, कुरान आदि सुनते हुए और

गंगा/आबे जम-जम जल पीते हुए अपने प्रियजनों के बीच मरते हैं। सामान्य तौर पर डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ और उनके परिवार की रोग प्रतिरोधक क्षमता (रोगों के प्रति शक्ति) सामान्य लोगों की तुलना में कम देखी गई है।

आम आदमी को लगता है कि फिट रहना उसकी जिम्मेदारी है, जबकि डॉक्टर, पैरामेडिकल स्टाफ और उनके परिवार को लगता है कि उन्हें फिट रखना डॉक्टरों और अस्पतालों की जिम्मेदारी है। यह बदलाव डॉक्टरों और उनके परिवारों के लिए खतरनाक है और इसलिए डॉक्टरों की यह प्राथमिक जिम्मेदारी है कि अगर वे खुद और अपने परिवार को स्वस्थ और खुश रखना चाहते हैं तो उन्हें अपने काम से दूर रहना चाहिए।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इटैलिक में):

उत्तर : मैं जो विचार आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ, वे मेरे द्वारा अपनाए गए हैं। वे मौलिक नहीं हैं। पश्चिमी लेखकों ने वकीलों और डॉक्टरों दोनों के बारे में कड़े शब्दों का इस्तेमाल किया है। एक लेखक ने पूरी आधुनिक व्यवस्था को उपास वृक्ष से जोड़ दिया है। इसकी शाखाओं में परजीवी पेशे शामिल हैं, जिनमें कानून और चिकित्सा के पेशे भी शामिल हैं, और तने पर सच्चे धर्म की कुल्हाड़ी खड़ी है। अनैतिकता इस वृक्ष की जड़ है। तो आप देखेंगे कि ये विचार मेरे दिमाग से नहीं निकले हैं, बल्कि कई लोगों के मिले-जुले अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मैं एक समय में चिकित्सा पेशे का बहुत बड़ा प्रेमी था। देश की खातिर डॉक्टर बनना मेरा इरादा था। अब मैं उस राय पर कायम नहीं हूँ। अब मुझे समझ में आया कि हमारे बीच के वैद्यों (वैद्यों) को बहुत सम्मानजनक दर्जा क्यों नहीं मिला है।

अंग्रेजों ने निश्चित रूप से हमें नियंत्रित करने के लिए चिकित्सा पेशे का प्रभावी ढंग से उपयोग किया है। अंग्रेज चिकित्सकों ने राजनीतिक लाभ के लिए कई एशियाई शक्तिशाली लोगों के साथ अपने पेशे का उपयोग किया है। डॉक्टरों ने हमें लगभग पागल कर दिया है। कभी-कभी मुझे लगता है कि उच्च योग्यता वाले डॉक्टरों की तुलना में नीम हकीम बेहतर हैं। आइए हम विचार करें: एक डॉक्टर का काम शरीर की देखभाल करना है, या, ठीक से कहें तो, वह भी नहीं। उनका काम वास्तव में शरीर को उन बीमारियों से मुक्त करना है जो उसे पीड़ित कर सकती हैं। ये बीमारियाँ कैसे उत्पन्न होती हैं? निश्चित रूप से हमारी लापरवाही या भोग-विलास के कारण, मैं अधिक खा लेता हूँ, मुझे अपच हो जाती है। मैं एक डॉक्टर के पास जाता हूँ, वह मुझे दवा देता है, और मैं ठीक हो जाता हूँ। मैं फिर से अधिक खा लेता हूँ, मैं फिर से उसकी गोलियाँ लेता हूँ। यदि

मैंने पहली बार गोलियाँ नहीं ली होतीं, तो मुझे मेरे योग्य दंड भुगतने पड़ते और मैं फिर से अधिक नहीं खाता। डॉक्टर ने हस्तक्षेप किया और मुझे खुद को भोगने में मदद की। इससे मेरा शरीर निश्चित रूप से अधिक सहज महसूस करता था; लेकिन मेरा दिमाग कमजोर हो गया। इसलिए, दवा के कोर्स को जारी रखने का परिणाम मन पर नियंत्रण खोना होगा।

मैं दुराचार में लिप्त हुआ हूँ, मुझे बीमारी हुई है, डॉक्टर ने मुझे ठीक किया है, संभावना है कि मैं दुराचार फिर से करूँ। अगर डॉक्टर ने हस्तक्षेप न किया होता, तो प्रकृति अपना काम करती, मैं अपने पर नियंत्रण पा लेता, दुराचार से मुक्त हो जाता और सुखी हो जाता। अस्पताल पाप को बढ़ावा देने की संस्थाएँ हैं। मनुष्य अपने शरीर की कम देखभाल करते हैं और अनैतिकता बढ़ती है। यूरोपीय डॉक्टर सबसे बुरे हैं। मानव शरीर की गलत देखभाल के लिए वे प्रतिवर्ष हजारों जानवरों को मार डालते हैं। वे विच्छेदन करते हैं। कोई भी धर्म इसकी अनुमति नहीं देता। सभी कहते हैं कि अपने शरीर के लिए इतने सारे लोगों की जान लेना आवश्यक नहीं है। ये डॉक्टर हमारी धार्मिक प्रवृत्ति का उल्लंघन करते हैं। उनकी अधिकांश औषधियों में या तो पशु चर्बी होती है या मादक मदिरा; इन दोनों का हिंदू और मुसलमान निषेध करते हैं। हम भले ही सभ्य होने का दिखावा करें, धार्मिक निषेधों को अंधविश्वास कहें और जो हमें अच्छा लगे, वह करें। सच तो यह है कि डॉक्टर हमें भोगने के लिए प्रेरित करते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि हम संयम खो देते हैं और स्त्रीवत हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में हम देश की सेवा करने के योग्य नहीं हैं। यूरोपीय चिकित्सा का अध्ययन करना हमारी गुलामी को और गहरा करना है। यह विचारणीय है कि हम चिकित्सा का पेशा क्यों अपनाते हैं। यह निश्चित रूप से मानवता की सेवा के उद्देश्य से नहीं अपनाया जाता है। हम डॉक्टर इसलिए बनते हैं कि हमें सम्मान और धन मिले। मैंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि इस पेशे में मानवता की कोई वास्तविक सेवा नहीं है, और यह मानव जाति के लिए हानिकारक है। डॉक्टर अपने ज्ञान का दिखावा करते हैं, और बहुत अधिक फीस लेते हैं। उनकी तैयारी, जो मूल रूप से कुछ पैसों की होती है, शिलिंग में खर्च होती है। जनता अपनी आस्था और किसी बीमारी से छुटकारा पाने की आशा में खुद को ठगने देती है। तो क्या हमारे परिचित नीम-हकीम, मानवता का दिखावा करने वाले डॉक्टरों से बेहतर नहीं हैं?

पाठक: स्वास्थ्य प्रणाली के बारे में आपकी क्या राय है?

संपादक: जो कुछ पहले कहा जा चुका है उसके अतिरिक्त आप मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा से स्वास्थ्य पर निम्नलिखित विचार देख सकते हैं:

स्वास्थ्य

कहा जाता है, "यदि हमारा मन स्वस्थ, प्रसन्न और पवित्र रहेगा तो संसार में समस्या का लेशमात्र भी नामोनिशान नहीं रहेगा और संसार खुशियों से भर जाएगा।"

एक व्यक्ति को स्वस्थ तभी कहा जा सकता है जब वह सहज हो और बाथरूम में अपने शरीर को पूरी तरह नग्न अवस्था में निहार सके।

यदि कोई व्यक्ति बाथरूम, ड्रेसिंग रूम और डाइनिंग रूम में अपने शरीर की प्रशंसा नहीं कर सकता है, तो उसे निश्चित रूप से उपचार की आवश्यकता है और उपचार के विभिन्न तरीके निम्नलिखित हैं:

स्वास्थ्य का तांत्रिक तरीका:

"मन की गति ही पदार्थ है।" यह मन ही है जो शरीर को बनाए रखता है और अगर मानसिक स्वास्थ्य ठीक है तो भौतिक शरीर भी ठीक रहेगा। तंत्र मन, पदार्थ और उसकी गति से संबंधित है, और भगवान शिव द्वारा माता पार्वती को बताई गई ऐसी एक सौ बारह विधियाँ हैं जो मानवता की संपूर्ण ज़रूरतों को कवर करती हैं, यानी भूत, वर्तमान और भविष्य।

सुगंध चिकित्सा द्वारा मन की सफाई, यज्ञ द्वारा वातावरण की सफाई तथा इन्द्रियों पर नियंत्रण (कभी-कभी यौन क्रिया भी) द्वारा शरीर की सफाई तंत्र के परिणाम हैं।

उपचार के विभेदक तरीके:

ऐसा कहा जाता है कि "यदि सभी घटक/भाग ठीक हैं तो मशीन/शरीर ठीक है। अधिकांश चिकित्सा विज्ञान इसी घटना पर काम करते हैं, वे व्यक्तिगत रूप से होने वाली शिथिलता/दुर्व्यवहार को ठीक करते हैं और एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, यूनानी आदि इसके उदाहरण हैं। आयुर्वेद, जो आयु का वेद (जीवन का वेद) है और जिसे पाँचवाँ वेद माना जाता है, उपचार प्रदान करने के लिए ज्योतिष की मदद भी लेता है। एक्यूप्रेसर, एक्यूपंकचर, रंग चिकित्सा, चुंबकीय चिकित्सा और मालिश भी उपचार के विभिन्न तरीके हैं।

उपचार की एकीकृत विधि:

बीमार व्यक्ति के इलाज का एक और तरीका एकीकरण पर जोर देता है। यह कहता है, "आप भागों को छोड़ दें, और अपने पूरे शरीर और दिमाग को ठीक करें तो भाग अपने आप ठीक हो जाएंगे"। इस तरह सभी कार्य एकीकृत हो जाते हैं। योग, ध्यान, आस्था चिकित्सा और कुछ हद

तक, प्राकृतिक चिकित्सा और सम्मोहन इसी सिद्धांत पर काम करते हैं। यह कहता है, "अगर मशीन ठीक है तो सभी भाग सही होने चाहिए"।

सद्भाव का मार्ग:

सामान्य समझ के लिए, योग स्वास्थ्य की अंतिम सीढ़ी हुआ करता था, जिसमें इनपुट और आउटपुट में तालमेल होता है। जिन लोगों का इन और आउट में तालमेल नहीं है, उनके लिए योग ही एकमात्र विकल्प है।

लेकिन समकालिक व्यक्ति, 'योगी क्या करेगा'? योगी का नृत्य, पूर्ण योगी शायद ही कभी योगिक व्यायाम का सहारा लेता है। योगी योग में रहता है और वे नृत्य करते हैं- सूफी नृत्य, शिव नृत्य और कृष्ण नृत्य।

रजनीश (ओशो) की समझ ने इसमें हमारे लिए नए आयाम जोड़े हैं।

ओशो समझ गए -

योगी नृत्य, इसका उपफल - यदि कोई नृत्य कर सकता है तो वह योगी होगा और पूर्ण स्वस्थ होगा, और खुश और पवित्र भी होगा। रजनीश ने हम सभी के लिए इस अनुभूति को विकसित किया है और नृत्य और गायन के विभिन्न तरीके सुझाए हैं।

रोगियों के लिए औषधि, असंतुलित व्यक्तित्व व मानसिक रूप से टूटे हुए लोगों के लिए योग तथा स्वस्थ लोगों के लिए नृत्य (गायन, वादन व नृत्य) आदर्श हैं।

सरकार को नृत्य केंद्रों को प्रोत्साहित करना होगा, और यह सूफी और ओशो के संगीत के अनुरूप हो सकता है। शिक्षा केंद्रों में इसे एक विषय के रूप में और कार्यालयों में व्यायाम के रूप में अनुमति दी जाएगी। प्रतिदिन नृत्य करने से डॉक्टर दूर रह सकते हैं।

1. हमें पूर्वी स्वास्थ्य प्रथाओं को बढ़ावा देने और उन्हें एकीकृत स्वास्थ्य प्रणाली का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है।

2. यह देखा गया है कि सभी सरकारी डॉक्टर कम प्रैक्टिस करते हैं और निजी डॉक्टर ज़्यादा प्रैक्टिस करते हैं। निजी डॉक्टर प्रार्थना करते हैं कि उनके पास ज़्यादा से ज़्यादा मरीज़ आएँ और एक तरह से वे ज़्यादा से ज़्यादा बीमारियों के लिए प्रार्थना करते हैं, यहाँ प्रार्थना में ही सुधार की ज़रूरत है।

3. सरकार को डॉक्टरों और अस्पतालों द्वारा ली जाने वाली अधिकतम फीस को सीमित करना होगा और इस पेशे को अनावश्यक रूप से महिमामंडित और बढ़ावा न देने के लिए मीडिया के साथ मिलकर काम करना होगा (यह देखा गया है कि डॉक्टर और उनका परिवार एक सामान्य परिवार की तुलना में अधिक दवा का सेवन करते हैं)।

4. चिकित्सा व्यय के नाम पर मुफ्त सुविधाओं को तर्कसंगत बनाना होगा और सरकारी अस्पतालों और केमिस्टों, सरकारी क्षेत्र और निजी अस्पताल और केमिस्टों के बीच के गठजोड़ को खत्म करना होगा। सरकारी अस्पताल के बाह्य रोगी विभाग को प्रतिदिन कम से कम दस घंटे की सेवा उपलब्ध करानी होगी।

5. उपचार के सभी विभेदक तरीके साफ पेट पर अधिक जोर देते हैं, शारीरिक दृष्टि से इन तरीकों का कहना है कि समस्या पेट से शुरू होती है और पेट के माध्यम से ठीक होती है। साइको-फिजियोलॉजिकल स्तर पर यह कहा जाता है कि पेट में समस्या तब शुरू होती है जब कोई व्यक्ति किसी भावना, भावना, कथन या स्थिति को पचा नहीं पाता है और इस तरह ये विभेदक तरीके समस्या को अधिक शारीरिक और कम मानसिक से कम शारीरिक और अधिक मानसिक में स्थानांतरित करते हैं। उपचार के विभेदक तरीकों के परिणाम सामूहिक स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र परिवेश की आवश्यकता को इंगित करते हैं।

यह पद्धति यह दर्शाती है कि रोग, स्वास्थ्य और खुशी संक्रामक हैं, और इस प्रकार यह व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के स्थान पर सामूहिक दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है।

6. सरकार और धार्मिक केंद्रों को यह संदेश प्रसारित करना होगा कि अगर सेवन (भोजन) सही है तो शरीर भी ठीक रहेगा। यहां भोजन से तात्पर्य है कि हम आंख, कान, नाक, मुंह और यौन अंगों से क्या खाते हैं और इस तरह मुंह से जो खाते हैं वह सिर्फ पांच प्रतिशत है। कई लोग भोजन को दवा के रूप में खाते हैं और कई लोग दवा को भोजन के रूप में खाते हैं। भोजन की शुद्धता से सात्विकता बढ़ती है।

7. चिकित्सा पर्यटन से विदेशी मुद्रा कमाने का अच्छा अवसर मिलता है, लेकिन दूसरों की बीमारी से पैसा कमाना एक बीमार मानसिकता है, इसलिए स्वस्थ संस्कृति से इसे बढ़ावा नहीं मिल सकता। लेकिन, बाहरी मरीजों के इलाज के लिए हमारे दरवाजे खुले होने चाहिए।

8. जैसे-जैसे मानव जीवन अपने फल की ओर आगे बढ़ेगा, सौंदर्य और स्वास्थ्य के लिए प्लास्टिक सर्जरी के साथ-साथ क्लोनिंग, जीनोम और स्टेम सेल हस्तक्षेप बढ़ेगा। भ्रूण और हृदय

प्रत्यारोपण, मस्तिष्क कृत्रिम उत्तेजना तकनीकें उपलब्ध होंगी और पहले तो इन्हें बढ़ावा मिलेगा और फिर समाज, मन और समाज की प्रगति के द्वारा फ़िल्टर किया जाएगा।

मूल रूप से यह कहा जा सकता है कि 'स्वस्थ, सुखी और पवित्र शरीर' पाने के लिए – इसकी सुनें, यह सभी चेतावनियाँ और संकेत देता है।

पाठक: एक ओर स्वच्छता और सफाई तथा दूसरी ओर मोटापा और कुपोषण, जो देश की समग्र स्वास्थ्य स्थिति को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं, के बारे में आपकी क्या राय है?

संपादक: जो कुछ पहले ही कहा जा चुका है, उसके अलावा आप स्वच्छता और सफाई तथा मोटापा और कुपोषण पर मेरी निम्नलिखित राय पुस्तक: मीता – लाइफ़ स्टाइल एजेंडा से ले सकते हैं:

स्वच्छता और सफाई

हमें इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि वर्तमान में गाँव, शहर और महानगर उतने स्वच्छ नहीं हैं, जितना हम आमतौर पर उम्मीद करते हैं। हमारी बस्तियाँ या तो बहुत ज़्यादा साफ़-सफ़ाई से थक चुकी हैं या फिर उन्हें गंदा ही रहने दिया गया है। कई बार कुछ हिस्सों को साफ़ करने के चक्कर में हम बाकी हिस्सों को और भी गंदा कर देते हैं।

संगठित कचरा निपटान प्रणाली के अभाव में भी, कुशल कचरा निपटान प्रणालियों वाले गाँव महानगरों की तुलना में अधिक स्वच्छता बनाए रखने में सक्षम हैं। महानगरों की तुलना में गाँवों के स्वच्छ होने का कारण, ग्रामीणों का सादा जीवन और अनावश्यक कचरा न पैदा करने की उनकी प्रवृत्ति है।

स्वच्छता जीन में वह उच्चता है जो स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ वातावरण का निर्माण करती है। स्वच्छता एक व्यक्तिगत पसंद और प्रयास है लेकिन यह स्वच्छता से उत्पन्न होती है, जो एक सामूहिक प्रयास है।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब स्वस्थ जीवन के मूल तत्व "स्वच्छता और सफाई" की उपेक्षा की जाती है और सफाई करने वाले या सफाई करने वाले के साथ दूसरा, तीसरा, चौथा या यहां तक कि अमानवीय व्यवहार किया जाता है। आमतौर पर सभी उपदेशक मन और शरीर की स्वच्छता और सफाई के बारे में उपदेश देते हैं, अगर ऐसा है तो वास्तविक कर्ता महत्वहीन और कम योग्य कैसे हो जाता है?

ऐसा महसूस किया जाता है कि शौचालय की सफाई मंदिर में दीपक जलाने से भी उतनी ही महत्वपूर्ण है और उससे भी अधिक नहीं तो बराबर का व्यवहार मिलना चाहिए; जो समाज ईश्वर के निवास के लिए स्वच्छ वातावरण के निर्माता के साथ समान और सम्मानजनक व्यवहार नहीं करता, वह दूसरे समाज द्वारा वशीभूत, पराजित, गुलाम हो जाता है, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो। एशिया के पतन में यह सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक था और दुर्भाग्य से हमारे अपने बुद्धिजीवियों (आत्मा की सफाई के तथाकथित उपदेशकों) ने इसे बनाया या होने दिया।

“सुंदरता स्वच्छता में है, स्वच्छता में ईश्वर निवास करता है”।

A) वर्तमान समय में मच्छर भगाने वाली दवा के आविष्कार के बाद समग्र सफाई में गिरावट गंभीर हो गई है। मच्छर भगाने वाली दवा निर्माता और उसके खुदरा श्रृंखला संचालक ने सामान्य गंदगी और पानी के जमाव को बढ़ावा दिया और मच्छरों के उन्माद को बढ़ाने में सफल रहे। लोगों, नगर पालिकाओं की आलस्य और ऐसी केंद्रीकृत निष्क्रिय नगर सफाई व्यवस्था में विकल्पों की अनुपलब्धता के कारण सामान्य सफाई और भी खराब हो गई है।

औद्योगीकरण और उससे अपेक्षित बड़े पैमाने पर फल की वजह से पैदा हुई अंधता ने नदियों को गंदा कर दिया। इस तरह के औद्योगीकरण से अपेक्षित फल तो नहीं आए और न ही आएंगे, लेकिन नदी की गंदगी ने एक बड़ी आबादी को प्रभावित किया है। अब यह गंदगी आस-पास के निवासियों के अलावा जल निकायों के लिए प्रार्थना करने वाले लोगों, प्रकृति प्रेमियों में भी गुस्सा पैदा कर रही है।

C) "जो गंदगी रखता है, उसका जीवन गंदा हो जाता है।" स्वच्छ वातावरण में ही समृद्धि और खुशहाली बढ़ती है। सुअर से नफरत करने का मतलब गंदगी से नफरत करना है, सिर्फ सुअर से नफरत करने से कोई फायदा नहीं होता, बल्कि इससे प्राकृतिक सफाई का दायरा कम हो जाता है और आम तौर पर अधिक सुअर, मक्खियाँ और परिणामस्वरूप अधिक नफरत आकर्षित होती है। धार्मिक संस्थाओं को सफाई और स्वच्छता का काम करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। सरकार को सफाई गतिविधियों से खुद को अलग करने की जरूरत है और इस गतिविधि को सीधे समाज और उसके धार्मिक केंद्रों में स्थानांतरित करने की जरूरत है।

1. मैला ढोने वाले कचरे को अलग करने के लिए तकनीकी प्रगति को शामिल करना होगा, और यह प्रयोग के बाद उपयोगी है।

2. कूड़ा-कचरा साफ करो और मालिक बनकर कमाओ मॉडल को बढ़ावा देना होगा, सहायक उपकरण समाज को ही नाममात्र लागत पर उपलब्ध कराने होंगे।

3. धार्मिक केंद्रों, वरिष्ठ नागरिक समितियों को नगर निगम की सफाई गतिविधियों का नेतृत्व करने और बाजारों, कॉलोनीयों में सार्वजनिक सुविधाओं के निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। ऐसी समिति को निर्वाचन क्षेत्र स्तर की नगरपालिका समिति के साथ मिलकर काम करना होगा।

4. मंदिर, मस्जिद आदि को अपनी और अपने आसपास की सफाई बनाए रखने के लिए विशेष वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी, जब तक कि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो जाते।

5. स्कूलों और कॉलेजों को कुछ पुरस्कार देने के फार्मूले के साथ, अपने विद्यालय, अपने घर और बड़े पैमाने पर समाज की सफाई में छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

6. नदी एवं अन्य जल निकायों की सफाई के लिए धार्मिक केन्द्रों, वरिष्ठ नागरिकों एवं 60 वर्ष से अधिक आयु के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की समितियों को सफाई कार्य में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना होगा, साथ ही गंदगी/कचरे की रोकथाम भी सर्वप्रथम करनी होगी।

7. स्वच्छता बनाए रखने में बाधा उत्पन्न करने वाले उद्योगों को स्थानांतरित करना होगा, चाहे वे कितने भी बड़े क्यों न हों। उद्योगों के साथ-साथ दैनिक जीवन में भी 5 एस (सुरक्षा, उपयुक्तता, सुरक्षा, स्थानांतरण और सफाई) के अनुसार सफाई पैटर्न को बढ़ावा देना होगा।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए सरकारी सेवा में चतुर्थ श्रेणी की नियुक्ति समाप्त करने का प्रस्ताव है, साथ ही सफाई कर्मचारियों को पुजारी के मानदेय के लगभग बराबर वेतन देने का प्रस्ताव है। इससे कुछ ही समय में आरक्षण की आवश्यकता अप्रासंगिक हो जाएगी।

जिस समाज में योजनाकार और कलाकार को उपदेशक और चालाक की तुलना में अधिक सम्मान दिया जाता है, वह समाज अग्रणी बन जाता है और बना रहता है।

मीडिया को स्वच्छता और सफाई के संदेश को बढ़ावा देना होगा। स्वच्छ घर, स्वच्छ कॉलोनी (मोहल्ला), स्वच्छ गांव, शहर, जिला और राज्य के लिए नकद और दौड़ ट्रॉफी के साथ प्रतियोगिता और पुरस्कार को प्रोत्साहित करना होगा।

मोटापा और कुपोषण

चीन में क्लीनिकल व्यवसाय पर एक रिपोर्ट कहती है, "वर्तमान जीवनशैली और खान-पान की आदतों (फास्ट लाइफ, फास्ट फूड) के कारण, शहरी आबादी का तीस प्रतिशत हिस्सा हमेशा मोटापे से पीड़ित रहेगा और इस तीस प्रतिशत में से पचास प्रतिशत लोग मोटापे के क्लीनिक का सहारा लेंगे। मोटापे से ग्रस्त रोगियों की इतनी बड़ी संख्या की देखभाल के लिए, बड़ी संख्या में मोटापा क्लीनिक की आवश्यकता होगी और इस तरह यह व्यवसाय अच्छी संभावनाएं लेकर आएगा।

दुनिया के दूसरे हिस्सों में, एक दूसरी रिपोर्ट कहती है कि अमीर और गरीब के बीच बढ़ती असमानता के साथ, गरीबी भी उसी दर से बढ़ेगी जिस दर से उस देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) बढ़ेगा। इस गरीबी के कारण भुखमरी/कुपोषण होगा और यह मिशनरियों और धर्मार्थ ट्रस्टों को अच्छी नौकरियां प्रदान करेगा।

यह कैसी आर्थिक योजना है, दवा और दान को व्यवसाय के रूप में? चूंकि चिकित्सा, दान और मिशनरी को व्यवसाय के रूप में बढ़ने और महिमामंडित करने की अनुमति है, इसलिए बीमारी/रोग को भी बढ़ने की अनुमति है और उसे बढ़ावा दिया जा रहा है, यह कितनी शर्म की बात है? देश के राष्ट्रीय योजनाकारों से अनुरोध है कि वे इस प्रतिमान को देखें और भविष्य के लिए योजना बनाएं।

1) मोटापा और कुपोषण भी टूटे हुए आश्रम और वर्ण व्यवस्था (जीवनशैली और जाति/वर्ण का विभाजन) का परिणाम है। एक प्राकृतिक अवधारणा के रूप में, एक गृहस्थ आश्रम में और एक व्यवसाय के काम में कमाता है और दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करता है, एक परिवार में और दूसरा समाज में। लेकिन वर्तमान में गृहस्थ आश्रम में और व्यवसाय के काम में लोग ज़रूरत से ज्यादा ले रहे हैं और ज्यादा खा रहे हैं और दूसरों को उनकी ज़रूरत से बहुत ज्यादा छोड़ रहे हैं। इससे चौबीस साल से अड़तालीस साल की उम्र के लोगों में मोटापा और व्यवसाय के वर्ग में सभी लोगों में कुपोषण और कुपोषण हो रहा है। अगर हम एक स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज चाहते हैं, तो हमें अपने आश्रम और वर्ण व्यवस्था को सही करना होगा।

2) शिक्षा, उद्योग और सेवा क्षेत्र में शारीरिक गतिविधि को आवश्यक अंग के रूप में शामिल करने के लिए योजना और उसके क्रियान्वयन को बढ़ावा दिया जाएगा, चाहे वह 'वर्क इन' हो या 'वर्क आउट'। प्रतिदिन नृत्य करने से डॉक्टर दूर रहते हैं।

3) प्रिजर्वेटिव युक्त भोजन पेट में भी भोजन को सुरक्षित रखता है और अपच का कारण बनता है। कृत्रिम प्रिजर्वेटिव के उपयोग को सीमित करना होगा और प्राकृतिक प्रिजर्वेटिव के सामान्य उपयोग को कम करना होगा। स्कूलों और दफ्तरों की कैंटीनों में जो कुछ भी बेचा जाता है, उस पर नज़र रखने की ज़रूरत है। यह देखा गया है कि मोटे लोग बहुत तेज़ी से खाते हैं जबकि स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए खाने-पीने का समय धीरे-धीरे होना चाहिए। भोजन के लिए कहा जाता है 'ठोस पिएँ और तरल खाएँ' (भोजन को इतना चबाएँ कि वह तरल हो जाए और पानी को ऐसे गटकें जैसे कि वह ठोस केला हो)। हो सके तो गद्देदार ज़मीन या टेबल कुर्सी पर शांति से बैठकर खाना-पीना चाहिए, लेकिन खड़े होकर खाने-पीने से बचना चाहिए।

4) मोटापा खाने की वजह से नहीं, बल्कि अकुशल मल त्याग की वजह से होता है। पूर्वी शौचालय घुटने के पीछे एक्यूप्रेसर भी देता है और मल त्याग में आसानी पैदा करता है। पूर्वी शौचालय और प्रसाधन सामग्री को और बढ़ावा देने की ज़रूरत है। इसके अलावा, बैठकर या खड़े होकर शौच करना बीमार और जानवरों के लिए है। स्वस्थ समाज को पेशाब और शौच के लिए स्वस्थ तरीके का इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। पश्चिमी शौचालय महानगरों और बड़े शहरों में मोटे, अस्वस्थ लोगों के लिए मुख्य कारणों में से एक है और इसे सुधारने और इस पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

5) बरगद और पीपल के पेड़ दिन और रात में भोजन ग्रहण करने/बनाने के कारण बढ़ते रहते हैं जबकि अन्य पेड़-पौधे केवल दिन में ही भोजन बनाते हैं। भोजन बनाने में पेड़ कार्बन लेते हैं (हवा में कार्बन डाइऑक्साइड के माध्यम से) और पर्यावरण में ऑक्सीजन छोड़ते हैं। यह कार्बन जो पेड़ लेते हैं वह फिर प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से ग्लूकोज/फ्रुक्टोज या पेड़ के रस में परिवर्तित हो जाता है जिसे मनुष्य सहित जानवर खाने से लेते हैं (कार्बन-ग्लूकोज/फ्रुक्टोज)। हवा से मनुष्य ऑक्सीजन लेते हैं और सांस लेने के बाद वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। कार्बन डाइऑक्साइड में मौजूद कार्बन जो मनुष्य हवा में छोड़ते हैं, वजन घटाने का प्रमुख स्रोत है और अगर हम अपनी सांसें (गहरी और लंबी) जारी रखें, तो हम अपने शरीर को बनाए रख सकते हैं।

6) नानक की अवधारणा में लंगेर को लंगेर, अन्नकूट, कुरान खानी या कुपोषण से निपटने के लिए दावत के रूप में बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

7) सकल घरेलू उत्पाद जो सभी दिशाओं (अमीरी, गरीबी, चोरी, डकैती, अपराधी, आदि) में वृद्धि का कारण बनता है, हमारे अराजक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चरित्र को दर्शाता है। समग्र स्थिति में सुधार के लिए, जीडीपी शब्द को सकल खुशी अनुपात-जीएचआर शब्द के साथ विलय करने की आवश्यकता है ।

अच्छी सभ्यता क्या है?

पाठक: आपने तेज़ संचार, समवर्ती स्वास्थ्य और न्यायिक प्रणाली (अंग्रेजों द्वारा तैयार) की निंदा की है। मैं देख सकता हूँ कि आप सभी मशीनरी को त्याग देंगे। तो फिर सभ्यता क्या है?

संपादक: (1) यह कथन कि सभी रास्ते रोम की ओर जाते हैं, ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता, प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में विश्वव्यापी शासन की महत्वाकांक्षा, फिर तथाकथित सर्वशक्तिमान अर्थव्यवस्था और उसके आर्थिक आक्रमण, और अब दुनिया में नंबर एक बनने की कुछ लोगों की महत्वाकांक्षा – इन सभी को, दुनिया के एक बड़े परिवार बनने की स्वाभाविक प्रगति की ओर शक्ति ब्लॉक के स्थानांतरण के रूप में माना जा सकता है।

सभी की विफलता का कारण यह है कि ये सभी साम्राज्य अपने लोगों के दिलो-दिमाग में नहीं रह पाए। दमन से हासिल की गई कोई भी सर्वोच्चता समाप्त हो जाएगी। जब तक गुरु, उनके शिष्य, नेता और उनके अनुयायी और आम जनता दुनिया को एक बड़े परिवार के रूप में नहीं समझेंगे, तब तक एक जाति, पंथ, रंग या देश के वर्चस्व की सभी कोशिशें समाप्त हो जाएंगी। तेज़ संचार के आविष्कार के बाद, गलत धारणाओं वाले वर्चस्व को स्थापित करने और उन्हें समाप्त करने की प्रक्रिया तेज़ हो गई।

(2) सभ्यता का मतलब है जहाँ लोग नियमों और विनियमन में सांत्वना पाते हैं, समाज के साथ-साथ प्रकृति के नियम और विनियमन का सम्मान करते हैं और उन्हें तोड़ने से डरते हैं। हिंदी या संस्कृत में सभ्यता का अर्थ है सभ्यता, जहाँ इसका अर्थ है 'अच्छा डर' जिससे समाज में हर कोई डरता है।

अच्छी सभ्यता एक जीवित स्वर्ग की तरह है, जिसमें लोगों पर नजर रखने, जांचने या दंडित करने की जरूरत नहीं होती, जहां बच्चों को नरक या जेल के डर से नहीं, बल्कि प्यार और शिक्षा देकर बड़ा किया जाता है कि बुराई क्यों बुरी है और अच्छाई क्यों अच्छी है।

(3) अच्छी सभ्यताएँ इस प्रतिमान पर काम नहीं करतीं कि हर कोई काफिर या अधार्मिक है और उसे सभ्य बनाने के लिए शुक्रवार, शनिवार या रविवार को धर्म परिवर्तन करना होगा। आश्चर्य की बात यह है कि लोगों का धर्म परिवर्तन करके उन्हें सभ्य बनाने की यह प्रक्रिया करुणा और उनके अपने भले के लिए की जाती है। उनकी करुणा इतनी महान प्रतीत होती है कि उन्हें लगता

है कि अगर कोई व्यक्ति अपना धर्म नहीं बदलता है तो उसे काफिर/अधार्मिक/गैर-ईसाई का जीवन जीने से मुक्त करने के लिए उसे लात मारने/मारने की आवश्यकता है और यह उसके अपने भले के लिए और समाज के भले के लिए किया जाना चाहिए (इंद्रियों के नाम पर यह कैसी बकवास है)।

(4) अच्छी सभ्यता वह है जहाँ नियम प्रक्रिया को जटिल बनाने के लिए नहीं बनाए जाते हैं ताकि व्यापारिक समुदाय को लाभ हो और उन्हें तोड़ने के लिए विद्रोह करने के लिए क्रोध हो, और निश्चित रूप से नियम बहुत सरल नहीं बनाए जाते हैं ताकि लोग उन्हें दंड से मुक्त होकर तोड़ दें और यह भावना विकसित करें कि समाज में कोई नियम (या जंगल का राज) नहीं है।

अच्छी सभ्यता वह नहीं है जहां सरकार इस प्रतिमान पर काम करती है कि हर कोई चोर है और ईमानदार को सम्मानित किया जाएगा, बल्कि अच्छी सभ्यता इस प्रतिमान पर काम करती है कि "हर कोई ईमानदार है और अतिचारियों को दंडित किया जाएगा"।

अच्छी सभ्यता वह नहीं है जहां न्यायालय कागजों (कागजी फैसले) पर काम करता है, बल्कि न्यायालय वास्तविकता पर काम करता है, एकल न्यायाधीश या जूरी द्वारा तत्काल आधार पर वास्तविकता का पता लगाया जाता है (जैसे माता-पिता बच्चों के बीच झगड़े को सुलझाते हैं ताकि उन्हें बिना किसी दुर्भावना के तत्काल समाधान मिल जाए और यदि संभव हो तो एक नया रास्ता सुझाते हैं (न्याय या वही - न्याय) जहां से संस्कृत में "न्याय" शब्द आया है।

अच्छी सभ्यता वह है जहाँ कमजोरों की रक्षा की जाती है और बुद्धिमानों का सम्मान किया जाता है, जहाँ न तो माता-पिता को बुढ़ापे में अकेला छोड़ा जाता है और न ही बच्चों को छोटी उम्र में अकेला छोड़ा जाता है ताकि जोड़े काम करके वयस्कता का आनंद ले सकें। जहाँ काम ही पूजा है, जहाँ प्रार्थना प्राथमिक और निजी है, साझा करना गौण है और उत्सव को उसका स्वाभाविक परिणाम और निश्चितता माना जाता है, वह स्थान सबसे अच्छी सभ्यता मानी जा सकती है।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इंटरव्यू में):

उत्तर: इस प्रश्न का उत्तर कठिन नहीं है। मेरा मानना है कि भारत की विकसित सभ्यता दुनिया में किसी से कम नहीं है। हमारे पूर्वजों ने जो बीज बोए हैं, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। रोम चला गया, ग्रीस का भी वही हश्र हुआ। फिरोन की ताकत टूट गई। जापान पश्चिमीकृत हो गया। चीन के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन भारत की नींव अभी भी किसी न किसी

तरह मजबूत है। यूरोप के लोग ग्रीस या रोम के लोगों की रचनाओं से सबक लेते हैं, जो अब अपने पुराने गौरव के साथ नहीं रहे। उनसे सीखने की कोशिश में यूरोप के लोग सोचते हैं कि वे ग्रीस और रोम की गलतियों से बच जाएंगे। ऐसी उनकी दयनीय स्थिति है। इन सबके बीच भारत अडिग है और यही उसका गौरव है। भारत पर यह आरोप लगाया जाता है कि उसके लोग इतने असभ्य, अज्ञानी और जड़ हैं कि उन्हें किसी भी बदलाव को अपनाने के लिए प्रेरित करना संभव नहीं है। यह वास्तव में हमारी योग्यता के विरुद्ध आरोप है। हमने जो अनुभव की कसौटी पर परखा है और जिसे सही पाया है, उसे हम बदलने की हिम्मत नहीं कर सकते। बहुत से लोग भारत पर अपनी सलाह थोपते हैं, और वह स्थिर रहता है। यही उसकी सुन्दरता है: यह हमारी आशा का आधार है।

सभ्यता आचरण का वह तरीका है जो मनुष्य को कर्तव्य का मार्ग दिखाता है। कर्तव्य का पालन और नैतिकता का पालन परिवर्तनीय शब्द हैं। नैतिकता का पालन करना हमारे मन और हमारी भावनाओं पर नियंत्रण प्राप्त करना है। ऐसा करने से हम खुद को जान पाते हैं। सभ्यता के लिए गुजराती समकक्ष का अर्थ है "अच्छा आचरण"।

यदि यह परिभाषा सही है, तो भारत को, जैसा कि अनेक लेखकों ने दर्शाया है, किसी और से कुछ भी सीखने की आवश्यकता नहीं है, और ऐसा ही होना चाहिए। हम देखते हैं कि मन एक चंचल पक्षी है; जितना अधिक उसे मिलता है, उतना ही अधिक वह चाहता है, और फिर भी वह असंतुष्ट रहता है। हम जितना अधिक अपनी वासनाओं में लिप्त होते हैं, वे उतनी ही अधिक बेलगाम होती जाती हैं। इसलिए हमारे पूर्वजों ने हमारी भोग-विलास की सीमा तय कर दी थी। उन्होंने देखा कि सुख मुख्यतः एक मानसिक स्थिति है। जरूरी नहीं कि कोई व्यक्ति धनी होने के कारण सुखी हो या निर्धन होने के कारण दुखी हो। धनी लोग प्रायः दुखी और निर्धन लोग सुखी दिखाई देते हैं। लाखों लोग हमेशा निर्धन ही रहेंगे। यह सब देखकर हमारे पूर्वजों ने हमें विलासिता और सुख-सुविधाओं से विरत कर दिया। हम उसी प्रकार के हल से काम चलाते हैं, जो हजारों वर्ष पहले चलता था। हमने उसी प्रकार के झोपड़े बनाए रखे हैं, जो हमारे पास पहले थे और हमारी स्वदेशी शिक्षा भी पहले जैसी ही है। हमारे यहां जीवन को नष्ट करने वाली प्रतिस्पर्धा की कोई व्यवस्था नहीं थी। प्रत्येक व्यक्ति अपना व्यवसाय या व्यापार करता था और एक निश्चित मजदूरी लेता था। ऐसा नहीं था कि हम मशीनों का आविष्कार करना नहीं जानते थे, लेकिन हमारे पूर्वज जानते थे कि अगर हम ऐसी चीजों के पीछे लग गए तो हम गुलाम बन जाएंगे और अपनी नैतिकता खो देंगे। इसलिए उन्होंने सोच-समझकर यह निर्णय लिया कि हमें अपने हाथों और पैरों से वही करना

चाहिए जो हम कर सकते हैं। उन्होंने देखा कि हमारा असली सुख और स्वास्थ्य हमारे हाथों और पैरों के सही इस्तेमाल में है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि बड़े शहर एक जाल और बेकार का बोझ हैं और लोग उनमें खुश नहीं रह सकते, कि उनमें चोरों और लुटेरों के गिरोह होंगे, वेश्यावृत्ति और दुराचार पनपेंगे और अमीर लोग गरीबों को लूटेंगे। इसलिए वे छोटे गांवों से संतुष्ट थे। उन्होंने देखा कि राजा और उनकी तलवारें नैतिकता की तलवार से कमतर हैं और इसलिए वे और पृथ्वी के शासक ऋषियों और फकीरों से कमतर हैं। इस तरह के संविधान वाला राष्ट्र दूसरों से सीखने की तुलना में दूसरों को सिखाने के लिए अधिक उपयुक्त है। इस राष्ट्र में अदालतें, वकील और डॉक्टर थे, लेकिन वे सभी सीमाओं के भीतर थे। हर कोई जानता था कि ये पेशे विशेष रूप से श्रेष्ठ नहीं थे; इसके अलावा, ये वकील और वैद लोगों को लूटते नहीं थे; उन्हें लोगों का स्वामी नहीं, बल्कि उनका आश्रित माना जाता था। न्याय काफी हद तक निष्पक्ष था। सामान्य नियम यह था कि अदालतों से दूर रहा जाए। लोगों को लुभाने के लिए कोई दलाल नहीं थे। यह बुराई भी केवल राजधानियों और उसके आसपास ही देखने को मिलती थी। आम लोग स्वतंत्र रूप से रहते थे और अपना कृषि व्यवसाय करते थे। उन्हें सच्चा स्वशासन प्राप्त था।

और जहाँ यह शापित आधुनिक सभ्यता नहीं पहुँची है, वहाँ भारत वैसा ही बना हुआ है जैसा पहले था। भारत के उस हिस्से के निवासी आपकी नई-नई धारणाओं पर हँसेंगे। अंग्रेज उन पर शासन नहीं करते, न ही आप उन पर कभी शासन करेंगे। जिनके नाम पर हम बोलते हैं, हम उन्हें नहीं जानते, न ही वे हमें जानते हैं। मैं आपको और आप जैसे मातृभूमि से प्रेम करने वालों को सलाह दूँगा कि आप उस अंदरूनी इलाके में जाएँ जहाँ अभी तक रेलों ने प्रदूषण नहीं फैलाया है और वहाँ छह महीने तक रहें; तब आप देशभक्त बन सकते हैं और स्वशासन की बात कर सकते हैं।

अब आप समझ गए होंगे कि मैं असली सभ्यता किसे मानता हूँ। जो लोग मेरे द्वारा वर्णित परिस्थितियों को बदलना चाहते हैं, वे देश के दुश्मन हैं और पापी हैं।

पाठक: चूंकि सभ्यता कोई एक दिन का आश्चर्य नहीं है, तो सभ्यता के चरण क्या हो सकते हैं?

संपादक: आप पुस्तक से निम्नलिखित अंश देख सकते हैं: मीता- लाइफ स्टाइल एजेंडा:

समाज विकास के चरण

एक सहज और बुनियादी आस्था के स्तंभों पर समाज और देश की सभ्यता के विकास के चार चरण हैं। पहला अर्थ, फिर काम (शारीरिक प्रेम), फिर धर्म (मानसिक प्रेम) और फिर मोक्ष

(स्वतंत्रता)। आगे कहा गया है कि, यह अर्थ, साधन और अर्थ ही है जो सभ्यता के लक्ष्य या चरम को तय करता है। यह अर्थ ही तय करता है कि कोई (व्यक्ति या देश) पहले चरण पर अटका रहेगा या दूसरे चरण या तीसरे चरण तक पहुंचेगा या नहीं। यह पहला चरण, अर्थ (साधन और धन) ही है जो समाज और देश के भाग्य और पहले, दूसरे, तीसरे चरण में अटके रहने या चौथे चरण, चरम तक पहुंचने की उसकी सीमा तय करता है।

आगे कहा गया है कि मंदिर (सभ्यता का शिखर) का स्वर्ण शिखर, काम, धर्म के आधार, अर्थ पर निर्मित है। किसी भी चरण को महत्व न देने से (मंदिर) सभ्यता ढह जाती है। प्रायः ऐसा होता है कि जब कोई व्यक्ति शिखर पर पहुंचता है, तो वह विकास के विभिन्न स्तरों पर मौजूद लोगों के महत्व को कम आंकना शुरू कर देता है और दूसरों को सम्मान देना तथा उन्हें आकर्षित करने का अपना स्वाभाविक कर्तव्य भी भूल जाता है, परिणामस्वरूप ऐसे लोग और ऐसी सभ्यता शीर्ष पर से गिर सकती है।

यह देखा गया है कि ढही हुई सभ्यताएं आम तौर पर अपने एक समय के वर्चस्व की बात करती हैं और काफी समय तक उसी स्मृतिलोप (पुरानी यादों) में डूबी रहती हैं, और अन्य लोग अपने साम्राज्य का निर्माण करने के लिए ढही हुई समृद्धि के टुकड़े तक को ले जाते हैं, जिससे उस पर रहने वाले लोग स्मृतिलोप में डूबे रहते हैं और अधिक कमजोर, असहाय बन जाते हैं।

एक सम्मानजनक समय सीमा के भीतर लक्ष्य की कल्पना और निर्धारण करे। समूह में अपने क्षेत्र के सभी विशेषज्ञ शामिल हो सकते हैं, जैसे न्यायाधीश और अपराधी, अपराधी और संत, ताकि एक एकीकृत दृष्टिकोण बनाया जा सके।

हमें समूह को साधन और विधि तैयार करने में सहायता करनी होगी, क्योंकि इरादे जितने स्पष्ट होंगे, यात्रा उतनी ही आसान और सुखद होगी। साफ तो मंज़िल आसान :नियत साफ तो मंज़िल आसान) और लक्ष्य की सहज उपलब्धि।

जैसा आधार होगा, वैसी ही इमारत बनेगी। शिखर पर पहुंचने की जल्दी में हमें बकवास की मीनार नहीं खड़ी करनी चाहिए, हमें ऐसी मीनार बनानी है जो लम्बे समय तक टिके, जिसका आधार आपसी विश्वास, सहयोग और आस्था हो।

विश्व का वर्तमान परिदृश्य यह संकेत दे रहा है कि आने वाले समय में वैश्विक दृष्टिकोण ही टिकेगा; इसलिए स्थानीय और वैश्विक हित के लिए वैश्विक दृष्टिकोण और मिशन, भूमिका और

जिम्मेदारियाँ रखने का प्रयास करना होगा। हमें उचित चर्चा और योजना के साथ चीजों को अंतिम रूप देना चाहिए और सर्वशक्तिमान ईश्वर से उचित प्रार्थना करते हुए उन्हें लागू करना चाहिए।

पाठक: श्री गांधी पैगम्बर साहब को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि आधुनिक सभ्यता शैतानी है और फिर कहते हैं कि अंग्रेज अच्छे हैं, लेकिन उनकी सभ्यता अच्छी नहीं है (इटैलिक में):

" यह सभ्यता न तो नैतिकता का ध्यान रखती है और न ही धर्म का। इसके अनुयायी शांति से कहते हैं कि उनका काम धर्म सिखाना नहीं है। कुछ लोग तो इसे अंधविश्वास की उपज मानते हैं। दूसरे लोग धर्म का चोला ओढ़कर नैतिकता की दुहाई देते हैं। लेकिन बीस साल के अनुभव के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि नैतिकता के नाम पर अक्सर अनैतिकता सिखाई जाती है। एक बच्चा भी समझ सकता है कि मैंने ऊपर जो कुछ भी बताया है, उसमें नैतिकता के लिए कोई प्रलोभन नहीं हो सकता। सभ्यता शारीरिक सुख-सुविधाओं को बढ़ाने की कोशिश करती है, लेकिन ऐसा करने में भी वह बुरी तरह विफल हो जाती है।

यह सभ्यता अधर्म है , और इसने यूरोप के लोगों पर इस कदर कब्ज़ा कर लिया है कि जो लोग इसमें हैं, वे आधे पागल लगते हैं। उनमें वास्तविक शारीरिक शक्ति या साहस की कमी है। वे नशे से अपनी ऊर्जा बनाए रखते हैं। वे अकेले में मुश्किल से खुश रह पाते हैं। औरतें, जिन्हें घरों की रानी होना चाहिए, सड़कों पर भटकती हैं या वे कारखानों में गुलामी करती हैं। थोड़े से पैसे के लिए, अकेले इंग्लैंड में पाँच लाख महिलाएँ कारखानों या इसी तरह के संस्थानों में कठिन परिस्थितियों में काम कर रही हैं। यह भयानक तथ्य रोज़ाना बढ़ते मताधिकार आंदोलन के कारणों में से एक है।

यह सभ्यता ऐसी है कि इसमें धैर्य रखना ही पड़ता है और यह स्वयं ही नष्ट हो जाती है। मोहम्मद की शिक्षा के अनुसार इसे शैतानी सभ्यता माना जाएगा। हिंदू धर्म इसे काला युग कहता है। मैं आपको इसके बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं दे सकता। यह अंग्रेजी राष्ट्र के प्राणों को खा रहा है। इसका बहिष्कार किया जाना चाहिए। संसदें वास्तव में गुलामी के प्रतीक हैं।

यदि आप इस पर पर्याप्त रूप से विचार करेंगे, तो आप भी यही राय रखेंगे और अंग्रेजों को दोष देना बंद कर देंगे। वे हमारी सहानुभूति के पात्र हैं। वे एक चतुर राष्ट्र हैं और इसलिए मेरा मानना है कि वे बुराई को त्याग देंगे। वे उद्यमी और मेहनती हैं और उनके सोचने का तरीका स्वाभाविक रूप से अनैतिक नहीं है। न ही वे दिल से बुरे हैं। इसलिए मैं उनका सम्मान करता हूँ। सभ्यता

कोई लाइलाज बीमारी नहीं है, लेकिन यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि अंग्रेज लोग वर्तमान में इससे पीड़ित हैं ”

इस पर आपका क्या विचार है?

संपादक: हम सब उस सर्वशक्तिमान के बेटे-बेटियाँ हैं, किसी को शैतान की सभ्यता कहना ठीक नहीं है। मैं नहीं देखता कि पगम्बर साहब जैसा महान व्यक्ति किसी जाति को शैतानी कहे।

पगम्बर साहब के जीवन से एक और कहानी है; “पगम्बर साहब के साथ चार-पांच दिन तक सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद एक पड़ोसी ने उस व्यक्ति के बारे में कहा, देखो, ये साले अभी भी सो रहे हैं, क्या ये सोने का समय है, या इबादत का समय है?

इस पर पगम्बर साहब ने आसमान की तरफ देखा और साँरी कहा, तब उनके पड़ोसी ने कहा, आपको क्यों साँरी बोलना चाहिए, बल्कि उन्हें साँरी बोलना चाहिए। पगम्बर साहब ने कहा, मैं उनके लिए नहीं बोल रहा हूँ, मैं अल्लाह से साँरी बोल रहा हूँ, कि इस पड़ोसी के साथ होने की वजह से मेरी नमाज खराब हो गई और अब मुझे दोबारा नमाज पढ़नी पड़ेगी।

और फिर पड़ोसी से पूछा, तुम सिर्फ चार-पांच दिन के लिए मेरे साथ हो और तुम्हें लगता है कि तुमने यह तय करने का अधिकार हासिल कर लिया है कि कौन संत है और कौन शैतान। अगर तुम्हारे जैसे व्यक्ति में ताकत आ जाए तो शायद तुम इन सोए हुए लोगों को यह कहते हुए मार डालोगे कि मैंने जो कुछ किया है, वह उनके भले के लिए है। भगवान/अल्लाह दुनिया को तुम्हारे जैसे दयालु लोगों से बचाए?

यदि किसी को लगता है कि पश्चिमी लोग अच्छे नहीं हैं तो यह हमारा कर्तव्य और जिम्मेदारी है कि हम उन्हें शैतान के इस जीवन से मुक्ति दिलाकर अच्छा बनाएं, उनके सामने झुककर नहीं बल्कि उनका पालन-पोषण करके, कमजोरी से नहीं बल्कि ताकत से, करुणा और करुणामय हत्या से नहीं बल्कि परोपकार और उदार पालन-पोषण से।

पाठक: आपके विचार में शैतान क्या है और शैतानी क्या है?

संपादक: हिंदू धर्म में शैतान को असुर, दैत्य, दानव और राक्षस भी कहा जाता है। ये सभी शैतानी लोग हैं जो शुरू में अंधेरे में काम करते हैं और जब अराजकता शुरू होती है, तो अपने शुभंकर को खुले में भेज देते हैं। जो तोड़ता है, जो आपके और आपकी प्रकृति के बीच में दीवार खड़ी करता है, जो बुनियादी बातों से ज़्यादा हवा-हवाई बातें, दिखावटी बातें करता है। जो आपको पसंद करता है

या जो आपको शांत अवस्था में रखता है (चाहे शराब की, धन की या हथियार की) उसे शैतान कहा जा सकता है। अगर लोगों का एक बड़ा हिस्सा ऐसे नियम-कायदों (जैसे शैतान को पसंद हैं) का पालन करता है और दो-तीन पीढ़ियों तक उसका पालन करता रहता है, तो उनकी सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहा जा सकता है।

वे कहते हैं कि कोई भी शैतान का असली चेहरा नहीं देख सकता (शैतान के अपने पैर और अपना चेहरा नहीं है और वह दूसरों के माध्यम से काम करता है) जिसे आप शैतान या शैतानी के रूप में देखते और वर्णित करते हैं, वह मूल रूप से वह है जिसे शैतान ने त्याग दिया है और जो खत्म होने वाला है।

पाठक:- शैतानी सभ्यता पर विजय कैसे पायें और स्वस्थ, सुखी और पवित्र सभ्यता कैसे बनें, इसका उपाय क्या है?

संपादक:- एक कहानी: एक आदमी अच्छे से स्नान करने के बाद सुबह की प्रार्थना के लिए पूजा स्थल की ओर बढ़ा, बीच रास्ते में उसे कुछ झटका लगा और वह कीचड़ में फिसल गया और उसने पाया कि उसका कपड़ा गंदा हो गया है, यह देखकर वह अपने घर गया और प्रार्थना के लिए खुद को फिर से तैयार किया। फिर से पूजा स्थल के रास्ते में उसे कुछ झटका लगा, कुछ फिसला और वह गंदा पाया और फिर से अपने घर चला गया। घर पर उसने फिर से स्नान किया और एक बार फिर सुबह की प्रार्थना के लिए आगे बढ़ा। इस बार पर्ची के पास उसने एक नकाबपोश आदमी को (अपना चेहरा ढकते हुए) लालटेन/टॉर्च के साथ देखा। नकाबपोश आदमी ने कहा कि सावधान रहो वहाँ फिसलन है, तुम गंदे हो सकते हो, मेरे साथ आओ मेरे पास लालटेन/टॉर्च है

इबादतगाह पर पहुँचकर उसने कहा कि आपने मुझे छोड़ दिया, बहुत अच्छा किया, नहीं तो मैं फिर से सड़क पर दो बार गिर जाता। आप मेरे साथ क्यों नहीं चलते? हम दोनों साथ में नमाज़ पढ़ेंगे। नकाबपोश ने कहा, मैं इबादतगाहों पर नमाज़ पढ़ने नहीं आता। उसने नकाबपोश से कहा; आप बहुत अच्छे हैं कि आपने रास्ता दिखाया है, इसलिए कृपया अपना चेहरा दिखाइए ताकि मैं आपको पहचान सकूँ और बाद में आपको सलाम कर सकूँ।

नकाबपोश ने कहा कि मेरा चेहरा कोई नहीं देख सकता, मैं आपको बता दूँ कि मैंने ही आपको फिसलने पर मजबूर किया था, लेकिन जब आपने इच्छाशक्ति दिखाई और दूसरी बार आए तो आपने खुद को सुधार लिया और जब आप तीसरी बार आए तो आपने अपने परिवार की हालत

सुधार ली। अगर मैंने आपको तीसरी बार फिसलने पर मजबूर किया होता और आप फिर से आते तो आपने अपने पूरे गांव की हालत सुधार ली होती।

मैं शैतान हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुम अपने पूरे गाँव की हालत सुधारो। नकाबपोश ने आगे कहा कि कोई भी मेरा चेहरा नहीं देख सकता। तुम जैसे दृढ़ इच्छाशक्ति वाले लोगों को छोड़कर सभी मेरे शुभंकर हैं, जो आस्थावान हैं; उन्हें भी मैं प्रार्थना करने के लिए छोड़ने की पेशकश करता हूँ। शैतान ने कहा कि मैं संत के बिल्कुल विपरीत हूँ; मुझे भी प्रकृति से हवा, पानी, सूरज, प्रकाश और अंधकार, स्थान मिलता है।

पाठक: भारत जैसा आपने वर्णन किया है, वैसा ही होता तो ठीक होता, लेकिन यह वही भारत है, जहां सैकड़ों बाल विधवाएं हैं, जहां दो वर्ष के बच्चों का विवाह कर दिया जाता है, जहां बारह वर्ष की लड़कियां मां और गृहिणी बन जाती हैं, जहां महिलाएं बहुपत्नीत्व का पालन करती हैं, जहां नियोग की प्रथा प्रचलित है, जहां धर्म के नाम पर लड़कियां वेश्यावृत्ति करती हैं और धर्म के नाम पर बकरे और भेड़ों की हत्या की जाती है। क्या आप इन्हें भी उस सभ्यता का प्रतीक मानते हैं, जिसका आपने वर्णन किया है?

संपादक : (1) जब शरीर कमजोर होता है, तब अनेक बीमारियाँ होती हैं। इसी प्रकार जब व्यक्ति कमजोर होता है, चाहे वह व्यक्ति हो, परिवार हो या समाज हो, तब उसकी लाज रखने के लिए उसकी छोटी उम्र में ही बेटी-बहनों की शादी कर दी जाती है, उसे घूँघट करने की अनुमति दी जाती है, लड़कियों-स्त्रियों के आने-जाने पर रोक लगा दी जाती है। ऐसे अनेक दोष तब प्रकट होते हैं, जब व्यक्ति गुलाम बन जाता है। जब व्यक्ति में शक्ति बढ़ती है, तो ये दोष और बीमारियाँ अपने आप समाप्त होने लगती हैं और जब व्यक्ति में शक्ति बढ़ती है, तो अनेक बुराइयाँ प्रकट होने लगती हैं, लेकिन वे अनियंत्रित रहती हैं।

(2) भारत ने हमेशा नीयत की पवित्रता का सम्मान किया है और कोई तीन पत्नियों या पाँच पतियों के साथ भी पवित्र रह सकता है और एक के साथ भी बेवफ़ा रह सकता है। नीयत की पवित्रता का मज़ाक उड़ाने या मज़ाक उड़ाने (मानसिक या शारीरिक) को कड़ी सज़ा दी जाती है, चाहे वह कोई भी हो। देवदासियाँ चर्च में बहनों की तरह भगवान की सेविकाएँ होती हैं और उन्हें किसी और तरह से नहीं बुलाया जा सकता।

(3) अंधापन तो अंधापन ही है और यह हमें नीचे गिरा सकता है, जबकि अच्छी सभ्यता वह है जो हमें जागरूक/जागृत रहने के लिए कहती है।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है (इटैलिक में)

उत्तर: आप गलती कर रहे हैं। आपने जो दोष दिखाए हैं, वे दोष हैं। कोई भी उन्हें प्राचीन सभ्यता नहीं मान सकता। इसके बावजूद वे बने हुए हैं। उन्हें दूर करने के लिए हमेशा प्रयास किए गए हैं और किए जाएंगे। हम अपने भीतर पैदा हुई नई भावना का उपयोग इन बुराइयों से खुद को शुद्ध करने के लिए कर सकते हैं। लेकिन मैंने आपको आधुनिक सभ्यता के प्रतीक के रूप में जो बताया है, उसे इसके उपासकों ने ऐसे ही स्वीकार किया है। भारतीय सभ्यता, जैसा कि मैंने वर्णन किया है, उसके उपासकों ने भी वैसा ही वर्णन किया है। दुनिया के किसी भी हिस्से में और किसी भी सभ्यता के तहत, सभी लोगों ने पूर्णता प्राप्त नहीं की है। भारतीय सभ्यता की प्रवृत्ति नैतिकता को ऊपर उठाने की है, जबकि पश्चिमी सभ्यता की प्रवृत्ति अनैतिकता को बढ़ावा देने की है। उत्तरार्द्ध ईश्वरविहीन है; पहला ईश्वर में विश्वास पर आधारित है। इतना समझदार और इतना विश्वास करने वाला, भारत के हर प्रेमी को भारतीय सभ्यता से वैसे ही चिपके रहना चाहिए जैसे एक बच्चा माँ के स्तन से चिपकता है।

पाठक: इस बात का क्या संकेत हो सकता है कि दी गई सभ्यता अच्छी सभ्यता है?

संपादक: गर्व और आनंद को एक अच्छी सभ्यता का संकेत माना जा सकता है और हम आपसे अनुरोध करते हैं कि इसके लिए मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा से निम्नलिखित संदर्भ लें:

गर्व और आनंद

गर्व आत्मनिर्भर होने, अंतर-निर्भरता का सम्मान करने, स्वीकार करने की शांति में रहने तथा देने की क्षमता और योग्यता में निहित है।

किसी भी तरह का आत्म-अपमानजनक प्रभाव या कमजोरी या बुरे व्यवहार का दमन गर्व के रंग को काला कर देता है। अपने काम या मुद्रा को कम या ज़्यादा रखना गर्व को खत्म कर देता है। जब एक सेब चार डॉलर/यूरो/पाउंड प्रति पीस बिकता है तो फ्रांसीसी या ब्रिटिश के लिए इसे खरीदना उतना ही आसान है जितना कि भारतीयों के लिए इसे चार रुपये में खरीदना। भेदभाव और इसका चेन इफ़ेक्ट तब शुरू होता है जब दूसरे देशों में भारतीयों को इसे दो सौ रुपये में

खरीदना पड़ता है। मुद्रा की समानता जल्द से जल्द खरीदनी होगी और इसे बनाए रखना होगा, भले ही हमें कुछ समय के लिए आधा भूखा रहना पड़े।

आनंद तब आता है, जब गर्व अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच जाता है और एक जागृत देश में ऐसा ही बना रहता है। आनंद प्रकृति के करीब रहने और प्रकृति को बड़े पैमाने पर हेरफेर करने के लिए आत्म-प्रतिबंध द्वारा बनाए रखा जाता है (जैसे नदी जोड़ परियोजना, बड़े पैमाने पर बांध, गहरे समुद्र में अन्वेषण और गहरे समुद्र में परमाणु परीक्षण आपदा लाएगा)।

"घमंड ईश्वर की कृपा से आता है, जबकि आनंद प्रकृति की गोद में है"।

भारत मानसिक रूप से स्वतंत्र और जिम्मेदार कैसे बन सकता है?

पाठक: सभ्यता के बारे में आपके विचार मुझे पसंद हैं। तो फिर, अपने विचार रखते हुए, भारत को मानसिक रूप से स्वतंत्र और जिम्मेदार बनाने के लिए आप क्या सुझाव देंगे?

संपादक: 1) केवल विचार से कुछ नहीं होता, विचार ही आधार हैं, कर्तव्य पालन एक दृष्टिकोण है, कर्म माध्यम है और धर्म भारत या किसी भी अन्य देश या समाज के लिए मानसिक रूप से स्वतंत्र और जिम्मेदार होने का मार्ग है। जब हम अपने कर्मों को भगवान को समर्पित कर देते हैं, तो जल्द ही स्वतंत्रता मिल जाती है। भारत गुलाम बना और मानसिक रूप से गुलाम इसलिए लगा क्योंकि उसने अंग्रेजों को श्रेष्ठ माना और इसलिए प्रशासन, न्यायपालिका, मीडिया, चिकित्सा, आर्थिक और मशीनीकरण की अंग्रेजी प्रणाली को अपनाया।

यह नियम है कि दुश्मन पहले शारीरिक रूप से मरता है फिर मानसिक रूप से। शारीरिक आज़ादी तो पहले ही मिल चुकी है, बस मानसिक आज़ादी की ज़रूरत है और जब हम इसके लिए काम करेंगे तो यह हमें ज़रूर मिलेगी।

भारत में वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था स्वतंत्रता-पूर्व युग की व्यवस्था का ही एक हिस्सा है, जिसमें वही या उससे मिलते-जुलते राजनीतिक दल हैं, जिनकी कार्यप्रणाली कमोबेश अंग्रेजों जैसी ही है (जैसे काले अंग्रेज-काले अंग्रेज) और कमोबेश उन्हीं जैसे निरंकुश नियम और कानून हैं, जो शासक और शासित की प्रथम दृष्टया धारणा पर काम करते हैं। इन दलों के नेता अभी भी हीन भावना से ग्रस्त हैं और अंग्रेजी को श्रेष्ठ मानते हैं।

स्वतंत्रता के बाद जो एक या दो राजनीतिक दल अस्तित्व में आए, वे अपनी प्रासंगिकता खो रहे हैं, क्योंकि वे भी एकीकरण के बजाय जाति/वर्ग या क्षेत्र और धर्म के आधार पर भेदभाव की भावना को बढ़ावा दे रहे हैं। ज़रूरत इस बात की है कि राष्ट्रीय स्तर पर नए राजनीतिक दल हों, जिनका स्थानीय सरोकार हो और जिनका अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण हो।

इसके अलावा आपसे अनुरोध है कि इस मुद्दे पर आगे बढ़ने से पहले मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा से जिम्मेदारी और स्वतंत्रता के विषयों के कुछ अंश देखें:

ज़िम्मेदारी

कहा जाता है कि आज़ादी के साथ ज़िम्मेदारी भी आती है; लेकिन सच इसके उलट है। जब कोई ज़िम्मेदार होता है, तभी वह आज़ादी पा सकता है, वरना शारीरिक रूप से आज़ाद होने पर भी वह मानसिक रूप से पराधीन रहता है।

स्वतंत्रता

पैगम्बर मोहम्मद से उनके शिष्य ने पूछा, 'क्या हम स्वतंत्र हैं या नहीं?'

पैगम्बर साहब ने प्रश्नकर्ता से एक पैर उठाने को कहा और शिष्य ने भी ऐसा ही किया। पैगम्बर जी ने दूसरा पैर उठाने को कहा। शिष्य ने कहा कि यह संभव नहीं है।

पैगम्बर जी ने कहा, "हम इतने स्वतंत्र हैं और इतने जुड़े हुए हैं कि कोई भी अपना एक पैर उठाने के लिए स्वतंत्र है और यह भी तय करने के लिए स्वतंत्र है कि उसे कौन सा पैर उठाना है, बायाँ या दायाँ। जब पहला कदम तय हो जाता है और व्यक्ति अपना एक पैर उठा लेता है, तो दूसरा कदम भी उसके पीछे ही चलना चाहिए।"

जन्म से मुक्त होना एक सीमित अवधारणा है। "बिन पग चले, सुनाहू बिन काना" (जो बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है अर्थात् सर्वशक्तिमान)। हम इस तथ्य को शांति से स्वीकार करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमारा पहला कदम धार्मिकता हो।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि पुरुष और महिला का सामान्य स्वास्थ्य और ऊंचाई भी उनकी स्वतंत्रता पर निर्भर करती है, और इसे गांवों, कस्बों, शहरों, महानगरों और स्वतंत्रता पूर्व और बाद की अवधि के बीच औसत स्वास्थ्य और ऊंचाई के बीच सरल तुलना से समझा जा सकता है।

स्वतंत्रता के साथ ज़िम्मेदारी भी आती है; केवल ज़िम्मेदार, साहसी लोग और समाज ही स्वतंत्र रह सकते हैं। गैर-ज़िम्मेदार व्यक्ति, समाज या राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता खो देता है और किसी न किसी के अधीन हो जाता है।

जो व्यक्ति अकेले खड़े होने में सक्षम है (हालांकि ऐसा व्यक्ति चरित्रहीन, निष्पक्ष और बेढंगा हो जाता है), वह स्वतंत्र है, फिर भी सबसे अधिक ज़िम्मेदार है। ऐसे में केवल साहसी, साहसी लोग ही स्वतंत्रता मांग सकते हैं, ले सकते हैं और वहन कर सकते हैं, चाहे वह व्यक्ति, प्रेस, समाज या देश हो।

आइए हम एक व्यक्ति के रूप में, एक परिवार के सदस्य के रूप में, एक आम नागरिक के रूप में, एक अर्थशास्त्री, न्यायाधीश, शिक्षक, राजनीतिज्ञ आदि के रूप में अपने हर कार्य (गलत काम या कृत्य) के लिए जिम्मेदार बनें और जिम्मेदार बने रहें, तभी हम स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं और स्वतंत्रता को बनाए रख सकते हैं तथा स्वस्थ और खुश रह सकते हैं।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इंटरव्यू में):

उत्तर: "मैं यह उम्मीद नहीं करता कि मेरे विचार अचानक स्वीकार कर लिए जाएँगे। मेरा कर्तव्य है कि मैं उन्हें आप जैसे पाठकों के सामने रखूँ। बाकी काम समय पर निर्भर है। हमने भारत को आज़ाद करने की परिस्थितियों की जाँच पहले ही कर ली है, लेकिन हमने ऐसा अप्रत्यक्ष रूप से किया है; अब हम प्रत्यक्ष रूप से करेंगे। यह एक विश्व प्रसिद्ध कहावत है कि किसी बीमारी के कारण को हटाने से बीमारी खुद ही दूर हो जाती है। इसी तरह अगर भारत की गुलामी का कारण हटा दिया जाए तो भारत आज़ाद हो सकता है।

प्रश्न: यदि भारतीय सभ्यता, जैसा कि आप कहते हैं, सर्वोत्तम है तो आप भारत की गुलामी का क्या कारण बताते हैं?

उत्तर : यह सभ्यता निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन यह देखा जाना चाहिए कि सभी सभ्यताओं का परीक्षण किया गया है। जो सभ्यता स्थायी है, वह उससे अधिक समय तक जीवित रहती है। चूँकि भारत के पुत्रों में कमी पाई गई, इसलिए इसकी सभ्यता खतरे में पड़ गई। लेकिन इसकी ताकत इस आघात से बच निकलने की इसकी क्षमता में देखी जा सकती है। इसके अलावा, पूरा भारत अछूता नहीं है। केवल वे ही लोग गुलाम बन गए हैं जो पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हुए हैं। हम ब्रह्मांड को अपने दयनीय पैर-नियम से मापते हैं। जब हम गुलाम होते हैं, तो हम सोचते हैं कि पूरा ब्रह्मांड गुलाम है। क्योंकि हम एक दयनीय स्थिति में हैं, इसलिए हम सोचते हैं कि पूरा भारत उस स्थिति में है। वास्तव में, ऐसा नहीं है, फिर भी हमारी गुलामी को पूरे भारत पर आरोपित करना ठीक है। लेकिन अगर हम उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि अगर हम स्वतंत्र हो जाते हैं, तो भारत स्वतंत्र है। और इस विचार में आपके पास स्वराज की एक परिभाषा है। जब हम खुद पर शासन करना सीखते हैं तो वह स्वराज होता है। इसलिए, यह हमारे हाथ की हथेली में है। इस स्वराज को स्वप्न न समझो। इसमें चुपचाप बैठने की कोई बात नहीं है। मैं जिस स्वराज की कल्पना करना चाहता हूँ, वह ऐसा है कि एक बार उसे प्राप्त करने के बाद

हम अपने जीवन के अंत तक दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करेंगे। लेकिन ऐसा स्वराज प्रत्येक को स्वयं ही अनुभव करना होगा। एक डूबता हुआ आदमी दूसरे को कभी नहीं बचा सकता। हम स्वयं गुलाम हैं, इसलिए दूसरों को मुक्त करने की बात सोचना केवल दिखावा होगा। अब आप देख चुके होंगे कि अंग्रेजों को भगाना हमारा लक्ष्य नहीं है। यदि अंग्रेज भारतीय हो जाएँ, तो हम उन्हें स्थान दे सकते हैं। यदि वे अपनी सभ्यता के साथ भारत में रहना चाहें, तो उनके लिए कोई स्थान नहीं है। ऐसी स्थिति पैदा करना हमारा काम है।

प्रश्न: यह असंभव है कि अंग्रेज कभी भारतीय बन जाएँ।

उत्तर : ऐसा कहना यह कहने के बराबर है कि अंग्रेजों में मानवता नहीं है। और यह बात वास्तव में बेमानी है कि वे मानवता बनते हैं या नहीं। अगर हम अपने घर को व्यवस्थित रखेंगे तो केवल वे ही रहेंगे जो उसमें रहने के योग्य हैं। बाकी लोग खुद ही चले जाएंगे। ऐसी चीजें हम सभी के अनुभव में होती हैं।

प्रश्न: लेकिन ये चीजें इतिहास में नहीं घटित हुई हैं।

उत्तर: यह मानना कि इतिहास में जो नहीं हुआ है, वह कभी नहीं होगा, मनुष्य की गरिमा पर अविश्वास करना है। किसी भी हालत में, हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हमारे तर्क को क्या पसंद आए। सभी देशों की परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं हैं। भारत की स्थिति अनोखी है। इसकी ताकत अथाह है। इसलिए हमें दूसरे देशों के इतिहास का हवाला देने की ज़रूरत नहीं है। मैंने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि जब दूसरी सभ्यताएँ हार गईं, तो भारतीय सभ्यता कई झटकों से बच गई।

पाठक: श्री गांधी के निम्नलिखित कथन के बारे में आप क्या कहते हैं (इंटरव्यू में?)

"अगर अंग्रेज़ अपना सारा सामान लेकर भारत से चले गए, तो यह नहीं माना जाना चाहिए कि वह विधवा हो जाएगी। यह संभव है कि जो लोग उनके दबाव में शांति बनाए रखने के लिए मजबूर हैं, वे उनके जाने के बाद लड़ाई करें। किसी विस्फोट को दबाने से कोई फ़ायदा नहीं हो सकता; उसका कोई न कोई रास्ता ज़रूर होना चाहिए। इसलिए, अगर शांति से रहने से पहले हमें आपस में ही लड़ना पड़े, तो बेहतर है कि हम ऐसा करें। कमज़ोरों की रक्षा के लिए किसी तीसरे पक्ष के पास कोई मौका नहीं है। यह तथाकथित सुरक्षा ही है जिसने हमें बेचैन कर दिया है। ऐसी सुरक्षा

कमजोरों को और कमजोर ही बनाती है। जब तक हम यह नहीं समझेंगे, हम स्वशासन नहीं पा सकते।

मैं एक अंग्रेज़ विद्वान के विचार को दोहराते हुए कहूँगा कि होम रूल के तहत अराजकता, व्यवस्थित विदेशी शासन से बेहतर है। केवल इतना ही कि विद्वान विद्वान विद्वान ने होम रूल को जो अर्थ दिया है, वह मेरी अवधारणा के अनुसार भारतीय होम रूल से अलग है। हमें सीखना होगा और दूसरों को भी सिखाना होगा कि हम न तो अंग्रेज़ी शासन और न ही भारतीय शासन या शासक का अत्याचार चाहते हैं।**

संपादक: इस वक्तव्य के दो भाग हैं और भागवार उत्तर इस प्रकार है:

1) यह स्थिति का उचित आकलन प्रतीत होता है और यह दर्शाता है कि श्री गांधी जानते थे कि भारत में विस्फोट हो सकता है। हमने 1947 में विभाजन के दौरान और उसके बाद गुजरात में हिंदू और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक दंगों के रूप में जो देखा है, उसका ठीक वही मतलब है जब वह कहते हैं, "भारत और भारतीय लोगों को इसका समाधान मिलना चाहिए, इसलिए, अगर हमें शांति से रहने से पहले आपस में लड़ना पड़े, तो बेहतर है कि हम ऐसा करें। किसी तीसरे पक्ष के लिए कमजोरों की रक्षा करने का कोई अवसर नहीं है। यह तथाकथित संरक्षण है जिसने हमें बेचैन कर दिया है। "इस तरह का संरक्षण केवल कमजोर को और कमजोर बना सकता है। जब तक हम यह नहीं समझते, हम स्वशासन प्राप्त नहीं कर सकते"। ताकत का कोई विकल्प नहीं है।

2) हमें यह सीखना होगा कि हम न तो अंग्रेज़ी शासन और न ही भारतीय शासन का अत्याचार चाहते हैं। हम देख रहे हैं कि स्वतंत्रता के बाद भारत में विदेशी शासन के स्थान पर भारतीय शासन का अत्याचार है और निश्चित रूप से इसे ठीक करने की आवश्यकता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि नियम, न्यायपालिका प्रणाली, कानून अदालत, भूमि जोत और जमींदार (अंग्रेजों के बिचौलिए) वही रहे।

पाठक: मैं यह सब नहीं समझ सकता; अंग्रेज़ी व्यवस्था के कारण हम दिन-प्रतिदिन कमजोर होते जा रहे हैं। अंग्रेज़ी व्यवस्था एक अभिशाप की तरह सत्ता में है, जिसे हमें हर तरह से दूर करना होगा।

संपादक: जो चर्चा हुई है, वह भूली हुई लगती है। खोई हुई महिमा को वापस लाने के लिए न केवल हमें मानसिक रूप से स्वतंत्र होना होगा, बल्कि हमें अंग्रेजों द्वारा बनाई गई अराजक व्यवस्था

से भी मुक्त होना होगा। लेकिन मान लीजिए कि हमें अंग्रेजी व्यवस्था को युद्ध करके भगाना है, तो वह कैसे होगा?

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

प्रश्न: मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूँ। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमें अंग्रेजों को हथियारों के बल पर खदेड़ना होगा। जब तक वे देश में हैं, हम चैन से नहीं रह सकते। हमारे एक कवि ने कहा है कि गुलाम सुख का सपना भी नहीं देख सकते। अंग्रेजों की मौजूदगी के कारण हम दिन-ब-दिन कमजोर होते जा रहे हैं। हमारी महानता खत्म हो गई है; हमारे लोग डरे हुए लोगों की तरह दिखते हैं। अंग्रेज देश में एक अभिशाप की तरह हैं, जिसे हमें हर तरह से खत्म करना होगा।

उत्तर : अपनी उत्तेजना में, आप वह सब भूल गए हैं जिस पर हम विचार कर रहे थे। हम अंग्रेजों को लाए और हम उन्हें अपने पास रखेंगे। क्यों, आप भूल गए कि उनकी सभ्यता को अपनाने से ही भारत में उनकी मौजूदगी संभव हुई है? उनके प्रति आपकी नफरत उनकी सभ्यता में स्थानांतरित होनी चाहिए। लेकिन मान लीजिए कि हमें अंग्रेजों को युद्ध करके भगाना है, तो यह कैसे किया जाएगा?

पाठक: जिस तरह इटली ने किया, उसी तरह इटली में मैत्सिनी और गैरीबाल्डी के लिए जो संभव था, वही भारत में हमारे लिए भी संभव है? आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि वे महान व्यक्ति थे?

इटली और भारत

संपादक: यद्यपि यह बात पुरानी है, फिर भी जैसा कि आपने पूछा है, मैं यह कहना चाहूंगा कि: यह देखा गया है कि गैरीबाल्डी और विक्टर इमैनुएल 'शैतान' का विरोध करने वाले संत प्रतीत होते हैं, जो उनके जैसे बन जाते हैं (अपराधियों को हराने के बाद निर्दोष बने रहना सबसे कठिन है)।

शस्त्र विद्रोह चाहे इटली का हो या भूतपूर्व सोवियत संघ का या फिर भारत में सत्ता का साधारण हस्तांतरण, इनसे अपेक्षित परिणाम नहीं मिले, केवल शासक वर्ग ही बदला है। यदि हम पिछले सौ वर्षों के इतिहास पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि विश्व परिदृश्य में बहुत कुछ बदल गया है। केवल शस्त्रों के पक्षधर और प्रशंसक बहुत से भटक गए हैं और बहुत कम भटकने वाले हैं।

आंतरिक परिवर्तन के लिए हथियारों का उपयोग उचित नहीं है, यह आंतरिक बीमारी की स्थिति के समान है जिसमें शरीर के अंग को काटने की सलाह नहीं दी जाती है। आंतरिक रोग के लिए उपचार, ध्यान, दवाइयों की सलाह दी जाती है और अगर ठीक नहीं होता है तो ऑपरेशन या सहनशीलता का सुझाव दिया जाता है। इसी तरह देश में आंतरिक परिवर्तन के लिए मध्यस्थता, जापन की सलाह दी जाती है और अगर हासिल नहीं होता है तो सहनशीलता और सरकार बदलने की सलाह दी जाती है। बाहरी आक्रमण के मामले में पहले बचाव और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए प्रयास करने के बाद हमला करने का सुझाव दिया जाता है, जैसे मच्छरों के लिए, क्षेत्र की सफाई, मच्छरदानी/विकर्षक या रसायन का छिड़काव करने का सुझाव दिया जाता है। प्रतिद्वंद्वी के सामने आत्मसमर्पण करने से प्राप्त शांति व्यक्ति को टुकड़ों में कम/काट देती है चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक, क्योंकि बाहरी आक्रमण के लिए ऐसी विनम्रता बेकार है।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

उत्तर: इटली का उदाहरण देना अच्छा है। मैजिनी एक महान और भले आदमी थे; गैरीबाल्डी एक महान योद्धा थे। दोनों ही पूजनीय हैं; उनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। लेकिन इटली की स्थिति भारत से भिन्न थी। सबसे पहले, मैजिनी और गैरीबाल्डी में अंतर ध्यान देने योग्य है। इटली के बारे में मैजिनी की महत्वाकांक्षा न तो थी और न ही अब तक पूरी हुई है। मैजिनी ने मनुष्य के कर्तव्य पर अपने लेखों में दिखाया है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं पर शासन

करना सीखना चाहिए। इटली में ऐसा नहीं हुआ। गैरीबाल्डी मैजिनी के इस दृष्टिकोण को नहीं मानते थे। गैरीबाल्डी ने हथियार दिए और प्रत्येक इटालियन ने हथियार लिए। इटली और ऑस्ट्रिया की सभ्यता एक ही थी; इस दृष्टि से वे चचेरे भाई थे। यह एक दूसरे के प्रति प्रतिशोध का मामला था। गैरीबाल्डी केवल इटली को ऑस्ट्रियाई जुए से मुक्त करना चाहता था। मंत्री कावूर की चालें इटली के इतिहास के उस हिस्से को कलंकित करती हैं। और इसका परिणाम क्या हुआ?

यदि आप मानते हैं कि इटली पर इटालियंस का शासन होने के कारण इतालवी राष्ट्र सुखी है, तो आप अंधकार में हैं। मैत्सीनी ने स्पष्ट रूप से दिखा दिया है कि इटली स्वतंत्र नहीं हुआ था। विक्टर इमैनुअल ने इस अभिव्यक्ति का एक अर्थ दिया; मैत्सीनी ने दूसरा। इमैनुअल, कावूर और यहां तक कि गैरीबाल्डी के अनुसार, इटली का अर्थ इटली का राजा और उसके अनुचर थे। मैत्सीनी के अनुसार, इसका अर्थ संपूर्ण इतालवी लोग, यानी उसके कृषक थे। इमैनुअल केवल उसका सेवक था। मैत्सीनी का इटली अभी भी गुलामी की स्थिति में है। तथाकथित राष्ट्रीय युद्ध के समय, यह दो प्रतिद्वंद्वी राजाओं के बीच शतरंज का खेल था जिसमें इटली के लोग मोहरे थे। उस देश का मजदूर वर्ग अभी भी नाखुश है। इसलिए, वे हत्या में लिप्त हो जाते हैं, विद्रोह में उठ खड़े होते हैं, और उनसे विद्रोह की हमेशा उम्मीद की जाती है।

ऑस्ट्रियाई सैनिकों के चले जाने के बाद इटली को क्या खास लाभ हुआ? लाभ नाममात्र का ही था। जिन सुधारों के लिए युद्ध शुरू किया जाना था, वे अभी तक नहीं हुए हैं। आम लोगों की हालत अभी भी वैसी ही है। मुझे यकीन है कि आप भारत में ऐसी हालत नहीं चाहते। मेरा मानना है कि आप चाहते हैं कि भारत के करोड़ों लोग खुश रहें, न कि आप चाहते हैं कि सरकार की बागडोर आपके हाथ में हो। अगर ऐसा है, तो हमें एक ही बात पर विचार करना होगा: करोड़ों लोग स्वशासन कैसे प्राप्त कर सकते हैं? आप स्वीकार करेंगे कि कई भारतीय राजाओं के अधीन लोगों को कुचला जा रहा है। राजा उन्हें बेरहमी से कुचल रहे हैं।

उनका अत्याचार अंग्रेजों से भी बड़ा है और अगर आप भारत में ऐसा अत्याचार चाहते हैं, तो हम कभी सहमत नहीं होंगे। मेरी देशभक्ति मुझे यह नहीं सिखाती कि मैं अंग्रेजों के चले जाने पर लोगों को भारतीय राजाओं के पैरों तले कुचलने दूँ। अगर मेरे पास ताकत है, तो मैं अंग्रेजों के अत्याचारों जितना ही भारतीय राजाओं के अत्याचारों का विरोध करूँगा। देशभक्ति से मेरा मतलब पूरे देशवासियों का कल्याण है और अगर मैं अंग्रेजों के हाथों यह हासिल कर सकता हूँ तो मुझे उनके सामने अपना सिर झुकाना चाहिए। अगर कोई अंग्रेज भारत की आजादी को सुरक्षित रखने,

अत्याचार का विरोध करने और देश की सेवा करने के लिए अपना जीवन समर्पित करता है तो मुझे उस अंग्रेज का भारतीय के रूप में स्वागत करना चाहिए।

फिर, भारत इटली की तरह तभी लड़ सकता है, जब उसके पास हथियार हों। आपने इस समस्या पर बिल्कुल विचार नहीं किया है। अंग्रेज शानदार हथियारों से लैस हैं; इससे मुझे डर नहीं लगता, लेकिन यह स्पष्ट है कि, हथियारों के साथ उनका मुकाबला करने के लिए, हजारों भारतीयों को हथियारबंद होना चाहिए। अगर ऐसा संभव हो सकता है, तो इसमें कितने साल लगेंगे? इसके अलावा, भारत को बड़े पैमाने पर हथियारबंद करना उसका यूरोपीयकरण करना है। तब उसकी हालत यूरोप की तरह ही दयनीय हो जाएगी। इसका मतलब है, संक्षेप में, भारत को यूरोपीय सभ्यता को स्वीकार करना चाहिए, और अगर हम यही चाहते हैं, तो सबसे अच्छी बात यह है कि हमारे बीच ऐसे लोग हैं जो उस सभ्यता में इतने अच्छे से प्रशिक्षित हैं। फिर हम कुछ अधिकारों के लिए लड़ेंगे, जो मिल सकता है, उसे हासिल करेंगे और इस तरह अपना दिन गुजारेंगे। लेकिन सच तो यह है कि भारतीय राष्ट्र हथियार नहीं अपनाएगा, और यह अच्छी बात है कि वह ऐसा नहीं करता।**

पाठक: इटली के अंदर और बाहर वेटिकन के बारे में आप क्या कहते हैं?

संपादक: निश्चित रूप से, यह दुनिया भर में ईसाइयों को एकजुट करने और उन्हें एक सूत्र में पिरोने का एक बड़ा कदम था, लेकिन दुर्भाग्य से केवल ईसाइयों को ही। हालांकि वेटिकन विभिन्न धर्मों के नेताओं का स्वागत करता है, लेकिन जरूरत इस बात की है कि एक धार्मिक राजधानी/देश की स्थापना की जाए जो पूरी मानव जाति की सेवा करे, जहां से आध्यात्मिकता सभी समुद्रों और रेत तक फैले।

अयोध्या में ऐसी ऊर्जा और स्पंदन क्षमता है कि यह पूरी मानवता की आध्यात्मिक और पर्यावरण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है। जरूरत इस बात की है कि हम अयोध्या को न केवल भारत या हिंदुओं के लिए बल्कि बड़े अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए एक धार्मिक राजधानी बनाने के हमारे प्रयासों को समर्पित और प्रोत्साहित करें। इस समय हम चाहते हैं कि आप मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा से 'हमारे धार्मिक स्थलों की स्थिति' विषय का संदर्भ लें:

पूजा स्थल - मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि।

अगर आप किसी व्यक्ति या समुदाय को तोड़ना चाहते हैं तो उनकी आस्था को तोड़ें, और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उनके आस्था (धार्मिक) केंद्रों (मंदिर, मस्जिद और चर्च आदि) को तोड़ दें या उन्हें निष्क्रिय/निष्क्रिय कर दें। और अगर आप किसी व्यक्ति या समुदाय को एकजुट करना चाहते हैं तो उनके आस्था (धार्मिक) केंद्रों (मंदिर, मस्जिद और चर्च आदि) को बना दें या उन्हें सक्रिय और क्रियाशील बना दें यानी उनके धार्मिक केंद्र का पुनर्निर्माण करें।

मंदिर, मस्जिद-मन के उत्कृष्ट प्रतिफलन हैं (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा मानव मस्तिष्क और हृदय की सबसे सुंदर अभिव्यक्तियाँ हैं)। पूजा स्थल का निर्माण पद्मासन में बैठी हुई महिला की मुद्रा के अनुसार किया जाता है। हृदय और मस्तिष्क की सर्वोच्च अभिव्यक्ति के प्रकटीकरण मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा हैं, और आगे की खोज और अभिव्यक्ति के लिए द्वार हैं।

किसी व्यक्ति, समाज, समूह या देश के मंदिर और मस्जिद (प्रार्थना स्थल) की स्थिति उस व्यक्ति, समाज, समूह या देश की स्थिति को दर्शाती है। यदि पूजा स्थल की स्थिति गंदी और जीर्ण-शीर्ण है, तो उस समूह या समाज की स्थिति भी वैसी ही होगी। यदि मंदिर मस्जिद, गुरुद्वारा की स्थिति साफ-सुथरी (जैसा कि बुनियादी आवश्यकता है) होने के साथ-साथ सामंजस्य, लय, समन्वय और ऊर्जायुक्त है, तो वहां आने वाले लोगों की स्थिति भी अच्छी होगी और इसी तरह उन्हें अच्छा मार्ग भी दिखाएगी।

1. हिंदू, जैन, ईसाई और मुसलमानों के पूजा स्थलों की स्थिति की सराहना करके, हम इन समुदायों की स्थिति की सराहना कर सकते हैं।
2. ये दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं और सीधे आनुपातिक हैं- यानी अगर समुदाय की स्थिति सुधरती है, या अगर पूजा स्थल की स्थिति सुधरती है तो दूसरे की स्थिति भी सुधरेगी। वाइजमैन हमें अपने देश और समाज की स्थिति सुधारने के लिए छोटे कदम उठाने यानी पूजा स्थल की स्थिति सुधारने के लिए कहते हैं।
3. सरकार को सबसे पहले ब्लॉक स्तर से लेकर गांव स्तर तक सभी प्रमुख पूजा स्थलों की सफाई के लिए प्रारंभिक सहायता देनी होगी। सरकार को इन पूजा स्थलों को क्षेत्र की सफाई का जिम्मा सौंपना होगा। तथाकथित कल्याणकारी राज्य के सरकारी कार्यालय जो दुनिया भर में अपने लोगों को भोजन, आगंतुक आश्रय, व्यायाम, संगीत, गौशाला, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता जैसी

बुनियादी सेवाएं प्रदान करने में बुरी तरह विफल रहे हैं, उनकी जगह लोगों को आगे आना होगा और धार्मिक संस्थानों को विकास और खुशी के केंद्र के रूप में विकसित करना होगा।

4. सरकार को पूजा स्थलों को और अधिक जिम्मेदारी देने के लिए प्रोत्साहित करना होगा, एकीकृत तरीके से जैसे पाकशाला, पाठशाला, धर्मशाला, व्यायामशाला, आरोग्यशाला, सैन्यशाला, संगीतशाला, गौशाला, संन्यास आश्रम और ब्रह्मचर्य आश्रम (शयनगृह, शिक्षा, आगंतुक आश्रम, व्यायामशाला, स्वास्थ्य केंद्र, रक्षा प्रशिक्षण केंद्र, संगीत केंद्र और गौशाला के साथ-साथ संन्यास और ब्रह्मचर्य आश्रम में लोगों के लिए स्थान), बिना किसी भेदभाव के और पूर्ण धर्म-निरपेक्ष तरीके से।

4. सरकार को पूजा स्थलों को और अधिक जिम्मेदारी देने के लिए प्रोत्साहित करना होगा, एकीकृत तरीके से जैसे पाकशाला, पाठशाला, धर्मशाला, व्यायामशाला, आरोग्यशाला, सैन्यशाला, संगीतशाला, गौशाला, संन्यास आश्रम और ब्रह्मचर्य आश्रम (शयनगृह, शिक्षा, आगंतुक आश्रम, व्यायामशाला, स्वास्थ्य केंद्र, रक्षा प्रशिक्षण केंद्र, संगीत केंद्र और गौशाला के साथ-साथ संन्यास और ब्रह्मचर्य आश्रम में लोगों के लिए स्थान), बिना किसी भेदभाव के और पूर्ण धर्म-निरपेक्ष तरीके से।

5. पिछले चार सौ वर्षों में प्रार्थना की पद्धति में काफी बदलाव आया है, कबीर के समय में यह थी:

कांकर पाथर जोरि कर मस्जिद लई बनाय, ता चढ़ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय

Kankar pather jor kar masjid layi banaye, Ta char mulla bangh de kya bahra hua khuday? (Masjid got erected with sand and babble, sitting on it priests shout, is god a deaf?).

Now the situation is:

कांकर पथर जोर कर मंदिर/मस्जिद लाए, ता पर लाउडस्पीकर बांग दे, क्या बहरा करो सबय?
(Kankar pathar jor kar mandir/masjid laye banaye, Ta par loud-speaker bangh de, kya bahro karo sabay?)

(मंदिर/मस्जिद रेत और बड़बड़ाहट से बनाया गया है, उस पर बैठकर लाउडस्पीकर से चिल्लाया जा रहा है, क्या सबको बहरा करने की योजना है।

मंदिर/मस्जिद/गुरुद्वारा आदि से होने वाले ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए हम सभी को आगे आना होगा।

6. बुद्धिमान लोग कहते हैं कि जैसे सभी व्यक्तियों की आयु होती है, वैसे ही मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि की भी आयु होती है।

मंदिरों, मस्जिदों और चर्चों का जीवन उस स्थान के ऊर्जा स्तर से पता लगाया जा सकता है और वहां आने वाले आगंतुकों की संख्या इसका संकेत है। सरकार को अपने स्वयं के धन से ऐसे सभी स्थानों का जीर्णोद्धार, समर्थन और पुनर्निर्माण करना होगा, चाहे वह अजमेर शरीफ हो, निजामुद्दीन औलिया मजार हो, या फिर वाराणसी शिव मंदिर हो या अयोध्या श्री राम मंदिर हो। ऐसे सभी स्थानों पर जहां सरकार सीधे हस्तक्षेप करेगी, वहां धार्मिक अध्ययन को विश्व धर्म का केंद्र बनाया जाएगा और यह काम बिना किसी भेदभाव के किया जाएगा। ऐसे स्थानों को बिना किसी अस्पृश्यता के पूरी मानवता के लिए खोल दिया जाएगा। समान संख्या में आगंतुकों वाले स्थानों को एकीकृत धार्मिक केंद्र सह धार्मिक अध्ययन केंद्र में परिवर्तित किया जाएगा और इसे अयोध्या में प्रमुख धार्मिक निर्माण गतिविधि के साथ बनाया जाएगा।

7. अयोध्या में धार्मिक राजधानी बनने के लिए जीवंतता, गतिशीलता और ऊर्जा का स्तर है, यह भारत और दुनिया के सभी धर्मों (जैसे हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बुद्ध, यहूदी आदि) के लोगों की सभी प्रकार की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाली राजधानी है। आने वाले दिनों में हमारा प्रयास इस दिशा में होगा कि अयोध्या दुनिया को एक जीवंत स्वर्ग में बदलने का केंद्र बने।

8. मनुष्य को स्वयं को मंदिर/मस्जिद बनाने के लिए पूजा-स्थल की आवश्यकता होती है (जहां शांति, सांत्वना, स्वास्थ्य और खुशी पाने के लिए बाहर जाने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है) और वह कहीं भी प्रार्थना कर सकता है और हो सकता है कि लोग उसके पास प्रार्थना करने के लिए आएंगे।

जिनके लिए कर्म ही पूजा है, उनके लिए कार्यस्थल ही मंदिर है और जिनके लिए ध्यान ही पूजा है, उनके लिए हर जगह मंदिर है।

पाठक: इटली के अंदर और बाहर बने वेटिकन के बारे में आप क्या कहते हैं?

संपादक: निश्चित रूप से, यह दुनिया भर में ईसाइयों को एकजुट करने और उन्हें एक सूत्र में पिरोने का एक बड़ा कदम था, लेकिन दुर्भाग्य से केवल ईसाइयों को ही। हालाँकि वेटिकन विभिन्न

धर्मों के नेताओं का स्वागत करता है, लेकिन ज़रूरत इस बात की है कि एक धार्मिक राजधानी/देश की स्थापना की जाए जो पूरी मानव जाति की सेवा करे, जहाँ से आध्यात्मिकता सभी समुद्रों और रेत तक फैले।

अयोध्या में ऐसा कंपन और ऊर्जा स्तर है कि यह पूरी मानवता की आध्यात्मिक और पर्यावरण संबंधी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है। ज़रूरत इस बात की है कि हम अयोध्या को सिर्फ़ भारत या हिंदुओं के लिए ही नहीं बल्कि बड़े अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए एक धार्मिक राजधानी बनाने के हमारे प्रयासों को समर्पित और प्रोत्साहित करें। इस समय हम चाहते हैं कि आप मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा से 'हमारे धार्मिक स्थलों की स्थिति' विषय का संदर्भ लें:

पाठक: आपने कहा कि अयोध्या विश्व की धार्मिक राजधानी हो सकती है, लेकिन मक्का-मदीना या यरुशलम धार्मिक राजधानी क्यों नहीं हो सकती?

संपादक: मक्का-मदीना एक महान स्थान है, पहले यहाँ नानक जैसे लोग आते थे, लेकिन पिछले डेढ़ सौ सालों में यहाँ छुआछूत की प्रथा फैल गई है, जिसकी वजह से लोग अलग-अलग रास्ते और प्रार्थना करने से कतराने लगे हैं। इजराइल में जेरुसलम या भारत में श्रीसलम जैसे स्थान आदरणीय और पूजनीय स्थान हैं और आगे भी रहेंगे।

पाठक: अयोध्या को धार्मिक राजधानी बनाना ठीक है, लेकिन हम मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की बात कर रहे हैं, हम लड़ाई/संघर्ष में सिर्फ़ दस लाख लोगों (कम या ज्यादा) को खोकर अपना खोया हुआ गौरव वापस पा लेंगे। हम युद्ध करेंगे और दुष्टों को हराएंगे।

संपादक: (1) अल्लाह आक्रान्ता को पसन्द नहीं करता, और राम और कृष्ण ने अन्त तक शान्ति का प्रयास किया।

(2) लड़ाई में एक भी आदमी को खोने के बारे में सोचना उचित नहीं है।

(3) किसी भी हथियार क्रांति से उसके लोगों का दमन लंबे समय तक होता है, जितना कि वे इसका विरोध कर रहे हैं और इस तरह बनी एकता अल्पकालिक होती है और अपेक्षा से पहले ही विघटन की ओर ले जाती है। गुरिल्ला युद्ध से आम तौर पर स्वतंत्रता नहीं मिलती।

-शहीद या संत बनने के लिए आपको सम्मान मिलना चाहिए, लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि क्या आपने जो योजना बनाई थी, उसे हासिल किया है? यानी बड़ी आज़ादी। इसके लिए सभी तरीकों पर विचार करना होगा और धर्म के रास्ते पर चलना होगा।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इटैलिक में):

क्यूएसटी: आप तथ्यों को बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हैं। सभी को हथियार रखने की ज़रूरत नहीं है। पहले हम कुछ अंग्रेज़ों की हत्या करके आतंक फैलाएँगे; फिर कुछ हथियारबंद लोग खुलेआम लड़ेंगे। हमें कम या ज़्यादा, शायद ढाई लाख लोगों को खोना पड़े, लेकिन हम अपनी ज़मीन वापस पा लेंगे। हम गुरिल्ला युद्ध करेंगे और अंग्रेज़ों को हराएँगे।

उत्तर: यानी आप भारत की पवित्र भूमि को अपवित्र बनाना चाहते हैं। क्या आप हत्या करके भारत को स्वतंत्र करने के बारे में सोचकर कांपते नहीं हैं? हमें जो करना है, वह है खुद को बलिदान करना। दूसरों को मारना कायरतापूर्ण विचार है। आप हत्या करके किसे मुक्त करना चाहते हैं? भारत के लाखों लोग ऐसा नहीं चाहते। जो लोग आधुनिक सभ्यता के नशे में चूर हैं, वे ऐसी बातें सोचते हैं। जो लोग हत्या करके सत्ता में आएँगे, वे निश्चित रूप से देश को खुश नहीं कर पाएँगे। जो लोग मानते हैं कि धींगरा के कृत्य और भारत में इसी तरह के अन्य कृत्यों से भारत को लाभ हुआ है, वे गंभीर गलती करते हैं। धींगरा एक देशभक्त थे, लेकिन उनका प्यार अंधा था। उन्होंने अपना शरीर गलत तरीके से दिया; इसका अंतिम परिणाम केवल शरारती हो सकता है।

पाठक: लेकिन आप तो यह मानेंगे कि अंग्रेज इनसे डर गए हैं और कुछ देशों में अंग्रेज़ों को समर्थन डर के कारण ही है।

संपादक: अंग्रेज मूलतः डरपोक जाति है, उन्हें मच्छरों से भी डर लगता है और उन्हें लगता है कि हत्या ही एकमात्र विकल्प है। हो सकता है कि अंग्रेज़ों ने डर के कारण बहुतों को सहायता दी हो, लेकिन दबाव में दी गई सहायता हमेशा अल्पकालिक होती है। यह सहायता तब तक चलती है जब तक डर बना रहता है और इस दौरान आगे दमन की योजनाएँ चलती रहती हैं।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर (इटैलिक में):

क्यूएसटी: लेकिन आप यह तो मानेंगे कि अंग्रेज इन हत्याओं से भयभीत हो गए हैं और लार्ड मॉर्ले के सुधार इसी भय के कारण हैं।

उत्तर: अंग्रेज एक डरपोक और बहादुर राष्ट्र दोनों हैं, मेरा मानना है कि इंग्लैंड बारूद के इस्तेमाल से आसानी से प्रभावित हो जाता है। यह संभव है कि लॉर्ड मॉर्ले ने डर के कारण सुधारों को मंजूरी दी हो, लेकिन डर के तहत दी गई चीज को तभी तक बनाए रखा जा सकता है जब तक डर बना रहता है।

नकारात्मक शक्तियां

पाठक: यह आश्चर्य की बात है कि भय से जो प्राप्त होता है, वह भय रहने तक ही बना रहता है। सामान्यतः जो दिया जाता है, वह वापस नहीं लिया जाता?

संपादक: आप मुझसे कुछ छीनोगे तो वह तभी तक रख पाओगे जब तक मैं तुमसे डरता रहूँगा। यह दिवास्वप्न में जीना है कि जो चीज दबाव में दी जाती है, वह वापस नहीं ली जाती। जो चीज प्रेम से, कर्तव्य से, दान में दी जाती है या वापस लेने योग्य नहीं रहती, वही वापस नहीं ली जाती। जो चीज भय से या प्रलोभन से दी जाती है, वह वापस ले ली जाती है। यह अलग बात है कि ऐसा करते समय या समय बीतने पर देने वाले की उस चीज या आपमें रुचि खत्म हो जाती है और वह चीज आप पर छोड़ दी जाती है। इसके अलावा, जो चीज भय से दी जाती है या डरकर ली जाती है, वह आनंद नहीं देती और हमेशा शापित रहती है; यह गलत धारणा है कि मनुष्य बल के कारण ही काम करता है, इसलिए बल का ही प्रयोग करना चाहिए।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इटैलिक में):

उत्तर: ऐसा नहीं है। 1857 की घोषणा विद्रोह के अंत में की गई थी और शांति बनाए रखने के उद्देश्य से की गई थी। जब शांति स्थापित हो गई और लोग सरल स्वभाव के हो गए तो इसका पूरा प्रभाव कम हो गया। अगर मैं सजा के डर से चोरी करना बंद कर दूँ, तो जैसे ही डर दूर हो जाएगा, मैं फिर से चोरी करना शुरू कर दूँगा। यह लगभग एक सार्वभौमिक अनुभव है। हमने मान लिया है कि हम बलपूर्वक काम कर सकते हैं और इसलिए हम बल का प्रयोग करते हैं।**

पाठक: लेकिन हम जानते हैं कि अंग्रेजों ने अपने देश में जो कुछ भी प्राप्त किया है, वह सब बलपूर्वक प्राप्त किया है। मैं जानता हूँ कि आपने तर्क दिया है कि जो कुछ उन्होंने प्राप्त किया है, वह बेकार है। मेरा कहना यह है कि उनकी इच्छा पूरी हुई। उन्होंने जो भी साधन अपनाए, उससे क्या फर्क पड़ता है? हमें अपना उद्देश्य, जो कि अच्छा है, किसी भी तरह से क्यों न प्राप्त करना चाहिए? जब मुझे चोर, डाकू या घर में घुसे किसी व्यक्ति से निपटना हो, तो क्या मैं साधन के बारे में सोचूँ? मेरा कर्तव्य है कि मैं उसे किसी भी तरह से बाहर निकाल दूँ। तो फिर हम बल का प्रयोग करके ऐसा क्यों न करें? और, जो कुछ हम प्राप्त कर सकते हैं, उसे बनाए रखने के लिए

हमें उस बल का प्रयोग करके भय को बनाए रखना चाहिए, जहाँ तक आवश्यक हो। किसी न किसी तरह हमें अपना उद्देश्य प्राप्त करना ही है।

संपादक: 1) पहला तरीका संभावनाओं को संभव बनाता है या असंभव भी बना सकता है। बीज अंकुरित होकर पेड़ बन सकता है, यह बीज की गुणवत्ता, उसके स्थान, समय, पानी, हवा और ऊर्जा के आधार पर तय होता है, जो कि बुनियादी पोषण और सुरक्षा के अलावा खाद, कीटनाशक और कीटनाशकों की अतिरिक्त आवश्यकता पर निर्भर करता है।

2) साधन तो साधन ही होते हैं, वे न तो बीज होते हैं और न ही वृक्ष, साधन को कम महत्व देना बेकार है और साधन को अधिक महत्व देना निरर्थक है। बुरा करना हो या अच्छा करना, ज्यादातर साधन एक ही होते हैं, बस इरादा/दिशा/लक्ष्य बदल जाता है।

भगीरथ ने भगवान शिव की प्रार्थना की और गंगा को पृथ्वी पर लाकर लोगों की प्यास बुझाई, भस्मासुर ने भगवान शिव की प्रार्थना की और भस्मासुर (दूसरों को जलाने वाली) शक्ति प्राप्त की और भगवान शिव को भी मारने की इच्छा हुई।

प्राप्ति के साधन, भस्मासुर प्रकार की इच्छा या भगीरथ प्रकार की इच्छा भगवान शिव से की गई प्रार्थनाएं हैं और एक ही हैं, केवल दोनों का इरादा अलग था, भगीरथ ने सभी को खुशी दी लेकिन भस्मासुर अपने ही स्पर्श से मारा गया / जल गया।

प्रार्थना दोनों ही कर रहे हैं, दोनों में समर्पण है, प्रतिबद्धता है, अनुशासन है (नियम और कानून का पालन) और पता नहीं प्रार्थना कब पूरी होगी, लेकिन शिव के आशीर्वाद के बाद, एक ने सभी को अच्छाई दी और दूसरे ने आशीर्वाद देने वाले सहित सभी को मारने की कोशिश की। दोनों मामलों में साधन एक ही थे, केवल इरादा अलग था, इसलिए अंतर है।

3) आपने आगे पूछा कि अंग्रेजों ने जो कुछ भी प्राप्त किया, वह बलपूर्वक प्राप्त किया। इसमें यह बात ध्यान देने योग्य है कि जो कुछ भी आपका हक है, वह आपको आसानी से मिलेगा, सुख देगा और जो आपका हक नहीं है, वह कठिनाई से मिलेगा और रोग, अप्रसन्नता देकर जाएगा।

4) हिंसा बच्चों की है, संतुलन युवाओं का है और अहिंसा बूढ़ों की है, प्रेम अपनी पूरी पवित्रता के साथ पूरी तरह से विकसित लोगों का है। जब कोई बच्चा से युवा और फिर वृद्ध होता है तो उसकी शारीरिक से मानसिक और फिर हृदय/नैतिकता में वृद्धि होती है।

जीव जगत में जन्म और मृत्यु जैसी चरम स्थितियां होती रहती हैं और इन दोनों चरम स्थितियों के बीच जीवन चलता रहता है। संतुलन या अति को अधिक महत्व देना अतिवाद माना जा सकता है। प्रकृति उनके साथ अतिवादी कदम उठाती है और यह बात उन तथाकथित हिंसक या तथाकथित अहिंसक लोगों के साथ भी सच है, जो ईश्वर से प्रार्थना के अलावा किसी और बहाने से उपवास पर बैठे हैं।

समग्र सुधार के लिए सुरक्षा एवं रक्षा, प्रशासन एवं प्रबंधन तथा कानून एवं न्याय के क्षेत्र में प्रणालीगत एवं व्यवस्थित सुधार की आवश्यकता है।

हमारे और हमारे विश्वबंधुओं के बीच अच्छाई बनी रहे, इसके लिए हमें जागते रहना चाहिए और जो भी आवश्यक हो, उसे करना चाहिए, हमें अपना कर्तव्य निभाना चाहिए और धर्म का पालन करना चाहिए, भगवान का आशीर्वाद हमारे साथ है। भगवान भारत का भला करें।

इसी प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर :

उत्तर: आपका तर्क उचित है। इसने बहुतों को भ्रमित किया है। मैंने पहले भी इसी तरह के तर्क दिए हैं। लेकिन मुझे लगता है कि अब मैं बेहतर जानता हूँ, और मैं आपको भ्रमित करने का प्रयास करूँगा। सबसे पहले हम यह तर्क लेते हैं कि हम बल प्रयोग करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उचित हैं क्योंकि अंग्रेजों ने भी इसी तरह के साधनों का उपयोग करके अपना लक्ष्य प्राप्त किया था। यह पूरी तरह से सच है कि उन्होंने बल प्रयोग किया और हम भी ऐसा कर सकते हैं, लेकिन समान साधनों का उपयोग करके हम वही प्राप्त कर सकते हैं जो उन्हें मिला था। आप स्वीकार करेंगे कि हम ऐसा नहीं चाहते। आपका यह मानना कि साधन और साध्य के बीच कोई संबंध नहीं है, एक बड़ी गलती है। उस गलती के कारण धार्मिक माने जाने वाले लोगों ने भी गंभीर अपराध किए हैं। आपका तर्क वैसा ही है जैसे यह कहना कि हम हानिकारक खरपतवार लगाकर गुलाब प्राप्त कर सकते हैं। अगर मैं समुद्र पार करना चाहता हूँ, तो मैं केवल एक नाव के माध्यम से ही ऐसा कर सकता हूँ; अगर मैं उस उद्देश्य के लिए एक गाड़ी का उपयोग करूँ, तो गाड़ी और मैं दोनों ही जल्द ही समुद्र के किनारे पहुँच जाएँगे। "जैसा ईश्वर है, वैसा ही भक्त है", यह एक विचारणीय उक्ति है। इसका अर्थ विकृत हो गया है और मनुष्य भटक गए हैं। साधन की तुलना बीज से की जा सकती है, साध्य की तुलना वृक्ष से की जा सकती है; और साधन और साध्य के बीच वैसा ही अटूट संबंध है जैसा बीज और वृक्ष के बीच है। शैतान के आगे सिर झुकाकर मैं ईश्वर की पूजा से मिलने वाले परिणाम को प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए, यदि कोई कहे: "मैं ईश्वर

की पूजा करना चाहता हूँ; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं शैतान के माध्यम से ऐसा करता हूँ," तो यह अज्ञानतापूर्ण मूर्खता मानी जाएगी। हम जैसा बोते हैं, वैसा ही काटते हैं। 1833 में अंग्रेजों ने हिंसा के द्वारा अधिक मतदान शक्ति प्राप्त की। क्या वे बल प्रयोग करके अपने कर्तव्य को बेहतर ढंग से समझ पाए? वे मतदान का अधिकार चाहते थे, जिसे उन्होंने शारीरिक बल का प्रयोग करके प्राप्त किया। लेकिन वास्तविक अधिकार कर्तव्य पालन का परिणाम होते हैं; ये अधिकार उन्हें प्राप्त नहीं हुए हैं। इसलिए, हमारे सामने इंग्लैंड में हर कोई अपने अधिकारों की मांग करता है और उन पर जोर देता है, कोई भी अपने कर्तव्य के बारे में नहीं सोचता। और, जहाँ हर कोई अधिकार चाहता है, तो उन्हें कौन किसको देगा?

मैं यह नहीं कहना चाहता कि वे कोई कर्तव्य नहीं करते। वे उन अधिकारों के अनुरूप कर्तव्यों का पालन नहीं करते; और चूँकि वे उस विशेष कर्तव्य को नहीं निभाते, अर्थात् योग्यता प्राप्त नहीं करते, इसलिए उनके अधिकार उनके लिए बोझ साबित हुए हैं। दूसरे शब्दों में, उन्होंने जो प्राप्त किया है, वह उनके द्वारा अपनाए गए साधनों का सटीक परिणाम है। उन्होंने लक्ष्य के अनुरूप साधनों का उपयोग किया। अगर मैं आपकी घड़ी आपसे छीनना चाहता हूँ, तो मुझे इसके लिए अवश्य ही लड़ना होगा; अगर मैं आपकी घड़ी खरीदना चाहता हूँ, तो मुझे इसके लिए आपको भुगतान करना होगा; और अगर मैं कोई उपहार चाहता हूँ, तो मुझे इसके लिए विनती करनी होगी; और, मैं जो साधन अपनाता हूँ, उसके अनुसार घड़ी चोरी की संपत्ति है, मेरी अपनी संपत्ति है, या दान है। इस प्रकार हम तीन अलग-अलग साधनों से तीन अलग-अलग परिणाम देखते हैं। क्या आप तब भी कहेंगे कि साधन मायने नहीं रखते?

अब हम चोर को भगाने के लिए आपके द्वारा दिए गए उदाहरण को लेते हैं। मैं आपसे सहमत नहीं हूँ कि चोर को किसी भी तरह से भगाया जा सकता है। यदि वह मेरा पिता है जो चोरी करने आया है तो मैं एक तरह का तरीका अपनाऊँगा। यदि वह कोई परिचित है तो मैं दूसरा तरीका अपनाऊँगा; और यदि कोई पूर्ण अजनबी है तो मैं तीसरा तरीका अपनाऊँगा। यदि वह कोई गोरा आदमी है तो आप शायद कहेंगे कि आप उन तरीकों से अलग तरीके अपनाएँगे जो आप एक भारतीय चोर के साथ अपनाएँगे। यदि वह कोई कमज़ोर आदमी है तो आप उन तरीकों से अलग तरीके अपनाएँगे जो शारीरिक रूप से समान शक्ति वाले व्यक्ति से निपटने के लिए अपनाए जाएँगे; और यदि चोर सिर से पैर तक हथियारबंद है तो मैं बस चुप रहूँगा। इस प्रकार हमारे पास पिता और हथियारबंद व्यक्ति के बीच कई तरह के तरीके हैं। फिर, मैं सोचता हूँ कि चाहे चोर मेरा पिता हो या वह हथियारबंद व्यक्ति, मुझे सोने का नाटक करना चाहिए। इसका कारण यह है कि

मेरे पिता भी हथियारबंद होंगे और मैं दोनों में से किसी की शक्ति के आगे झुक जाऊँगा और अपनी चीज़ें चोरी होने दूँगा। मेरे पिता की शक्ति मुझे दया से रोने पर मजबूर कर देगी; हथियारबंद आदमी की ताकत देखकर मुझमें गुस्सा आ जाएगा और हम दुश्मन बन जाएंगे। यह अजीब स्थिति है। इन उदाहरणों से हम इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि प्रत्येक मामले में क्या उपाय अपनाए जाएं। मैं खुद स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ कि इन सभी मामलों में क्या किया जाना चाहिए, लेकिन उपाय आपको डरा सकता है। इसलिए मैं इसे आपके सामने रखने में संकोच कर रहा हूँ। फिलहाल मैं आपको इसका अनुमान लगाने के लिए छोड़ देता हूँ, और यदि आप नहीं कर सकते हैं, तो यह स्पष्ट है कि आपको प्रत्येक मामले में अलग-अलग तरीके अपनाने होंगे। आपने यह भी देखा होगा कि चोर को भगाने के लिए कोई भी उपाय काम नहीं आएगा। आपको प्रत्येक मामले के अनुकूल उपाय अपनाने होंगे। इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि आपका कर्तव्य चोर को अपनी इच्छानुसार भगाना नहीं है।

चलिए, थोड़ा आगे बढ़ते हैं। उस हथियारबंद आदमी ने आपकी संपत्ति चुरा ली है; आप उसके कृत्य के बारे में सोच रहे हैं; आप क्रोध से भरे हुए हैं; आप तर्क देते हैं कि आप उस बदमाश को अपने लिए नहीं, बल्कि अपने पड़ोसियों के भले के लिए दंडित करना चाहते हैं; आपने कई हथियारबंद लोगों को इकट्ठा किया है, आप उसके घर पर हमला करके उसे लेना चाहते हैं; उसे इसकी सूचना दी जाती है, वह भाग जाता है; वह भी क्रोधित है। वह अपने भाई लुटेरों को इकट्ठा करता है, और आपको एक चुनौतीपूर्ण संदेश भेजता है कि वह दिनदहाड़े डकैती करेगा। आप मजबूत हैं, आप उससे डरते नहीं हैं, आप उसका स्वागत करने के लिए तैयार हैं। इस बीच, डाकू आपके पड़ोसियों को परेशान करता है। वे आपके सामने शिकायत करते हैं। आप जवाब देते हैं कि आप सब उनके लिए कर रहे हैं; आपको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका अपना सामान चोरी हो गया है। आपके पड़ोसी जवाब देते हैं कि डाकू ने उन्हें पहले कभी परेशान नहीं किया, और उसने आपके खिलाफ शत्रुता की घोषणा करने के बाद ही लूटपाट शुरू की। आप स्काइला और चेरबडीस के बीच हैं। आप उन बेचारे लोगों के लिए दया से भरे हुए हैं। वे जो कहते हैं, वह सत्य है। अब तुम क्या करो? यदि तुम डाकू को अकेला छोड़ दोगे, तो तुम अपमानित होगे। इसलिए तुम उन बेचारे आदमियों से कहो: "कोई बात नहीं। आओ, मेरा धन तुम्हारा है, मैं तुम्हें हथियार देता हूँ, मैं तुम्हें उनका प्रयोग करना सिखाऊँगा; तुम दुष्ट को पीटना; उसे अकेला मत छोड़ो।" और इस प्रकार युद्ध बढ़ता है; डाकू संख्या में बढ़ते हैं; तुम्हारे पड़ोसियों ने जानबूझ कर स्वयं को असुविधा में डाला है। इस प्रकार डाकू से बदला लेने की इच्छा का परिणाम यह हुआ है कि तुमने स्वयं अपनी

शांति भंग कर ली है; तुम लूटे जाने और हमला किए जाने के निरंतर भय में रहते हो; तुम्हारे साहस का स्थान कायरता ने ले लिया है। यदि तुम धैर्यपूर्वक तर्क की जांच करोगे, तो तुम देखोगे कि मैंने चित्र को अतिरंजित नहीं किया है। यह एक साधन है। अब दूसरे साधन की जांच करते हैं। तुम इस सशस्त्र डाकू को एक अज्ञानी भाई के रूप में पेश करते हो; तुम उचित अवसर पर उससे तर्क करने का इरादा रखते हो; तुम तर्क देते हो कि वह, आखिरकार, एक साथी है; तुम नहीं जानते कि उसे चोरी करने के लिए किसने प्रेरित किया। इसलिए, आप तय करते हैं कि जब भी आप कर सकेंगे, आप उस आदमी की चोरी करने की मंशा को नष्ट कर देंगे। जब आप इस तरह से अपने आप से तर्क कर रहे होते हैं, तो वह आदमी फिर से चोरी करने के लिए आता है। उस पर गुस्सा होने के बजाय आप उस पर दया करते हैं। आप सोचते हैं कि चोरी की यह आदत उसके लिए एक बीमारी होगी। इसलिए, अब से, आप अपने दरवाजे और खिड़कियां खुली रखते हैं, आप अपने सोने का स्थान बदलते हैं, और आप अपनी चीजों को उस तरीके से रखते हैं जो उसे सबसे आसानी से सुलभ हो।

चोर फिर से आता है और भ्रमित होता है क्योंकि यह सब उसके लिए नया है; फिर भी, वह आपकी चीजें ले जाता है। लेकिन उसका मन व्याकुल है। वह गाँव में आपके बारे में पूछताछ करता है, वह आपके उदार और प्रेमपूर्ण हृदय के बारे में जानता है, वह पश्चाताप करता है, वह आपसे क्षमा मांगता है, आपको आपकी चीजें लौटाता है, और चोरी की आदत छोड़ देता है। वह आपका नौकर बन जाता है, और आप उसके लिए सम्मानजनक रोजगार ढूँढते हैं। यह दूसरा तरीका है। इस प्रकार, आप देखते हैं, विभिन्न तरीकों ने पूरी तरह से अलग-अलग परिणाम लाए हैं। मैं इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहता कि लुटेरे ऊपर बताए गए तरीके से काम करेंगे या सभी में आपकी तरह दया और प्रेम होगा, लेकिन मैं केवल यह दिखाना चाहता हूँ कि केवल उचित साधनों से ही उचित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं, और कम से कम अधिकांश मामलों में, यदि वास्तव में सभी में नहीं, तो प्रेम और दया की शक्ति हथियारों की शक्ति से कहीं अधिक होती है। क्रूर बल के प्रयोग से नुकसान होता है, दया से कभी नहीं।

अब हम याचिका दायर करने के सवाल पर विचार करेंगे। यह निर्विवाद तथ्य है कि बल के बिना याचिका दायर करना बेकार है। हालांकि, दिवंगत न्यायमूर्ति रानाडे कहते थे कि याचिकाएं उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति करती हैं क्योंकि वे लोगों को शिक्षित करने का एक साधन हैं। वे लोगों को उनकी स्थिति का अंदाजा देते हैं और शासकों को चेतावनी देते हैं। इस दृष्टिकोण से, वे पूरी तरह से बेकार नहीं हैं।

बराबर के व्यक्ति की याचिका शिष्टाचार का प्रतीक है; गुलाम की याचिका उसकी गुलामी का प्रतीक है। बल द्वारा समर्थित याचिका बराबर के व्यक्ति की याचिका है और जब वह अपनी मांग को याचिका के रूप में प्रस्तुत करता है, तो यह उसकी कुलीनता का प्रमाण है। याचिकाओं के पीछे दो प्रकार के बल हो सकते हैं। एक प्रकार का बल है "यदि आप यह नहीं देंगे तो हम आपको नुकसान पहुँचाएँगे"; यह हथियारों का बल है, जिसके बुरे परिणामों की हम पहले ही जाँच कर चुके हैं। दूसरे प्रकार के बल को इस प्रकार कहा जा सकता है: "यदि आप हमारी माँग नहीं मानते हैं, तो हम आपके याचिकाकर्ता नहीं रहेंगे। आप हमें तभी तक नियंत्रित कर सकते हैं जब तक हम शासित बने रहें; हमारा आपसे कोई लेन-देन नहीं रहेगा।" इसमें निहित बल को प्रेम बल, आत्म-बल या, अधिक लोकप्रिय रूप से लेकिन कम सटीक रूप से, निष्क्रिय प्रतिरोध के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह बल अविनाशी है। जो इसका उपयोग करता है वह अपनी स्थिति को पूरी तरह से समझता है। हमारे पास एक प्राचीन कहावत है जिसका शाब्दिक अर्थ है: "एक नकारात्मक छत्तीस बीमारियों को ठीक करता है।" प्रेम या आत्मा के बल के सामने हथियारों का बल शक्तिहीन है।

अब हम आपका अंतिम दृष्टांत लेते हैं, जिसमें बच्चा अपना पैर आग में डालता है। इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा। आप बच्चे के साथ वास्तव में क्या करेंगे? मान लीजिए कि वह इतना शारीरिक बल लगा सकता है कि वह आपको शक्तिहीन कर दे और आग की ओर भागे, तो आप उसे रोक नहीं सकते। आपके पास केवल दो ही उपाय हैं - या तो आप उसे आग में जलने से बचाने के लिए मार दें, या फिर आप अपनी जान दे दें क्योंकि आप उसे अपनी आंखों के सामने जलते हुए नहीं देखना चाहते। आप उसे नहीं मारेंगे। यदि आपका हृदय दया से भरा नहीं है, तो संभव है कि आप बच्चे से पहले आग में जाकर खुद को आत्मसमर्पण न करें। इसलिए, आप असहाय होकर उसे आग में जाने देते हैं। इस प्रकार, किसी भी स्थिति में, आप शारीरिक बल का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। मुझे आशा है कि आप यह नहीं सोचेंगे कि यह अभी भी शारीरिक बल है, यद्यपि निम्न कोटि का, जब आप बलपूर्वक बच्चे को आग की ओर भागने से रोक सकते हैं।

वह बल एक अलग तरह का है और हमें समझना होगा कि वह क्या है। याद रखें कि इस तरह बच्चे को रोकने में आप पूरी तरह से उसके अपने हित के बारे में सोच रहे हैं; आप उसके एकमात्र लाभ के लिए अधिकार का प्रयोग कर रहे हैं। आपका उदाहरण अंग्रेजों पर लागू नहीं होता। अंग्रेजों के खिलाफ क्रूर बल का प्रयोग करते समय आप पूरी तरह से अपने ही हित के बारे में सोचते हैं, यानी राष्ट्रीय हित के बारे में। यहां दया या प्रेम का कोई सवाल नहीं है। यदि आप कहते हैं कि

अंग्रेजों के कार्य बुरे हैं, वे आग का प्रतिनिधित्व करते हैं, और वे अज्ञानता के कारण अपने कार्यों को करते हैं, और इसलिए वे एक बच्चे की स्थिति में हैं और आप ऐसे बच्चे की रक्षा करना चाहते हैं, तो आपको उस तरह के हर बुरे कार्य को रोकना होगा, चाहे वह किसी ने भी किया हो और, बुरे बच्चे के मामले की तरह, आपको खुद को बलिदान करना होगा। यदि आप ऐसी असीम दया करने में सक्षम हैं, तो मैं आपको इसके प्रयोग के लिए शुभकामनाएं देता हूं। ***

सक्रिय कार्यवाहियाँ

पाठक: आपने व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए क्रूर बल का प्रयोग अस्वीकार कर दिया है, तो आपके दृष्टिकोण से इसके क्या तरीके हो सकते हैं- निष्क्रिय प्रतिरोध, अहिंसा, आत्मबल या सत्यबल या सक्रिय कार्यवाही, और इन तरीकों की सफलता का ऐतिहासिक प्रमाण क्या है। मैं अब भी मानता हूँ कि शारीरिक दंड के बिना दुष्ट लोग बुराई करना बंद नहीं करेंगे।

संपादक: निष्क्रिय प्रतिरोध (प्रतिरोध तो प्रतिरोध ही है, सक्रिय और निष्क्रिय दोनों ही अपने आपको और दूसरों को मूर्ख बनाने के लिए दिमागी खेल हैं। युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति में शक्तिशाली देश कहते हैं कि या तो तुम मेरे साथ हो या फिर यह समझा जाएगा कि तुम मेरे खिलाफ हो) और अहिंसा (अहिंसा वह अवस्था है जिसमें स्वयं और दूसरे के बीच का द्वैत समाप्त हो जाता है अर्थात् आपको लगता है कि दूसरा आपका ही अंग है-तत्त्वमसि) क्या है, इसे समझे बिना अहिंसा या निष्क्रिय प्रतिरोध को अधिक महत्व देना आत्मघाती है।

स्वतंत्रता से मिलने वाली खुशी ही व्यक्ति, परिवार, देश और समाज का आधारभूत जीवन-निर्वाह मूल्य है। जब स्वतंत्रता से प्रेम पूरे विश्व में फैलता है, तभी अंतर्राष्ट्रीय बंधुत्व की भावना विकसित होती है और अहिंसा/त्याग की भावना को बल मिलता है।

सांसारिक प्रेम और निस्वार्थ कर्म (परोपकार) दुनिया के हर कोने में देखा जा सकता है। हर नई पीढ़ी के दिमाग में पूरा इतिहास, आकृति में भविष्य और हृदय में वर्तमान होता है। पैर से कील निकालने के लिए सुई की जरूरत होती है और कील निकालने के बाद आप सुई भी छोड़ देते हैं, यही हिंसा या अहिंसा का मामला है।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर (इंटरव्यू में):

उत्तर: कवि तुलसीदास ने कहा है: "धर्म का मूल, दया या प्रेम है, जैसा कि शरीर का अहंकार है। इसलिए, जब तक हम जीवित हैं, हमें दया का त्याग नहीं करना चाहिए।" यह मुझे वैज्ञानिक सत्य लगता है। मैं इस पर उतना ही विश्वास करता हूँ जितना कि दो और दो चार होने पर। प्रेम की शक्ति आत्मा या सत्य की शक्ति के समान है। हमारे पास हर कदम पर इसके काम करने के प्रमाण हैं। उस शक्ति के अस्तित्व के बिना ब्रह्मांड गायब हो जाएगा। लेकिन आप ऐतिहासिक

प्रमाण मांग रहे हैं। इसलिए, यह जानना आवश्यक है कि इतिहास का क्या अर्थ है। गुजराती समकक्ष का अर्थ है: "ऐसा हुआ"। यदि इतिहास का यही अर्थ है, तो प्रचुर प्रमाण देना संभव है। लेकिन, यदि इसका अर्थ राजाओं और सम्राटों के कार्यों से है, तो ऐसे इतिहास में आत्म-शक्ति या निष्क्रिय प्रतिरोध का कोई प्रमाण नहीं हो सकता है। आप टिन की खदान में चांदी के अयस्क की उम्मीद नहीं कर सकते। जैसा कि हम जानते हैं, इतिहास दुनिया के युद्धों का रिकॉर्ड है, और इसलिए अंग्रेजों के बीच एक कहावत है कि जिस राष्ट्र का कोई इतिहास नहीं है, यानी कोई युद्ध नहीं है, वह एक खुशहाल राष्ट्र है। राजाओं ने कैसे खेला, कैसे वे एक-दूसरे के दुश्मन बन गए, कैसे उन्होंने एक-दूसरे की हत्या की, यह सब इतिहास में सटीक रूप से दर्ज है, और अगर दुनिया में यही सब हुआ होता, तो यह बहुत पहले ही खत्म हो गया होता। अगर ब्रह्मांड की कहानी युद्धों से शुरू होती, तो आज एक भी आदमी जिंदा नहीं मिलता। जिन लोगों के खिलाफ युद्ध हुआ है, वे गायब हो गए हैं, उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासी, जिनमें से शायद ही कोई व्यक्ति घुसपैठियों द्वारा जीवित बचा हो। कृपया ध्यान दें, इन मूल निवासियों ने आत्मरक्षा में आत्मबल का उपयोग नहीं किया, और यह जानने के लिए बहुत दूरदर्शिता की आवश्यकता नहीं है कि ऑस्ट्रेलियाई लोगों का भाग्य उनके पीड़ितों जैसा ही होगा। "जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही मारे जाएंगे।" हमारे यहाँ कहावत है कि पेशेवर तैराकों को पानी में ही कब्र मिलेगी।

यह तथ्य कि दुनिया में अभी भी इतने सारे लोग जीवित हैं, यह दर्शाता है कि यह हथियारों के बल पर नहीं बल्कि सत्य या प्रेम के बल पर आधारित है। इसलिए, इस बल की सफलता का सबसे बड़ा और सबसे निर्विवाद प्रमाण इस तथ्य में पाया जाता है कि दुनिया में युद्धों के बावजूद, यह अभी भी जीवित है।

हजारों, बल्कि लाखों लोग, अपने अस्तित्व के लिए इस शक्ति के सक्रिय कार्य पर निर्भर हैं। लाखों परिवारों के जीवन में होने वाले छोटे-मोटे झगड़े इस शक्ति के प्रयोग के सामने समाप्त हो जाते हैं। सैकड़ों राष्ट्र शांति से रहते हैं। इतिहास इस तथ्य पर ध्यान नहीं देता और न ही दे सकता है। इतिहास वास्तव में प्रेम या आत्मा की इस शक्ति के सुचारु रूप से कार्य करने में होने वाली प्रत्येक बाधा का अभिलेख है। दो भाई झगड़ते हैं; उनमें से एक पश्चाताप करता है और अपने भीतर सुप्त पड़े प्रेम को पुनः जगाता है; और दोनों फिर से शांति से रहने लगते हैं; इस पर कोई ध्यान नहीं देता। लेकिन यदि दोनों भाई, वकीलों के हस्तक्षेप से या किसी अन्य कारण से हथियार उठा लेते हैं या कानून का सहारा लेते हैं, जो कि क्रूर बल का ही दूसरा रूप है, तो उनके कार्यों पर तुरंत प्रेस का ध्यान जाएगा, वे अपने पड़ोसियों की चर्चा का विषय बनेंगे और संभवतः इतिहास

में दर्ज हो जाएंगे। और जो बात परिवारों और समुदायों के बारे में सच है, वही राष्ट्रों के बारे में भी सच है। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि परिवारों के लिए एक कानून है और राष्ट्रों के लिए दूसरा। तो, इतिहास प्रकृति के क्रम में होने वाली बाधा का अभिलेख है। आत्मबल स्वाभाविक होने के कारण इतिहास में इसका उल्लेख नहीं मिलता।

क्यूएसटी: आप जो कहते हैं, उसके अनुसार यह स्पष्ट है कि इस तरह के निष्क्रिय प्रतिरोध के उदाहरण इतिहास में नहीं मिलते। निष्क्रिय प्रतिरोध को और अधिक गहराई से समझना आवश्यक है। इसलिए बेहतर होगा कि आप इस पर विस्तार से चर्चा करें।

उत्तर : निष्क्रिय प्रतिरोध व्यक्तिगत पीड़ा द्वारा अधिकारों को सुरक्षित करने का एक तरीका है; यह हथियारों द्वारा प्रतिरोध का उल्टा है। जब मैं कोई ऐसा काम करने से मना करता हूँ जो मेरी अंतरात्मा के प्रतिकूल है, तो मैं आत्म-बल का उपयोग करता हूँ। उदाहरण के लिए, वर्तमान सरकार ने एक कानून पारित किया है जो मुझ पर लागू होता है। मुझे यह पसंद नहीं है। यदि मैं हिंसा का उपयोग करके सरकार को कानून निरस्त करने के लिए मजबूर करता हूँ, तो मैं शारीरिक बल का उपयोग कर रहा हूँ। यदि मैं कानून का पालन नहीं करता हूँ और इसके उल्लंघन के लिए दंड स्वीकार करता हूँ, तो मैं आत्म-बल का उपयोग करता हूँ। इसमें आत्म-बलिदान शामिल है। हर कोई मानता है कि आत्म-बलिदान दूसरों के बलिदान से असीम रूप से श्रेष्ठ है। इसके अलावा, अगर इस तरह के बल का उपयोग किसी ऐसे कारण से किया जाता है जो अन्यायपूर्ण है, तो केवल इसका उपयोग करने वाला व्यक्ति ही पीड़ित होता है। वह अपनी गलतियों के लिए दूसरों को पीड़ित नहीं करता है।

मनुष्य ने पहले भी कई ऐसे काम किए हैं जो बाद में गलत पाए गए। कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि वह पूरी तरह सही है या कोई खास काम गलत है क्योंकि वह ऐसा सोचता है, लेकिन जब तक वह जानबूझकर ऐसा करता है, तब तक वह उसके लिए गलत है। इसलिए यह उचित है कि वह वह काम न करे जिसे वह गलत समझता है और उसका परिणाम चाहे जो भी हो, उसे भुगतना पड़े। आत्म-शक्ति के उपयोग की यही कुंजी है।

पाठक: दूसरे देशों के लोगों के प्रति प्रेम दिखाने या उनका दिखावा करने से देश की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है और यह कानून की अवहेलना भी होगी? वे कहते हैं कि हमें जो कानून बने हैं, उनका पालन करना चाहिए, लेकिन अगर कानून खराब हैं, तो हमें कानून बनाने वालों को बलपूर्वक बाहर निकालना चाहिए।

संपादक: कानून दूसरों से लेने या छीनने के लिए नहीं बनाए जाते, कानून वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की रक्षा के लिए बनाए जाते हैं, कानून बांटने के लिए बनाए जाते हैं, कानून प्रकृति के प्रति प्रेम बढ़ाने और उसकी सराहना करने के लिए बनाए जाते हैं।

इसके विपरीत कोई भी कानून लाभ चाहने वालों या भटके हुए लोगों के दस्तावेजों का एक सेट है। बुरे कानून जीवन को बनाए रखने वाले मूल्यों को नहीं बढ़ाते हैं और इसलिए लंबे समय तक जारी नहीं रह सकते हैं, हालांकि बुरे से बचने के तरीके और साधन समय, स्थान और व्यक्ति के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। एक पूर्ण विकसित समाज में प्रेम (परोपकार) ही एकमात्र रास्ता है, करुणा सहित कोई भी अन्य रास्ता तबाही की ओर ले जाएगा।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

उत्तर : मैं उनसे आगे जाऊँ या नहीं, यह हम दोनों के लिए कोई मायने नहीं रखता। हम बस यह जानना चाहते हैं कि क्या सही है और उसके अनुसार काम करना चाहते हैं। हम एक कानून का पालन करने वाले राष्ट्र हैं, इस कथन का वास्तविक अर्थ यह है कि हम निष्क्रिय प्रतिरोधकर्ता हैं। जब हमें कुछ कानून पसंद नहीं आते, तो हम कानून बनाने वालों का सिर नहीं तोड़ते, बल्कि हम पीड़ित होते हैं और कानूनों के आगे झुकते नहीं हैं। हमें कानूनों का पालन करना चाहिए, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, यह एक नया राष्ट्र है।

पहले के ज़माने में ऐसी कोई चीज़ नहीं थी। लोग उन कानूनों की अवहेलना करते थे जो उन्हें पसंद नहीं थे और उनके उल्लंघन के लिए उन्हें दंड भुगतना पड़ता था। अगर हम अपने विवेक के विपरीत कानून का पालन करते हैं तो यह हमारी मर्दानगी के खिलाफ़ है। ऐसी शिक्षा धर्म के विरुद्ध है और इसका मतलब गुलामी है। अगर सरकार हमें बिना कपड़ों के घूमने के लिए कहे, तो क्या हमें ऐसा करना चाहिए? अगर मैं निष्क्रिय प्रतिरोधकर्ता होता, तो मैं उनसे कहता कि मुझे उनके कानून से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन हम खुद को इतना भूल गए हैं और इतने आज्ञाकारी हो गए हैं कि हमें किसी भी अपमानजनक कानून से कोई फर्क नहीं पड़ता।

जो मनुष्य अपने पुरुषत्व को समझ गया है, जो केवल ईश्वर से डरता है, वह किसी और से नहीं डरेगा। मनुष्य द्वारा बनाए गए कानून उस पर अनिवार्य रूप से बाध्यकारी नहीं होते। सरकार भी हमसे ऐसी किसी बात की अपेक्षा नहीं करती। वे यह नहीं कहते कि: "तुम्हें ऐसा-ऐसा काम करना चाहिए", बल्कि वे कहते हैं: "यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो हम तुम्हें दण्ड देंगे।" हम इतने नीचे गिर गए हैं कि हम सोचते हैं कि कानून के अनुसार कार्य करना हमारा कर्तव्य और हमारा धर्म है।

यदि मनुष्य यह समझ ले कि अन्यायपूर्ण कानूनों का पालन करना पुरुषत्वहीन है, तो किसी भी मनुष्य का अत्याचार उसे गुलाम नहीं बना सकेगा। स्वशासन या स्वशासन की यही कुंजी है।

यह मानना अंधविश्वास है और अधार्मिक बात है कि बहुमत का काम अल्पसंख्यकों को बांधता है। ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, जिनमें बहुमत के काम गलत पाए गए और अल्पसंख्यकों के काम सही पाए गए। सभी सुधारों की शुरुआत अल्पसंख्यकों द्वारा बहुमत के विरोध में की गई। अगर लुटेरों के एक गिरोह में लूटपाट का ज्ञान अनिवार्य है, तो क्या एक धर्मपरायण व्यक्ति इस दायित्व को स्वीकार करेगा? जब तक यह अंधविश्वास रहेगा कि लोगों को अन्यायपूर्ण कानूनों का पालन करना चाहिए, तब तक उनकी गुलामी बनी रहेगी। और केवल एक निष्क्रिय प्रतिरोधक ही इस अंधविश्वास को दूर कर सकता है।

बल प्रयोग करना, बारूद का प्रयोग करना निष्क्रिय प्रतिरोध के विपरीत है, क्योंकि इसका अर्थ है कि हम चाहते हैं कि हमारा विरोधी बलपूर्वक वह करे जो हम चाहते हैं, लेकिन वह ऐसा नहीं करता। और यदि बल का ऐसा प्रयोग उचित है, तो निश्चित रूप से वह हमारे द्वारा भी ऐसा करने का हकदार है। और इसलिए हमें कभी भी किसी समझौते पर नहीं पहुंचना चाहिए। हम बस कल्पना कर सकते हैं, जैसे अंधा घोड़ा चक्की के चारों ओर चक्कर लगाता है, कि हम प्रगति कर रहे हैं। जो लोग मानते हैं कि वे उन कानूनों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं जो उनकी अंतरात्मा के प्रतिकूल हैं, उनके पास केवल निष्क्रिय प्रतिरोध का उपाय ही खुला है। इसके अलावा कोई भी उपाय विनाशकारी ही होगा।

प्रश्न: आप जो कहते हैं, उससे मैं यह निष्कर्ष निकालता हूं कि निष्क्रिय प्रतिरोध कमजोर लोगों के लिए एक शानदार हथियार है, लेकिन जब वे मजबूत होते हैं तो वे हथियार उठा सकते हैं।

उत्तर: यह घोर अज्ञानता है। निष्क्रिय प्रतिरोध, यानी आत्मबल, बेजोड़ है। यह हथियारों के बल से श्रेष्ठ है। फिर इसे केवल कमजोरों का हथियार कैसे माना जा सकता है? शारीरिक बल वाले लोग उस साहस से अपरिचित हैं जो निष्क्रिय प्रतिरोधक में अपेक्षित है। क्या आप मानते हैं कि एक कायर कभी भी उस कानून का उल्लंघन कर सकता है जिसे वह नापसंद करता है?

उग्रवादियों को क्रूर बल का समर्थक माना जाता है। फिर वे कानून का पालन करने की बात क्यों करते हैं? मैं उन्हें दोष नहीं देता। वे और कुछ नहीं कह सकते। जब वे अंग्रेजों को भगाने में सफल हो जाते हैं और खुद गवर्नर बन जाते हैं, तो वे चाहेंगे कि आप और मैं उनके कानूनों का पालन

करें। और यह उनके संविधान के लिए उचित बात है। लेकिन एक निष्क्रिय प्रतिरोधी कहेगा कि वह उस कानून का पालन नहीं करेगा जो उसकी अंतरात्मा के खिलाफ है, भले ही उसे तोप के मुंह पर उड़ा दिया जाए।

तुम क्या सोचते हो? साहस की आवश्यकता कहाँ है- दूसरों को तोप के पीछे से उड़ा देने में, या मुस्कुराते हुए तोप के पास जाकर खुद को उड़ा देने में? सच्चा योद्धा कौन है, जो मृत्यु को हमेशा अपना मित्र बनाए रखता है, या वह जो दूसरों की मृत्यु को नियंत्रित करता है? मेरा विश्वास करो कि साहस और पुरुषार्थ से रहित व्यक्ति कभी भी निष्क्रिय प्रतिरोधक नहीं हो सकता।

लेकिन मैं यह स्वीकार करता हूँ कि शरीर से कमजोर व्यक्ति भी यह प्रतिरोध करने में सक्षम है। एक व्यक्ति लाखों लोगों की तरह ही यह प्रतिरोध कर सकता है। पुरुष और महिला दोनों ही इसमें शामिल हो सकते हैं। इसके लिए सेना के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है; इसके लिए किसी जुजित्सु की आवश्यकता नहीं है। केवल मन पर नियंत्रण आवश्यक है, और जब वह प्राप्त हो जाता है, तो मनुष्य जंगल के राजा की तरह स्वतंत्र हो जाता है और उसकी एक नज़र ही दुश्मन को मार देती है।

निष्क्रिय प्रतिरोध एक चौतरफा तलवार है, इसका इस्तेमाल किसी भी तरह से किया जा सकता है; यह उस व्यक्ति को आशीर्वाद देता है जो इसका इस्तेमाल करता है और जिसके खिलाफ इसका इस्तेमाल किया जाता है। खून की एक बूंद बहाए बिना यह दूरगामी परिणाम देता है। इसमें कभी जंग नहीं लगती और इसे चुराया नहीं जा सकता। निष्क्रिय प्रतिरोधियों के बीच प्रतिस्पर्धा से थकावट नहीं होती। निष्क्रिय प्रतिरोध की तलवार को म्यान की जरूरत नहीं होती। यह वास्तव में अजीब है कि आप ऐसे हथियार को केवल कमजोरों का हथियार मानते हैं।**

पाठक: अहिंसा क्या है?

संपादक: जो कार्य हिंसा रहित है, वह अहिंसा है।

हिंद स्वराज के अनुसार गांधी जी के विचार हैं; अहिंसा और प्रेम का सिद्धांत बुद्ध और ईसा ने सदियों पहले प्रतिपादित किया था। इसे इन सदियों में अलग-अलग लोगों ने छोटे-छोटे स्पष्ट मुद्दों पर सफलतापूर्वक लागू किया है। जैसा कि यह माना गया है, और जैसा कि गेराल्ड हर्ड ने बताया है, "श्री गांधी के प्रयोग की विश्वव्यापी और सदियों पुरानी रुचि इस तथ्य में निहित है कि

उन्होंने इस पद्धति को उस स्तर पर काम करने का प्रयास किया है जिसे थोक या राष्ट्रीय स्तर कहा जा सकता है।" उस अनुप्रयोग की कठिनाइयाँ स्पष्ट हैं, लेकिन श्री गांधी का मानना है कि वे दुर्गम नहीं हैं। 1921 में भारत में यह प्रयोग असंभव लग रहा था और इसे छोड़ना पड़ा, लेकिन जो असंभव था वह 1930 में संभव हो गया। अब भी अक्सर यह सवाल उठता है: "अहिंसक साधन क्या है?" इस शब्द के अर्थ और सामग्री को मानकीकृत करने के लिए लंबे अभ्यास की आवश्यकता होगी। लेकिन इसका साधन आत्म-शुद्धि और अधिक आत्म-शुद्धि है। पश्चिमी विचारक अक्सर यह भूल जाते हैं कि अहिंसा की मूल शर्त प्रेम है, और मन और शरीर की निष्कलंक शुद्धता के बिना शुद्ध निःस्वार्थ प्रेम असंभव है।

पाठक: हिंसा क्या है?

संपादक: हिंसा शारीरिक क्रिया या मौखिक गाली-गलौज या मानसिक खेल द्वारा इंद्रियों या मानदंडों या कहे समझदार मानदंडों का उल्लंघन है। ग्रे कॉलर वाले लोग (पुरुष और महिला) आम तौर पर शारीरिक हिंसा का सहारा लेते हैं जबकि सफेद कॉलर वाले लोग मानसिक हिंसा का सहारा लेते हैं। कई बार, यह मानसिक हिंसा ही होती है जो शारीरिक क्रिया को उकसाती है लेकिन हमारी सहवर्ती बेकार परिभाषाओं के कारण हम शारीरिक क्रिया को हिंसा कहते हैं और मानसिक उल्लंघन करने वालों को निर्दोष मानते हैं।

हिंसा को एक ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जब आपकी गतिविधि, विचार प्रक्रिया, आपका दृष्टिकोण, आपकी कार्यवाही उन लोगों के खिलाफ आपकी वासना और लालच को पूरा करने की दिशा में निर्देशित और मोड़ दी जाती है जो बाधा के रूप में बीच में आते हैं उन्हें हिंसक कहा जा सकता है (उदाहरण के लिए एक शेर को हिंसक कहा जाता है जब वह भोजन की आवश्यकता पूरी होने के बाद भी मारना शुरू कर देता है। एक सेना को हिंसक कहा जाता है जब वह युद्ध जीतने के बाद हत्या करती है, या जब हमारे घर में महिला / पुरुष अपनी जरूरत पूरी होने के बाद भी बर्तन, फर्नीचर आदि तोड़ते हैं, तो उन्हें हिंसक कहा जा सकता है)।

जो लोग शारीरिक रूप से अधिक शक्तिशाली हैं, वे अपनी हिंसा को मांसपेशियों की शक्ति से प्रदर्शित करते हैं जैसे शेर, जंगली जानवर, सेना आदि। जो लोग मानसिक रूप से अधिक शक्तिशाली हैं, वे मानसिक खेलों के साथ अपनी हिंसा को प्रदर्शित करते हैं जैसे मौखिक गालियाँ, कूटनीति, खुद को नुकसान पहुंचाना ताकि दूसरे उनकी आलोचना और दबाव के लिए उनका पक्ष

लें, भूख हड़ताल पर बैठें आदि। और, जो लोग मानसिक रूप से और साथ ही शारीरिक रूप से मजबूत हैं, उनसे हिंसक होने की उम्मीद नहीं की जाती है, लेकिन अगर वे हिंसक हो जाते हैं, तो उन्हें बचाने के लिए भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए और यह एकमात्र श्रेणी है जो अहिंसा का अभ्यास करने का दावा कर सकती है (जैसे देश में जनता के प्रति अच्छी सरकार)।

पाठक: क्या श्री गांधी अपने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंसा या अहिंसा का मार्ग अपना रहे थे?

संपादक: यह कहना बहुत कठिन है, क्योंकि गांधीजी सहित सभी लोग यही सोचते हैं कि उनका (श्री गांधीजी का) मार्ग अहिंसक था। श्री गांधीजी की हिंसा या अहिंसा के बारे में कुछ कहने से पहले मैं उनके हिंद स्वराज से ही उद्धरण देना चाहूंगा :

1) मैं लंदन में हर जाने-माने भारतीय अराजकतावादी के संपर्क में आया। उनकी बहादुरी ने मुझे प्रभावित किया, लेकिन मुझे लगा कि हिंसा भारत की बीमारियों का इलाज नहीं है, और उसकी सभ्यता को आत्मरक्षा के लिए एक अलग और उच्चतर हथियार के इस्तेमाल की आवश्यकता है।

2) विभाजन ने न केवल अंग्रेजी जहाज में दरार डाली है, बल्कि हमारे जहाज में भी दरार डाल दी है। महान घटनाएँ हमेशा महान परिणाम उत्पन्न करती हैं। हमारे नेता दो दलों में विभाजित हैं: नरमपंथी और गरमपंथी। इन्हें धीमा दल और अधीर दल माना जा सकता है। कुछ लोग नरमपंथियों को डरपोक दल कहते हैं, और गरमपंथियों को साहसी दल। सभी लोग इन दोनों शब्दों की अपनी-अपनी पूर्वधारणाओं के अनुसार व्याख्या करते हैं। इतना तो तय है कि दोनों के बीच दुश्मनी पैदा हो गई है। एक दूसरे पर अविश्वास करता है और दूसरे पर आरोप लगाता है। सूरत कांग्रेस के समय तो लगभग मारपीट हो गई थी। मैं समझता हूँ कि यह विभाजन देश के लिए अच्छी बात नहीं है, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि ऐसे विभाजन लंबे समय तक नहीं टिकेंगे। यह सब नेताओं पर निर्भर करता है कि वे कितने समय तक टिकते हैं।

3) निष्क्रिय प्रतिरोध व्यक्तिगत पीड़ा द्वारा अधिकारों को सुरक्षित करने का एक तरीका है; यह हथियारों द्वारा प्रतिरोध का उल्टा है। जब मैं कोई ऐसा काम करने से मना करता हूँ जो मेरे विवेक के प्रतिकूल है, तो मैं आत्म-बल का उपयोग करता हूँ। उदाहरण के लिए, वर्तमान सरकार ने एक कानून पारित किया है जो मुझ पर लागू होता है। मुझे यह पसंद नहीं है। यदि मैं हिंसा का उपयोग करके सरकार को कानून निरस्त करने के लिए मजबूर करता हूँ। मैं वह प्रयोग कर रहा हूँ जिसे शारीरिक बल कहा जा सकता है। यदि मैं कानून का पालन नहीं करता हूँ और इसके उल्लंघन के लिए दंड स्वीकार करता हूँ, तो मैं आत्म-बल का उपयोग करता हूँ। इसमें आत्म-बलिदान शामिल

है। हर कोई मानता है कि आत्म-बलिदान दूसरों के बलिदान से असीम रूप से श्रेष्ठ है। इसके अलावा, यदि इस तरह के बल का उपयोग किसी ऐसे कारण से किया जाता है जो अन्यायपूर्ण है, तो इसका उपयोग करने वाला व्यक्ति ही पीड़ित होता है। वह अपनी गलतियों के लिए दूसरों को पीड़ित नहीं करता है। मनुष्यों ने पहले भी कई ऐसे काम किए हैं जो बाद में गलत पाए गए। कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि वह पूरी तरह से सही है या कोई विशेष बात गलत है क्योंकि वह ऐसा सोचता है, लेकिन यह उसके लिए गलत है जब तक कि वह उसका जानबूझकर किया गया निर्णय है। इसलिए यह उचित है कि वह वह काम न करे जिसे वह गलत समझता हो, और उसका परिणाम चाहे जो भी हो, उसे भुगतना पड़े। आत्मबल के उपयोग की यही कुंजी है।

4) कार्यक्रम का एकमात्र हिस्सा जो अब लागू किया जा रहा है, वह है अहिंसा। लेकिन मुझे यह स्वीकार करते हुए खेद है कि वह भी पुस्तक की भावना के अनुसार नहीं किया जा रहा है। अगर ऐसा होता, तो भारत एक दिन में स्वराज स्थापित कर लेता। अगर भारत प्रेम के सिद्धांत को अपने धर्म के सक्रिय भाग के रूप में अपनाता और अपनी राजनीति में इसे लागू करता, तो स्वराज स्वर्ग से भारत पर उतर आता। लेकिन मुझे दुख के साथ पता है कि वह घटना अभी बहुत दूर है।

5) मैं ये टिप्पणियाँ इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि मैंने देखा है कि पुस्तिका से बहुत कुछ उद्धृत करके वर्तमान आंदोलन को बदनाम किया जा रहा है। मैंने ऐसे लेख भी देखे हैं जो यह सुझाव देते हैं कि मैं एक गहरा खेल खेल रहा हूँ, कि मैं वर्तमान उथल-पुथल का उपयोग भारत पर अपनी सनक थोपने के लिए कर रहा हूँ, और भारत की कीमत पर धार्मिक प्रयोग कर रहा हूँ। मैं केवल यही उत्तर दे सकता हूँ कि सत्याग्रह कठोर पदार्थ से बना है। इसमें कुछ भी छिपा हुआ या गुप्त नहीं है। हिंद स्वराज में वर्णित जीवन के संपूर्ण सिद्धांत का एक हिस्सा निस्संदेह व्यवहार में लाया जा रहा है। इसके पूरे अभ्यास में कोई खतरा नहीं है। लेकिन मेरे लेखों से ऐसे अंशों को पुनः प्रस्तुत करके लोगों को डराना उचित नहीं है जो देश के सामने मौजूद मुद्दे से अप्रासंगिक हैं। मोहनदास के. गांधी, यंग इंडिया, जनवरी, 1921, **

लेखन (हिंद स्वराज) से ऐसा प्रतीत होता है कि श्री गांधी की अहिंसा परोपकार से अधिक एक रणनीति थी। श्री गांधी ने अपने जीवन को यह साबित करने के लिए जीने की कोशिश की कि उनकी अहिंसा वास्तविक है और यह कोई रणनीति नहीं है। यह ऐसा प्रतीत होता है जैसे एक लड़के ने रणनीतिक रूप से एक लड़की के साथ अपनी शादी की व्यवस्था की और फिर अपने

विवाहित जीवन को यह दिखावा करते हुए बिताया कि यह प्यार का परिणाम है (मैं इस बात से इनकार नहीं कर रहा हूँ कि कई बार झूठा प्यार असली हो जाता है)। ऐसे मामलों में तलाक के समय भी लड़का कभी यह नहीं कहता कि उसका प्यार एक रणनीति का हिस्सा था (द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए भारत से सशस्त्र बलों को श्री गांधी की अनुमति से भेजा गया था जिसमें लगभग दस लाख से अधिक सैनिक मारे गए थे) और अलग हुई पत्नियों को गुजारा भत्ता देकर मानदंडों को बनाए रखता है (जैसे श्री गांधी ने दस लाख से अधिक सैनिकों की हत्या के लिए पार्टी होने के बाद भी अपनी अहिंसा बनाए रखी)।

ऐसा प्रतीत होता है कि श्री गांधी ने स्वयं को अहिंसक बनने और चित्रित करने का बहुत प्रयास किया, जबकि वे अच्छी तरह जानते थे कि अहिंसा स्वयं की प्यास बुझाने के लिए जमीन से निकलने वाली जलधारा के समान है (श्री गांधी की अपने गुरु श्री राजचंद्र के साथ हुई चर्चा को भी देखा जा सकता है, जो राजचंद्र के आनंद स्थित आश्रम में उपलब्ध है)।

रणनीति बनाने में कुछ भी गलत नहीं है, बल्कि मुझे लगता है कि अहिंसा ही देश के पास उपलब्ध प्रमुख विकल्प था, जिससे देश की जनता को उसकी नींद, छिपन और आपसी झगड़ों से बाहर निकालकर भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए तैयार किया जा सके।

पाठक: श्री गांधी ने कहा कि हिंदू अहिंसक हैं और मुसलमान हिंसक हैं, इस बयान पर आपका क्या कहना है?

संपादक: यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि श्री गांधी ने अपनी यह बात सिद्ध करने के लिए कि हिंदू अहिंसक और अहिंसक हैं, तुलसीदास जी की उक्ति उद्धृत की (कवि तुलसीदास ने कहा है: "धर्म का मूल दया या प्रेम है, जैसे अहंकार शरीर का है- दया धर्म का मूल है , जैसे शरीर का अहंकार), लेकिन राम को भूल जाते हैं, जिन्होंने दुष्टों का वध किया था।

सनातन धर्म कभी किसी को दुष्टों, बुरे काम करने वालों-शैतान के सामने झुकना या झुकना नहीं सिखाता, बल्कि यह कहता है कि हमें दुष्टों को दंडित करने और नाबालिगों को माफ करने की शक्ति होनी चाहिए, जैसे हम घर पर बच्चों को उनकी छोटी-मोटी गलतियों या शरारतों के लिए माफ करते हैं। अगर किसी को कोई संदेह है तो वह सभी वेदों, उपनिषदों, गीता और रामायण का संदर्भ ले सकता है । मुझे नहीं पता कि श्री गांधी कैसे और क्यों भूल गए। सनातन धर्म कभी किसी को लड़ाई शुरू करने के लिए नहीं कहता और इसलिए उसे हिंसक या कायरतापूर्ण नहीं माना जा सकता ।

जहां तक मुसलमानों का सवाल है, यह स्पष्ट सत्य है कि अल्लाह हमलावरों से प्रेम नहीं करता, इसलिए मुसलमानों को भी हिंसक नहीं माना जा सकता और मुसलमान भी कायर नहीं हैं।

पाठक: आपने कहा कि प्रेम भारत की विशेषता है। क्या भारत में तोपों का कभी इस्तेमाल नहीं हुआ?

संपादक: ईसा मसीह ने प्रेम, अहिंसा और त्याग का प्रयोग किया है, जबकि ईसाइयों ने भी घृणा, युद्ध और हिंसा का प्रयोग किया है। बात बस इतनी है कि भारत ने मानवजाति को सुख देने की अपनी उत्कट इच्छा में पाया कि प्रेम ही जीवन प्रदान करने और उसे बनाए रखने का एकमात्र उपाय है।

जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं और समाज बढ़ता है, प्रेम कच्चे से परिष्कृत रूप में बदलता है। तोपों का इस्तेमाल हर जगह किया जा रहा है (तूफान, भूकंप और ज्वालामुखी फटने के समय) लेकिन ये रोज़मर्रा की ज़िंदगी के लिए उदाहरण नहीं हैं। प्रेम ही कानून है।

पाठक: आप जो कहते हैं, उससे मेरा यह निष्कर्ष निकलता है कि निष्क्रिय प्रतिरोध कमजोरों का एक शानदार हथियार है, लेकिन जब वे शक्तिशाली होते हैं, तो वे हथियार उठा लेते हैं।

संपादक: आगे बढ़ने से पहले हम चाहेंगे कि आप मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा पुस्तक से 'हिंसा, अहिंसा, शांति और लय' विषय का संदर्भ लें:

हिंसा, अहिंसा, शांति और लय

1) प्रकृति में विचित्र और विरोधाभासी चीजें होती रहती हैं और हमारे इतिहास में इसका पर्याप्त उल्लेख है। बुद्ध और महावीर द्वारा अहिंसा के अतिशयोक्ति के बाद भारत में गिरावट आई और अब गांधीजी और उनके अनुयायियों द्वारा अहिंसा आंदोलन के बाद सुधार शुरू हुआ। "जिस कारण से भारत में पतन शुरू हुआ, वही उत्थान का कारण भी बन गया।"

2) अंततः खेल शक्ति/ताकत से तय होता है, यदि शक्ति बुरे लोगों/राक्षसों/असुरों/दैत्य/दानवों के पास है तो समाज भयभीत, अराजक, दबा हुआ आदि होगा और यदि शक्ति/ताकत अच्छे लोगों/देवताओं के पास है तो निश्चित रूप से समाज अच्छाई से भरा होगा।

3) महावीर जैन से जब एक व्यक्ति ने पूछा कि "सब कहते हैं कि व्यक्ति में शक्ति और जागरूकता होनी चाहिए, इस पर आपका क्या विचार है, महावीर जैन ने उत्तर दिया कि शायद मेरे विचार से "यह अच्छा है कि बुरे लोग कमजोर और जागरूक रहें और यह अच्छा है कि अच्छे लोग

शक्तिशाली, शक्तिवान और जागरूक रहें (पता नहीं देश के जैनों में अहिंसा की यह अतिशयोक्ति कब और कैसे पनपती है)।

4) सभी लोग हिंसा का विरोध करते हैं, या मजे के लिए हत्या का विरोध करते हैं, अल्लाह ने हमलावर से प्यार नहीं किया, न ही कृष्ण ने युद्ध शुरू किया। जो भी अधार्मिक (अधार्मिक-काफिर) बनता है, उसे सजा मिलनी चाहिए। धर्म-युद्ध/जिहाद (युद्ध) एक आवश्यकता है यदि समाज का एक बड़ा समूह या विशेष वर्ग अधार्मिक (गैर-धार्मिक) प्रथाओं का पालन या समर्थन करना शुरू कर देता है।

ऐसे सभी धर्मयुद्धों में शीर्ष नेता कृष्ण की तरह अपने हाथों से किसी की हत्या नहीं करता। ऐसा ही व्यक्ति युद्ध के केंद्र में भी अहिंसक रह सकता है, अन्यथा लोग आम लोगों की अहिंसा और खास लोगों (पुलिस और सेना) की हिंसा का समर्थन करते हैं।

5) जीवन में संघर्ष तो चलता ही रहता है, हमारे शरीर में भी श्वेत कणिकाएं वायरस और बैक्टीरिया से युद्ध करती रहती हैं, और ऐसे में शांति तभी मिलती है जब हम टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, यानी मृत्यु के समय।

आम तौर पर जो हासिल होता है वह लय है और हमें इसी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। सरकार को उपरोक्त सभी मामलों में एकीकृत दृष्टिकोण अपनाना होगा और आंतरिक और बाह्य रूप से लय के लिए अपने प्रयासों को प्रोत्साहित करना होगा।

इसी प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

उत्तर: जाहिर है, आपकी राय में भारत का मतलब उसके कुछ राजकुमारों से है। मेरे लिए इसका मतलब है उसके लाखों लोग जिन पर उसके राजकुमारों और हमारे अस्तित्व का अस्तित्व निर्भर करता है।

राजा हमेशा अपने राजसी हथियारों का इस्तेमाल करेंगे। बल प्रयोग करना उनमें पैदा होता है। वे आदेश देना चाहते हैं, लेकिन जिन्हें आदेश का पालन करना होता है, उन्हें बंदूकें नहीं चाहिए: और ये पूरी दुनिया में बहुसंख्यक हैं। उन्हें या तो शरीर-बल या आत्म-बल सीखना पड़ता है। जहाँ वे पहले वाला सीखते हैं, वहाँ शासक और शासित दोनों ही पागलों की तरह बन जाते हैं; लेकिन जहाँ वे आत्म-बल सीखते हैं, वहाँ शासकों के आदेश उनकी तलवार की नोक से आगे नहीं बढ़ते, क्योंकि सच्चे लोग अन्यायपूर्ण आदेशों की अवहेलना करते हैं। किसानों को कभी तलवार से नहीं दबाया

गया है, और कभी नहीं दबाया जाएगा। वे तलवार का इस्तेमाल नहीं जानते, और

वे दूसरों द्वारा इसके इस्तेमाल से भयभीत नहीं होते। वह राष्ट्र महान है जो मृत्यु को अपना तकिया बनाकर अपना सिर रखता है। जो लोग मृत्यु को चुनौती देते हैं, वे सभी भय से मुक्त होते हैं। जो लोग पाशविक बल के मायावी आकर्षण के अधीन काम कर रहे हैं, उनके लिए यह चित्र अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। तथ्य यह है कि भारत में, राष्ट्र ने जीवन के सभी क्षेत्रों में आम तौर पर निष्क्रिय प्रतिरोध का इस्तेमाल किया है। जब हमारे शासक हमें नाराज़ करते हैं तो हम उनके साथ सहयोग करना बंद कर देते हैं। यह निष्क्रिय प्रतिरोध है।

मुझे एक घटना याद है, जब एक छोटी सी रियासत में, राजकुमार द्वारा जारी किए गए किसी आदेश से गांव के लोग नाराज हो गए थे। राजकुमार ने तुरंत गांव खाली करना शुरू कर दिया। राजकुमार घबरा गया, उसने अपनी प्रजा से माफ़ी मांगी और अपना आदेश वापस ले लिया। भारत में ऐसे कई उदाहरण मिल सकते हैं। असली स्वशासन तभी संभव है, जब लोगों की मार्गदर्शक शक्ति निष्क्रिय प्रतिरोध हो। कोई भी अन्य शासन विदेशी शासन है।

प्रश्न: तो फिर आप कहेंगे कि हमारे लिए शरीर को प्रशिक्षित करना बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है?

उत्तर: मैं ऐसी कोई बात नहीं कहूंगा। जब तक शरीर को प्रशिक्षित नहीं किया जाता, निष्क्रिय प्रतिरोधक बनना मुश्किल है। लाड़-प्यार से कमज़ोर हो चुके शरीर में रहने वाला मन भी कमज़ोर होता है और जहाँ मन की शक्ति नहीं होती, वहाँ आत्मा की शक्ति भी नहीं हो सकती। हमें बाल विवाह और विलासितापूर्ण जीवन से छुटकारा पाकर अपने शरीर को बेहतर बनाना होगा। अगर मैं किसी टूटे हुए शरीर वाले व्यक्ति से तोप के मुँह का सामना करने के लिए कहूँ, तो मैं खुद ही हँसी का पात्र बन जाऊँगा।

प्रश्न: तो फिर, आप जो कहते हैं, उससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि निष्क्रिय प्रतिरोधक बनना कोई छोटी बात नहीं है, और यदि ऐसा है, तो मैं चाहूँगा कि आप बताएं कि कोई व्यक्ति निष्क्रिय प्रतिरोधक कैसे बन सकता है।

उत्तर: निष्क्रिय प्रतिरोधक बनना आसान है, लेकिन उतना ही मुश्किल भी है। मैंने चौदह साल के एक लड़के को निष्क्रिय प्रतिरोधक बनते देखा है; मैंने बीमार लोगों को भी ऐसा करते देखा है; और मैंने शारीरिक रूप से मजबूत और अन्यथा खुश लोगों को भी निष्क्रिय प्रतिरोधक बनने में असमर्थ

देखा है। बहुत सारे अनुभव के बाद, मुझे लगता है कि जो लोग देश की सेवा के लिए निष्क्रिय प्रतिरोधक बनना चाहते हैं, उन्हें पूर्ण शुद्धता का पालन करना होगा, गरीबी को अपनाना होगा, सत्य का पालन करना होगा और निर्भयता विकसित करनी होगी।

पवित्रता सबसे महान अनुशासनों में से एक है जिसके बिना मन अपेक्षित दृढ़ता प्राप्त नहीं कर सकता। जो व्यक्ति अपवित्र होता है, वह सहनशक्ति खो देता है, नपुंसक और कायर बन जाता है। जिसका मन पशुवत वासनाओं में डूबा रहता है, वह कोई महान प्रयास करने में सक्षम नहीं होता। यह असंख्य उदाहरणों से सिद्ध किया जा सकता है।

तो फिर, एक विवाहित व्यक्ति को क्या करना चाहिए, यह स्वाभाविक रूप से उठने वाला प्रश्न है; और फिर भी इसकी आवश्यकता नहीं है। जब पति-पत्नी अपनी वासनाओं को संतुष्ट करते हैं, तो यह उस कारण से पशु भोग से कम नहीं है। इस तरह का भोग, वंश को बनाए रखने के अलावा, सख्त वर्जित है। लेकिन एक निष्क्रिय प्रतिरोधक को उस बहुत सीमित भोग से भी बचना चाहिए क्योंकि वह संतान की इच्छा नहीं रख सकता। इसलिए, एक विवाहित व्यक्ति पूर्ण शुद्धता का पालन कर सकता है। इस विषय पर अधिक विस्तार से चर्चा नहीं की जा सकती। कई प्रश्न उठते हैं:

अपनी पत्नी को अपने साथ कैसे रखना चाहिए, उसके क्या अधिकार हैं, और इसी तरह के अन्य प्रश्न। फिर भी जो लोग महान कार्य में भाग लेना चाहते हैं, उन्हें इन पहेलियों को हल करना ही पड़ता है।

जिस तरह पवित्रता की आवश्यकता है, उसी तरह गरीबी की भी आवश्यकता है। धन की महत्वाकांक्षा और निष्क्रिय प्रतिरोध एक साथ नहीं चल सकते। जिनके पास पैसा है, उनसे यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वे उसे फेंक दें, लेकिन उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे इसके प्रति उदासीन रहें। उन्हें निष्क्रिय प्रतिरोध छोड़ने के बजाय एक-एक पैसा गंवाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

हमारी चर्चा के दौरान निष्क्रिय प्रतिरोध को सत्य बल के रूप में वर्णित किया गया है।

इसलिए, सत्य का अनुसरण आवश्यक है और वह भी किसी भी कीमत पर।

इस संबंध में, अकादमिक प्रश्न उठते हैं कि क्या किसी व्यक्ति को किसी की जान बचाने के लिए झूठ नहीं बोलना चाहिए, आदि, लेकिन ये प्रश्न केवल उन लोगों के सामने आते हैं जो झूठ बोलने

को उचित ठहराना चाहते हैं। जो लोग हर समय सत्य का पालन करना चाहते हैं, वे ऐसी दुविधा में नहीं पड़ते; और यदि वे हैं, तो भी वे झूठी स्थिति से बच जाते हैं।

निष्क्रिय प्रतिरोध निर्भयता के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। केवल वे ही निष्क्रिय प्रतिरोध के मार्ग पर चल सकते हैं जो भय से मुक्त हैं, चाहे वह उनकी संपत्ति, झूठी प्रतिष्ठा, उनके रिश्तेदारों, सरकार, शारीरिक चोट या मृत्यु का हो।

इन नियमों को इस विश्वास के कारण नहीं छोड़ा जाना चाहिए कि ये कठिन हैं। प्रकृति ने मनुष्य के हृदय में ऐसी क्षमता दी है कि वह बिना किसी उकसावे के आने वाली किसी भी कठिनाई या कष्ट का सामना कर सकता है। ये गुण उन लोगों के लिए भी होने चाहिए जो देश की सेवा नहीं करना चाहते। इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए, क्योंकि जो लोग शस्त्र चलाना सीखना चाहते हैं, उनमें भी ये गुण कमोबेश होने चाहिए। हर कोई अपनी इच्छा से योद्धा नहीं बनता। भावी योद्धा को सतीत्व का पालन करना होगा और गरीबी में ही संतुष्ट रहना होगा। निर्भयता के बिना योद्धा की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसा माना जा सकता है कि उसे बिल्कुल सत्यवादी होने की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन यह गुण वास्तविक निर्भयता के बाद आता है। जब कोई व्यक्ति सत्य का परित्याग करता है, तो वह किसी न किसी रूप में भय के कारण ऐसा करता है। इसलिए, उपरोक्त चार गुणों से किसी को डरने की आवश्यकता नहीं है। यहां यह ध्यान रखना उचित होगा कि एक शारीरिक बलवान व्यक्ति में कई अन्य बेकार गुण होने चाहिए, जिनकी निष्क्रिय प्रतिरोधक व्यक्ति को कभी आवश्यकता नहीं होती। और आप पाएंगे कि तलवार चलाने वाले को जो भी अतिरिक्त प्रयास करने पड़ते हैं, वे निर्भयता के अभाव के कारण होते हैं। यदि वह उत्तरार्द्ध का अवतार है, तो तलवार उसी क्षण उसके हाथ से गिर जाएगी। उसे तलवार के सहारे की आवश्यकता नहीं है। जो घृणा से मुक्त है, उसे तलवार की आवश्यकता नहीं है। लाठी लिए हुए एक व्यक्ति का सामना अचानक एक शेर से हुआ और उसने सहज रूप से आत्मरक्षा में अपना हथियार उठा लिया। उस व्यक्ति ने देखा कि वह निर्भयता के बारे में केवल बकवास कर रहा था, जबकि उसके अंदर कोई निर्भयता नहीं थी। उसी क्षण उसने लाठी छोड़ दी और अपने आप को सभी भय से मुक्त पाया।

पाठक: श्री गांधी के उपरोक्त वार्तालाप/बयान पर आपका क्या कहना है?

संपादक: देश की सेवा के लिए, अर्थात् निष्क्रिय प्रतिरोध का पालन करने, निर्भयता, पूर्ण शुद्धता और गरीबी को अपनाने के साथ-साथ मूल सत्य के बारे में, यदि आप विभिन्न विषयों से उद्धरण

देखें, तो बेहतर होगा – बूढ़े और बुद्धिमान, समाज की सुरक्षा, आतंकवाद और आतंकवादी, ब्रह्मचारी, संत, साधु और ऋषि, सेक्स, गरीबी, सकल घरेलू उत्पाद बनाम जीएचआर (सकल खुशी अनुपात) विश्वास, आस्था, विश्वास और मीता की सच्चाई – जीवन शैली एजेंडा, किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले।

बूढ़े और बुद्धिमान (पुराने समय के बुद्धिमान लोग)

सामान्यतः जीवन की गतिशीलता के लिए भी स्थैतिक परिभाषाएं दी जाती हैं, लेकिन एक स्थैतिक परिभाषा जीवन की गतिशीलता को कैसे समझा सकती है या उसमें कैसे फिट हो सकती है?

जीवन की गतिशीलता को केवल गतिशील परिभाषा द्वारा ही समझाया जा सकता है तथा इसे निम्नलिखित दो तरीकों से समझा जा सकता है।

क) जो लोग विकास सिद्धांत और व्यवहार में विश्वास करते हैं, उनके लिए, मानव मन लगातार विस्तारित हो रहा है और भौतिक आकार में बढ़ रहा है, यहां गतिशीलता निम्न रूपों में होती है: अनुभव --- अभिव्यक्ति ----- सुझाव और प्रतिक्रिया ----- अनुभव ----- अभिव्यक्ति --- (इत्यादि)

यहाँ विकास सिर्फ एक पीढ़ी में नहीं होता, बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। हर नया बच्चा अपने माता-पिता के कंधे से देखता है और इस तरह आगे की ओर देखता है। युवा पीढ़ी उस काम को वहीं से शुरू करती है जहाँ से पुराने लोग छोड़ गए थे, और इस तरह बड़ों के अनुभव का पूरा फ़ायदा उठाती है।

यह कहा जा सकता है कि एक युवा व्यक्ति की आगे की यात्रा, बुजुर्ग व्यक्ति की पूरी की गई यात्रा पर निर्भर करती है। प्रत्येक नया आविष्कार पुराने आविष्कारों के आधार पर होता है, और इस तरह से कोई भी आविष्कार मौलिक नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक वर्तमान उपलब्धि, यहाँ तक कि जीवन के लिए भी, हम बूढ़े होने के लिए ऋणी हैं और इसलिए अपने माता-पिता और पूरे समाज के प्रति ऋण चुकाने के लिए बाध्य हैं।

इस सिद्धांत के चिंतक कहते हैं, “मानव सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया का फल है और मानवता इस प्रक्रिया का विकास है, अर्थात् इस फल (बीज) में सम्पूर्ण विकास छिपा है”।

बी) ऋषि-मुनि अपने गुरुओं को और गुरु अपने गुरुओं को और अंत में गुरु या प्रथम गुरु, बृहस्पति को श्रेय देते हैं, और बृहस्पति कहते हैं कि उन्होंने इसे ब्रह्मा के साथ देखा है और 'ब्रह्मा' कहते

हैं, उन्होंने इसे 'ब्रह्मा' (ब्रह्मांड) से ही अनुभव किया है - गतिशील और निरंतर विस्तारित ब्रह्मांड। एक तरह से इस सिद्धांत के गूढ़ व्यक्ति का कहना है कि सूर्य के नीचे और ब्रह्मांड में कुछ भी नया नहीं है।

इस संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुत हैं:

दोनों ही तरीकों से, वृद्ध लोगों को आधार और बुद्धिमान माना जाता है।

सरकार को अपनी विभिन्न संस्थाओं में, तथा अपने विभिन्न सम्मान कार्यों में बुद्धिमानों और वृद्धों की सहायता लेनी होगी। सरकार धार्मिक संस्थाओं को भी प्रोत्साहित करेगी, ताकि समाज को वृद्धों और बुद्धिमानों की सेवा से लाभान्वित करने के तरीके और साधन खोजे जा सकें।

सरकार को ज्ञान केंद्रों को बढ़ावा देना होगा, जहां नई तकनीक/सिद्धांत को आवेदन से पहले मंजूरी के लिए भेजा जाएगा ताकि उसकी उपयोगिता, दुष्प्रभाव और समग्र प्रभाव देखा जा सके। सरकार को बुद्धिमान और बुजुर्गों द्वारा चलाए जा रहे रचनात्मक और सुझावपूर्ण कार्य बैंकों के क्षेत्रीय केंद्रों को भी बढ़ावा देना होगा।

सभी तथाकथित नए आविष्कार पुरानी पीढ़ियों के ज्ञान, समाज की प्रतिक्रिया, प्रकृति द्वारा प्रदान की गई कल्पना और अंतर्ज्ञान के आधार पर होते हैं; किसी भी नए आविष्कार पर किसी भी अधिकार और संपूर्ण स्वामित्व का दावा करना पूरी तरह से मूर्खता और बुद्धि की मूर्खता है और ऐसे दावों को स्वीकार करना और भी अधिक मूर्खतापूर्ण है। भारत और पूरा पूर्व अपने स्वर्णिम अतीत और महान निर्माता के साथ किसी भी व्यक्ति या किसी भी देश के किसी भी ज्ञान (बौद्धिक) संपदा अधिकार या कानून पर किसी भी दावे को अस्वीकार करता है।

पूरे पेड़ की अनुमति के बिना टहनी नहीं गिर सकती। सभी आविष्कार मानवता द्वारा निर्देशित होते हैं और ऐसे सभी आविष्कारों का परिणाम पूरी मानवता का होता है। संपूर्ण बौद्धिक संपदा अधिकार और पेटेंट कानून का कोई आधार नहीं है और इन्हें खत्म किया जाना चाहिए।

समाज की सुरक्षा और संरक्षा

किसी भी जीवित बच्चे रहने के लिए सुरक्षा बहुत जरूरी है, बच्चा मां के गर्भ में सुरक्षित रहता है, फिर माता-पिता के संरक्षण में और फिर समाज और उसकी व्यवस्था में सुरक्षा पाता है। जो हमें सुरक्षा का भरोसा दिलाता है, हम उसका सम्मान करते हैं, जब हम सुरक्षित महसूस करते हैं तो हम इसे प्यार से जाहिर करते हैं और जब हम साहसिक कार्य में हिस्सा लेते हैं तो हम दिखाते हैं

कि सुरक्षा पक्की है। ज्यादा से ज्यादा कोई भी अपनी सुरक्षा को दांव पर लगाकर उसे खतरे में डाल सकता है।

हम अपनी ज्ञात सुरक्षा को अधिक से अधिक प्राप्त करके बढ़ाते हैं और हम अपनी अज्ञात सुरक्षा को बड़े से बड़े और अधिकतर सबसे बड़े सर्वशक्तिमान की प्रार्थना करके बढ़ाते हैं। चोर रात में सुरक्षा पाता है और अन्य लोग दिन में सुरक्षा पाते हैं और रात में उसके घर/घर में शरण लेते हैं। साधु हर जगह सुरक्षा पाते हैं और अधिकतर एकांत, शांति और एकांत में और प्राकृतिक परिवेश के सुख में रहते हैं।

किसी देश में, आम तौर पर हम सभी सुरक्षित महसूस करते हैं जब हम शारीरिक रूप से सुरक्षित, भावनात्मक और आर्थिक रूप से मजबूत और आध्यात्मिक रूप से जागृत होते हैं, और तब देश को सुरक्षित कहा जा सकता है। सुरक्षा चीजों को करने का एक दृष्टिकोण है। लोग तब सुरक्षित महसूस करते हैं जब उनका घर और देश शारीरिक रूप से स्वतंत्र होता है, और इसकी सीमाएँ सुरक्षित होती हैं, और देशों के अपने पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण या भाईचारे वाले रिश्ते होते हैं। एक देशवासी के रूप में हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी हमारी सामूहिक सुरक्षा और सुरक्षा को बनाए रखना और बढ़ाना है।

मीडिया पर नजर रखने की जरूरत है और मीडिया पर भी ऐसी खबरों पर नजर रखने की जरूरत है जो बाहरी प्रभाव से आ सकती हैं और सुरक्षा के बारे में संदेह/घबराहट/अति आत्मविश्वास पैदा कर सकती हैं।

सुरक्षा और संरक्षा एक मानसिक अवधारणा है, हमें सही संदेश प्रसारित/प्रसारित करना होगा ताकि न तो सुरक्षा का कोई अतिशयोक्ति हो और न ही कोई कम आंकलन हो, ताकि हम जीवन के अन्य आयामों को खतरे में डाले बिना इस पर सही राशि खर्च कर सकें। महिलाओं को आंतरिक सुरक्षा का प्रभार दिया जाना चाहिए जबकि पुरुषों को बाहरी सुरक्षा का और इसके लिए महिलाओं को कुंग-फू, जूडो-कराटे, कैराली-कला आदि में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है और पुरुषों को मार्शल आर्ट और सभी प्रकार के हथियारों में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

सुरक्षित देश को सुरक्षित पड़ोसी की आवश्यकता होती है, अपने पड़ोसी की सुरक्षा के हित का ध्यान रखना हमारी आवश्यकता और नैतिक जिम्मेदारी है।

मजबूत और प्रेमपूर्ण होना सभी के लिए सराहनीय है और इससे दूसरों में ईर्ष्या या दुर्भावना उत्पन्न नहीं होती, यही भारत के सुरक्षित, सुदृढ़ सामाजिक मानक की आवश्यकता और लक्ष्य है।

स्वस्थ और भावनात्मक रूप से मजबूत लोग श्मशान में भी बांसुरी बजा सकते हैं और वहां भी सुधारात्मक कार्ययोजना बना सकते हैं; देश की सुरक्षा के लिए यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

जब भी हम किसी की परवाह किए बिना किसी को (राजनीतिक) आश्रय देने में सक्षम होंगे, तो हम कह सकते हैं कि भारत सुरक्षित और मजबूत, सक्षम और समर्थ हो गया है। हालाँकि, आश्रय की व्यवस्था को हमारे दिमाग और दिल की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए क्योंकि पोलीअन्ना (बुरी भावनाओं को फैलाने वाला), पांव की चटाई या शहीद बनने में कोई मज़ा नहीं है।

"जीवन का एकमात्र उद्देश्य अनगिनत तरीकों से खोजा गया है कि खुश रहना और सर्वशक्तिमान की याद में रहना है" और इसके लिए सुरक्षा और संरक्षण सुरक्षित और संरक्षित होना चाहिए।

आतंकवाद और आतंकवादी

आतंकवाद किसी भी अन्य 'वाद' (जैसे साम्यवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद और यहां तक कि धर्मवाद) की तरह है, लेकिन आतंकवादी एक अलग किस्म के होते हैं, वे आतंकवाद से प्रेरित हो सकते हैं या अकेले या अलग-थलग समूह में हो सकते हैं या एक छोटे समूह में हो सकते हैं, जो नरसंहार के स्तर तक पहुंच सकते हैं।

9/11 अमेरिका में हुआ और कई लोकतांत्रिक लोगों ने पूरे मुस्लिम भाइयों को आतंकवादी करार दिया और उसके बाद अफगानिस्तान, इराक पर हमले किए और बड़ी मुस्लिम आबादी वाले सभी देशों पर लगातार निगरानी रखी। गांधी जी की हत्या कर दी गई और उनकी शहादत के लिए पूरे आरएसएस को जिम्मेदार ठहराया गया, श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या कर दी गई और पूरे सिख समुदाय को हत्यारा करार दिया गया। यह इस तरह के विचार नहीं रखता है।

-आतंकवादियों की हत्या, एक तरह से सर्वशक्तिमान के काम में मदद करती है- मास्टर किलर और मास्टर क्रिएटर। यह सिर्फ आतंकवादियों के लिए प्रार्थना करता है, उनके हाथों को खून से न घायल करे। किसी के जीवन में सिर्फ दो ही महत्वपूर्ण लोग होते हैं, एक जो जन्म देता है और दूसरा जो जीवन को समाप्त करता है, और इस तरह यह आतंकवादियों से न तो घृणा करता है और न ही आतंकवादियों का विरोध करता है, और ऐसा सभी धार्मिक ग्रंथों में है।

जीवन की शुरुआत नकारात्मकता से होती है; बच्चे शुरू में ना कहना शुरू करते हैं और फिर छोटी उम्र में समझ जाते हैं कि कहाँ ना कहना है और कहाँ हाँ कहना है। बूढ़े और कम ऊर्जा वाले लोग हर चीज़ के लिए हाँ कहते हैं।

ईंधन तेल भंडार, खनिज भंडार, हथियारों और गोलाबारूद की बिक्री से संबंधित कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां चाहती हैं कि आतंकवाद और आतंकवादी जारी रहें और उनके हितों की पूर्ति हो।

अक्सर ऐसा होता है कि ये आतंकवादी गतिविधियाँ और युद्ध सही सोच वाले लोगों को सद्भाव के लिए काम करने के लिए साथ लाते हैं। अगर आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ रही हैं तो इसका मतलब है कि व्यवस्था में बदलाव की ज़रूरत है और सही सोच और दिल वाले लोगों को कड़ी मेहनत करनी होगी।

विकासोन्मुख, नेक दिल और सोच वाले लोगों को प्रोत्साहित करना और आतंकवाद का खात्मा करना एक साथ होना चाहिए।

आइए हम प्रार्थना करें कि ये आतंकवादी और तथाकथित आतंकवाद विरोधी लोग साहस, स्वतंत्रता और प्रेम का पाठ समझें और जीवन का सम्पूर्ण आनंद लें।

ब्रह्मचारी, संत, साधु और ऋषि

जो लोग दूसरे के सिर में रहते हैं वे लंबे समय तक जीवित रहते हैं, जो दूसरे के दिल में रहते हैं वे लंबे समय तक जीवित रहते हैं और जो लोग दूसरों के सिर और दिल में रहते हैं वे सबसे लंबे समय तक जीवित रहते हैं।

संत लोगों के हृदय और मस्तिष्क में रहते हैं और इस प्रकार सभी युगों में जीवित रहते हैं, वे अपने स्थान से कभी नहीं हिलते हैं और जनसमूह ही उनके दर्शन के लिए आता है।

ऋषि लोगों को देश और धर्म की सीमा से परे जाने देते हैं और किसी भी पंथ, जाति, धर्म और नस्ल के बंधन में नहीं आते। ऐसे होते हैं ऋषि – इन सभी को मेरा प्रणाम।

ऋषि जब अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्मा हूँ) कहते हैं, तो वे उसी समय तत्त्व मसि (तुम वही हो) भी कहते हैं। ऋषि स्वतंत्रता प्रदान करते हैं और शिष्य नहीं बनाते क्योंकि शिष्य को बनाए रखना उस स्वतंत्रता के पाठ के विरुद्ध है जो वे अपने विद्यार्थियों को प्रदान करते हैं।

जो गुरु अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्रता प्रदान करते हैं तथा उन्हें शिष्य नहीं बनाते, वे ऋषि बन जाते हैं तथा शेष केवल स्वामी या शिक्षक बनकर रह जाते हैं, जिन्हें एक या अनेक क्षेत्रों में निपुणता तथा शिक्षण कौशल प्राप्त होता है।

साधु- वह है जिसने अपने आंतरिक अस्तित्व में कुछ पकड़ लिया है (साधु; जिसने कुछ साध लिया है - साधु ; जिसने कुछ साध लिया है) और इस तरह एक से अधिक कलाओं में निपुण हैं। ये साधु लोगों की मदद करने के लिए अपनी महारत दिखाने के लिए घूमते हैं।

दूसरी ओर संत वे होते हैं जिनका अंत अच्छा होता है। संत - (जिसका अंत अच्छा है, जैसा कि हम कहते हैं अंत भला तो सब भला) धीरे-धीरे ये लोग निरंतर आधार पर परिभाषित और परिष्कृत होते हैं, ये भी आगे बढ़ते हैं और जीवन के अपने अनुभव और इसके विभिन्न पहलुओं को साझा करते हैं या व्यक्त करते हैं, जिसका उद्देश्य बड़ी आबादी की बेहतरी है।

जबरन ब्रह्मचर्य पालन- बिल्कुल पाप है। यह उनके माता-पिता के प्रति अनादर है, और भावी पीढ़ियों के प्रति विश्वासघात है; इन लोगों को कठोर और गुप्त रूप से दंडित किया जाता है। ब्रह्मचर्य अगर कुंडलिनी जागरण से प्रकट होता है तो ये लोग सीधे ऋषि की स्थिति में पहुंच जाते हैं, और उनकी उपस्थिति से बने माहौल (नकारात्मक या सकारात्मक) से उन्हें अलग किया जा सकता है।

यद्यपि लोग मानदंडों का पालन कर रहे हैं, फिर भी उन्हें अंतर-धार्मिक और अंतर-धार्मिक चर्चा करने तथा इन सकारात्मक रूप से सक्रिय लोगों के सम्मान के लिए समाज और सरकार के लिए नए मानदंड बनाने की आवश्यकता है।

सत्ता के खेल में पहला सबक यह है कि चेहरे के भावों को समायोजित करके इरादे को छिपाया जाए ताकि जनता को आकर्षित या विचलित किया जा सके, फिर भी ऐसे सभी नेता आंखों की गति को समायोजित करने और आंखों के दर्शक को मूर्ख बनाने में सक्षम नहीं हो पाए हैं।

भोगी (जीवित), रोगी (रोगी), योगी, मायावी, भैरवी जीवन में स्वाभाविक प्रगति हैं, यह व्यक्ति की धारणा, ध्यान और कर्म पर निर्भर करता है कि वह कहाँ नियत है, (मायावी योग की मदद से भौतिक सुख प्राप्त करता है, जबकि भैरवी और मनोयोगी मायावी की बाधा को तोड़ते हैं और धर्म का मार्ग साफ करते हैं)।

नेत्रगोलक में स्थिरता और प्रेमपूर्ण अभिव्यक्ति नेता, साधु, संत और अंततः ऋषि की ओर यात्रा का संकेत है।

सेक्स

जन्म से लेकर मृत्यु तक एक लैंगिक प्राणी एक ही पहचान के रूप में जाना जाता है (जैसे अमीबा, नीम आदि) और लैंगिक प्राणी दोहरी पहचान के रूप में जाने जाते हैं, मानव (नर और मादा)। प्रकृति में सभी अलैंगिक या लैंगिक प्राणी उभयलिंगी होते हैं और यही अंगों (नर या मादा) का आधार है, जो अलग-थलग रहने पर भी पूर्णता का अनुभव करते हैं।

यौन क्रियाओं में जब समय और स्थान लुप्त हो जाते हैं (कामोन्माद के समय) तो नई रचनाओं के बीज बोये जाते हैं। प्रकृति को जारी रखने के लिए कामवासना आधार है और प्रकृति को समाप्त करने के लिए कामवासना कारण है, इसीलिए हम सर्वशक्तिमान उस सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारक को "शिव - प्रेम और मृत्यु" कहते हैं।

मनुष्यों में यौन ऊर्जा पहले भौतिक रूप लेती है, (यौन ऊर्जा के लिए शरीर और भंडार का विस्तार) जो तेरह से सत्रह वर्ष तक होता है और फिर ऊर्जा का भंडार बाईस से चौबीस वर्ष की आयु तक भर जाता है, और उसके बाद यह या तो ऊपर की ओर बढ़ता है और कुंडलिनी जागरण के रूप में जाना जाता है और हृदय और मस्तिष्क को भोजन और ऊर्जा प्रदान करता है या नीचे की ओर बढ़ता है और यौन अंगों में तनाव पैदा करता है। उनतीस वर्ष की आयु के बाद यौन ऊर्जा का कोई भी ठहराव व्यक्तित्व में असंतुलन पैदा करता है। ठहराव को दूर करने के लिए, पति या पत्नी, वेश्या, जिगोलो या हस्तमैथुन के पास जाना उपलब्ध है। पुरुष स्वभाव से ही अस्तित्व में विविधता की चाह रखता है और महिला अस्तित्व में विविधता की चाह रखती है।

सेक्स दीर्घायु, आत्म-भोग, जीविका, समाप्ति और मनोरंजन का ज्ञात आधार है और ऐसा ही रहेगा।

कुंडलिनी अवस्था के निरंतर जागरण में बने रहना यानी वीर्य ऊर्जा की निरंतर ऊर्ध्व गति में बने रहना सबसे दुर्लभ है और इस तरह संभोग, हस्तमैथुन और स्वप्नदोष संतों और ऋषियों पर भी लागू होते हैं। यह ऊर्ध्व गति और निरंतर ब्रह्मांडीय संभोग की सुविधा ब्रह्मा को उपलब्ध या प्रदान की जाती है।

उपरोक्त समझ से भारत अपनी व्यवस्था से रीति-रिवाजों, वर्जनाओं को हटाना शुरू कर सकता है और उसका प्रचार-प्रसार भी कर सकता है।

मानव सहित स्तनधारियों में शारीरिक-मनोवैज्ञानिक आयाम में, स्वयं का यौन अन्वेषण, फिर उसी का, फिर विपरीत का, फिर विपरीत की ओर अभियान और फिर विराम आदर्श है और इस

विराम के बाद यही चक्र मनोगतिक आयाम में मृत्यु तक दोहराया जाता है या अधिक से अधिक व्यक्ति बढ़ना बंद कर सकता है और अपनी मृत्यु तक पहुँच सकता है। “समलैंगिक” और “लेस्बियन” विवाह प्रकृति में सबसे दुर्लभ अपवाद हैं और उन्हें किसी भी सरकार द्वारा किसी कानून और सामान्यीकरण की आवश्यकता नहीं है और उन्हें केवल समाज पर छोड़ दिया जाना चाहिए।

1. जब तक कुण्डलिनी जागृत न हो जाए, मंदिर, मस्जिद, मठ, चर्च और गुरुद्वारा में अकेला व्यक्ति (विषमलैंगिक जीवनसाथी/साथी के बिना) या तो दबा हुआ रह सकता है या अवैध यौन संतुष्टि या यौन शोषण के क्षेत्र में उपद्रव मचा सकता है और धार्मिक स्थल की पवित्रता को खतरे में डाल सकता है। इसलिए ऐसे स्थान पर वानप्रस्थ आश्रम (अड़तालीस वर्ष से अधिक) या संन्यास आश्रम (बहतर वर्ष से अधिक) के विवाहित व्यक्ति मुखिया के साथ-साथ अनुष्ठान/प्रार्थना करने वाले भी होने चाहिए। अविवाहित, तलाकशुदा और विधवा व्यक्ति ऐसे धार्मिक स्थानों पर रह सकते हैं, लेकिन द्वितीयक और सहायक पदों पर।

2. कई प्रतिष्ठित संगठनों में जबरन कुंवारे बनाए गए लोगों के कारण यौन शोषण या दुर्व्यवहार की बू आती है। ऐसे संगठनों को बरकरार रहने के लिए खुद को बदलने की जरूरत है।

3. राजनीतिक हलकों में और अन्य शत्रुता में (यौन) उजागर करना और खत्म करना निश्चित रूप से हमारे समाज के लिए चिंता का विषय बना रहेगा। मीडिया को उजागर करने और खत्म करने के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

4. छेड़छाड़/बलात्कार भी सेक्स के अत्यधिक प्रचार और इसकी कम उपलब्धता के कारण होता है, एक तो मीडिया के कारण और दूसरा सेक्स से जुड़े कलंक/वर्जित विचारों के कारण, सुधारात्मक कार्रवाई के लिए समाज में इन पर चर्चा किए जाने की आवश्यकता है।

गरीबी

कुछ लोग कहते हैं, “यदि एक बाल्टी छलक रही है तो दूसरी सूखी रहेगी”।

कहा जाता है कि “अकाल खराब प्रबन्धन का परिणाम है”, इसी तरह गरीबी के बारे में भी कहा जा सकता है, अन्यथा प्रकृति ने अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यकता से अधिक दिया है।

यह सामूहिक गरीबी और अमीरों और साधारण लोगों के बीच का भारी अंतर है, जो किसी भी समाज के पराधीनता का कारण बनता है, और आगे चलकर उस समाज की सामूहिक गरीबी को बढ़ाता है। यह आम धारणा के विपरीत है कि समाज का गुलाम होना ही सबसे पहले आम लोगों में गरीबी का कारण बनता है। बड़े पैमाने पर स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए गरीबी और गरीबी पैदा करने वाली घटनाओं को कम करना या हटाना आवश्यक है, चाहे वह धार्मिक हो (जैसे कि यह पिछले जन्म में किए गए बुरे कर्मों का परिणाम है, या भगवान के दरवाजे गरीबों के लिए हैं, या रमजान के महीने में दान देना अच्छा है या दान लेना राजसी है, जैसा कि राजा गौतम बुद्ध और राजा महावीर ने भी माना था) और सामाजिक हो (अमीरता बोझ है, और गरीब ही अच्छी नींद सो सकता है)।

भिखारी शायद ही कभी अमीर बन पाए हों। जो लोग भिक्षा, दान और सब्सिडी पर निर्भर हैं, वे मुश्किल से ही अपना जीवन यापन कर पाते हैं। यह देखा गया है कि मध्यम वर्ग, अमीर और यहाँ तक कि अरबपति भी इन सब्सिडी, दान का फायदा उठाकर हेरफेर करते हैं और अपनी संपत्ति में और इज़ाफा करते हैं, जिससे गरीब और भी गरीब हो जाते हैं।

धार्मिक चर्चा को बढ़ावा दिया जाएगा ताकि इस अवधारणा को मिटाया जा सके कि गरीबी जन्मसिद्ध अधिकार है और मृत्यु नियति है।

सरकार उपरोक्त पर विचार-विमर्श शुरू करेगी और निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए आगे की कार्रवाई की रूपरेखा तय करेगी, ताकि घोर गरीबी को कम किया जा सके या समाप्त किया जा सके।

हमें यह देखना होगा कि किसी भी क्षेत्र (सरकारी या निजी) में शीर्ष और निचले स्तर के कर्मचारियों के बीच आय का अंतर पंद्रह गुना से ज्यादा न बढ़े। इस अंतर को या तो कम करके या कम करके या दोनों तरीकों से कम करना होगा और यह क्षेत्र दर क्षेत्र अलग-अलग हो सकता है।

सरकार को सामंजस्यपूर्ण समाज के लिए एक्ट ऑफ लिविंग और आर्ट ऑफ लिविंग को बढ़ावा देना होगा, जैसा कि कहा गया है कि

सकल घरेलू उत्पाद बनाम सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) (सकल खुशी अनुपात)

इस प्रकार, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) गलत शब्द है, आठ प्रतिशत की वृद्धि के लिए यह इस प्रकार का प्रभाव देता है:

आठ प्रतिशत की वृद्धि: गरीबों की गरीबी में।

आठ प्रतिशत की वृद्धि: विकसित देशों के विकास में।

आठ प्रतिशत की वृद्धि: अविकसित का कोई विकास नहीं।

आठ प्रतिशत की वृद्धि: लूटपाट, अपराध, नक्सली और उग्रवादी गतिविधियों में, साथ ही दलितों की विनम्रता और अच्छाई की अच्छाई में।

जीडीपी पर अत्यधिक जोर देने से असंतुलन बढ़ा है, समाज में गरीब और अमीर के बीच की खाई बढ़ी है। चोरी और डकैती, दिनदहाड़े लूटपाट, अन्य आपराधिक और नक्सली गतिविधियों में वृद्धि को जीडीपी को अत्यधिक महत्व देने की घटना के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। चूंकि कुल वायु में ऑक्सीजन का प्रतिशत लगभग समान रहता है और उसे समान रहना ही पड़ता है, इसलिए पारिस्थितिकी या अर्थशास्त्र में ऐसी वृद्धि अशांति/असंतुलन का संकेत है।

ऐसे में जीडीपी शब्द को सकल खुशी अनुपात से प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है, जहां जीएचआर को अनुपात के रूप में परिभाषित किया जा सकता है

सकल खुशी अनुपात (जीएचआर) = ए/बी

उत्तर: बुनियादी ढांचे, शक्ति निर्माण और रखरखाव, भोजन और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट, परोपकार आदि पर सरकार और जनता का कुल व्यय।

बी: स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, तथा तथाकथित नैतिक उपदेश, संकट प्रबंधन और शवगृह व्यवसाय पर सरकार और जनता का कुल व्यय

सकल प्रसन्नता अनुपात में वृद्धि से हम सभी को अधिक मात्रा में जीवनदायी शक्ति प्राप्त होगी।

जब प्रवृत्ति ऊपर की ओर होती है तो बुनियादी ढांचे में वृद्धि होती है - खाद्य और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट, जब प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है तो स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, और उपदेश और शवगृह व्यवसाय में वृद्धि होती है।

विश्वास, आस्था, भरोसा और सत्य

नानक कहते हैं, "जिसे नकारा जा सके/जिसे पार किया जा सके, वह सत्य नहीं है; युद्ध में अहिंसा को नकार दिया जाता है और इसलिए वह सत्य नहीं है।" हम जन्म लेते हैं, जीते हैं और

फिर मर जाते हैं और इस तरह जीवन भी नकारा जाता है, इसीलिए ग्रंथ कहते हैं, "जीवन लीला, माया या नाटक है"।

जन्म और मृत्यु के बीच जैसा हम दिखाई देते हैं वैसा ही शाश्वत सत्य, परिस्थितिजन्य सत्य भी दिखाई देता है, और उसी के अनुसार उसका मूल्यांकन भी होता है। ये दोनों सत्य प्रकृति में निरंतर प्रवाहित होते रहते हैं और व्यक्तियों में आस्था के रूप में प्रकट होते हैं, जो आस्था पर विश्वास करते हैं वे कह सकते हैं कि पृथ्वी चपटी है और जिन्होंने सत्य को परखा और चखा है वे कहेंगे कि पृथ्वी गोल है और ऊर्जा स्रोत के चारों ओर घूमती है, अनुभव पर विश्वास करें।

अगर आप किसी व्यक्ति या समुदाय को तोड़ना चाहते हैं तो उनकी आस्था को तोड़ें, और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उनके आस्था (धार्मिक) केंद्रों (मंदिर, मस्जिद और चर्च आदि) को तोड़ दें या उन्हें निष्क्रिय/निष्क्रिय कर दें। और अगर आप किसी व्यक्ति या समुदाय को एकजुट करना चाहते हैं तो उनके आस्था (धार्मिक) केंद्रों (मंदिर, मस्जिद और चर्च आदि) को बना दें या उन्हें सक्रिय और क्रियाशील बना दें यानी उनके धार्मिक केंद्र का पुनर्निर्माण करें।

"स्वाद विश्वास पैदा करता है," भारत किसी विश्वास के अनुसार काम नहीं करता, बल्कि अपने स्वयं के परीक्षण और स्वाद के अनुसार काम करता है।"

पाठक: तो फिर आपकी बात से तो ऐसा लगता है कि परोपकार करना कोई छोटी बात नहीं है। और अगर ऐसा है तो मैं चाहता हूँ कि आप बताएँ कि मनुष्य परोपकारी कैसे बन सकता है।

संपादक: अपने हृदय की बात सुनो, वह एक हाथ से ताली बजाने की आवाज देता है, दूसरे हाथ के बिना भी ताली बजाने की आवाज देता है, वह स्वयं को और दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए क्या करना चाहिए, इसकी आवाज देता है, हृदय त्याग की आवाज देता है और भेंट स्वीकार करने की आवाज भी देता है।

हृदय से निकली कोई भी भावना पवित्र हो जाती है और फिर आप जो भी कहते हैं वह पवित्र हो जाता है। निश्चय ही हृदय का दृढ़ और श्रोता बनना आसान नहीं है, लेकिन गुरुओं के पास बैठकर कोई भी व्यक्ति आसानी से ऐसा बन सकता है।

शिक्षा

पाठक: हमारी पूरी चर्चा में आपने शिक्षा की आवश्यकता पर जोर नहीं दिया। हम हमेशा इसकी नगण्यता की शिकायत करते हैं। हमारे देश में अनिवार्य शिक्षा के लिए आंदोलन चल रहा है, लेकिन सरकार बजट का सिर्फ दो या तीन प्रतिशत ही खर्च कर रही है और निजी औद्योगिक घराने मुनाफे के लिए इसमें उतर आए हैं। क्या शिक्षा में यही सब है?

संपादक: 1) वर्तमान प्रतिमान में शिक्षा का मुख्य कार्य बातचीत में समानता और समझ में समानता लाना तथा सीखने के लिए एक साझा मंच प्रदान करना है। वर्तमान में शिक्षा का उपयोग सीखने और फिर सीखने से कमाई करने के लिए एक मंच के रूप में किया जाता है और उच्च शिक्षा को इस प्रक्रिया को जटिल बनाने के एक उपकरण के रूप में माना जा सकता है ताकि परिष्कृत तरीकों से ग्राहकों को बेवकूफ बनाकर या धोखा देकर भी अतिरिक्त पैसा कमाया जा सके।

2) जहां तक बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता का सवाल है, घर पर और फिर मंदिरों/गुरुकुल (शिक्षण स्थल) में भारतीय नैतिक शिक्षा को आम छात्र और बड़े समाज की हर जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त माना जा सकता है।

3). पर्यावरण सिद्धांत को समझने की प्रक्रिया, जिससे उपयोग को अनुकूलतम बनाया जा सके और दुरुपयोग को न्यूनतम किया जा सके, शिक्षा कहलाती है। संस्कृत और हिंदी में कहा गया है 'सा विद्या या विमुक्तये - शिक्षा वह है जो मुक्त करती है और शिक्षक वह है जो अपने छात्रों को अनावश्यक चिंताओं, हठधर्मिता आदि से मुक्त कराने में दाई की तरह काम करता है। लेकिन अब जो हो रहा है, वह यह है कि व्यक्ति को मुक्त करने के बजाय, शिक्षा लोगों को और अधिक बंधन में डाल रही है, व्यक्तियों को अधिक प्रलोभन की ओर बढ़ा रही है, समाज में एकीकरण के बजाय अधिक विभाजन पैदा कर रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमें मनुष्य नहीं बना रही है, यह हमें अपना कर्तव्य, अपना कर्म करने और अपने स्वाभाविक धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित नहीं कर रही है, बल्कि यह चूहे की दौड़ और बिल्ली की लड़ाई को बढ़ावा दे रही है।

सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी प्रकार की शिक्षा (स्वास्थ्य और कानूनी/न्यायिक प्रणाली के साथ) निःशुल्क होनी चाहिए (लेकिन बच्चों पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई बाध्यता

नहीं होनी चाहिए) तथा बजट की चिंता नहीं करनी चाहिए और फिर जब छात्र सक्षम हो जाएं और अपने विद्यालय में लौटना चाहें तो उन्हें उपहार और कृतज्ञता के रूप में इसे समाज को लौटाने की अनुमति होनी चाहिए।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

क्यूएसटी: हमारी पूरी चर्चा में आपने शिक्षा की आवश्यकता को नहीं दर्शाया है; हम हमेशा इसकी कमी की शिकायत करते हैं। हम अपने देश में अनिवार्य शिक्षा के लिए आंदोलन देख रहे हैं। महाराजा गायकवाड़ ने अपने प्रदेशों में इसे लागू किया है। हर किसी की नज़र उनकी ओर है। हम इसके लिए महाराजा को धन्यवाद देते हैं। तो क्या यह सब प्रयास बेकार है?

उत्तर: अगर हम अपनी सभ्यता को सर्वोच्च मानते हैं, तो मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि आपने जो प्रयास वर्णित किए हैं, उनमें से अधिकांश बेकार हैं। महाराजा और अन्य महान नेताओं का उद्देश्य जो इस दिशा में काम कर रहे हैं, बिल्कुल शुद्ध है। इसलिए, वे निस्संदेह बहुत प्रशंसा के पात्र हैं। लेकिन हम अपने आप से यह नहीं छिपा सकते कि उनके प्रयास से क्या परिणाम मिलने की संभावना है।

शिक्षा का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है केवल अक्षर ज्ञान। यह केवल एक साधन है, और साधन का सदुपयोग या दुरुपयोग हो सकता है। जिस साधन का उपयोग रोगी को ठीक करने के लिए किया जा सकता है, उसका उपयोग उसके प्राण लेने के लिए भी किया जा सकता है, और अक्षर ज्ञान का भी यही अर्थ है। हम प्रतिदिन देखते हैं कि बहुत से लोग इसका दुरुपयोग करते हैं और बहुत कम लोग इसका सदुपयोग करते हैं; और यदि यह कथन सही है, तो हमने सिद्ध कर दिया है कि इससे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हुई है।

शिक्षा का सामान्य अर्थ है अक्षरज्ञान। बालकों को पढ़ना, लिखना और अंकगणित सिखाना प्राथमिक शिक्षा कहलाती है। किसान ईमानदारी से रोटी कमाता है। उसे संसार का सामान्य ज्ञान होता है। वह भली-भाँति जानता है कि उसे अपने माता-पिता, अपनी स्त्री, अपने बच्चों और अपने साथी ग्रामवासियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। वह नैतिकता के नियमों को समझता है और उनका पालन करता है। लेकिन वह अपना नाम नहीं लिख सकता। उसे अक्षरज्ञान देकर आप क्या करने का विचार कर रहे हैं? क्या आप उसकी खुशी में एक इंच भी वृद्धि करेंगे? क्या आप उसे उसकी झोपड़ी या उसके भाग्य से असंतुष्ट करना चाहते हैं? और यदि आप ऐसा

करना भी चाहते हैं, तो उसे ऐसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं होगी। पश्चिमी विचारों की बाढ़ में बहकर हम बिना पक्ष-विपक्ष पर विचार किए इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमें लोगों को इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए।

अब उच्च शिक्षा की बात करते हैं। मैंने भूगोल, खगोल विज्ञान, बीजगणित, रेखागणित आदि सीखे हैं। उससे क्या हुआ? मैंने किस तरह से खुद को या अपने आस-पास के लोगों को लाभ पहुंचाया है? मैंने ये चीजें क्यों सीखी हैं? प्रोफेसर हक्सले ने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है: "मुझे लगता है कि वह व्यक्ति उदार शिक्षा प्राप्त कर चुका है, जिसे युवावस्था में इस तरह प्रशिक्षित किया गया है कि उसका शरीर उसकी इच्छा का सेवक है और वह आसानी से और खुशी से वह सब काम करता है जो एक तंत्र के रूप में करने में सक्षम है; जिसकी बुद्धि एक स्पष्ट, ठंडी, तर्क इंजन है जिसके सभी भाग समान शक्ति के हैं और सुचारू रूप से काम कर रहे हैं... जिसका मन प्रकृति के मूलभूत सत्य के ज्ञान से भरा हुआ है... जिसकी भावनाओं को एक दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा नियंत्रित किया जाता है, एक कोमल विवेक का सेवक... जिसने सभी नीचता से घृणा करना और दूसरों का अपने जैसा सम्मान करना सीखा है। मैं समझता हूँ कि ऐसे व्यक्ति को उदार शिक्षा मिली है, क्योंकि वह प्रकृति के साथ सामंजस्य में है। वह उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग करेगा और वह उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग करेगी।"

अगर यही सच्ची शिक्षा है, तो मैं ज़ोर देकर कहूँगा कि मैंने ऊपर जो विज्ञान गिनाए हैं, उनका इस्तेमाल मैं अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करने के लिए कभी नहीं कर पाया। इसलिए, चाहे आप प्राथमिक शिक्षा लें या उच्च शिक्षा, मुख्य बात के लिए इसकी ज़रूरत नहीं है। यह हमें इंसान नहीं बनाती। यह हमें अपना कर्तव्य निभाने के योग्य नहीं बनाती।

पाठक: ऐसा प्रतीत होता है कि आप शिक्षा को पर्याप्त महत्व नहीं दे रहे हैं, लेकिन क्या आप बता सकते हैं कि यदि आपने उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की होती तो आप मुझे अपनी बातें कैसे समझा पाते?

संपादक: बुनियादी शिक्षा और अन्य शिक्षा तो चाहिए ही, लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि मैंने जो कुछ लिखा या बोला है, वह मैंने स्कूल या कॉलेज में नहीं सीखा है, बल्कि प्रकृति को देखकर सीखने वाले महापुरुषों का आशीर्वाद है।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

उत्तर : आपने ठीक कहा। लेकिन मेरा उत्तर सरल है: मैं एक क्षण के लिए भी यह नहीं मानता कि यदि मुझे उच्च या निम्न शिक्षा नहीं मिली होती तो मेरा जीवन व्यर्थ हो जाता। न ही मैं यह मानता हूँ कि मैं इसलिए सेवा करता हूँ क्योंकि मैं बोलता हूँ। लेकिन मैं सेवा करना चाहता हूँ और उस इच्छा को पूरा करने के लिए, मैं जो शिक्षा प्राप्त करता हूँ उसका उपयोग करता हूँ। और, यदि मैं इसका अच्छा उपयोग कर रहा हूँ, तब भी यह लाखों लोगों के लिए नहीं है, बल्कि मैं इसका उपयोग केवल आप जैसे लोगों के लिए कर सकता हूँ, और यह मेरे तर्क का समर्थन करता है। आप और मैं दोनों ही मुख्य रूप से झूठी शिक्षा के अभिशाप के अंतर्गत आ गए हैं। मैं दावा करता हूँ कि मैं इसके बुरे प्रभाव से मुक्त हो गया हूँ, और मैं आपको अपने अनुभव का लाभ देने का प्रयास कर रहा हूँ और ऐसा करके, मैं इस शिक्षा की सड़न को प्रदर्शित कर रहा हूँ।

इसके अलावा, मैंने सभी परिस्थितियों में अक्षर ज्ञान की उपेक्षा नहीं की है। अभी मैंने केवल इतना ही बताया है कि हमें इसे आडम्बर नहीं बनाना चाहिए। यह हमारा कामधुक नहीं है। इसके स्थान पर यह उपयोगी हो सकता है और इसका अपना स्थान है, जब हम अपनी इन्द्रियों को वश में कर लें और अपने आचार-विचार को दृढ़ आधार पर स्थापित कर लें। और तब, यदि हमें उस शिक्षा को प्राप्त करने की इच्छा हो, तो हम उसका अच्छा उपयोग कर सकते हैं। एक आभूषण के रूप में यह हमारे लिए अच्छी रहेगी। अब इसका अर्थ यह हुआ कि इस शिक्षा को अनिवार्य बनाना आवश्यक नहीं है। हमारी प्राचीन विद्यालय प्रणाली ही पर्याप्त है। इसमें चरित्र निर्माण का प्रथम स्थान है और वह प्राथमिक शिक्षा है। उस आधार पर खड़ी की गई इमारत कायम रहेगी।

पाठक: तो क्या मैं यह समझूँ कि आप देवत्व प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को आवश्यक नहीं मानते?

संपादक: लोगों के पास अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति के लिए स्थान होना चाहिए, तथा उसके बाद सुधार के लिए फीडबैक और आलोचना को स्वीकार करने की क्षमता और विनम्रता विकसित करनी चाहिए, अर्थात् हमें अनुभव, अभिव्यक्ति और फीडबैक की इस सतत प्रक्रिया के लिए काम करना/समर्पित होना चाहिए।

अंग्रेजी, संस्कृत, अरबी, तमिल आदि भाषाएं टिक सकती हैं, यदि इन्हें हृदय और मस्तिष्क की परीक्षा से परखा जाए।

जहां तक शिक्षा प्रणाली का प्रश्न है, केवल वही प्रणाली अच्छी शिक्षा प्रणाली मानी जा सकती है जो अनुभव को अभिव्यक्त करने, अनुभवहीन को अनुभव प्राप्त करने तथा समाज को सुझाव देने के लिए एक मंच प्रदान करती है, तथा जिसमें कृतज्ञता के अलावा कोई दायित्व नहीं होता।

इसी प्रकार के प्रश्न पर श्री गांधी का उत्तर है:

उत्तर: मेरा जवाब हां और नहीं दोनों है। लाखों लोगों को अंग्रेजी का ज्ञान देना उन्हें गुलाम बनाना है। मैकाले ने शिक्षा की जो नींव रखी, उसने हमें गुलाम बना दिया है। मैं यह नहीं कहता कि उनका ऐसा कोई इरादा था, लेकिन नतीजा यही हुआ। क्या यह दुखद टिप्पणी नहीं है कि हमें होम रूल के बारे में विदेशी भाषा में बात करनी पड़ रही है?

और यह बात ध्यान देने योग्य है कि यूरोपियों ने जो पद्धतियाँ त्याग दी हैं, वही पद्धतियाँ हमारे यहाँ प्रचलित हैं। उनके विद्वान लोग निरंतर परिवर्तन करते रहते हैं। हम अज्ञानतावश उनकी त्यागी हुई पद्धतियों को ही मानते हैं। वे प्रत्येक विभाग को अपनी स्थिति सुधारने का प्रयास कर रहे हैं। वेल्स इंग्लैंड का एक छोटा-सा भाग है। वेल्श लोगों में वेल्श भाषा का ज्ञान पुनः जागृत करने के लिए बहुत प्रयास किए जा रहे हैं। अंग्रेज चांसलर श्री लॉयड जॉर्ज वेल्श बच्चों को वेल्श बोलना सिखाने के आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। और हमारी हालत क्या है? हम एक-दूसरे को त्रुटिपूर्ण अंग्रेजी में पत्र लिखते हैं, और इससे हमारे एम.ए. भी मुक्त नहीं हैं; हमारे सर्वोत्तम विचार अंग्रेजी में व्यक्त किए जाते हैं; हमारी कांग्रेस की कार्यवाही अंग्रेजी में संचालित होती है; हमारे सर्वोत्तम समाचार-पत्र अंग्रेजी में छपते हैं। यदि यह स्थिति लंबे समय तक जारी रही, तो मेरी दृढ़ राय है कि भावी पीढ़ी हमारी निंदा करेगी और हमें कोसेगी।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके हमने देश को गुलाम बना लिया है। पाखंड, अत्याचार आदि बढ़ गए हैं; अंग्रेजी जानने वाले भारतीयों ने लोगों को धोखा देने और आतंकित करने में संकोच नहीं किया है। अब अगर हम लोगों के लिए कुछ कर भी रहे हैं, तो हम उनके कर्ज का केवल एक हिस्सा ही चुका रहे हैं।

क्या यह दुख की बात नहीं है कि अगर मैं न्यायालय में जाना चाहता हूँ तो मुझे अंग्रेजी भाषा का इस्तेमाल करना होगा, ताकि जब मैं बैरिस्टर बन जाऊँ तो मैं अपनी मातृभाषा न बोलूँ और किसी और को मेरी अपनी भाषा से अनुवाद करना पड़े? क्या यह बिल्कुल बेतुकी बात नहीं है? क्या यह गुलामी की निशानी नहीं है? क्या मैं इसके लिए अंग्रेजों को दोषी ठहराऊँ या खुद को? हम अंग्रेजी

जानने वाले भारतीयों ने ही भारत को गुलाम बनाया है। देश का अभिशाप अंग्रेजों पर नहीं बल्कि हम पर रहेगा।

मैंने आपको बताया कि आपके आखिरी सवाल का मेरा जवाब हां और ना दोनों है। मैंने आपको समझाया कि यह हां क्यों है। अब मैं आपको बताऊंगा कि यह ना क्यों है।

हम सभ्यता के रोग से इस कदर घिरे हुए हैं कि अंग्रेजी शिक्षा के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। जो लोग इसे प्राप्त कर चुके हैं, वे जहाँ भी आवश्यक हो, इसका अच्छा उपयोग कर सकते हैं। अंग्रेजों के साथ अपने व्यवहार में, अपने लोगों के साथ अपने व्यवहार में, जब हम उनसे केवल उसी भाषा में पत्र-व्यवहार कर सकते हैं, और यह जानने के लिए कि वे (अंग्रेज) स्वयं अपनी सभ्यता से कितने विरक्त हो गए हैं, हम अंग्रेजी का उपयोग कर सकते हैं या सीख सकते हैं, जैसा भी मामला हो। जिन्होंने अंग्रेजी पढ़ी है, उन्हें अपनी संतानों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से नैतिकता सिखानी होगी और उन्हें एक और भारतीय भाषा सिखानी होगी; लेकिन जब वे बड़े हो जाएँ, तो वे अंग्रेजी सीख सकते हैं, अंतिम उद्देश्य यह है कि हमें इसकी आवश्यकता न हो। इससे पैसा कमाने का उद्देश्य त्याग देना चाहिए। इतनी सीमित सीमा तक अंग्रेजी सीखने में भी हमें यह विचार करना होगा कि हमें इसके माध्यम से क्या सीखना चाहिए और क्या नहीं। यह जानना आवश्यक होगा कि हमें कौन-सी विद्याएँ सीखनी चाहिए। थोड़ा विचार करने से आपको पता चल जाएगा कि जैसे ही हम अंग्रेजी डिग्री की परवाह करना बंद कर देंगे, शासक अपने कान खड़े कर लेंगे।

प्रश्न: तो फिर हम क्या शिक्षा देंगे?

उत्तर: इस पर ऊपर कुछ विचार किया जा चुका है, पर हम इस पर थोड़ा और विचार करेंगे। मेरा विचार है कि हमें अपनी सभी भाषाओं को सुधारना होगा। उनसे हमें कौन-कौन से विषय सीखने चाहिए, इस पर यहाँ विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। जो अंग्रेजी पुस्तकें मूल्यवान हैं, उनका हमें विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना चाहिए। हमें अनेक विद्याएँ सीखने का दिखावा छोड़ देना चाहिए। धार्मिक, अर्थात् नैतिक शिक्षा को प्रथम स्थान दिया जाना चाहिए। प्रत्येक सुसंस्कृत भारतीय को अपनी प्रांतीय भाषा के अतिरिक्त यह भी जानना चाहिए कि यदि हिंदू है, तो संस्कृत; यदि मुसलमान है, तो अरबी; यदि पारसी है, तो फारसी; और सभी को हिंदी। कुछ हिंदुओं को अरबी और फारसी आनी चाहिए; कुछ मुसलमानों और पारसियों को संस्कृत। अनेक उत्तरी और पश्चिमी लोगों को तमिल सीखनी चाहिए। भारत के लिए एक सर्वमान्य भाषा

हिंदी होनी चाहिए, जिसे फारसी या नागरी अक्षरों में लिखने का विकल्प हो। हिंदुओं और मुसलमानों के बीच घनिष्ठ संबंध हो, इसके लिए दोनों अक्षरों का ज्ञान होना आवश्यक है। और, यदि हम ऐसा कर सकें, तो हम थोड़े ही समय में अंग्रेजी भाषा को क्षेत्र से बाहर कर सकते हैं। यह सब हम गुलामों के लिए आवश्यक है। हमारी गुलामी के कारण राष्ट्र गुलाम बना है, और हमारी आजादी के साथ वह स्वतंत्र होगा।

प्रश्न : धार्मिक शिक्षा का प्रश्न बहुत कठिन है।

उत्तर: फिर भी हम इसके बिना नहीं रह सकते। भारत कभी भी ईश्वरविहीन नहीं हो सकता। इस देश में घोर नास्तिकता पनप नहीं सकती। यह कार्य वास्तव में कठिन है। धार्मिक शिक्षा के बारे में सोचते ही मेरा सिर घूमने लगता है। हमारे धार्मिक शिक्षक पाखंडी और स्वार्थी हैं; उनके पास जाना होगा। मुल्ला, दस्तूर और ब्राह्मणों के हाथ में चाबी है, लेकिन अगर उनमें सदबुद्धि नहीं होगी, तो अंग्रेजी शिक्षा से हमें जो ऊर्जा मिली है, उसे धार्मिक शिक्षा में लगाना होगा। यह बहुत कठिन नहीं है। समुद्र का केवल किनारा ही प्रदूषित हुआ है और किनारे के लोगों को ही शुद्धिकरण की आवश्यकता है। हम जो इस श्रेणी में आते हैं, वे स्वयं को भी शुद्ध कर सकते हैं क्योंकि मेरी टिप्पणी लाखों लोगों पर लागू नहीं होती। भारत को उसकी मूल स्थिति में वापस लाने के लिए, हमें उसमें वापस लौटना होगा। हमारी अपनी सभ्यता में स्वाभाविक रूप से प्रगति, प्रतिगमन, सुधार और प्रतिक्रियाएँ होंगी; लेकिन एक प्रयास की आवश्यकता है, और वह है पश्चिमी सभ्यता को बाहर निकालना। बाकी सब अपने आप हो जाएगा।

पाठक: उपरोक्त बातें श्री गांधी के शिक्षा पर विचार हैं, लेकिन शिक्षा प्रणाली पर आपके क्या विचार हैं?

संपादक: मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा पुस्तक से शिक्षा का संदर्भ लें।

शिक्षा

एक संक्षिप्त कहानी और उसके बाद:

एक व्यक्ति जिसने बीस साल में शेर की भाषा सीखी थी, वह वास्तविक जीवन की बातचीत के लिए जंगल में गया। बातचीत शुरू करने के लिए उसने शेर से मौसम के बारे में पूछा और शेर ने जवाब दिया कि शेरनी भाग गई है। उसने दूसरे शेर से भोजन के लिए पूछा और शेर ने बारिश के

बारे में जवाब दिया। यह कई शेरों के साथ होता है और उसने सोचा कि शेर पागल प्रजाति के होते हैं। लेकिन अपने निष्कर्ष को अंतिम रूप देने के लिए उसने एक बूढ़े शेर (जिसका दूसरे शेर सम्मान करते हैं) से बात करने के बारे में सोचा। उसने पूरी घटना सुनाई और कहा, "मुझे लगता है कि शेर पागल हैं"। बूढ़े शेर ने कहा, "आमतौर पर मैं उसी तरह जवाब देता, लेकिन चूंकि आप एक निष्कर्ष पर जा रहे हैं, तो मुझे आपको बताना चाहिए, कि जिन शेरों के साथ आपने बातचीत की है वे सभी बुद्धिमान शेर हैं। वे इतने बुद्धिमान हैं कि उनमें से किसी ने भी मानव भाषा सीखने में बीस साल नहीं बिताए हैं। सभी शेर समझते हैं कि हम शेर के रूप में पैदा हुए हैं और हम शेर के रूप में ही मरेंगे, जीवन को आनंदपूर्वक और जैसा है वैसा जीना बेहतर है"।

“मानव, मानव के रूप में पैदा होता है और मानव के रूप में ही मरेगा, उसके लिए अब कुछ भी बनने को नहीं है और कहीं जाने को भी नहीं है, चाहे कोई चंद्रमा पर जाए या मंगल पर, मनुष्य मानव ही रहेगा, जीवन यहीं और अभी है, कहीं जाने के लिए मानचित्रों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि घर वापस आने के लिए मानचित्रों की आवश्यकता है।

मनुष्य भटक गया है, उसे लगने लगा है कि जीवन में खुशियाँ तभी और यहीं होंगी, उन्हें वापस लाने के लिए नक्शों की आवश्यकता है क्योंकि सारा ज्ञान और जीवन की खुशियाँ यहीं और अभी हैं।

शिक्षा जो समझ में सर्वसम्मति और अभिव्यक्ति में सर्वसम्मति लाने, दूसरों के अनुभव से सीखने और समझने तथा यहां से भविष्य की अज्ञात चुनौतियों तक जीवन को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है, ऐसी होनी चाहिए जो स्वयं को अनावश्यक भय, हठधर्मिता, तनाव और दबाव से मुक्त करने का ज्ञान प्रदान करे। इस समझ से, शिक्षा 'सा विद्या या विमुक्तये' है, शिक्षा वह है जो मुक्त करती है"। गुरु वह होता है जो अपने शिष्य/छात्र को इस मुक्ति में सहायता करता है (एक दाई की तरह)। यह गुरु या गुरु ही बेहतर ढंग से निर्णय ले सकता है कि वह किस प्रकार के छात्र को मुक्त कर सकता है और छात्रों का चयन कर सकता है, फिर यह छात्र ही होता है जो गुरु को चुनता है। जैसे कोई भी तालाब में प्रवेश करके तैरना शुरू नहीं कर सकता या खेल के मैदान में प्रवेश करके फुटबॉल खेलना शुरू नहीं कर सकता, इसलिए यह पहला गुरु यानी माँ होती है जो उसे प्रेम और सेवा का अध्याय पढ़ाती है और फिर यह पिता और गुरु होते हैं जो उसे कर्तव्य और जिम्मेदारी का दूसरा अध्याय पढ़ाते हैं, फिर यह तीसरा शिक्षक होता है, मित्र और सहकर्मी होते हैं जो प्रतिस्पर्धा और तुलना का अध्याय पढ़ाते हैं, और यह जीवनसाथी होता है जो अनुभव को

व्यक्त करने का पाठ पढ़ाता है और फिर छोटे बच्चे को साधु की तरह रहने का परोपकार का पाठ पढ़ाते हैं।

वास्तविक गुरु जीवन के कर्म और उसे करने की कला तथा परात्पर विज्ञान की शिक्षा देते हैं।

जीवन में यह सब हासिल करने के लिए यह आवश्यक है कि:

1. बच्चे औपचारिक स्कूल जाने से पहले पर्याप्त समय (पांच-छह साल) घर पर रहते हैं, खासकर अपनी मां के साथ।

2. सभी को समझ में एकमतता लाने और अभिव्यक्ति में एकमतता लाने के लिए बुनियादी शिक्षा सीखने की ज़रूरत है, लेकिन ऐसा करने के लिए किसी भी तरह की बाध्यता नहीं होनी चाहिए। बुनियादी शिक्षा घर के नज़दीक होनी चाहिए और सभी के लिए मुफ्त होनी चाहिए क्योंकि यह व्यक्तियों की तुलना में एक बुनियादी सामाजिक आवश्यकता है।

3. चूँकि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति की मुक्ति है, इसलिए यह आवश्यक है कि यह सरकारी नियंत्रण से मुक्त हो, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से सरकार द्वारा वित्तपोषित हो। चूँकि शिक्षा और धर्म का उद्देश्य कुछ हद तक एक जैसा है, इसलिए यह सबसे अच्छा होगा कि शिक्षा प्रदान करने का कार्य मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा आदि द्वारा बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के निःशुल्क प्रवेश और बारह वर्ष की आयु तक सर्वमान्य पाठ्यक्रम के साथ किया जाए।

4. लड़के और लड़कियाँ जीवन में अपनी भूमिका के लिए अलग-अलग तरीके से सीखते हैं और यौवन की शुरुआत के बाद उनके बीच एकरूपता लाने के लिए अलग-अलग शिक्षा की आवश्यकता होती है, अर्थात्, महिला शिक्षा - महिला उन्मुख, पुरुष शिक्षा - पुरुष उन्मुख। लड़कियों की शिक्षा घर के पास होनी चाहिए जबकि लड़कों की शिक्षा घर से दूर होनी चाहिए। चूँकि आंतरिक कार्य महिलाओं द्वारा और बाहरी कार्य पुरुषों द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित किए जा रहे हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि आंतरिक सुरक्षा महिलाओं द्वारा और बाहरी सुरक्षा पुरुषों द्वारा प्रबंधित की जाए और इसके लिए महिलाओं को जूडो, कराटे, कुंगफू, कैराली-कला और पुरुषों को सभी अस्त्र और शास्त्र (जैसे तलवार, लाठी, स्टीन-गन आदि) के साथ-साथ सभी मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

5. विवाह योग्य आयु से पहले यौन शिक्षा और पारिवारिक जीवन की शिक्षा भी देनी होगी, जहां पुरुष और महिला न केवल शारीरिक रूप से बल्कि आर्थिक और सामाजिक रूप से भी अपना भरण-पोषण कर सकें।

6. धर्म तटस्थता का सुझाव है कि अ-सेब, ज-सियार, ग-गोबर के स्थान पर हमें अ-अल्लाह, ग-गणेश, ज-यीशु कहना चाहिए।

7. बच्चों को खेलने, आत्म-सुरक्षा के प्रशिक्षण और अन्य गुणों की अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए।

8. बारह वर्ष की आयु में गुरु और शिष्य को शिक्षा के विभिन्न आयामों और क्षेत्रों पर शैक्षिक मेले के साथ मिलकर पाठ्यक्रम और विद्यार्थियों का चयन करना होगा।

9. किशोरावस्था से सुव्यवस्थित शिक्षा, अठारह वर्ष से उन्नत शिक्षा तथा बाईस वर्ष से सेक्स तथा जीवन के विभिन्न आयामों पर शिक्षा दी जानी चाहिए। यह शिक्षा बच्चों की योग्यता के आधार पर ही गुरुओं द्वारा चयन के आधार पर होनी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो फीस को मानकीकृत करना होगा तथा सभी सक्षम तथा आर्थिक रूप से वंचित लोगों को निःशुल्क शिक्षा देनी होगी।

सुव्यवस्थित शिक्षा के लिए छात्रावास/गुरुकुल होना आवश्यक है, जबकि उन्नत शिक्षा के लिए छात्रावास/गुरुकुल अनिवार्य होना चाहिए।

10. बारह वर्ष की आयु के बाद किसी पर भी शिक्षा थोपी नहीं जाएगी तथा कोई भी व्यक्ति घर पर ही अपने माता-पिता द्वारा दी जाने वाली परम्परागत व्यवसायिक शिक्षा में शामिल हो सकता है। हालांकि, शिक्षा किसी भी आयु तक सीमित नहीं होगी, वयस्क और वृद्ध किसी भी समय स्कूल/कॉलेज में शामिल हो सकते हैं।

11. शिक्षक वे होने चाहिए जिन्होंने अपने जीवन में आत्मज्ञान प्राप्त किया हो, न कि केवल सूचना केन्द्र और इसलिए शिक्षक के लिए बेहतर उम्र अड़तालीस वर्ष से अधिक हो सकती है और स्कूल प्रभारी वे होंगे जिन्होंने संन्यास आश्रम लिया हो और शारीरिक रूप से स्वस्थ हों। नियमित, लगातार, व्यवहारिक, मनोवृत्तिगत और शारीरिक फिटनेस परीक्षण की आवश्यकता है ताकि परपीड़क और गुलाम मानसिकता वाले शिक्षण कर्मचारियों से बचा जा सके, क्योंकि ये अच्छे भविष्य के नागरिक बनने के लिए स्वतंत्रता, बहादुरी और शिक्षा का पाठ नहीं दे सकते।

उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित शर्तें पूरी करनी होंगी।

उत्तर: कामकाजी महिलाओं को दो बच्चों तक प्रसव के लिए पांच-छह साल की छुट्टी मिलनी चाहिए और साथ ही बच्चों के भत्ते के रूप में उचित धनराशि भी मिलनी चाहिए। नौकरीपेशा महिलाओं के लिए आयु सीमा चालीस वर्ष से अधिक करनी होगी।

बी. नालंदा, तक्षशिला, रोम, ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड, यह सुझाव देते हैं कि संस्था और देश की प्रगति साथ-साथ चलती है, इसलिए यह सभी देशों को तय करना है कि वे किस प्रकार विनम्र या आश्वस्त होना चाहते हैं।

सी. वरिष्ठ नागरिक मंचों, धार्मिक संस्थाओं को अपने आस-पास के सभी लोगों को निःशुल्क एवं धर्म-परक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। ऐसे केन्द्रों के सफल संचालन के लिए सरकार को भी योगदान देना होगा। कामकाजी महिलाओं को भी 65 वर्ष से अधिक की आयु में माता-पिता/ससुराल वालों की देखभाल के लिए छुट्टी दी जा सकती है।

उपरोक्त सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सरकार को शिक्षा प्रणाली में लगभग दस प्रतिशत का योगदान देना होगा। उपरोक्त शिक्षा विदेशी नागरिकों को भी उन्हीं शर्तों और नियमों पर उपलब्ध होगी, यानी कोई अतिरिक्त-नकारात्मक या सकारात्मक नहीं। ***

मशीनरी

पाठक: जब आप आधुनिक सभ्यता को भगाने की बात करते हैं, तो मैं समझता हूँ कि आप यह भी कहेंगे कि हमें मशीनरी और उद्योग नहीं चाहिए।

संपादक: 1) एक पुरानी कहानी: एक व्यक्ति अपने साथ गांव में घूम रहा था और उसकी नजर एक किसान पर पड़ी, जिसके दो बेटे कुएँ से पानी लाने के लिए अपने हाथों से पशियन चाक चला रहे थे। उसने किसान से इसका कारण पूछा और पूछा, क्या तुम्हें कुएँ से पानी लाने के आधुनिक साधनों के बारे में पता नहीं है, तुम बैल/भैंस, मोटर आदि के स्थान पर अपने बेटे के चाक का उपयोग क्यों कर रहे हो?

किसान ने कहा, 'वह कृषि क्षेत्र में हुए सभी विकासों के बारे में जानता है और इसके सर्वोत्तम तरीकों के बारे में भी सुना है, लेकिन चूंकि मैं और मेरे दो बेटे अपनी युवा ऊर्जा का उपयोग करने के लिए वैकल्पिक रास्ता नहीं खोज पाए हैं, इसलिए हमने इसे स्वयं करने का निर्णय लिया और जब तक हम अपनी ऊर्जा के लिए लाभदायक वैकल्पिक रास्ते नहीं खोज लेते, तब तक इसे जारी रखना चाहते हैं।

हम जानते हैं कि खाली बैठे रहने से हम सिर्फ इडियट बॉक्स (टेलीविजन, वीडियो, मोबाइल इत्यादि) देखेंगे या मोटरों में घूमेंगे और अपनी कमर का साइज़ बढ़ा लेंगे और फिर शायद अपने फिगर को बनाए रखने के लिए जिम में कसरत करने चले जाएँगे। हमें वर्क-इन (खेत में अपने हाथों से शुरुआत करना और खुद का मज़ा लेना) करना ज़्यादा बेहतर लगता है बजाय वर्क-आउट (खेत में मशीनों का इस्तेमाल करके पहले मोटे और आलसी बनना और फिर जिम में जाकर मशीनीकृत ट्रेडमिल का इस्तेमाल करना) के।

2) मशीनरी का प्रारंभ और विकास मानव जाति की भेद्यता और अप्रत्याशितता के कारण हुआ है और इसलिए इनसे बचने के लिए ऐसा किया गया।

पहले तो सारा मशीनीकरण उसी प्रकार के तीव्र गुणन के लिए किया गया था और अब मशीनीकरण मानव जाति को कमजोर करने के लिए किया जा रहा है, यह मनुष्यों को पहले प्रलोभित कर रहा है और फिर उन्हें क्रोधित कर रहा है।

3) यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि मशीनों का प्रयोग वहां किया जाता है जहां मानव शक्ति महंगी लगती है जैसे चाय/काँफी वेंडिंग मशीनें, और मानव शक्ति का प्रयोग वहां किया जाता है जहां मशीनें महंगी लगती हैं जैसे खनन उद्योग, स्क्रैप उद्योग, एस्बेस्टस और रेडियोधर्मी क्षेत्र, बिजली संयंत्रों में मिलिंग क्षेत्र से गर्म राख निकालना और कोयला जलाना आदि।

इसी प्रकार के प्रश्नों पर श्री गांधी का उत्तर है:

उत्तर: यह सवाल उठाकर आपने मेरे घाव को और हरा कर दिया है। जब मैंने श्री दत्त की 'भारत का आर्थिक इतिहास' पढ़ी तो मैं रो पड़ा; और जब मैं इसके बारे में फिर से सोचता हूँ तो मेरा दिल दुखता है। मशीनरी ने ही भारत को दरिद्र बनाया है। मैनचेस्टर ने हमें जो नुकसान पहुँचाया है, उसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। मैनचेस्टर की वजह से ही भारतीय हस्तकला लगभग लुप्त हो गई है।

लेकिन मैं गलती करता हूँ। मैनचेस्टर को कैसे दोषी ठहराया जा सकता है? हमने मैनचेस्टर का कपड़ा पहना और इसीलिए मैनचेस्टर ने उसे बुना। जब मैंने बंगाल की बहादुरी के बारे में पढ़ा तो मुझे बहुत खुशी हुई। उस प्रेसीडेंसी में कोई कपड़ा मिल नहीं थी। इसलिए वे मूल हाथ से बुनाई के व्यवसाय को बहाल करने में सक्षम थे। यह सच है कि बंगाल बॉम्बे के मिल-उद्योग को प्रोत्साहित करता है। अगर बंगाल ने सभी मशीन-निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार करने की घोषणा की होती, तो यह बहुत बेहतर होता।

मशीनरी ने यूरोप को उजाड़ना शुरू कर दिया है। बर्बादी अब अंग्रेजी दरवाजों पर दस्तक दे रही है। मशीनरी आधुनिक सभ्यता का मुख्य प्रतीक है; यह एक महान पाप का प्रतिनिधित्व करती है।

बंबई की मिलों में काम करने वाले मजदूर गुलाम बन गए हैं। मिलों में काम करने वाली महिलाओं की हालत चौंकाने वाली है। जब मिलें नहीं थीं, तब ये महिलाएं भूखी नहीं रहती थीं। अगर हमारे देश में मशीनों का क्रेज बढ़ता है, तो यह एक दुखी देश बन जाएगा। इसे विधर्म माना जा सकता है, लेकिन मैं यह कहने के लिए बाध्य हूँ कि हमारे लिए मैनचेस्टर को पैसा भेजना और मैनचेस्टर के पतले कपड़े का इस्तेमाल करना भारत में मिलों को बढ़ाने से बेहतर है। मैनचेस्टर के कपड़े का उपयोग करके हम केवल अपना पैसा बर्बाद करते हैं; लेकिन भारत में मैनचेस्टर का पुनः निर्माण करके, हम अपने पैसे को अपने खून की कीमत पर बचाएंगे, क्योंकि हमारा नैतिक अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा, और मैं अपने कथन के समर्थन में मिल-मजदूरों को गवाह के तौर पर बुलाता

हूँ। और जिन्होंने कारखानों से धन इकट्ठा किया है, वे अन्य अमीर लोगों से बेहतर नहीं हो सकते। यह मानना मूर्खता होगी कि एक भारतीय रॉकफेलर अमेरिकी रॉकफेलर से बेहतर होगा। दरिद्र भारत स्वतंत्र हो सकता है, लेकिन अनैतिकता से अमीर बने किसी भी भारत के लिए अपनी स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करना कठिन होगा। मुझे डर है कि हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि धनवान लोग ब्रिटिश शासन का समर्थन करते हैं; उनका हित इसकी स्थिरता से जुड़ा हुआ है। धन मनुष्य को असहाय बना देता है। दूसरी चीज जो उतनी ही हानिकारक है, वह है यौन दुर्गुण। दोनों ही जहर हैं। सांप का काटना इन दोनों से कम जहर है, क्योंकि पहला केवल शरीर को नष्ट करता है, जबकि दूसरा शरीर, मन और आत्मा को नष्ट करता है। इसलिए, हमें मिल-उद्योग के विकास की संभावना से खुश होने की जरूरत नहीं है।

प्रश्न: तो क्या मिलों को बंद कर दिया जाएगा?

उत्तर: यह मुश्किल है। किसी स्थापित चीज़ को खत्म करना कोई आसान काम नहीं है। इसलिए, हम कहते हैं कि किसी चीज़ की शुरुआत न होना ही सर्वोच्च ज्ञान है।”

मेरा उद्देश्य रेलवे या अस्पतालों को नष्ट करना नहीं है, हालाँकि मैं निश्चित रूप से उनके प्राकृतिक विनाश का स्वागत करूँगा। न तो रेलवे और न ही अस्पताल उच्च और शुद्ध सभ्यता की कसौटी हैं। सबसे अच्छा तो वे एक आवश्यक बुराई हैं। दोनों में से कोई भी राष्ट्र के नैतिक कद में एक इंच भी वृद्धि नहीं करता। न ही मेरा उद्देश्य किसी ऐसे स्थायी योग का है जिसकी लोग पूरी श्रद्धा से कामना करते हैं। मैं सभी मशीनों और मिलों को नष्ट करने की कोशिश तो बिल्कुल भी नहीं कर रहा हूँ। इसके लिए आज के लोगों की तुलना में अधिक सादगी और त्याग की आवश्यकता है।

प्रश्न: आपने अभी तक मशीन से बने कपड़े के बारे में बात की है, लेकिन मशीन से बनी अनगिनत चीज़ें हैं। हमें या तो उन्हें आयात करना होगा या फिर अपने देश में मशीनरी लानी होगी।

उत्तर: वास्तव में, हमारे सामान जर्मनी में भी बनते हैं। फिर माचिस, पिन और कांच के बर्तनों की क्या जरूरत है? मेरा जवाब सिर्फ एक ही हो सकता है। इन वस्तुओं के आने से पहले भारत ने क्या किया? आज भी वही करना चाहिए। जब तक हम मशीनों के बिना पिन नहीं बना सकते, तब तक हम उनके बिना काम चला सकते हैं? कांच के बर्तनों की चमक-दमक से हमारा कोई लेना-देना नहीं होगा, और हम पुराने ज़माने की तरह ही घर में उगाए गए कपास से बत्ती बनाएंगे और दीयों

के लिए हाथ से बनी मिट्टी की तश्तरियों का इस्तेमाल करेंगे। ऐसा करके हम अपनी आँखें और पैसा बचाएँगे और स्वदेशी का समर्थन करेंगे और इस तरह हम स्वशासन प्राप्त करेंगे।

यह नहीं सोचना चाहिए कि सभी लोग एक ही समय में ये सब काम करेंगे या कुछ लोग एक ही बार में सभी मशीनी चीजों को छोड़ देंगे। लेकिन, अगर विचार सही है, तो हम हमेशा यह पता लगा लेंगे कि हम क्या छोड़ सकते हैं और धीरे-धीरे उसका उपयोग करना बंद कर देंगे। कुछ लोग जो करेंगे, दूसरे उसकी नकल करेंगे; और यह आंदोलन गणित की समस्या के नारियल की तरह बढ़ता जाएगा। नेता जो करेंगे, जनता भी खुशी-खुशी वही करेगी। मामला न तो जटिल है और न ही कठिन। आपको और मुझे तब तक इंतजार नहीं करना चाहिए जब तक कि हम दूसरों को अपने साथ न ले सकें। जो लोग ऐसा नहीं करेंगे वे हारेंगे और जो लोग ऐसा नहीं करेंगे, हालांकि वे सत्य की सराहना करते हैं, वे कायर कहलाने के पात्र होंगे।

प्रश्न: तो फिर रेलगाड़ी, कार और बिजली का क्या होगा?

उत्तर: यह प्रश्न अब बहुत देर से पूछा गया है। इसका कोई मतलब नहीं है। अगर हमें रेलवे के बिना काम चलाना है तो हमें ट्रामकार के बिना काम चलाना होगा। मशीनें साँप के बिल की तरह होती हैं, जिसमें एक से लेकर सौ साँप हो सकते हैं। जहाँ मशीनें हैं, वहाँ बड़े शहर हैं; और जहाँ बड़े शहर हैं, वहाँ ट्रामकार और रेलवे हैं, और वहाँ केवल बिजली की रोशनी दिखाई देती है। अंग्रेजी गाँवों में इनमें से किसी भी चीज़ का घमंड नहीं है। ईमानदार चिकित्सक आपको बताएंगे कि जहाँ कृत्रिम परिवहन के साधन बढ़े हैं, वहाँ लोगों का स्वास्थ्य खराब हुआ है। मुझे याद है कि जब एक यूरोपीय शहर में पैसे की कमी थी। ट्रामवे कंपनी, वकीलों और डॉक्टरों की आय कम हो गई और लोग कम अस्वस्थ हो गए। मुझे मशीनों के संबंध में एक भी अच्छी बात याद नहीं आती। इसकी बुराइयों को दर्शाने के लिए किताबें लिखी जा सकती हैं।

प्रश्न संख्या 1: क्या यह अच्छी बात है या बुरी कि आप जो कह रहे हैं वह सब मशीनों के माध्यम से मुद्रित किया जाएगा?

उत्तर: यह उन उदाहरणों में से एक है जो दर्शाता है कि कभी-कभी जहर को मारने के लिए जहर का इस्तेमाल किया जाता है। तो, यह मशीनरी के बारे में एक अच्छी बात नहीं होगी। जैसे-जैसे यह खत्म होती है, मशीनरी, मानो हमसे कहती है: "सावधान रहो और मुझसे दूर रहो। तुम मुझसे कोई लाभ नहीं उठा पाओगे और छपाई से जो लाभ हो सकता है, वह केवल उन लोगों को मिलेगा

जो मशीनरी के उन्माद से संक्रमित हैं।"

इसलिए मुख्य बात को न भूलें। यह समझना जरूरी है कि मशीनरी बुरी है। फिर हम धीरे-धीरे इसे खत्म कर सकेंगे। प्रकृति ने ऐसा कोई तरीका नहीं दिया है जिससे हम अचानक किसी वांछित लक्ष्य तक पहुंच सकें। अगर हम मशीनरी को वरदान मानने के बजाय उसे बुराई मानेंगे तो वह अंततः खत्म हो जाएगी। **

पाठक: जब श्री गांधी लिखते हैं (जिसका कुछ अंश नीचे प्रस्तुत है):

जब मैंने श्री दत्त की 'भारत का आर्थिक इतिहास' पढ़ी तो मैं रो पड़ा; और जब मैं इसके बारे में फिर से सोचता हूँ तो मेरा दिल दुखता है। मशीनरी ने ही भारत को दरिद्र बनाया है। मैनेजमेंट ने हमें जो नुकसान पहुँचाया है, उसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। मैनेजमेंट की वजह से ही भारतीय हस्तकला लगभग लुप्त हो गई है।

मशीनरी ने यूरोप को उजाड़ना शुरू कर दिया है। बर्बादी अब अंग्रेजी दरवाजों पर दस्तक दे रही है। मशीनरी आधुनिक सभ्यता का मुख्य प्रतीक है; यह एक महान पाप का प्रतिनिधित्व करती है।

बंबई की मिलों में काम करने वाले मजदूर गुलाम बन गए हैं। मिलों में काम करने वाली महिलाओं की हालत चौंकाने वाली है। जब मिलें नहीं थीं, तब ये महिलाएं भूखी नहीं मरती थीं। अगर हमारे देश में मशीनों का क्रेज बढ़ता है, तो यह एक दुखी देश बन जाएगा।

यह मान लेना मूर्खता होगी कि भारतीय रॉकफेलर अमेरिकी रॉकफेलर से बेहतर होगा।

गरीब भारत तो आज़ाद हो सकता है, लेकिन अनैतिकता से अमीर बने भारत के लिए अपनी आज़ादी वापस पाना मुश्किल होगा। मुझे डर है कि हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पैसे वाले लोग ब्रिटिश शासन का समर्थन करते हैं; उनका हित इसकी स्थिरता से जुड़ा हुआ है।

पैसा आदमी को लाचार बना देता है। दूसरी चीज़ जो उतनी ही हानिकारक है, वह है यौन दुर्गुण। दोनों ही ज़हर हैं। साँप का काटना इन दोनों से कम ज़हर है, क्योंकि साँप का काटना सिर्फ़ शरीर को नष्ट करता है, जबकि दूसरा शरीर, मन और आत्मा को नष्ट करता है। इसलिए, हमें मिल-उद्योग के विकास की संभावना से खुश होने की ज़रूरत नहीं है।

फिर जब श्री गांधी से सीधा सवाल पूछा गया कि क्या मिलों को बंद कर दिया जाएगा? श्री गांधी ने उत्तर दिया :

यह मुश्किल है। किसी स्थापित चीज़ को खत्म करना कोई आसान काम नहीं है। इसलिए, हम कहते हैं कि किसी चीज़ की शुरुआत न होना ही सर्वोच्च ज्ञान है।”

मेरा उद्देश्य रेलवे या अस्पतालों को नष्ट करना नहीं है, हालाँकि मैं निश्चित रूप से उनके प्राकृतिक विनाश का स्वागत करूँगा। न तो रेलवे और न ही अस्पताल उच्च और शुद्ध सभ्यता की कसौटी हैं। सबसे अच्छा तो वे एक आवश्यक बुराई हैं। दोनों में से कोई भी राष्ट्र के नैतिक कद में एक इंच भी वृद्धि नहीं करता। न ही मेरा उद्देश्य किसी ऐसे स्थायी योग का है जिसकी लोग पूरी श्रद्धा से कामना करते हैं। मैं सभी मशीनों और मिलों को नष्ट करने की कोशिश तो बिल्कुल भी नहीं कर रहा हूँ। इसके लिए आज के लोगों की तुलना में अधिक सादगी और त्याग की आवश्यकता है।

उपरोक्त विरोधाभासी वक्तव्य पर आपकी क्या राय है, कम से कम मैं तो हैरान हूँ?

संपादक: इसे बाउंसर कहते हैं और जलेबी जैसी बातें कहते हैं, जिनका जवाब सौ अस्सी डिग्री घुमाकर दिया जाता है। (गांधीजी ने इटैलिक में लिखा है) यह मुश्किल है (मिलों को बंद करना)। जो चीज़ बन गई है, उसे खत्म करना आसान काम नहीं है। इसलिए हम कहते हैं कि किसी चीज़ का शुरु न होना ही परम ज्ञान है। मेरा उद्देश्य रेलवे या अस्पताल को नष्ट करना नहीं है, हालाँकि मैं उनके स्वाभाविक विनाश का स्वागत जरूर करूँगा।)**-

अंग्रेज़ और दूसरे उद्योगपतियों ने श्री गांधी के विरोध को हल्के में लिया होगा, और विरोध के लिए विरोध को उच्च स्तर की बुद्धि के साथ किया होगा, लेकिन बिना किसी चेतावनी के इसे उद्योगों पर हमला कहा जाएगा। ऐसे बयान उद्योगपतियों को पसंद आते हैं और निश्चित रूप से वे ऐसे व्यक्ति को बढ़ावा देते हैं, लेकिन सही मायने में ऐसे बयानों से व्यक्ति का मूल्य कम हो जाता है, भले ही वह श्री गांधी के कद का ही क्यों न हो।

पाठक: मशीनों के आयात, देश में मशीनीकरण के विस्तार, रेल, कार, बिजली, उद्योगों के बंद होने या बंद होने के बारे में आपकी क्या राय है और अंत में यदि आप मिलों के बंद होने के पक्ष में हैं तो आप जो कुछ भी कह रहे हैं वह मशीनों के माध्यम से ही छपेगा, इस पर आप क्या कहेंगे?

संपादक: बिन्दुवार उत्तर निम्नानुसार हैं:

पश्चिमी देशों में बहुत सी समस्याएँ अत्यधिक मशीनीकरण के कारण हैं, इतना अधिक कि पूरा देश बिजली आपूर्ति के पतन पर खड़ा है। यह मशीनों की गुलामी का स्पष्ट संकेत है, दूसरे शब्दों में बिजली के साथ खेलकर पूरे देश को बंधक बनाया जा सकता है। यह न तो व्यक्तियों के लिए और न ही देश के लिए आरामदायक स्थिति है। मशीनों के स्वदेशी, आयात या निर्यात को बुद्धिमता की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए और उन्हें अंधाधुंध बढ़ाने के बजाय अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

इन सबके साथ आप बड़े शहरों में रह सकते हैं और छोटे फ्लैटों में आसानी से चार दीवारों के भीतर लोगों को समेट सकते हैं। ये जीवन को जटिल बनाने के तरीके हैं, जबकि ट्रेन, कार और बिजली के बिना भी जीवन का अधिक सरलता से आनंद लिया जा सकता है। हालाँकि ये सभी चीजें अब आवश्यकता के दायरे में आ गई हैं, लेकिन इनके उपयोग पर चर्चा और अनुकूलन की आवश्यकता है।

निश्चित रूप से कई मिलों को बंद करने की आवश्यकता है, जैसे कि फार्म और फार्म सहायक उद्योग, जिन देशों में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि कम हो रही है, वहां इन उद्योगों का विकास उचित नहीं ठहराया जा सकता है। प्राथमिक कार्य शारीरिक होना चाहिए, द्वितीयक कार्य अर्ध/आंशिक रूप से मशीनीकृत होना चाहिए, तृतीयक कार्य तकनीकी रूप से संचालित होना चाहिए और अन्य उन्नत चरण स्वचालित होने चाहिए (कृषि और कपड़ों के लिए धागा बनाना शारीरिक होना चाहिए, खाद्य प्रसंस्करण अर्ध यांत्रिक होना चाहिए, पैकिंग तकनीकी रूप से संचालित होनी चाहिए।

भारत में हमने सुनने और याद रखने (श्रुति और स्मृति) के माध्यम से बड़ी मात्रा में ज्ञान हस्तांतरित किया है। ज्ञान मस्तिष्क से मस्तिष्क तक और भावनाओं को हृदय से हृदय तक स्थानांतरित किया जाता था और संपूर्ण व्यक्तित्व व्यक्तिगत कार्यों के माध्यम से परिलक्षित होता था। व्यक्तिगत कार्य और मौखिक प्रचार को सबसे अच्छा माना जाता था और माना जाता है। मुद्रण, प्रकाशन, खरीद, पुस्तकालय में रखना, पढ़ना, विश्लेषण करना, फिर कार्य करना या भूलना दूसरे या तीसरे दर्जे का माना जा सकता है।

पाठक: जब श्री गांधी लिखते हैं:

पैसा आदमी को लाचार बना देता है। दूसरी चीज़ जो उतनी ही हानिकारक है, वह है यौन दुर्गुण। दोनों ही ज़हर हैं। साँप का काटना इन दोनों से कम ज़हर है, क्योंकि साँप का काटना सिर्फ़ शरीर को नष्ट करता है, जबकि दूसरा शरीर, मन और आत्मा को नष्ट करता है। इसलिए, हमें मिल-उद्योग के विकास की संभावना से खुश होने की ज़रूरत नहीं है।

इन अनुच्छेदों के लागू होने से पहले भारत ने क्या किया था? आज भी ठीक वैसा ही किया जाना चाहिए।

इसलिए मुख्य बात को मत भूलिए। यह समझना जरूरी है कि मशीनरी बुरी है। तभी हम धीरे-धीरे इसे खत्म कर पाएंगे। प्रकृति ने ऐसा कोई तरीका नहीं दिया है जिससे हम अचानक किसी वांछित लक्ष्य तक पहुंच सकें। अगर हम मशीनरी को वरदान मानने के बजाय उसे बुराई मानेंगे तो वह अंततः खत्म हो जाएगी।

भारतीय सभ्यता सर्वश्रेष्ठ है और यूरोपीय सभ्यता नौ दिन का आश्चर्य है। ऐसी क्षणभंगुर सभ्यताएँ अक्सर आती और जाती रही हैं और ऐसा होता रहेगा।

आप की राय क्या है?

संपादक: उपरोक्त दो-तीन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

1 उपरोक्त बातें कहना सम्पूर्ण मानवीय मूल्यांकन को अभिशाप देना है, अर्थात् एक तरह से ईश्वर की रचना को अभिशाप देना है।

2 कोई भी व्यक्ति अपने सारे कपड़े छोड़कर जंगल में जा सकता है, चाहे वह बचे या न बचे, यह अलग बात है। आम तौर पर बहुत कम लोग ही इन चीज़ों (ऐश्वर्य, धन, कामुकता और अहंकार) को बिना किसी वास्तविक रूप से शामिल हुए, केवल उनकी व्यर्थता को समझकर छोड़ सकते हैं, लेकिन हममें से बहुत से लोग (इन सभी भौतिक चीज़ों/कार्यों में) शामिल होने और उनकी व्यर्थता को समझने के बाद ही छोड़ सकते हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि हमने औद्योगीकरण बहुत देख लिया है और औद्योगीकरण के कारण होने वाली समस्याओं को भी महसूस करना शुरू कर दिया है, क्या हमें इसके अनुकूलन के बारे में नहीं सोचना चाहिए?

3 कुछ लोग कहते हैं कि सभी बुराइयाँ बुरी हैं, चाहे वह धन, मशीनरी, सामग्री, जनशक्ति या बाजार की हो, या फिर नशीले पदार्थों या सेक्स की हो, और इसलिए बहुत से लोग इनसे आंखें मूंद लेते हैं, फिर भी कुछ अन्य कहते हैं कि अच्छे गुण भी हैं (जो संत और शास्त्र द्वारा सुझाए गए

हैं), और वे कहते हैं कि उपरोक्त चीजों को उपयोग में लाना होगा, और फिर भी ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि कुछ भी बुरा नहीं है, लय में रहो और किसी भी चीज़ से आसक्त मत हो।

इसके अलावा आपसे अनुरोध है कि प्रदूषण, पर्यावरण और रोजगार सृजन पर पुस्तक मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा से कुछ अंश देखें:

प्रदूषण

प्रदूषण का अर्थ है अवांछित चीजों का वांछित स्थान पर जमा होना या किसी ऐसी चीज का जमा होना जहां उसकी जरूरत नहीं है। ऐसा संचय चाहे वह हवा, पानी या जमीन में हो, न केवल हवा, पानी, धरती बल्कि अग्नि और मुक्त स्थान यानी समग्र पारिस्थितिकी तंत्र के प्राकृतिक संतुलन में भी गड़बड़ी पैदा करता है।

वायु प्रदूषण के लिए -

1. मूल कारण बड़ी मात्रा में ईंधन का जलना है, जिसे कुशल ऑटोमोबाइल के उपयोग, अन्य स्थानों पर कुशल दहन, मूल रूप से सभी प्रकार के दहन में दक्षता में सुधार और अपशिष्ट और मृत जानवरों के उचित निर्वहन के द्वारा निपटना होगा।
2. ऑटोमोबाइल एवं इलेक्ट्रिकल क्षेत्र में उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने पर रोक लगाते हुए इनके उपयोग हेतु ऋण की आसान उपलब्धता की समीक्षा करनी होगी।
3. शहरों/महानगरों में भीड़भाड़ कम करने का काम शुरू करना होगा। मानकीकृत शहर की अवधारणा की योजना बनाने, चर्चा करने, समीक्षा करने और उसे लागू करने की जरूरत है।
4. वृक्षारोपण में सुधार करना होगा तथा उन स्थानों पर वृक्षों को काटने की अनुमति देनी होगी जहां इससे यातायात में बाधा उत्पन्न हो रही हो तथा प्रदूषण बढ़ रहा हो।
5. ऑटोमोबाइल और अन्य हॉर्न की डेसिबल सीमा को विनिर्माण स्तर पर ही लागू करना होगा। हॉर्न/लाउडस्पीकर के अत्यधिक उपयोग को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए (आर्थिक जुर्माने के माध्यम से)
6. ऊर्जा क्षेत्र में ऊर्जा संरक्षण और टैरिफ बढ़ाने के स्थान पर अपव्यय के अनुकूलन (न्यूनतमीकरण) और उपयोग के अनुकूलन को प्रोत्साहित करना होगा। उद्योग में विशेष निर्वहन के लिए विशेष पौधों/पेड़ों का पता लगाने के लिए अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करना होगा। उद्योग में बाड़ और खंभों पर वृक्षारोपण की अवधारणा को प्रोत्साहित करना होगा।

7. खनन क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण तथा कोयला विद्युत संयंत्रों, रिफाइनरियों, पेट्रोकेमिकल एवं उर्वरक संयंत्रों आदि की राख निपटान व्यवस्था के लिए अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करना होगा।

जल प्रदूषण के लिए-

1. प्रदूषण उपचार संयंत्रों के क्रियान्वयन के लिए क्षेत्र स्तर पर तथा यहां तक कि व्यक्तिगत घर स्तर पर भी चर्चा करनी होगी (रसोई के अपशिष्ट जल को उपचारित किया जा सकता है तथा शौचालय के फ्लश में, बगीचों में पानी देने आदि के लिए उसका पुनः उपयोग किया जा सकता है)।

2. धार्मिक संस्थाएँ जो नदियों, कुओं, तालाबों, झीलों आदि को पवित्र मानती हैं (पहले जल निकायों में पेशाब या शौच करना अनैतिक माना जाता था, लेकिन अब हम नदी में सीवरेज भी बहाने लगे हैं) उन्हें जल निकायों में प्रदूषण की देखभाल के लिए प्रोत्साहित करना होगा। अगर हम अपनी नदियों और जल निकायों को प्रदूषण से मुक्त रख सकते हैं, तो शायद यह मुद्दा हमारे समाज के एक बड़े हिस्से के लिए महत्वपूर्ण नहीं है।

3. उष्णकटिबंधीय देशों में जल उपचार की समस्या ठंडे देशों की तुलना में कम है, क्योंकि गर्म क्षेत्रों में ऑक्सीकरण तेजी से होता है, इसलिए हिमालय, अंटार्कटिका आदि जैसे ठंडे स्थानों पर अधिक प्रयास की आवश्यकता होती है।

परमाणु एवं एस्बेस्टोस अपशिष्ट के लिए:

इसे नो-मैन (बैरन) द्वीप में गहरी खुदाई करके और फिर सीमेंट कंक्रीट की परतें बनाकर संग्रहित किया जाना चाहिए। इसे किसी तीसरी दुनिया के देश या समुद्र या अंतरिक्ष में निपटाने की जरूरत नहीं है।

भूमि प्रदूषण के लिए-

1. सड़क बनाने में पॉलीथीन का उपयोग करना होगा। कचरे को अलग करने के लिए स्कैवेंजर का उपयोग करना होगा और प्रसंस्करण उद्योगों को स्क्रेप की आपूर्ति करके कमाई करनी होगी, और जैविक खाद तैयार करने के लिए जैविक कचरे का उपयोग करना होगा।

2. नगर एवं ग्राम नियोजन में प्राकृतिक सूर्य प्रकाश, वायु संचार एवं सौर तापन [बिजली के कुशल उपयोग के लिए] के उपयोग हेतु वास्तुकला सेवा में सुधार करना होगा।

पंचतत्त्वों अर्थात् आकाश, जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी का आदर करके तथा " कूए " के दर्शन करके उपचार करना। का पानी कूए में जाण हमारे कपड़े सुख जाए :कुएं का पानी कुने में जाए हमारे कपड़े सुख जाए" (कुएं का पानी कुएं में जाए और हमारे कपड़े सुखाएं) को पर्यावरण और पारिस्थितिकी को बनाए रखने का आधार बनाना होगा।

वातावरण (पर्यावरण)

पर्यावरण - "वातावरण" हमारे रहन-सहन को उसी तरह दर्शाता है जैसे हमारा पहनावा और वर्दी हमें व्यक्तिगत रूप से दर्शाती है। यह हमारी प्रकृति है जो प्रकृति का निर्माण, पालन और पोषण करती है और प्रकृति भी प्रकृति का ही पालन करती है। जैसे-जैसे हम प्रकृति के साथ प्रयोग करते हैं, वैसे-वैसे प्रकृति भी हम पर किसी न किसी तरह से प्रयोग करती है।

जब किसी क्षेत्र या ग्रह का वातावरण जीवन के अनुकूल हो जाता है तो वह जीवन का निर्माण करता है और जब हम प्रकृति में परिवर्तन करते हैं और किसी भी प्रजाति के लिए इसे कठिन बनाते हैं, तो यह भौतिक रूप में समाप्त हो जाता है और अपने ऊर्जा तरंगों को पर्यावरण में छोड़ जाता है। जब भी पर्यावरण वैसा ही हो जाता है तो यह फिर से प्रकट हो जाता है। यह पृथ्वी के साथ-साथ चंद्रमा और मंगल के लिए भी सत्य है। यह वृत्तों के नियम में प्रतिवर्तीता का अनुसरण करता है और इस वृत्त का विस्तार होता है। यह संभव है कि यह वृत्त एक मिनट या एक महीने में पूरा हो जाए या लाखों वर्षों में हो सकता है; समय इस बात पर निर्भर करता है कि प्रकृति का वृत्त कहां खींचा गया है; यदि यह ग्रह के भीतर है तो इसमें सैकड़ों से हजारों वर्ष लगते हैं और यदि यह ग्रहों के भीतर है तो इसमें अरबों वर्ष लगते हैं।

ग्रहों के टूटने और बनने में तथा ग्रहों के बीच और ग्रहों के बीच वायुमंडल के टूटने और बनने में, गर्म कण, गर्म कण, मध्यम ठंडे और ठंडे कण आपस में मिलकर ज़ोन बनाते हैं, ऐसे ज़ोन अलग-अलग ऊर्जा तरंगों से जुड़े होते हैं। दो समान रूप से मजबूत गर्म स्थानों के बीच, एक पूर्ण वैक्यूम दिखाई देता है और ऐसे स्थानों को ब्लैक होल कहा जाता है। ऐसे छेदों का आकार त्रिभुज, वर्ग, षट्भुज या वृत्ताकार होता है, और आकार कई समान और विपरीत ऊष्मा/ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर करता है। पृथ्वी ग्रह पर यह एक त्रिभुज के रूप में दिखाई देता है, और इसे बरमूडा त्रिभुज नाम दिया गया है।

प्रत्येक ग्रह में ठोस द्रव्यमान, द्रव और गैसों का अपना हिस्सा होता है और ग्रहों का आकार हमेशा अण्डाकार होता है जबकि सूर्य गोलाकार होता है। सौरमंडल में ग्रहों की गति लगभग वृत्ताकार रेखा

के मार्ग का अनुसरण करती है और गति विभिन्न सौर प्रणालियों की ऊर्जाओं के बीच थोड़े असंतुलन के कारण होती है और अपनी धुरी पर घूर्णन पृथ्वी (ग्रह) की सतह के एक साथ गर्म और ठंडा होने के कारण होता है। पूर्णिमा पर समुद्र में ज्वार-भाटा चंद्रमा द्वारा अवरुद्ध ऊर्जा के कारण दिखाई देता है। चंद्रमा द्वारा सूर्य ऊर्जा का यह अवरोध मानव मस्तिष्क में भी कुछ असंतुलन पैदा करता है और जो लोग इस कारण मनोवैज्ञानिक रूप से पीड़ित होते हैं उन्हें पागल कहा जाता है। पूरा सौर मंडल भी अपने निकटतम और बड़े सौर मंडल की ओर गति करता है और यह गति दो प्रकाश स्रोतों के बीच एक सीधी रेखा में और कई बड़े सौर प्रणालियों के मामले में एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा में होती है

किसी ग्रह की निरंतरता उसके अपने सौरमंडल और अन्य सौरमंडलों की विभिन्न शक्तियों पर निर्भर करती है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्रह के भीतर की आंतरिक गतिविधि और कुछ हद तक उसके हस्तक्षेप और अन्य ग्रहों की तथाकथित खोज और शोध पर। यह निरंतरता उसी तरह टूटती है जैसे किसी भी जीवित प्रजाति की होती है (जैसे हम मरते हैं और जन्म लेते हैं वैसे ही ग्रह और सौरमंडल भी टूटते हैं)।

पर्यावरण की दीर्घायु, जीवंतता, विलासिता और मनोहरता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रतिभागियों के बीच बातचीत कैसे होती है। पृथ्वी पर पर्यावरण में बहुत अंतर है, एक क्षेत्र जिसमें लगभग छह महीने का दिन और रात का चक्र होता है से लेकर लगभग बारह घंटे का दिन और रात वाला क्षेत्र, पूर्ण बर्फ वाला क्षेत्र, ठंडा रेगिस्तान और पूर्ण रेत वाला क्षेत्र, गर्म रेगिस्तान। धुंध भरे ठंडे वातावरण वाले क्षेत्र से लेकर नमी वाले गर्म क्षेत्र हैं। ये सभी पृथ्वी शरीर का हिस्सा हैं। किसी भी क्षेत्र में थोड़ी सी गड़बड़ी अन्य क्षेत्रों में मामूली/छोटी लहर का कारण बनती है और किसी भी क्षेत्र में बड़ा हस्तक्षेप अन्य क्षेत्रों में बड़ी गड़बड़ी का कारण बनता है और यह सूखा, बाढ़, चक्रवात और भूकंप, कभी-कभार सुनामी और निरंतर आधार पर प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के रूप में परिलक्षित होता

प्रकृति और अस्तित्व में, एकध्रुवीय, उभयलिंगी या एकरूप वस्तु में समान का आकर्षण आदर्श है, तथा द्विध्रुवीय वस्तु में विपरीत का आकर्षण आदर्श है और इस प्रकार यह सभी प्रतिकर्षण या आकर्षण को परिभाषित करता है।

ऐसी घनिष्ठ व्यवस्था में यदि कोई देश अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए सोचता है और काम करता है और इस तरह हिमालय क्षेत्र से पेड़ खरीदता है, अपने तेल भंडार को बनाए रखता है और अनावश्यक रूप से दूसरे क्षेत्रों के ईंधन को जलाता है, अपनी खदान को आरक्षित रखता है और

दूसरे क्षेत्र से अयस्क खरीदता है, तो वह अपने पर्यावरण की रक्षा नहीं कर सकता बल्कि मूर्खता की दुनिया में जी रहा है। हमें यह समझना चाहिए कि बर्फ पिघलने से हिमालय से आने वाली बाढ़ न केवल बांग्लादेश के एक हिस्से को बल्कि अन्य देशों के तटीय क्षेत्रों के एक हिस्से को भी अपनी चपेट में ले लेगी। दिल्ली, लंदन और पेरिस से अत्यधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन इसके पड़ोसी क्षेत्रों और देशों को प्रभावित करता है।

हम प्रकृति के सामंजस्य को समझते हैं और धरती को माता और आकाश को पिता मानते हैं। हम कभी भी प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के बारे में नहीं सोचते, इसलिए यह हमारी पहली जिम्मेदारी है कि हम अपने पर्यावरण को सही करें और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए बड़े पैमाने पर दुनिया का मार्गदर्शन करें।

पर्यावरण को बनाए रखने के लिए निम्नलिखित आवश्यक हैं:

सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात यह है कि अनावश्यक उपभोक्तावाद को बढ़ावा न दें और उसके बहकावे में न आएं।

- 1) आयात और निर्यात के लिए कच्ची लकड़ी की बिक्री बंद होनी चाहिए। हमें अन्य देशों से भी कच्ची लकड़ी के निर्यात को रोकने का अनुरोध करना चाहिए।
- 2) अयस्क/खाद का आयात और निर्यात बंद किया जाना चाहिए, केवल धातु और अर्धधातु के तैयार माल को ही निर्यात और आयात के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- 3) हमें अपने प्रिंट मीडिया से कहना होगा कि वे अखबारों के पन्नों की संख्या बढ़ाने में संयम बरतें। प्रिंट मीडिया पर आयात और निर्यात शुल्क को तर्कसंगत बनाने की जरूरत है।
- 4) भारत समुद्र या ज़मीन पर कोई भी बड़ा परमाणु परीक्षण नहीं करेगा और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से इसके लिए अनुरोध करेगा क्योंकि ज़मीन और पानी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और ये सभी जीवों के हैं। भारत किसी भी अन्य ग्रह पर अभियान में भाग नहीं लेगा, बल्कि चंद्रमा तक ही सीमित रहेगा।
- 5) ओजोन परत क्षरण के कारण अनावश्यक प्रतिबंध स्वीकार नहीं किए जाएंगे तथा तीसरी दुनिया के लिए इस संबंध में महंगी प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित और स्वीकार नहीं किया जाएगा।

- 6) (ताप) ऊर्जा प्रयोजनों के लिए प्राथमिक उत्पादन जैसे लकड़ी, कोयला, गैस और सौर ताप प्रणाली के उपयोग को बढ़ावा देना होगा और बिजली, हाइड्रोजन गैस जैसे द्वितीयक स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता नहीं है।
- 7) बड़े पैमाने पर निर्माण जैसे कि बड़े बांध, बड़े शहर, नदियों को आपस में जोड़ना आदि को न तो भारत में और न ही अन्यत्र शुरू किया जाएगा और न ही बढ़ावा दिया जाएगा।
- 8) व्यवसाय, प्रशासन और सम्पूर्ण जीवन में जटिलता को दूर कर सरलता और प्रकृति के साथ निकटता लानी होगी।
- 9) पुराने वन नियमों के कारण यातायात प्रतिबंध तथा पौध संरक्षण के कारण शहरों में अतिक्रमण को हटाया जाएगा।
- 10) आवास क्षेत्र और ऑटोमोबाइल क्षेत्र के बेतरतीब विकास को पूरे देश और उसके पड़ोसी देशों के लाभ के लिए सुव्यवस्थित किया जाएगा।
- 11) भारत में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया जाएगा और यदि अनुमति मिली तो हिमालय क्षेत्र के पड़ोसी देशों में भी वृक्षारोपण किया जाएगा।
- 12) ऐसा कहा गया है कि हैदराबाद शहर में अधिकतम तापमान को दो डिग्री तक कम करने के लिए, पीपल, नीम, बरगद, आम आदि बड़ी किस्मों के कम से कम दस लाख पेड़ लगाने की जरूरत है। भारत को अपने लगभग पांच सौ जिलों में प्रत्येक में दस लाख (औसतन) पेड़ लगाने और प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर पांच लाख पेड़ लगाने के लिए एक विशेष अभियान चलाना होगा।
- 13) वृक्षारोपण का अधिकार व्यक्ति के साथ-साथ स्थानीय केन्द्र का भी होगा। किसी भी उद्देश्य के लिए किसी भी वृक्ष को काटना उस क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिक समाज का विषय होगा।
- 14) वृक्षारोपण से बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित होंगे, प्रत्येक बड़े वृक्षारोपण और सिंचाई से कुछ पैसे मिलेंगे तथा उसके फल-फूलों पर अधिकार भी मिलेगा। सभी रोजगार चाहने वालों को वृक्षारोपण और उसके विकास का अवसर मिलेगा तथा उसके उत्पादन पर अधिकार के साथ-साथ पुरस्कार के रूप में न्यूनतम आजीविका राशि भी मिलेगी। यह कार्य नगरपालिकाओं/नौकरशाही की मौजूदा व्यवस्था के स्थान पर धार्मिक संस्थाओं और वरिष्ठ नागरिकों तथा सांसदों की मदद से किया जाएगा।

15) धार्मिक संस्थाओं एवं वरिष्ठ नागरिक सहकारिता के माध्यम से नहर सफाई, तालाबों की सफाई एवं खुदाई, नदी सफाई परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाएगा तथा आवश्यकता पड़ने पर आवश्यक वित्तीय एवं समयबद्ध पुलिस व्यवस्था (पुलिस गश्त एवं सुरक्षा) उपलब्ध कराई जाएगी।

16) झील/तालाबों से उत्पन्न उत्पाद उस क्षेत्र की संपत्ति होनी चाहिए, जबकि नदी से उत्पन्न उत्पाद पूरे राष्ट्र की संपत्ति होगी और इसलिए उसके रखरखाव की जिम्मेदारी भी उसी क्षेत्र की होगी।

17) चेक डैम, वर्षा जल संचयन, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और बायोगैस के उपयोग को बढ़ावा दिया जाएगा।

18) शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण संतुलन के महत्व और इसके लिए आवश्यक व्यक्तिगत कार्रवाई को शामिल किया जाना चाहिए।

जीवन जीने की कला और क्रियाकलाप योग, नृत्य और तंत्र के माध्यम से प्रबुद्ध होते हैं और ब्रह्मांड में एक खुशहाल, स्वस्थ और पवित्र जीवन के लिए ये आवश्यक हैं।

रोजगार सृजन

रोजगार के लिए कहा जाता है कि

उत्कृष्ट खेती , मध्यम व्यापार , निम्न नौकरी , भीख मांगना निदान। (सफल खेती, मध्यम जमीन, विनाशकारी रोजगार, भीख निदान)।

सर्वोत्तम है कृषि, मध्यम है वाणिज्य (व्यवसाय), निम्न है सेवा, तथा भीख मांगना अंतिम उपाय है।

वर्तमान परिदृश्य में दुनिया भर में तापमान में वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग), मौसम में बदलाव, प्रदूषण में वृद्धि, भूजल स्तर में कमी, सूखा, बाढ़, शहरों में तनावपूर्ण जीवन और नई-नई बीमारियों का उदय हो रहा है, जो सीखने, सीखने और कमाने तथा काम करने और कमाने के लिए नए सिरे से योजना बनाने का सुझाव देते हैं।

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1) बढ़ता तापमान और उसके परिणामस्वरूप हुए शोध संकेत देते हैं:

बड़े आकार के दस लाख के पेड़ (जैसे नीम, पीपल, बरगद, आम आदि) बंगलौर जैसे शहरों के तापमान को दो से तीन डिग्री सेल्सियस तक कम कर देंगे।

भारत को हर शहर में दस लाख और हर ब्लॉक में पांच लाख पेड़ लगाने होंगे। सरकारी जमीन पर भी फसल और कटाई पर मालिकाना हक उसके लगाने वाले और पालने वाले का होगा। वन अधिनियम में आवश्यक सुधार करना होगा।

उम्मीद है कि वृक्षारोपण क्षेत्र में रोजगार और स्वरोजगार के अवसर बड़ी संख्या में पैदा होंगे। जंगल के रक्षक कहे जाने वाले अनुसूचित जनजातियों को भी इसी तरह के अधिकार चाहिए। अगर जरूरत पड़ी या बेरोजगारी का स्तर दस प्रतिशत से अधिक बढ़ा तो हम कृषि और वन भूमि में ईंधन तेल या बिजली से चलने वाली मशीनरी पर प्रतिबंध लगाने के बारे में सोच सकते हैं।

2) नौकरी/काम बनाने और उसे बनाए रखने के लिए यह ज़रूरी है कि प्राथमिक काम शारीरिक हो, दूसरा काम अर्ध-स्वचालित हो, तीसरा काम तकनीक से संचालित हो। इस तरह पूरे कृषि क्षेत्र को शारीरिक/मैन्युअल रूप से संचालित होना चाहिए, खाद्य उत्पादों की पैकेजिंग अर्ध-स्वचालित होनी चाहिए और कोल्ड स्टोरेज का रखरखाव स्वचालित होना चाहिए।

नौकरियां उपलब्ध करानी होंगी

क) छोटे से मध्यम आकार के शहरों का निर्माण (जैसे भुवनेश्वर, चंडीगढ़ और देश के विभिन्न भागों में छोटे सार्वजनिक क्षेत्र के परिसर)।

ख) चेकडैम बनाना, तालाबों, झीलों, नहरों और नदियों की खुदाई और सफाई करना।

(3) सम्पूर्ण पश्चिम में विभिन्न श्रेणियों में जनशक्ति की आवश्यकता में वृद्धि होना स्वाभाविक है (जन्म दर में गिरावट के कारण); हम जनशक्ति आयात और निर्यात को सम्मानजनक दृष्टि से देख सकते हैं।

(4) बढ़ते इंटरनेट, इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी के साथ यह देखा गया है कि 2015-2020 के बाद सूचना और अन्य प्रौद्योगिकी का कोई अतिरिक्त मूल्य नहीं होगा, इसलिए हमारे लिए इसमें बड़े पैमाने पर उद्यम करना समझदारी नहीं है।

रोजगार सृजन में रोजगार एजेंसियों द्वारा भुगतान की जाने वाली न्यूनतम मजदूरी को सुनिश्चित करने का प्रयास करना होगा। इसे सत्ताधारी और विपक्षी दलों के विभिन्न राजनीतिक

कार्यकर्ताओं के माध्यम से सुनिश्चित करना होगा। न्यूनतम मजदूरी के साथ-साथ अधिकतम मांगी जाने वाली फीस की सीमा को भी सुव्यवस्थित करना होगा (न्यूनतम और अधिकतम मजदूरी का अनुपात पंद्रह गुना से अधिक नहीं होना चाहिए। न्यूनतम और अधिकतम मजदूरी पर नियंत्रण और संतुलन श्रम निरीक्षक और श्रम न्यायालय के स्थान पर राजनीतिक कार्यकर्ता और वरिष्ठ नागरिक समाज के माध्यम से किया जाना चाहिए।

ऐसा माना जा रहा है कि आने वाले वर्षों में रोजगार सुरक्षा, भोजन, फैशन, ऊर्जा और प्रकृति की विलासिता में मनोरंजन के इर्द-गिर्द घूमेगा। हमें इस प्रवृत्ति को बनाना और उसका अनुसरण करना होगा। ***

आगे का रास्ता: – दैवीय शासन (ईश्वरीय लोकतंत्र)

पाठक: आपके विचारों से मुझे लगता है कि आप चाहते हैं कि नई राजनीतिक/राजनेतिक पार्टियाँ बनें। आप न तो उग्रवादी हैं, न ही उदारवादी, न वामपंथी, न दक्षिणपंथी या फिर मध्यमार्गी दिखने की कोशिश भी कर रहे हैं?

संपादक: निश्चित रूप से नई राजनीतिक/राजनैतिक पार्टियों को आना होगा। मानवता को सर्वोच्च स्थान पर रखने वाले उग्रवादी और उदारवादी एक साथ आना महत्वपूर्ण है? जहाँ तक हमारा प्रश्न है, हम अपना मूल कर्म करते रहेंगे, मूल धर्म का पालन करते हुए भारत के गौरव को पुनः स्थापित करेंगे, भारत में और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों पर आधारित दैवीय लोकतंत्र की स्थापना करेंगे।

पाठक: तो फिर आप उपरोक्त सभी बातों पर क्या कहेंगे?

संपादक: (अ) अतिवादी भी मनुष्य हैं, कभी-कभी तो वे साधारण मनुष्य से भी अधिक अच्छे होते हैं, वे अपने प्रियजनों के सुखद भविष्य के लिए अपने प्राण त्यागने को तैयार रहते हैं, मैं उनसे कहता हूँ कि प्रेम ही जीवन का आधार है और धर्म ही सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक है, अल्लाह/ब्रह्मा ने आततायी से प्रेम नहीं किया, प्रकृति ने शेर को मजे के लिए मारने के लिए नहीं बनाया है।

(ख) हमारा कहना है कि बैठकखाने में बैठकर सेमिनार आयोजित करने, प्रवचन देने, घर पर आराम करने और कुछ न करने की बजाय अच्छा है। केवल बोलने से, जनता को और अधिक हताश करने से, शासक वर्ग की तानाशाही और लापरवाही के खिलाफ जनता में लाचारी और निराशा बढ़ाने से बहुत कम या कोई परिणाम नहीं निकलेगा।

उदारवादियों को दूसरों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करने की दिशा में काम करना चाहिए कि उपभोक्तावाद को बढ़ावा देना, जो पूरे विश्व में असमान विकास का कारण बनता है, एक गलती है।

– देवत्व स्थापित करने के इस कार्य में सभी उग्रवादी, उदारवादी, महात्मा, कुलीन और साधारण लोगों को हाथ मिलाना होगा। इसके अलावा हम निम्नलिखित प्रस्तुत करना चाहते हैं:

(1) हमें अपनी ऊर्जा समाज से भूख और अराजकता को दूर करने में लगानी चाहिए। हमें अपना समय और ऊर्जा लोगों की देखभाल करने, उनके खर्च को कम करने और उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने में लगानी चाहिए, न कि दुनिया की संपत्ति को लूटने और कुछ नागरिकों को खिलाने, उन्हें और अधिक मोटा, आलसी और कामुक बनाने में। फादर्स डे, मदर्स डे, फ्रेंड्स डे और थैंक्स गिविंग डे (शोक मनाने के लिए) के बजाय हमें आभारी समाज का उदाहरण पेश करना चाहिए था।

(2) मानवता और पर्यावरण के प्रति हमारी घोर उपेक्षा के कारण कई देशों में जीवन दयनीय हो गया है और समस्याएं बढ़ गई हैं, लेकिन अगर हम धर्म का पालन करेंगे, तो हम न केवल नुकसान की भरपाई कर सकेंगे, बल्कि पृथ्वी पर एक जीवंत स्वर्ग बनाने में भी सहयोग कर सकेंगे।

(3) लोग कहते हैं: दिन में ऐसा कुछ मत करो जिससे रात में तुम्हारी नींद में खलल पड़े और रात में ऐसा कुछ मत करो जिससे तुम्हें सुबह अपना चेहरा छुपाना पड़े या तुम अपना चेहरा आईने में न देख सको या दूसरों को अपना चेहरा न दिखा सको (अपराधबोध के कारण)। जरूरत इस बात की है कि ईमानदार और मजबूत लोगों को केंद्र में लाने और यह संदेश फैलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए कि अच्छाई सभी के लिए अच्छी होती है।

हमें अपने आप में, परिवार में, समाज में, देश में सामंजस्य स्थापित करना होगा, समाज के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक वर्ग के योगदान का उनकी क्षमता और योग्यता के अनुसार सम्मान करना होगा। इससे समाज के प्रत्येक वर्ग में देवत्व की स्थापना होगी।

पाठक: आप लोगों को दिव्यता से कैसे जोड़ते हैं?

संपादक: चूंकि हम अपने दिल की बात सुनते हैं और खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता, शिक्षा और जीवन जीने की कला का बुनियादी प्रशिक्षण, स्थानीय प्रशासन और न्याय, आगंतुकों और निराश्रितों के लिए आश्रय, मनोरंजन और अन्य दैनिक आवश्यकताओं जैसी सेवाओं के बारे में चिंता करते हैं और चाहते हैं कि ये सेवाएँ आसानी से उपलब्ध हों और दैवीय व्यवस्था चाहती है कि ये सेवाएँ धार्मिक संस्थानों (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च, मठ आदि) के माध्यम से दी जाएँ जो फिर से मानव जाति के लिए केंद्रीय हैं। यही लोग चाहते हैं और इस तरह लोग दैवीय व्यवस्था से अलग महसूस नहीं करेंगे।

इन सभी सेवाओं के लिए दैवीय तंत्र लोगों से धर्म के अनुसार योगदान करने के लिए कहता है। समाज को मजबूत करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए (जो वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में

कमोबेश एक गैर-इकाई बन गया है, जहाँ सरकार प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ने की कोशिश कर रही है (एक आर्थिक पहचान के रूप में, जैसे कि सरकार व्यवसाय चलाने के लिए स्थापित की गई है)) जिससे सरकार पर भार कम होगा, ताकि राष्ट्रीय सरकार व्यापक मुद्दों जैसे विदेश नीति, रक्षा/युद्ध, आपदा प्रबंधन और अन्य राष्ट्रीय सेवाओं पर ध्यान केंद्रित कर सके। आय पर सरकारी कर बारह प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

पाठक: श्री गांधी ने ग्राम स्वराज की बात की है; यह गांवों की सुरक्षा और गांवों में व्याप्त अन्य बुराइयों का समाधान हो सकता है। आपका क्या विचार है, क्या यह दैवीय व्यवस्था का एक हिस्सा हो सकता है?

संपादक: लगता है स्वराज शब्द के प्रति आकर्षण है। सबसे पहले 1908 में श्री गांधी ने हिंद स्वराज शब्द गढ़ा था, फिर 1921 में संसदीय स्वराज पर सहमत हुए और फिर भारत में अपने दल के साथ ग्राम स्वराज शब्द का इस्तेमाल किया, जबकि वे अच्छी तरह जानते थे कि एक ही तरह का राज चल सकता है। इसके अलावा यह भी ध्यान देने वाली बात है कि श्री गांधी जिस गांव की बात कर रहे हैं, वह आबादी बढ़ने के साथ अब शहर नहीं बल्कि ब्लॉक में तब्दील हो चुका है। और आप या आज की पीढ़ी जिस गांव की बात कर रही है, वह मूल रूप से जंगल में पचास से दो सौ लोगों की बस्तियों में बसा हुआ था। डेढ़ सौ साल से अधिक समय से बसा यह गांव और रेल और सड़क नेटवर्क के विस्तार के साथ गांव जैसा लगने लगा है।

लोग सवाल करते हैं कि क्या स्वराज अपने आप में देश के लिए पर्याप्त नहीं है। अब जरूरत इस बात की है कि देवत्व के बढ़ते क्रम में ऐसे तत्व हों, जिससे नागरिकों में बुनियादी आस्था और सम्मान बना रहे।

श्री गांधी ग्राम स्वराज के बारे में एक बात जो ध्यान देने योग्य है, वह है श्री विनोबा भावे की टिप्पणी, जिन्होंने ग्राम स्वराज पुस्तक के पीछे के कवर पर लिखा है कि "भविष्य में केवल गांव ही इकाई होंगे और विश्व सरकार, देश या राज्य केवल संचालन इकाई के रूप में रह जाएंगे"।

पाठक: हम आपके इस कथन (मीता से) के बारे में अधिक जानना चाहते हैं कि "हमें पूजा-स्थलों को और अधिक जिम्मेदारी देने के लिए प्रोत्साहित करना होगा, एक एकीकृत तरीके से और इसके दायरे में धर्मशाला, पाठशाला, पाकशाला, व्यायामशाला, गौशाला, आरोग्यशाला के साथ-साथ ज्योतिष और नगर प्रबंध (अर्थात् समुदाय के वास्तविक अतिथियों के लिए ठहरने का स्थान,

विद्यालय, लंगर/सामुदायिक भोजनालय, व्यायामशाला, और गौ-केंद्र, ज्योतिष और नगर प्रशासन के अलावा अस्पताल) को भी शामिल करना होगा और बिना किसी भेदभाव के और पूर्ण धर्म-निगरानी के साथ प्रेरणा, आकांक्षा और स्थानीय प्रशासन का स्रोत बनना होगा", जबकि, आप इस बात की सराहना करेंगे कि ये कार्य या तो सीधे सरकार द्वारा किए जाते हैं या गैर-सरकारी संगठन (गैर-सरकारी संगठन, सरकार और लोगों द्वारा वित्तपोषित) द्वारा।

संपादक: इसके लिए हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा से ट्रस्ट और एनजीओ विषय का संदर्भ लें:

ट्रस्ट और एनजीओ

दुनिया के सभी समाज सामान्य सुरक्षा और बड़े पैमाने की गतिविधियों के लिए सरकारों का चयन करते हैं। यही समाज उन लोगों के समूह का चयन करता है जो ट्रस्ट बनाते हैं, पूजा स्थल बनाते हैं, जो लोगों के रोजमर्रा के कामों और दूसरी समस्याओं से निपटते हैं। सरकार बनाना लोगों की सामूहिक समझदारी है और ट्रस्ट बनाना, सुविधाएँ जुटाना और पूजा स्थल बनाना भी अलग-अलग लेकिन संगठित समझदारी है। सरकार बनाना उसकी बड़ी ज़रूरत/मजबूरी है, जबकि ट्रस्ट, मंदिर और मस्जिद बनाना उसकी दिली ख्वाहिशें हैं। राजनीति/राजनीति बुनियादी आस्था और सुविधाओं पर बनी एक सुपर स्ट्रक्चर है।

सरकार को टैक्स देना उसकी मजबूरी है, जबकि मंदिर और मस्जिद में दान देना उसकी उदारता है, और हम सभी इन दोनों का मूल्य जानते हैं। हम समझते हैं कि दिमाग सरकार है और दिल मंदिर, मस्जिद है, इनमें से किसी को भी कमतर आंकना या किसी एक पर हावी होना अशांति पैदा करता है और आगे चलकर समाज में बंध्यता पैदा करता है।

औपनिवेशिक अतीत में समाज को हाशिये पर धकेलने के लिए पहले कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का प्रचार किया गया और फिर इन मंदिरों और मस्जिदों को सामाजिक गतिविधियों के लिए बंद कर दिया गया, बाद में स्थिति यह आ गई कि मंदिर और ट्रस्ट कुछ कर्मकांडों/अनुष्ठानों और भगवान/अल्लाह से भीख मांगने के स्थान बन गए।

फिर भी मंदिर, मस्जिद को खत्म करने के बावजूद लोगों की आस्था/दिल नहीं मिटाया जा सकता और लोग मंदिर/मस्जिद में अपना योगदान देते रहते हैं। इन धार्मिक स्थलों की मोटी कमाई को देखकर कुछ खास सुझाव आ रहे हैं कि इस पर टैक्स लगाया जाना चाहिए। क्या सरकार किसी

को टैक्स देती है? हाँ, जब वह गुलाम हो, उसी तरह अगर सरकार अपने समाज को गुलाम बनाना चाहती है तो उसे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि और ट्रस्टों पर ही टैक्स लगाना चाहिए।

मंदिरों, मस्जिदों और ट्रस्टों की सामाजिक जिम्मेदारियों और गतिविधियों को संभालने के लिए एक दिखावे के तौर पर शुरू किए गए एनजीओ (गैर सरकारी संगठन) भारत और दुनिया के किसी भी हिस्से में, चाहे वह ब्रिटेन हो या अमेरिका, साबित नहीं हुए हैं और न ही होंगे। एनजीओ की शुरुआत का उद्देश्य सिर्फ दिखावा था। जब तथाकथित कल्याणकारी सरकारें अपने लोगों को वास्तविक कल्याण प्रदान करने के अपने प्रयास में विफल हो जाती हैं, तो एनजीओ से दिखावे के अलावा किसी और चीज की उम्मीद करना बहुत ज्यादा होगा।

1. हमें यह देखना होगा कि मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि किसी भी कर गतिविधि से मुक्त रहें, प्रत्येक मंदिर/मस्जिद को ट्रस्ट बनाने और बड़े समाज की गतिविधियों का केंद्र बनने की जरूरत है।

2. हमें यह देखना होगा कि पूजा स्थल समाज निर्माण में बड़ी भूमिका निभाएं, क्योंकि आस्था लोगों के कामकाज में बड़ी भूमिका निभाती है। बेहतरी के लिए सरकार को व्यक्तियों पर कर कम करना होगा ताकि उनका दिमाग और दिल सामान्य रूप से काम कर सके और वे सरकार और मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि ट्रस्टों में समान रूप से योगदान दे सकें।

3. एशिया में सुनामी, भूकंप और अमेरिका में चक्रवातों की श्रृंखला देखने के बाद एनजीओ से और अधिक उम्मीद करना बेहतरी के लिए हानिकारक होगा। एनजीओ की गतिविधियों को मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि को सौंपना होगा क्योंकि हम देख सकते हैं कि बीस लाख एनजीओ भारत के पांच लाख गांवों की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए पर्याप्त नहीं थे। एनजीओ की जांच और प्रतिबंध लगाने की जरूरत है।

4. सामान्य कर को कम किया जाना चाहिए, एनजीओ को दिए जाने वाले योगदान पर कर छूट को बंद किया जाना चाहिए। इससे कर के साथ होने वाली सफेदपोश हेराफेरी भी कम होगी। सौ प्रतिशत कर छूट केवल राष्ट्रीय राहत कोष के लिए होनी चाहिए।

5. गैर सरकारी संगठनों और ट्रस्टों, मंदिरों, मस्जिदों आदि को विदेशी योगदान (आवक और जावक) यदि कोई हो, तो केवल संसद/सरकार के माध्यम से ही होना चाहिए।

समय आने पर अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी उपरोक्त को अपना लेगी।

पाठक: क्या आपको विश्वास है कि दैवीय शासन व्यवस्था धनवानों और शक्तिशाली लोगों को पसंद आएगी और वे भी दैवीय शासन व्यवस्था को अपने लिए सर्वोत्तम शासन प्रणाली मानेंगे?

संपादक: हाँ। जीवन या प्रेम जीवन/खेल का सबसे अच्छा हिस्सा तब होता है जब कोई आपसे प्यार करता है और आप देखते हैं कि वह आपसे प्यार कर रहा है (न कि आपसे नफरत कर रहा है)। खुशी ही जीवन को बनाए रखने वाली एकमात्र शक्ति है।

यह संभव है कि नवधनवान (ऐसे व्यक्ति जिनकी समृद्धि एक नई धारणा है) शुरू में इसकी सराहना न करें, लेकिन यदि वे पच्चीस वर्षों तक (अर्थात् एक पूर्ण आश्रम की अवधि तक) धनवान बने रहें, तो उन्हें भी यह अच्छा लगेगा।

पाठक: दैवी लोकतंत्र में गरीब, असहाय और बेसहारा लोगों की क्या अपेक्षा हो सकती है?

संपादक : 'कोई नहीं 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... तो खुदा - भगवान है यारो - जिनका कोई नहीं उनका तो खुदा-भगवान है यारो', दैवीय लोकतंत्र आपसी विश्वास और आदर के आधार पर बना है जिसका आधार आध्यात्मिकता है। कम से कम वे धार्मिक संस्थानों (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च, मठ आदि) के माध्यम से खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता, शिक्षा और बुनियादी प्रशिक्षण, स्थानीय प्रशासन और न्याय, आगंतुकों और निराश्रितों के लिए आश्रय, मनोरंजन और अन्य दैनिक आवश्यकता जैसी सेवाओं की अपेक्षा कर सकते हैं।

पाठक: व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने और व्यवस्था का नेतृत्व करने के लिए किसी व्यक्ति को चुनने की क्या व्यवस्था हो सकती है? दैवीय लोकतंत्र के प्रतिनिधियों का पता कैसे लगाया जाए?

संपादक: आश्रम व्यवस्था में कहा गया है कि अड़तालीस-पचास वर्ष की आयु के बाद जब कोई वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता है (या वानप्रस्थ की आयु तक पहुँचता है) तो उसे सामाजिक, राजनीतिक, न्यायिक आदि कार्यों के लिए उपलब्ध कहा जा सकता है, और संन्यास आश्रम में प्रवेश करने तक (बहत्तर वर्ष-पचहत्तर वर्ष से अधिक) वह उपलब्ध रहता है, इसलिए प्रतिनिधि की आयु (अड़तालीस-बहत्तर वर्ष - या -पचहत्तर वर्ष -) होनी चाहिए।

इसके अलावा किसी को किसी पद के लिए चुनने की प्रक्रिया हो सकती है- खुद को यानी स्वयंभू नेता को नामित करना या फिर चयन या चुनाव। यह देखा गया है कि एक निश्चित स्तर तक उम्मीदवार/प्रतिनिधि का चयन सबसे अच्छा परिणाम देता है, लेकिन उच्च स्तर पर चयन और

चुनाव की प्रक्रिया को मिलाना पड़ता है, यानी पहले कुछ का चयन करना और फिर उनमें से एक का चुनाव करना।

इस मुद्दे पर आपसे अनुरोध है कि आप मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा से विभिन्न विषयों (धर्मनिरपेक्ष बनाम धर्म-निरपेक्षता, राजनीति, राजनीति में शामिल होने वाले लोग, मूल्य आधारित राजनीति, राजनीति का तथाकथित अपराधीकरण, राजनीतिक शक्ति, गठबंधन और शीर्ष नेता, कानून, व्यवस्था और शपथ) के अंश देखें:

धर्मनिरपेक्ष बनाम धर्म-निर्पेक्षता

भारतीय धर्म निर्पेक्षत धर्म ग्रंथ से लिया गया है जहां निरपेक्ष का अर्थ है धर्म जो गैर संबंधपरक है यानी हिंदू के लिए सपेक्ष नहीं, मुसलमानों के लिए सपेक्ष नहीं, बौद्ध के लिए सपेक्ष नहीं, ईसाई के लिए सपेक्ष नहीं, यहूदियों के लिए नहीं और एक्स, वाई, जेड के लिए सपेक्ष नहीं।

'निष्पक्ष' 'सपेक्ष' का विपरीत है। भारत कहता है कि धर्म 'सनातन' है और इसमें सभी धर्म शामिल हैं, जबकि 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द थोड़ा भ्रम पैदा करता है क्योंकि इसका अर्थ है गैर धार्मिक और पूरी तरह से धन उन्मुख सरकार। धर्म 'निष्पक्ष' के लिए अंग्रेजी में कोई सटीक शब्द नहीं है।

धर्म-निरपेक्ष का अर्थ है पूर्णतया धार्मिक या पूर्णतया धार्मिक। धर्म-निरपेक्ष देश के रूप में भारत एक पूर्णतया धार्मिक देश को इंगित करता है और इसे 'भारत-धर्म राष्ट्र, भारत-धार्मिक देश' कहा जा सकता है।

"भारत" (भा-प्रकाश, और चूहा-व्यस्त) नाम विभिन्न ऋषियों द्वारा मानव जाति को प्रबुद्ध करने के प्रयासों के कारण आया है।

'हिंदुस्तान' और 'इंडिया' नाम इसे अन्य लोगों द्वारा साझा स्रोत 'सिंधु' से दिया गया है:

एक धारा ने इसे 'सिंधु-हिंदू-हिंदुस्तान' कहना शुरू कर दिया

जबकि एक अन्य धारा इसे 'सिंधु' - 'इंदु' - 'भारत' कहने लगी

अपने काम, गुण, दृष्टिकोण और व्यवहार के बाद सामने आने वाला नाम सबसे अधिक महत्व रखता है, जैसे डॉक्टर, जौहरी, बिल्डर, मंत्री, लल्लू, कल्लू, दिल्ली, मुंबई आदि जैसे व्यक्तियों या शहरों के साधारण नामों की तुलना में।

हम आसानी से तय कर सकते हैं कि हम इसे क्या नाम देना चाहेंगे: हिंदुस्तान, इंडिया या भारत।

भारत चमकदार सफेद रोशनी देता है, जो जीवन और जीवन के सभी रंगों को समाहित करता है। अपने रंगीन लेंस वाले व्यक्ति इसमें अपना मनचाहा रंग देख सकते हैं और उसकी सराहना कर सकते हैं। 'सनातन' शब्द वास्तव में पुराने और नए भारत को समान रूप से दर्शाता है।

भारत धर्मनिरपेक्ष था, है और रहेगा (क्योंकि यह प्रत्येक भारतीय के रक्त और मज्जा में है); इसलिए इसमें हस्तक्षेप करने या इसे धर्मनिरपेक्ष कहने का कोई भी प्रयास हम सभी के लिए अप्रसन्नता का कारण होगा।

मुसलमानों, ईसाइयों, यहूदियों, बौद्धों और हिंदुओं के बीच चल रही विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बातचीत, जिनमें आक्रामकता, धर्मांतरण को बढ़ावा देना, योग, ध्यान, साधना को अपनाना शामिल है, मिश्रण और आत्मसातीकरण और परिणामस्वरूप उभरती धर्म-निरपेक्ष (पूर्ण रूप से धार्मिक - सनातन) विश्व व्यवस्था का संकेत है।

जीवन निर्माता मीडिया को धर्म-निर्पेक्ष के रूप में व्यवहार करना होगा।

राजनीति (राजनीति)

राजनीति शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है पुलिस करना, मूल रूप से पुलिसिंग गतिविधि: यह किसी व्यक्ति द्वारा तय किए गए मानदंडों (कानून) के तहत काम करती है, और मुश्किल में भी कानून की पवित्रता पर शायद ही सवाल उठाती है। गतिशील दुनिया में यह स्थिर है, या यह कानूनों के एक सेट के साथ सरकार चलाने जैसा है, जो शायद मृत हो गए हैं। तथाकथित राजनीति कानून की किताब को पवित्र मानती है और इसमें कानून की किताब या संविधान की शपथ लेने के बाद काम शुरू होता है। ऐसे में न्यायपालिका या तो अपंग या बहुत चालाक महसूस करती है, और जनता; क्या कहें- खुद को लोगों का एक समूह समझती है, कुछ भी करने में असमर्थ, और सबको कोसते हुए अपना जीवन बिताती है।

राजनीति, राजनीति के विपरीत - (राज) सरकार की नैतिकता है, और यहाँ नैतिकता पारिस्थितिकी, पर्यावरण, प्रकृति से प्रवाहित होती है, (नीति, नियम से आती है) और इस तरह स्वाभाविक क्रिया करती है, गतिशील, जीवंत और सजीव रहती है। हम सभी जानते हैं कि शब्द में ऊर्जा तरंगें (शब्द ब्रह्म/विश्व/ब्रह्मांड) होती हैं और हम वर्तमान राजनीति की कई बुराइयों को इसी सरल कारण से जिम्मेदार ठहरा सकते हैं।

अब से हमें शासन के लिए राजनीति शब्द का प्रयोग करना होगा (पुलिस के लिए राजनीति या हम इस शब्द को हटा सकते हैं) और राजनीति को राजनीतिक नेताओं के सहायक तक सीमित पेशे के रूप में प्रयोग करना होगा।

अंग्रेजी और अन्य भाषाएँ इसकी अनुकूलनशीलता के कारण बढ़ रही हैं, और ये भाषाएँ इस शब्द को अपना लेंगी, जिससे विश्व समुदाय के लिए इस शब्द का उपयोग करने और लाभ उठाने का मार्ग प्रशस्त होगा। तथाकथित नेताओं की तुलना में गुरुओं और शिक्षकों, कलाकारों और उपदेशकों को इस पर अधिक ध्यान देना होगा।

राजनीति से जुड़ने वाले लोग

पारिवारिक परंपरा और विरासत के अलावा, यह देखा गया है कि ज्यादातर शैक्षणिक योग्यता में सबसे निचले पायदान पर मौजूद लोग ही राजनीति (पेशे) में शामिल होते हैं और उनसे अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद करना बहुत ज्यादा है।

सामान्यतः विद्यार्थी पहले बेहतर कैरियर की ओर रुख करते हैं; इंजीनियरिंग और डॉक्टरी, फिर अर्थशास्त्र, फिर प्रशासनिक सेवा, फिर शिक्षण और शोध व्यवसाय, फिर स्वयं का व्यवसाय और फिर अंतिम पायदान पर खड़े लोगों की ओर, जिनके पास संतुलन और खुला आसमान है, जिससे वे ईसा मसीह के इस कथन का अनुसरण कर सकें कि, "धन्य हैं वे, जो पंक्ति में सबसे पीछे खड़े हैं", वर्तमान में ऐसे धन्य लोग राजनीति में अंतिम विकल्प के रूप में शामिल हो रहे हैं और पूरे वर्ग पर शासन कर रहे हैं।

1. चूंकि हर कोई भोजन, कपड़ा और मकान की सुरक्षा और कुछ हद तक सम्मानजनक जीवन जीना चाहता है, इसलिए यह संभव नहीं है कि माता-पिता राजनीति को बढ़ावा दें और छात्र इसे अपना पहला पेशा चुनें।

स्थिति इतनी भयावह है कि राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर को विश्वविद्यालय में तीस साल पढ़ाने के बाद भी एक भी छात्र ऐसा नहीं मिलता जो राजनीति पेशे में हो या राजनीति कर रहा हो। अगर मेडिकल कॉलेज का प्रोफेसर डॉक्टर नहीं बना सकता तो उसके जारी रहने का कोई मतलब नहीं समझ सकता। हमें राजनीति (विज्ञान और कला) की पढ़ाई को सिर्फ महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञों (राजनीति) तक ही सीमित रखना होगा।

2. इन तथ्यों और प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए, सरकार सरकारी कर्मचारियों (तथाकथित जनता के ट्रस्टी) को राजनीति में शामिल होने, चुनाव लड़ने की अनुमति देगी तथा सरकारी सेवाओं में पुनः शामिल होने का खुला विकल्प भी प्रदान करेगी।

हमें स्वस्थ, सुखी और पवित्र समाज के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को बेहतर बनाने के लिए राजनीति के लिए प्रशिक्षण और शिक्षा केंद्र खोलने होंगे।

मूल्य आधारित राजनीति

इस शब्द का प्रयोग आम तौर पर राजनीतिक क्षेत्र, कॉर्पोरेट घरानों और बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में किया जाता है, यहाँ वे कहते हैं कि नेतृत्व (राजनीति) मूल्य आधारित होनी चाहिए। इस क्षेत्र के अधिकांश लोग इस बात को लेकर अनिर्णीत हैं कि क्या यह मूल्य (नैतिकता, आचार संहिता) है, जो महत्वपूर्ण है, या नेतृत्व महत्वपूर्ण है, आम तौर पर कोई व्यक्ति किस मूल्य को देता है, मूल्यों को या नेतृत्व को, वह व्यक्ति की कार्य-पद्धति तय करता है। यदि किसी के लिए मूल्य महत्वपूर्ण है, तो यह संभव है कि उसके लिए नेतृत्व महत्वहीन हो जाए और हो सकता है कि वह मूल्य बनाए रखने के लिए बहुत कुछ त्याग करे (स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ऐसा अक्सर होता था)। और यदि किसी के लिए नेतृत्व महत्वपूर्ण है, तो यह बिल्कुल स्पष्ट है कि नेतृत्व को बनाए रखने के लिए वह पहले व्यक्तिगत मूल्यों का त्याग करेगा, और फिर उन सभी मूल्यों का त्याग करेगा जो उसके नेतृत्व में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं।

व्यावहारिकता यह बताती है कि कुछ मूल्य समय और स्थान के अनुसार बदल जाते हैं, (जैसे युद्ध के समय, शांति के समय, दुःख के समय और सुख के समय) क्षेत्र और धर्म के अनुसार और कुछ मूल्य शाश्वत रहते हैं। समाज में शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने के लिए यह सबसे अच्छा है कि यदि नेतृत्व बाधा है तो नेतृत्व भी चला जाए। ऋषियों के आशीर्वाद से नया नेतृत्व आसानी से स्थापित हो जाएगा, जिसे शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने के लिए दृष्टि और लक्ष्य के अनुसार काम करने के लिए कहा जा सकता है।

1. जन्मजात नेतृत्व क्षमता वाले व्यक्ति को नेतृत्व प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि उसकी प्रतिभा और निखर सके। इसके लिए नेतृत्व महाविद्यालय खोले जाने चाहिए (जिसमें राजनीति, राजनीति, व्यापार, मानव संसाधन प्रशासन, भूगोल और संक्षिप्त इतिहास, विश्व धर्म की झलक, हमारी योग्यता और हमारी क्षमता आदि विषय शामिल हों)

2. यह उम्मीद और प्रार्थना है कि हम नेतृत्व को विकसित और बनाए रखेंगे, जो इसके दृष्टिकोण और लक्ष्य से निकलता है। मूल्य आधारित नेतृत्व, राजनीति और जीवन को विकसित करने के लिए लोगों को नैतिकता और क्यों और कैसे अच्छा होना बेहतर है, इस पर शिक्षित और प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

प्राथमिक विद्यालय से लेकर महाविद्यालय स्तर तक (ब्रिटिश काल में नैतिकता पर आधारित पुस्तकों को व्यवस्थित तरीके से हटा दिया गया था और आश्चर्यजनक रूप से संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में नैतिकता पर आधारित पुस्तकें अभी भी अनुपस्थित हैं)। शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और धर्म पर आधारित पुस्तकें शामिल किए जाने की आवश्यकता है।

3. कॉर्पोरेट क्षेत्र में यह देखा गया है कि लगातार विफल हो रहे प्रबंधन सिद्धांतों के बावजूद उद्योगों में प्रचलित पारिवारिक माहौल अभी भी अच्छे परिणाम दे रहा है। हमारे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि हम इन उद्योगों के प्रयासों को आगे बढ़ाएँ और इसे अपने औद्योगिक क्षेत्र में लागू करें और इससे हमें बेहतरीन परिणाम मिलेंगे और दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत होगा।

4. राजनीति के क्षेत्र में पेशेवर राजनेता अपनी व्यावसायिकता के अनुसार ईमानदारी दिखाते हैं। लेकिन जहाँ अतिरिक्त ईमानदारी दिखती है, वह आमतौर पर या तो असुरक्षा की गहरी भावना से उत्पन्न होती है या प्रेम की अधिकता से। असुरक्षा की गहरी भावना से उत्पन्न राजनीति अपने दलीय संगठन और जनता में असुरक्षा पैदा करती है, और प्रतिबद्धता की गहरी भावना और प्रेम की अधिकता से उत्पन्न राजनीति लक्ष्य के लिए त्याग करने और दूसरों की सुविधा के लिए नेताओं का निर्माण करती है।

प्रार्थना है कि हम ऐसे मतभेदों को देखें और फिर स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लिए अपना रास्ता और नेता चुनें, और पहले स्वयं को, फिर समूह को, फिर धर्म और क्षेत्र को, फिर राष्ट्र और अंतर-राष्ट्र को और अंत में धर्म यानी सनातन को मजबूत करके अपनी यात्रा शुरू करें।

राजनीति का तथाकथित अपराधीकरण

शक्ति बुद्धि/विवेक से बेहतर है।

"एक शक्तिशाली से सैकड़ों ज्ञानी डरते हैं, केवल शक्तिशाली ही अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है, अपने पैरों पर खड़े होकर, वह गुरु की सेवा करने में सक्षम हो जाता है, गुरु की सेवा करके वह गुरु

के साथ बैठने में सक्षम हो जाता है, गुरु के साथ बैठकर वह श्रोता, विचारक, कर्ता बन जाता है और अंततः वह सचेत वैज्ञानिक (विज्ञानिक) बन जाता है"।

अगर कोई अपराधी है तो वह खुलेआम क्या कर रहा है? क्या हम उसे खुला छोड़ कर अपराधियों के निर्माता नहीं हैं? क्या वह व्यक्ति अपराधी मानसिकता वाला है या फिर उस पर अपराधी होने का आरोप लगाया गया है क्योंकि उसने रिहा किए गए अपराधी का विरोध किया है? बेहतर है कि तथाकथित अपराधी (लेकिन दिल से अच्छे) आगे की सीट पर बैठें, बजाय पीछे से काम करने और वकीलों को सफेदपोशों के अपराध को उचित ठहराने की अनुमति देने के

राजनेतिक दलों को यह देखना होगा कि कोई अपराधी मानसिकता वाला है या साहसी, तथा ऐसे अच्छे लोगों से सहयोग लेने के लिए आगे आना चाहिए। राजनेतिक दलों को टिकट वितरण को बुद्धिमान बदमाशों और सज्जन कमीनों तक सीमित रखना होगा।

न्याय में तेजी लाने के प्रयास किए जाने चाहिए और न्याय को यह देखना होगा कि वह मजबूर अपराधी है या सिर्फ अपराधी है।

वाल्मीकि और अंगुलिमाल जैसे उदाहरण क्या हैं, क्या हमें और कुछ कहने की ज़रूरत है? कम से कम यह उन सभी शक्तिशाली लोगों के लिए है जो दिल से अच्छे हैं, भले ही वे दोषी हों।

राजनीतिक शक्ति, गठबंधन और शीर्ष नेता

यह व्यापक रूप से माना जाता है कि राजनीति चालाक, धोखेबाज, ठग, लुटेरे और झांसा देने वालों आदि की होती है। यदि हम बारीकी से देखें तो हम पाएंगे कि ऐसे राजनेता कभी शीर्ष पर नहीं पहुंच पाते या पहुंच भी जाते हैं तो बहुत कम समय तक टिक पाते हैं क्योंकि उनका नाम बिना किसी समझौते के निकलता है और इस तरह वे लंबे समय तक नहीं टिक पाते।

कहते हैं कि:

1) “ जिनको कुछ ना : वोह ही शहंशाह - जिनको कुछ ना चाहिए हम ही शहंशाह”, वे मुखिया हैं (राजा की तरह), जिन्हें किसी चीज की ज़रूरत नहीं है।

ऐसा नहीं है कि ऐसे लोगों को चीजें नहीं मिलतीं, केवल जन्मजात इच्छा नहीं होती और उनके कार्य धन, नाम और प्रसिद्धि की इच्छा का परिणाम नहीं होते। भारत की लंबी परंपरा में अतीत में ऐसे कई लोग हुए हैं, वर्तमान में और भी हैं और भविष्य में और भी होंगे।

2) “ नियत साफ तो 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... आसान - नीयत साफ तो मंजिल आसान”, जब इरादा स्पष्ट हो तो लक्ष्य प्राप्ति आसान हो जाती है।

जब भी नेतृत्व में उद्देश्य की मासूमियत, दृढ़ विश्वास, दृढ़ता और लक्ष्य पर जोर दिखाई देता है, तो लोगों ने उस पर भरोसा जताया है और अपनी ताकत से उसका साथ दिया है। भारत में कांग्रेस को कभी वैसा समर्थन नहीं मिला, जैसा उन्नीस सौ अस्सी के दशक में मिला था, जब लोगों ने उसके नेता में मासूमियत, जोश भरा चेहरा और देश के लिए कुछ करने की इच्छा न होने की भावना देखी थी। जब भी ऐसा कुछ दिखता है, लोग पूरे जोश के साथ उसका समर्थन करते हैं, चाहे वह किसी भी पार्टी से जुड़ा हो या किसी नए राजनीतिक दल या समूह से। यह सभी राजनीतिक औजारों और हथकंडों से परे एक सच्चाई है।

3). समझदार कउवा गोबर खाए , भोला बछरा दूध पिये –समझदार कौआ गोबर खाये, भोला बछड़ा दूध पिये (बुद्धिमान कौआ गाय का गोबर खाता है, मासूम बछड़ा दूध पीता है)।

सर्वोच्च शक्ति निर्दोष, फिर भी निडर, दूरदर्शी की होती है। सरकार तब चलती है जब ऋषियों के चरण (राम की खड़ाऊ) सिंहासन पर रहते हैं, अर्थात् शीर्ष नेताओं को ऋषियों और ऋषियों की शक्ति का आशीर्वाद और संरक्षण प्राप्त होता है, ऐसे नेता और सरकार लंबे समय तक चलते हैं और चारों ओर खुशहाली फैलाते हैं।

4) कई पार्टियों को कभी बहुमत या पूर्ण बहुमत नहीं मिलता क्योंकि इन पार्टियों ने खुद इसके बारे में नहीं सोचा। गठबंधन इसलिए किए जाते हैं ताकि पहली नजर में वे अपनी अक्षमता और दूसरी नजर में अपनी कमजोरी दिखा सकें।

गठबंधन सरकार एक अस्थायी चरण है जब तक कि नया नेतृत्व उभर कर सामने नहीं आता, जो आम और समग्र विकास के लिए काम करने हेतु जनता को निर्णय और निर्देश दे सके।

5) स्वामित्व वाली राजनीतिक पार्टी के पास कोई गुंजाइश नहीं होती, निजी सीमित राजनीतिक पार्टी के पास बहुत कम गुंजाइश होती है, सीमित राजनीतिक पार्टी के पास सीमित गुंजाइश होती है जबकि एकात्म दृष्टिकोण और व्यवहार वाले शीर्ष नेता के पास उसके और उसके राजनीतिक (राजनीतिक) संगठन के लिए पूरी गुंजाइश होती है। और ये लोग देश और समाज को उच्च स्तर यानी धर्म की ओर ले जाते हैं।

यह जंगल राज (जहां ताकत ही अधिकार है) से कंक्रीट के जंगल (जहां लाभ ही अधिकार है और धोखा ही शक्ति है) से लेकर सुव्यवस्थित समाज और देश, जहां सद्भावना ही अधिकार है और नैतिकता ही शक्ति है, तक की यात्रा का स्वाभाविक मार्ग है।

कानून

चीन और जापान में एक प्रसिद्ध पेंटिंग में ज़ेन मास्टर को धम्मपद को जलाते हुए दिखाया गया है, जो कि ज़ेन मास्टर की धार्मिक पुस्तक (बौद्धों के लिए एक तरह की कानून की किताब) है। जब कोई आता है, तो किताबें, धर्मग्रंथ धम्मपद, कुरान, बाइबिल, गुरु ग्रंथ साहिब, रामायण और गीता अपनी प्रासंगिकता खो देते हैं, या यूँ कहें कि एक व्यक्ति दहलीज पार करके आ जाता है। ऐसे लोग प्रकृति के साथ कंपन करते हैं और उसका शब्द आदेश बन जाता है, और घटनाएँ घटित होती हैं, चाहे कानून की किताब में लिखा हो या नहीं। लोग चरित्रहीन हो जाते हैं (यानी पूर्वनिर्धारित या भविष्यवाणी नहीं की जा सकती) लेकिन जिम्मेदार होते हैं (जिम्मेदारी प्रतिक्रिया की क्षमता है)।

जो लोग अभी तक नहीं पहुंचे हैं, उनके लिए नियम और कानून की जरूरत है। जो बचकाने हैं, उनके लिए पूरी कानून की किताबें चाहिए। जिस देश का कानून और कानून की किताबें बड़ी और बड़ी होती जा रही हैं, उन्हें बच्चों की तरह माना जा सकता है और अगर किताबें अराजकता पैदा कर रही हैं, तो यह कहा जा सकता है कि वह देश कानून की नई किताबें बनाने, ज्ञान और अनुभव को एकीकृत करने के युग में है। अराजकता से सृजन होता है।

युवा देश संक्षिप्तता, दृढ़ता, खुलेपन की इच्छा रखते हैं, तथा अपनी कानून की पुस्तक का अनुभव करना भी चाहते हैं।

1. भारत इस समय कानून की किताबों सहित कई क्षेत्रों में अव्यवस्थित अवस्था में है। यदि नियम और कानून जटिल होंगे तो न्याय कम हो जाएगा, वर्तमान में हमारे पास कानून की किताबों से भरा एक कमरा है और न्याय लगभग खाली हाथ है (विभिन्न न्यायालयों में दो करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं)।

ऐसा कहा जाता है कि शासक का अपना शासन होता है या कोई यह कह सकता है कि यदि किसी के नियम और कानून क्रियाशील हैं तो यह उसका शासन है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष / प्रॉक्सी रूप से चल रहा है, इसलिए यदि भारत में ब्रिटिश शासन अभी भी क्रियाशील है तो यह स्पष्ट है कि

यह ब्रिटिश ही हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से देश को चला रहे हैं। अगर हम खुद को स्वतंत्र, मुक्त और संप्रभु देश कहलाना चाहते हैं तो हमें अपने कानून और न्यायिक प्रणाली लानी होगी।

2. सरकार को चर्चा को बढ़ावा देने, व्यक्तियों और समूहों को संविधान सहित कानूनों का एक पूरा सेट बनाने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, जो हमारे ज्ञान और अनुभव को एकीकृत और व्यक्त करते हैं।

3. सरकार को वकीलों और न्यायाधीशों सहित विभिन्न समितियों के गठन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि वे दूसरों के कानून, सिफारिशों का अध्ययन और अनुभव कर सकें, तथा सामूहिक सिफारिशें पेश कर सकें, ताकि लोग उनकी सराहना करें और बाद में अंतिम सिफारिशों को स्वीकार करें।

4. कानून के अलावा सरकार को जनता को प्रोत्साहित करना होगा कि वे प्रत्येक ब्लॉक/जिले के लिए एक लोकपाल की नियुक्ति करें, जिसका वचन जनता पवित्र मानती हो।

5. सरकार को आपसी अनुभवों को साझा करने के लिए वैश्विक भाई-बहनों के साथ बातचीत जारी रखने की जरूरत है और व्यापक हित के लिए अभिव्यक्ति के लिए एक मंच भी प्रदान करना चाहिए।

कानून की ध्वनि 'ताकर ला-ला' से आती है, जबकि नियम (शासन) शब्द 'नियमक' (सर्वशक्तिमान) से आया है, इस शब्द का प्रयोग हम अंग्रेजी भाषा में भी कर सकते हैं।

आदेश

तंत्र कहता है कि जो लोग पूर्णतः व्यवस्थित हैं, जब वे कुछ कहते हैं तो वह व्यवस्था बन जाती है, और केवल वे ही लोग जो व्यवस्थित हैं, उन्हें ही व्यवस्था करने का अधिकार है।

कोई भी सिस्टम (यहाँ तक कि मशीनें भी) जो व्यवस्थित नहीं हैं, वे आदेशों का पालन नहीं कर सकतीं। अव्यवस्थित सिस्टम और व्यक्तियों को आदेश देना या अव्यवस्थित सिस्टम और व्यक्तियों द्वारा दिया गया आदेश, और अधिक अव्यवस्था पैदा करता है, "समाधान समस्याओं की आपूर्ति करता है और प्रत्येक नया आविष्कार और अधिक हस्तक्षेप पैदा करता है"।

कथन: "आवश्यकता आविष्कार की जननी है, अव्यवस्थित व्यवस्था में परिवर्तन उस आवश्यकता का शिशु या पुत्री है"।

तंत्र स्वयं को और अपने सिस्टम को व्यवस्थित करने के लिए एक सौ बारह तरीके सुझाता है। ये बारह सौ तरीके सर्वसमावेशी हैं और इनमें सभी धर्मों और सभी समय (भूत, वर्तमान और भविष्य) की सभी प्रक्रियाएं शामिल हैं और इनका परीक्षण किया गया है।

1. किसी भी चीज़ को निष्पादित करने के लिए आदेश की आवश्यकता होती है। जब कोई व्यक्ति व्यवस्थित होता है, यानी जब वह प्रकृति (पर्यावरण, मौसम, परिवेश और परिस्थिति) के अनुरूप होता है, तभी आदेशों का पालन होता है और मानव प्रणाली द्वारा उन्हें पूरा किया जाता है। जब कोई व्यक्ति व्यवस्थित नहीं होता है, तो यह दुर्लभ है कि कोई अव्यवस्थित या अव्यवस्थित प्रणाली सही आदेश दे और उसे निष्पादित कर सके। जब कोई व्यक्ति व्यवस्थित नहीं होता है, तो छींक भी किसी भी आदेश से नहीं हो सकती है।

एक व्यवस्थित प्रणाली में किसी भी प्रकार का तनाव, दबाव, इच्छाओं और आकांक्षाओं की कोई बाधा नहीं होती है, और यह एक आदर्श विद्युत प्रणाली की तरह है, जिसमें स्विच ऑन करने से बल्ब जलता है, और यह और भी अधिक इसलिए है क्योंकि विद्युत प्रणाली चमकने के लिए आवश्यक ऊर्जा/शक्ति भी प्रदान करती है।

2. समाज को स्वयं और सरकार को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया और अभ्यास को बढ़ावा देना और प्रोत्साहित करना है ताकि व्यवस्था का सम्मान और पालन किया जा सके।

3. जो लोग व्यवस्थित हैं, उन्हें सत्ता, मार्गदर्शन, आलोचक या सचेत रक्षक या सभी की सीट लेनी होगी। हमें व्यवस्था की जांच करनी होगी और अव्यवस्था पैदा करने वाली बाधाओं को दूर करना होगा। व्यवस्थित व्यवस्था में लोग उन आदेशों को अस्वीकार कर देंगे, जो व्यवस्थित नहीं हैं और जो/वे व्यवस्थित हैं उन्हें स्वीकार करेंगे।

आइये हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हम व्यवस्थित रहें।

शपथ

भीष्म पितामह (महाभारत काल) का जीवन बताता है कि शपथ से बंधे रहना कितना खतरनाक है।

कई लोग कहते हैं कि शपथ तोड़ने के लिए शपथ ली जाती है, और कई लोग कहते हैं कि शपथ दूसरों को विश्वास दिलाने के लिए ली जाती है और फिर उन्हें धोखा दिया जाता है या धोखा खाया जाता है।

यदि शपथ लेना आवश्यक समझा जाए तो ईश्वर के नाम पर शपथ लेना पर्याप्त है।

आमतौर पर धर्म और धार्मिक ग्रंथ हमें कोई शपथ लेने के लिए नहीं कहते।

1. चयनित/निर्वाचित एवं मनोनीत सदस्यों के शपथ ग्रहण समारोह के स्थान पर सहमति एवं आत्म-प्रतिबद्धता वक्तव्य को रखा जाएगा।

2. न्यायालय में बिना किसी विकल्प के शपथ लेना बंद किया जाना चाहिए, क्योंकि यह स्वयं विरोधाभासी है।

3. आम तौर पर स्कूल/सरकारी क्षेत्र की नौकरियों में शपथ ग्रहण समारोहों को आत्म-प्रतिबद्धता कथनों से बदलने की जरूरत है और उन्हें अनिवार्य बनाने की जरूरत है। यह हास्यास्पद लगता है जब एक ही शपथ को साल दर साल दोहराया जाता है जैसे शपथ समारोह - भ्रष्टाचार के खिलाफ, आतंकवाद के खिलाफ आदि, इसे रोकने की जरूरत है। इन शपथों के स्थान पर, स्व-हस्ताक्षरित प्रतिबद्धता पर्याप्त है।

पाठक: यह बहुत बड़ा काम लगता है। आपको क्या लगता है कि स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दैवीय सत्ता की अवधारणा को कैसे स्वीकार किया जाएगा? हम सब इसे कब लागू करेंगे?

संपादक: वे कहते हैं 'यथा मुंडे तथा 'ब्रह्माण्डे -यथा मुंडे-तथा ब्रह्माण्डे (जैसा सिर है, वैसा ही ब्रह्मांड है)', मेरे मन में यह विचार अचानक से नहीं आ रहा है, यह पर्यावरण में अवश्य ही होगा, पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति को कुछ झलक, कुछ संकेत, कुछ दिव्यता का विचार/विचार और लोकतंत्र का निष्पक्ष विचार अवश्य ही मिल रहा होगा।

प्रत्येक लकड़ी में आग होती है, उसे जलाने के लिए केवल एक माचिस की तीली की आवश्यकता होती है, इसलिए यह समय, स्थान और व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह की ऊर्जा का मामला हो सकता है कि आग स्थानीय स्तर या क्षेत्रीय स्तर पर बनी रहे या यह पृथ्वी के संपूर्ण भूगोल को छू ले।

हमारे लिए, दैवीय शासन को जितनी जल्दी कल्पना की जा सकती है, उससे कहीं ज़्यादा तेज़ी से लागू किया जा रहा है। चूँकि दैवीय शासन की आंतरिक इच्छा हर किसी के दिल में है, बस उसे सतह पर लाने की ज़रूरत है। सामूहिकता ही चर्चा का विषय है।

हम अभी से शुरुआत कर सकते हैं, आइए हम अपना कर्तव्य निभाएं, सबसे पहले मैं एक पुत्र के रूप में, एक पिता के रूप में, एक भाई के रूप में, एक मित्र के रूप में अपना कर्तव्य निभाऊं ताकि स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र समाज का निर्माण हो सके।

पाठक: आप जो कह रहे हैं, उसमें जीवन के प्रत्येक वर्ग/खंड/अवधि तथा स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अंतर्सम्बन्धों को पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है, इस पर आप क्या कहते हैं?

संपादक: मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा इसी अवधारणा को ध्यान में रखकर बनाया गया है, इस पर आगे विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए हैं (और इंटरनेट पर उपलब्ध हैं)।

पाठक: क्या आपको लगता है कि यह (मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा) और इस पर प्रश्न, उत्तर (वीडियो के रूप में) व्यवस्थित परिवर्तन और व्यवस्था परिवर्तन के लिए पर्याप्त होंगे?

संपादक: यह विकास की एक शुरुआत है, विशेषज्ञों को प्रत्येक विषय पर संधियों को विस्तार से बताने की जरूरत है।

पाठक : दैवीय लोकतंत्र की आवश्यकता महसूस की जा रही है, लेकिन जो लोग इसे संकल्पित करेंगे और इसे प्रकाश में लाएंगे, वे कहीं नज़र नहीं आ रहे हैं। हालाँकि मैं पोप, शंकराचार्य और धर्म के अन्य नेताओं के बारे में जानता हूँ, लेकिन वे ऐसे लोग नहीं हैं जो इसे वैसे भी करने जा रहे हैं। इस दुनिया में सबसे बुरी चीज जो हो सकती है, वह है धर्म का व्यवसायीकरण और पुराने धर्म इतने संतृप्त हो चुके हैं कि उनमें कुछ भी नहीं जोड़ा जा सकता (यह भी दुनिया में ज्ञान की बाढ़ के कारण है)। केवल एक नया धर्म या एक बिल्कुल नया धर्म या एक नया संप्रदाय ही जोड़ा जा सकता है ताकि नए विचारों को बाजार में पेश किया जा सके। मैं गंभीरता से महसूस करता हूँ कि पुराने धर्म का उपयोग परिवर्तन लाने के लिए नहीं किया जा सकता। सिद्धांत और व्यावहारिकता में अंतर है ।

लोकतंत्र और साम्यवाद सिद्धांत रूप में अच्छे हैं लेकिन व्यवहार में वे दोनों भ्रष्ट हैं। मनुष्य की बढ़ती हुई बुद्धि, धन की बढ़ती हुई गति और दुनिया में लोगों के लिए घटती हुई जगह, यहाँ तक कि अब धर्म भी भ्रष्ट हो चुका है, इसलिए आप दैवीय शासन के बारे में क्या कह सकते हैं आज, कल, सौ साल बाद और इसी तरह, पैसा किसी को भी भ्रष्ट कर सकता है, और हम आखिरकार इंसान ही हैं।

संपादक: आपके प्रश्न के दो भाग हैं और मैं उनका उत्तर दो भागों में देना चाहूंगा:

यह जानकर अच्छा लगा कि आपको भी डिविनक्रेसी (दिव्य लोकतंत्र) की जरूरत महसूस हुई और आप इसके तौर-तरीकों को लेकर चिंतित हैं। जरूरी बदलाव लाने के लिए आप उस व्यक्ति की ओर देख रहे हैं जो या तो अब इस दुनिया में नहीं है या अपने धर्म के युवाओं को नियंत्रित करने में विफल रहा है। एक तरह से आप अपने माता-पिता, दादा-दादी यानी पिछली पीढ़ी की ओर देख रहे हैं और निराश हो रहे हैं, जबकि मैं आने वाली पीढ़ी की ओर देख रहा हूँ और आशावान हूँ।

साम्यवाद ने अपना जीवन जी लिया है; लोकतंत्र (डेमोस-पीपुल्स, क्रेसी-रूल) ने अपना आधा जीवन डेमोक्रेसी के रूप में और शेष आधा प्रदर्शनीय अभिजात वर्ग के रूप में पूरा किया है, दोनों ने सिद्धांत के साथ-साथ व्यवहार में भी अपना कार्यकाल पूरा किया है। सरकार का अगला रूप दैवीय लोकतंत्र है।

पाठक: दैवीय लोकतंत्र की सरकार कैसी होगी? या आपको लगता है कि दैवीय लोकतंत्र कैसा होगा?

संपादक: मेरे बेटे-बेटियों की यही इच्छा होगी, यही अपेक्षा होगी। यानी उन्हें भौतिक सुख-सुविधा या भावनात्मक सुख-सुविधा के लिए अनावश्यक बातों की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। उन्हें लगता है कि माता-पिता का आदर होना चाहिए, माता-पिता का काम उन्हें मार्गदर्शित करना चाहिए, और साथ ही उन्हें लगता है कि माता-पिता उनके लिए चौकीदार की तरह होने चाहिए, उन्हें देखना चाहिए, जरूरत पड़ने पर सुधारना चाहिए, सहारा देना चाहिए। उन्हें लगता है कि वे जहां भी जाएं, उन्हें कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए, इसलिए वे सर्वांगीण विकास चाहते हैं, या स्पष्ट शब्दों में कहें तो वे चाहते हैं कि वसुदेव कुटुम्बकम की भावना व्यावहारिक रूप में, व्यवहार में आए, न कि केवल उपदेशों के लिए दूर की बात हो।

दिव्य लोकतंत्र की स्थापना पृथ्वी पर एक जीवित स्वर्ग की तरह होगी जिसमें स्वस्थ, प्रसन्न और पवित्र व्यक्ति, उनका परिवार और हमारा समाज होगा।

नरेंद्र अग्रवाल
